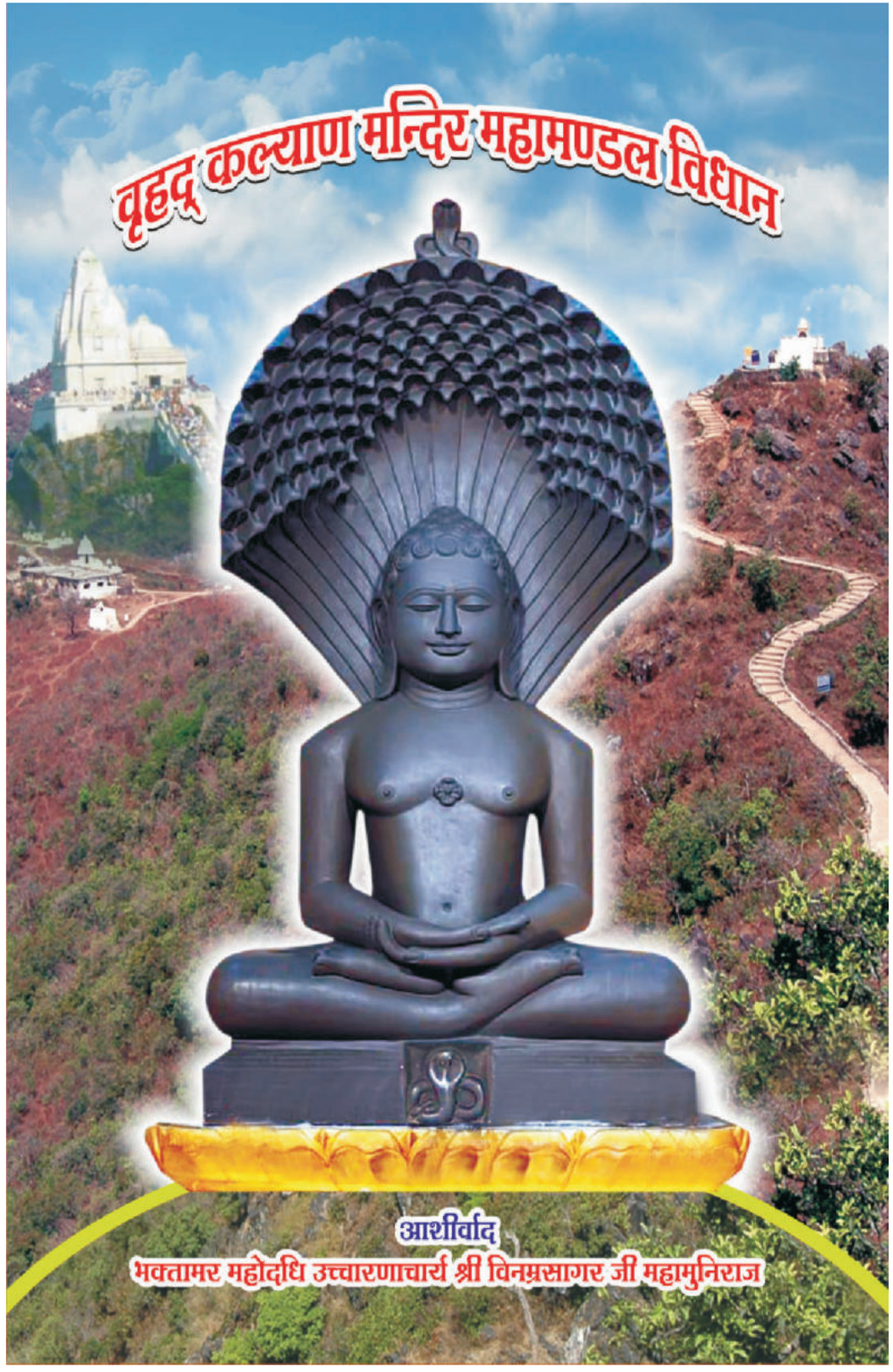
वृहद् कल्याण मन्दिर महामण्डल विधान
आशीर्वाद
भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

कृति	–	वृहद् कल्याण मन्दिर महामण्डल विधान
मंगल आशीर्वाद	–	परम पूज्य भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री 108 विनम्रसागर जी महामुनिराज
रचियत्री	–	श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी
कवर सज्जा	–	बा.ब्र. शुभी दीदी
प्रथमावृत्ति	–	3300 प्रतियाँ, मोक्ष सप्तमी–2023
ज्ञानदान राशि	–	500 रुपये
प्राप्ति स्थल	–	सम्यग्ज्ञान विराग विद्या पीठ, भिण्ड
	–	निर्ग्रन्थ श्रमण सेवा समिति मो. 9826214859
	–	धर्म प्रभावना न्यास, भिण्ड मो. 9826801542
	–	देवेन्द्र जैन, पारस प्लायवुड, बीना मो. 9425452825
मुद्रक	–	ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर मो. 8290526049

विनम्र देशना चैनल
You Tube
Mob.: 9414426947, 9891206953

वंदनीय आचार्य परम्परा

चारित्र चक्रवर्ती मुनि कुंजर
आचार्य श्री 108 आदिसागर जी महामुनिराज

तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट
आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी महामुनिराज

वात्सल्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महामुनिराज

नवमी सम्राट
आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महामुनिराज

परम पूज्य युग प्रमुख, काव्य शिरोमणि
सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज

जीवन है पानी की बूँद के 8100 छंद के रचयिता
परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

अनुक्रमणिका

1.	आशीर्वाद	6
2.	अंतस् की आवाज	8
3.	णाणं णरस्स सारो	12
4.	भक्ति की महिमा	14
5.	मंगलाष्टक स्तोत्र	19
6.	जल शुद्धि मंत्र	21
6.	लघु अभिषेक पाठ	21
7.	लघु शांतिधारा	24
8.	विनय पाठ	27
9.	पूजा पीठिका	30
10.	स्वस्ति मंगल विधान	32
11.	परमर्षि उपासना	33
12.	नवदेवता पूजन	34
13.	अर्घावली	38
14.	सिद्ध भक्तिः (प्राकृत)	44
15.	मंगलाचरण	45
16.	श्री पार्श्वनाथ पूजन	46
17.	पूर्णार्घ	51
18.	विधान प्रारम्भ	59
19.	ऋद्धि मंत्रों के अर्घ	410
19.	आचार्य श्री की पूजन	413
20.	आचार्य श्री की आरती	418
21.	महाअर्घ	419
22.	शान्ति पाठ	420
23.	विसर्जन	422

श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी

शुभाशीर्वाद

सर्व संकटहारी व सर्व सुखकारी
वृहद् कल्याण मंदिर विधान

वीतराग प्रभु की हार्दिक भक्ति, सर्व मनोरथ और सर्व कार्य को सिद्ध कराने वाली है जिसमें सर्व शक्तियाँ समाहित हो जाती हैं तीव्र भक्ति एक ऐसा रसायन है जिससे असाध्यरोग और तीव्र से तीव्र दुखदायी कर्म को भी बदलकर क्षय किया जा सकता है। शुद्धज्ञान और शुद्ध चारित्र व तप के द्वारा जो काम नहीं हो सकता वो काम जिनभक्ति और गुरुभक्ति के द्वारा हो जाता है पूजन में भी पढ़ते हैं ''भक्ति–मुक्ति दातार'' आचार्य पूज्यपाद स्वामी जी कहते हैं–

एकापि समर्थेयं जिनभक्ति–दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिन:।।

एक जिनेन्द्र भगवान की भक्ति सभी दुर्गतियों का निवारण करने में समर्थ है और अतिशय पुण्य से पूर्णकर मुक्तिरूपी लक्ष्मी को प्रदान करने वाली है। अत: इस बात को कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि ज्ञान और चारित्र में भक्ति की श्रेष्ठता सर्वोत्तम है। हमारे अंदर भक्ति सच्ची हो तो ज्ञान व संयम पाने के लिये बहुत परिश्रम करने की जरूरत नहीं रहती भक्ति ही सब कुछ प्राप्त करा देती है। कषायों का क्षय करना हो या शमन करना हो, अहंकार का नाश करना हो, मिथ्यात्व का उपशम करना हो या क्षयोपशम अथवा क्षय करना हो, भक्ति इन सभी में सर्वांगीण सार्वभौमिक है भक्ति की चरम सीमा हमें सम्पूर्णज्ञान पर ले जाती है और यही ज्ञान हमें सिद्धत्व प्राप्त कराकर मोक्षमहल को प्राप्त कराता है।

हमारा जीवन कई संकटों से भरा हुआ है बहुत से लोग अशुभ ग्रहों के कारण जीवन भर दु:खों में अपना जीवन करते हैं, कई लोग परिवार में असफल होते हैं, कई लोग व्यापार में, कई लोग शारीरिक संकटों में होते हैं, कई लोग बीमारी के संकटों में, कई लोग मानसिक पीड़ाओं में दुखित रहते हैं ज्यादातर राहु–केतु ग्रह–मंगल ग्रह, शनि ग्रहों के कारण पीड़ित होते हैं ये सभी पीड़ाएँ हमारे द्वारा पूर्वकृत पाप के उदय हैं ये राहु–केतु ग्रहों के अशुभ लक्षणों को अन्य लोग कालसर्प योग कहते हैं इन सभी ग्रहों के उपद्रव का निवारण पार्श्वनाथ भगवान की आराधना है उस आराधना–विधान–पूजन को वृहद् रूप देने के लिये इस कल्याण मंदिर स्तोत्र की वृहद् विधान के रूप में रचना की गई इस विधान के द्वारा हम अपनी भक्ति आराधना को वृहद रूप देकर महान पुण्य का अर्जन कर आने वाली बाधाओं को नष्ट कर सकते हैं। भक्तामर विधान की महिमा की तरह यह विधान भी अत्यंत प्रभावशाली रहा है इसमें महामृत्युंजय मंत्र व राहु–केतु ग्रह निवारण हेतु मंत्रों की जाप भी करना होती है।

कल्याण मंदिर स्तोत्र में आचार्य कुमुदचन्द्र जी ने 44 छंदों को लिखा है जिसमें पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति की गई है जिस स्तोत्र का एक–एक अक्षर बीजाक्षर के समान है इसलिए हमारे संघ में विदुषी श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी जिन्होंने एम.ए. (संस्कृत) और प्राकृत में प्रथम श्रेणी में प्राप्त कर पीएचडी (डॉक्ट्रेट) डिग्री को प्राप्त किया और संयम धारण करके इस कल्याण मंदिर विधान को लिखा जो अर्घों की अपेक्षा श्री सिद्धचक्र विधान से भी बड़ा है इस विधान को पूर्ण करने में 12 दिन लगते हैं जो सर्वकष्ट निवारण विधान के रूप में प्रसिद्ध है।

इस विधान को रचने में श्रमणी आर्यिका विमलश्री को मात्र 38 दिन लगे जिसमें भक्ति के साथ–साथ सिद्धांत और ज्ञान का समावेश दिखाई देता है उनका यह परिश्रम श्रावक–श्राविकाओं के लिये महान पुण्यार्जन का हेतु बनेगा और श्रावक लोग अपने कष्टों का निवारण कर सकेंगे।

इस अथक परिश्रम का साकार रूप देने में कुछ श्रावक श्रेष्ठियों ने अपने धन का भक्तिपूर्वक सदुपयोग करते हुए जो पुस्तक प्रकाशन में सहयोग किया है उनके लिए मेरा धर्मवृद्धि हेतु बहुत–बहुत आशीर्वाद है और विधान रचयित्री श्रमणी आर्यिका के लिए सल्लेखना समाधि हेतु बहुत–बहुत आशीर्वाद है।

–आचार्य विनम्रसागर

अंतस् की आवाज

"भक्त्या शक्त्या यजम्यहं वंदे तद् गुण लब्धये"

भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर के शासनकाल में अनेकानेक भव्य प्राणियों ने भक्ति के सोपान पर आरूढ़ होकर मुक्ति की मंजिल को प्राप्त किया। क्योंकि भक्ति का रस हमारे जीवन में वह अमूल–चूल परिवर्तन ला देता है जो कि पंच परावर्तन को मूल नष्ट करने में सक्षम है।

संसार के सभी रसों में भक्ति रस सर्वश्रेष्ठ है जिसने मीरा के जहर को अमृत बना दिया, जिसने शबरी के झूठे बेरों को मिष्ठान बना दिया, जिसने आचार्य श्री मानतुंग जी को 48 तालों के अंदर आदीश्वर के दर्शन कराकर बंधन मुक्त करा दिया और जिसने वादिराज मुनिराज के कोढ़ी शरीर को स्वर्णिम काया के रूप में परिवर्तित कर दिया।

एक भक्तिरूपी कुदाली है जो निर्धत्ति व निकाचित जैसे कर्म तरुओं को भी मूल नष्ट करने में सक्षम है। जो पाषाण को परमात्मा, पूज्य को पूजक और भक्त को भगवान बना देती है और भक्ति ही है जो महान पुण्य का अनुबंध कराकर सम्यग्दर्शन ज्ञान–चारित्र को ही नहीं सर्वश्रेष्ठ तीर्थंकर प्रकृति का भी अनुबंध करा सकती है। संसार के सम्पूर्ण कार्यों में सफलता पाने के लिए भक्ति ही एक अचूक मंत्र है।

ममाराध्य गुरुवर भी ऐसी ही निष्काम भक्ति की शक्ति के धनी हैं। उन्हीं की अनन्य कृपा से पार्श्व प्रभु की भक्ति का भाव प्रबल हुआ और गुरुदेव की भक्ति की तरह मैं भी मुक्ति पर्यन्त प्रभु की अविरल भक्ति करती रहूँ। क्योंकि भक्तामर के 23वें श्लोक में कहा है "नान्य: शिव: शिव पदस्य मुनीन्द्र पंथ:" जिस प्रकार आचार्य भगवन् श्री सोमसेन जी महामुनिराज के द्वारा भक्तामर स्तोत्र पर वृहद् विधान की रचना की गई थी तदनुसार ही प्रत्येक अक्षर को लेकर इस "वृहद् कल्याण मंदिर महामण्डल विधान" की संयोजना की गई है। जो अक्षर है जैसे–कल् या ण मं दि र मु दा र म व द्य भे दि आदि 2448 अक्षरों में प्रथम अक्षर प्रथम शब्द या प्रथम चरण में लिखने का प्रयास किया गया है और उन अक्षरों को लाल वर्ण करके प्रदर्शित किया गया है।

कैसे हुई विधान की रचना

सिद्धक्षेत्र सोनागिरि भगवान अनंतनाथ के समक्ष (बीसपंथी कोठी में) पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य लाभ हेतु प्रथम जिनेश्वर आदि प्रभु की महाराधना 2688 बीज मंत्रों से सुसज्जित विधान द्वारा अनवरत चल रही है। संघस्थ माताजियों ने अपनी मनोभावना प्रदर्शित की, कि जिस विधि से हम प्रथम तीर्थंकर देव की महार्चना कर रहे हैं इसी प्रकार संकट मोचन तारण हारे उपसर्ग विजयी पार्श्व प्रभु की महार्चना गुरुवर के इस उपसर्ग निवारण हेतु कल्याण मंदिर विधान के माध्यम से करना चाहते हैं और आप ही उसे शब्दों से अलंकृत करने में सक्षम हैं।

सभी की प्रेरणा ने मुझे प्रभु के सामने बिठा दिया। प्रभु की समीपता और गुरुवर के आशीर्वाद ने आचार्य भगवन् मानतुंग की उन पंक्तियों को चरितार्थ कर दिया कि –

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्भक्ति रेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिल: किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र चारु कलिका निकरैक हेतु: ॥भ. स्तो 7॥

प्रभु भक्ति ने बलात् ही लेखनी को गति प्रदान की और गुरुवर की अनन्य कृपा ने मेरी अस्वस्थता (सर्वाइकल के दर्द) में लेखनी को रुकने न दिया। जिस प्रकार आचार्य भगवन् श्री सोमसेन जी महामुनिराज के द्वार भक्तामर स्तोत्र पर वृहद् विधान की रचना की गई थी तदनुसार ही प्रत्येक अक्षर को लेकर इस "वृहद् कल्याण मंदिर महामण्डल विधान" की संयोजना की गई है। जो अक्षर है जैसे– कल् या ण मं दि र मु दा र म व द्य भे दि आदि अक्षरों में प्रथम अक्षर प्रथम शब्द या प्रथम चरण में लिखने का प्रयास किया गया है और उन अक्षरों को लाल वर्ण करके प्रदर्शित किया गया है। आश्चर्य सा प्रतीत होता है कि प्रतिदिन एक श्लोक में 56 अक्षरों के 56 अर्घ लिखे जाने लगे और अगले दिन उन्हीं छंदों के द्वारा पार्श्व प्रभु की अर्चा होने लगी। व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे इसलिए कभी–कभी 2–2 श्लोक के अर्घ भी लिखे गये और अल्प समय में ही

इस भक्ति ने विधान का रूप धारण कर लिया। विधान अनवरत चलता रहा। पूज्य गुरुदेव भी शनैः-शनैः स्वस्थता की ओर प्रयाण करने लगे। अब यह विधान आपको भी प्रभु भक्ति के लिए प्रेरित करने के लिए आपके समक्ष प्रस्तुत है।

बीजाक्षरों द्वारा रचित यह "वृहद् कल्याण मंदिर विधान" जिसके द्वारा अवश्य ही विधि (कर्मों) को विध्वंसने की ऊर्जा प्राप्त होगी। श्रम भक्ति से की गई प्रभु भक्ति सभी असाध्य रोग, शोक, अपमृत्यु, काल सर्पयोग आदि को टालने में सक्षम बनेगी और बुद्धि, ऋद्धि, सिद्धि की वृद्धि प्रदान करके महामृत्युञ्जयी बनने में सहायक होगी। यह विधान सदियों के बाद भी श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में अतिशय मान्य है। इसकी महिमा समयानुसार वृद्धिंगत हो रही है।

इसके मंत्रों द्वारा बड़ी-बड़ी बीमारियों का इलाज किया जा रहा है। अनेक भक्तगण गृह शान्ति और आत्म शांति हेतु प्रतिदिन पाठ करते हैं। मुझे यह विश्वास है कि सभी विधान करने वालों को इससे आनन्दानुभूति अवश्य होगी एवं प्रभु चरणों से अनुराग बढ़ेगा तथा उनके अंदर "वंदे तद्गुण लब्धये" चरितार्थ होगा।

यह विधान विशेष भक्ति के साथ प्रतिदिन एक छंद के 56 अर्घ चढ़ाकर 44 दिनों में पूर्ण कर सकते हैं। फिर अपनी सुविधानुसार 22, 11 या 8 दिन में भी कर सकते हैं। इतना ध्यान रखें जितने दिन विधान करें उतने दिन विधान की पूजन करें पुनः अग्रिम अर्घ चढ़ाएँ अंत में जयमाल पढ़ें। यदि विधान करने का समय न हो तो पार्श्व स्तवन के रूप में पाठ भी कर सकते हैं।

विशेष फल हेतु उपवास अथवा एकासन करके व्रत कर सकते हैं।

व्रत निर्देश :

* व्रत अपनी सुविधानुसार किसी भी तिथि को कर सकते हैं।
* इस व्रत को करने वाले प्रातःकाल "भगवान पार्श्वनाथ" की पूजन करने के बाद व्रत वाले अर्घ चढ़ा सकते हैं।
* व्रत वाले दिन उसी अर्घ की जाप करें। जैसे अर्घ है-

ॐ ह्री अर्हं महिमावंत "फल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं उसी प्रकार जाप है।

ॐ ह्री अर्हं महिमावंत "फल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ।।

इस विधान को आपके समक्ष प्रस्तुत करने में गुरुवर के आशीष सहित संघस्थ सभी आर्यिकाएँ एवं ब्रह्मचारिणी बहिनों का अनमोल सहयोग रहा।

अन्तस् की उत्कण्ठा है कि हम सभी प्रभु व गुरु भक्तों का मुक्ति पथ प्रशस्त हो और जब तक मुक्ति न मिले तब तक मन हृदय यूँ ही प्रभु व गुरु भक्ति से लबालब रहे और गुरुकृपा मुझ पर अनन्य व अक्षुण्ण बनी रहे। इसी भावना के साथ मम श्रद्धालय के देवता मानतुंग के लघुनंदन "भक्तामर महोदधि, उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज" के चरण कमलों में त्रय भक्तियुत् वंदन कर उन्हीं की कृति उनके ही कर कमलों में सविनय अर्पित समर्पित।

गुरुकृपा अश्रिता

श्रमणी आर्यिका विमलश्री

णाणं णस्स्स सारो

अर्हंतो मंगलं नित्यं, सिद्धा जगति मंगलं।
मंगलं साधवो मुख्यं, धर्मः सर्वत्र मंगलं।।

णाणं णरस्य सारो– मानव जीवन का सार ज्ञानधन है ऐसा आचार्य भगवन्तों ने शास्त्रों में लिपिबद्ध किया है जिसके पास ज्ञानधन है वही मनुष्य कुलीन है, पण्डित है शास्त्रज्ञ, गुणी, विनम्र व सरल है, वही सुंदर है, ये समस्त गुण ज्ञान धन का आश्रय हैं।

महिर्षियों ने लिखा है–

श्रद्धां विनावृथा ज्ञानं चारित्रं च तथैव तु।
श्रद्धां ज्ञानं चरित्रं न त्रयस्ते मोक्ष हेतवः।।

श्रद्धा के बिना ज्ञान एवं चारित्र व्यर्थ है, श्रद्धा, ज्ञान व चारित्र तीनों की एकता ही मोक्ष का कारण है। ऐसे मोक्षमार्ग पर आरूढ़ वात्सल्य रत्नाकर श्रमणाचार्य परम पूज्य 108 श्री विमलसागर जी की परम्परा में तत्शिष्य सूरिगच्छाचार्य परम पूज्य 108 श्री विरागसागर जी तत्सुशिष्य भक्तामर महोदधि काव्य सम्राट् भक्तामर वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज की सुयोग्य शिष्या परम मनस्वी,परम विदुषी श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद से उच्चतम शिक्षा पी.एच.डी. की डिग्री को प्राप्त करके स्त्री पर्याय की सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त कर आर्यिका पद पर सुशोभित हुई हैं।

जिनशासन की उपासिका आर्यिकारत्न की अनुपम कृति वृहद् भक्तामर विधान को जब मैंने देखा व ललितपुर नगर में चल रहे श्रमणी आर्यिका द्वारा रचित वृहद् भक्तामर विधान को जब मैंने सुना तो मन प्रफुल्लित हो गया, हृदय रोमांचित हो उठा, माताजी ने भक्तामर स्तोत्र के प्रत्येक वर्ण अर्थात् 2688 अक्षरों पर अनेक प्रकार के छन्दों में अपने अंतरंग के भावों को लिखकर अपनी विद्वत्ता का गुरु भक्ति, प्रभु भक्ति का अनूठा परिचय दिया है। माताजी ने

भक्तामर विधान के समतुल्य तेइसवें तीर्थेश श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्रद्धा, भक्ति, आस्था पूर्वक आराधना करते हुए "वृहद् श्री कल्याण मन्दिर विधान" को अपने ही हस्तकमलों से मात्र 38 दिन में सोनागिर सिद्धक्षेत्र में पूर्ण किया।

इस कल्याण मंदिर विधान में माताजी ने प्रत्येक बीजाक्षरों (2448) पर सुन्दर तरीके से अनेक विधाओं में छन्द, काव्य, दोहा, सोरठा, चौपाई, सखी, गीतिका आदि छंदों का तथा हास्य, वीर, श्रृंगार, भक्ति, करुण रस अनुप्रास, श्लेष, यमक, अनुप्रेक्षा आदि अलंकारों का पुट लेकर काव्यों की रचना करके इस विधान की रचना की। संस्कृत भाषा में यह स्तोत्र पढ़ने में कठिन प्रतीत होता है लेकिन उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज ने तीन प्रकार से पद्यानुवाद करके व उनकी ही कृपा व आशीष से विदुषी माताजी ने बीजाक्षरों पर वृहद् विधान लिखकर हम सभी अज्ञानियों पर उपकार किया है। हम सभी ऐसे गुरुओं के परम उपकारी हैं, ऋणी है, जिन्होंने हमें सच्ची भक्ति सिखाकर कल्याण का पथ दिखलाया, यही भावना भाता हूँ इस तरह के विधान प्रकाशित होते रहें जिसमें संसारी प्राणी परमात्मा की भक्ति में डूबकर परमात्म पद को प्राप्त कर सके।

आर्यिका माताजी निरंतर ज्ञान की प्राप्ति करते हुए एक दिन मुनि बनकर निर्वाण सुख को प्राप्त हो यही मेरी भावना है। उनके चरणों में कोटिशः वंदामि वंदामि वंदामि।

–पं. सुरेशचन्द्र जैन
पूर्व व्याख्याता गणित विभाग
वर्णी जैन इण्टर कॉलेज, ललितपुर (उ.प्र.)

भक्ति की महिमा

संसार के प्राणियों को ज्ञान, कर्म और उपासना ये तीनों साधना के हेतु है। ज्ञान हमें कर्म अकर्म से परिचित कराकर शाश्वत लक्ष्य का बोध कराता है, कर्म उस लक्ष्य के पास बैठने तथा उससे तादात्म्य भाव स्थापित करने में समर्थ होते हैं और उपासना कर्म से आगे लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करता है। इन तीनों के सम्मिलित रूप को ही भक्ति कहते हैं। ''स्तोत्र या स्तवन उसी भक्ति का ही एक अंग है।''

अन्तर्मन में उठने वाली लहरों का स्वर जब छंद रूप मुखरित होता है तब वह भक्ति स्तोत्र रूप में दर्शित होती है। जैनि कृतियों का दार्शनिकों एवं अनेक साधु संतों ने अनेक स्तोत्रों द्वारा रचना की है। ये स्तोत्र पंच परमेष्ठी के गुणगान का ही सुपरिणाम है। इसी श्रृंखला में एक स्तोत्र ''कल्याण मंदिर स्तोत्र'' रूप प्रसिद्ध हुआ।

इस स्तोत्र का अपर नाम ''श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र'' भी है। रचियता ''आचार्य श्री कुमुदचन्द्र स्वामी'' देवेन्द्र कीर्ति जी ने उन्हें 2448 बीजाक्षरों द्वारा पार्श्वराधना में भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का गुणगान कर जिनधर्म महिमा की अनूठी प्रभावना की है। जो दिगम्बर श्वेताम्बर समुदाय में अतिशय मान्य है। 44 छंदों में निबद्ध इस स्तोत्र में 2448 बीजाक्षर हैं।

भक्ति और जिनेन्द्र भगवान की महिमा को अपने भावों में प्रकट करने का भाव जब ''आचार्य श्री विनम्रसागर जी'' महाराज की संघस्थ श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी के मन में आया तो कलम मुखरित हो विधान रूप निबद्ध हुई। स्तोत्र में सम्मिलित अनेक बीजाक्षरों को निकालना आर्यिका श्री की पैनी दृष्टि का सुपरिणाम है और उन अक्षरों द्वारा विधान की रचना का दुष्कर कार्य उनकी सुयोग्यता व ज्ञान की क्षमता है। ये अक्षरों की तलाश उनके गुरुवर श्री विनम्रसागर जी महाराज के अनुभव की तराश है।

गृहस्थ अवस्था से ही ज्ञान, ध्यान व अध्ययन, लेखन में संलग्न आर्यिका श्री ने पी.एच.डी. की उपाधि से अपने आपको अलंकृत किया था। अत: उनकी

साहित्य साधना अनूठी है। शब्दों का लय ताल के साथ चयन उनकी अपनी विशेषता है।

यह विधान जिनेन्द्र देव की प्रभावना और भक्त की भक्ति को प्रकट करने में निश्चित ही सहयोगी है, इसलिये अमर भी है। इस विधान को करने का अवसर शीघ्र ही हम सभी को प्राप्त होने जा रहा है जो हम सभी को सुख, समृद्धि व धर्मवृद्धि में सहायक होगा। ऐसी भावना के साथ परम पूज्य आचार्य श्री एवं समस्त मुनिगण, ज्येष्ठ आर्यिका श्री विमलश्री माताजी सहित सम्पूर्ण आर्यिका संघ को कोटि-कोटि नमन वंदन।

''जैनम् जयतु शासनम्''

डॉ. नीलम जैन सर्राफ
ललितपुर (उ.प्र.)
सदस्य-अखिल भारतवर्षीय विद्वत् परिषद

प्रकाशन में सहयोगी परिवार

श्री सोमचंद–पुष्पा बाई (देशव्रती)
पुत्र–संजीव–स्मिता, राजीव–राखी,
बेटी–दामाद–संगीता–विनीत सिंघई (ताल वाले) सागर
चारित्र, पुलक, मौलि, खुशी, भव्य, लकी बुक डिपो, ललितपुर (उ.प्र.)

श्री साहिल–श्रीमती शिल्पी जैन, सर्ग जैन
टीकमगढ़

प्रकाशन में सहयोगी परिवार

श्रीमती सुधा शतभैया, मीना–अरविन्द, वर्षा–महेश, रितु–सुरेश, मेघा–दिनेश शतभैया
डॉ. श्रुति–प्रमोद कुमार जैन, साक्षी–योगेश सर्राफ, सुरभि–सर्वज्ञ शतभैया,
सृष्टि–सिद्धांत शतभैया श्रेया, श्रेय शतभैया, हर्षिल सर्राफ
शतभैया परिवार, ललितपुर

श्री ताराचंद जैन–श्रीमती सुगंधीबाई जैन
विमलकुमार जैन–श्रीमती सुमन जैन, शरद जैन–श्रीमती सुप्रिया जैन
डॉ. सौम्या जैन–डॉ. अंकित जैन, पाही जैन
रेमंड शोरूम विवाह कलेक्शन, ललितपुर

प्रकाशन में सहयोगी परिवार

5

श्री राकेश कुमार श्रीमती किरण, प्रखर–आस्था, प्रतीक, प्रवेश
शतभैया परिवार, ललितपुर

6

सि. धन्य कुमार जैन एड. श्रीमती उमा जैन
सि. अमित कुमार (चन्दन–श्रीमती श्रद्धा जैन, सि. आलोक कुमार श्रीमती सुरभि
पीयूष–प्रियंका इटोरिया, कु. भविष्या जैन, सैदपुर परिवार, ललितपुर

7

श्री ज्ञानचन्द जी, आनन्द जी, अमित जी
अक्षत, आर्जव जैन
गैलेक्सी कम्प्यूटर, ललितपुर

मंगलाष्टक स्तोत्र

अर्हन्तो भगवंत इन्द्र–महिता: सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा:
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा: पूज्या उपाध्यायका:।
श्री सिद्धान्त–सुपाठका: मुनिवरा रत्नत्रयाराधका:,
पञ्चैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र – सुरासुरेन्द्र – मुकुट – प्रद्योत – रत्नप्रभा–
भास्वत्पाद–नखेन्दव: प्रवचनाम्भोधीन्दव: स्थायिन:।
ये सर्वे जिन सिद्ध–सूर्यनुगतास्ते पाठका: साधव:,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरव:, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन – बोध – वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति–श्री नगराधिनाथ–जिनपत्युक्तोपवर्गप्रद:।
धर्म: सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।2।।

नाभेयादि–जिनाधिपास्त्रि–भुवनख्याताश्चतुर्विंशतिश्,
श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रति विष्णु–लांगलधरा: सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि पुरुषा:, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्री तीर्थंकर मातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाधिपास्थितिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणा:, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधि ऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला, येऽष्टौ विधाश्चारणाः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो, ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः, सम्मेद शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणवनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु मंगलम्।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर- भावनामरगृहे, मेरौ-कुलाद्रौस्तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर प्रवेश महिमा, संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।8।।

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषाः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै-र्धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

।।इति मंगलाष्टकम्।।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्ण रूप्यकूला रक्तारतोदाः क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्णघटकं प्रक्षालित-परिपूरित नव-रत्नगन्धाक्षत पुष्पार्चितं ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं अ सि आ उ सा नमः हं सः पवित्रं जलेन जलं शुद्धि करोमि स्वाहा (जलाभिमन्त्रणम्)।

लघु अभिषेक पाठ

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहतो यथाम्नायं, करोमि सकली क्रियाम्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पवित्रतर जलेन शुद्धिं करोमि।

(मंत्र पढ़कर जल से शुद्धि करें)

श्री मज्जिनेन्द्र-मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायक-मनन्त चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ-सुदृशां सुकृतैक हेतुर, जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलिं क्षिपामि।

सौगन्ध्य-सङ्गत-मधुव्रत झङ्कृतेन, सम्वर्ण्य-मानमिव गन्धमनिन्द्य-मादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वर-वृन्द-वन्द्य-पादारविन्द-मभिवन्द्य जिनोत्तमानम्।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्ग शुद्धिं कुरु कुरु।

(यह मंत्र पढ़कर चन्दन से तिलक लगाना व हाथ धोना)

ये सन्ति केचिदिह दिव्य-कुल-प्रसूताः, नागा प्रभूत-बल-दर्पयुता विबोधाः।
संरक्षणार्थ-ममृतेन शुभेन तेषां, प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।3।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि।

(यह मंत्र पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितं सुरवरै–र्यदनेकवारम्।
अत्युद्य–मुद्यत–महं जिनपाद पीठ, प्रक्षालयामि भव–सम्भव–तापहारि।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि।

(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है, उस थाली को धावें)

श्री शारदा–सुमुख–निर्गत–बीजवर्णं, श्री मङ्गलीक–वर–सर्व–जनस्य नित्यम्।
श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं, श्रीकार–वर्ण–लिखितं जिन भद्रपीठे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि।

(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है, उस थाली में 'श्री' लिखें)

यं पाण्डुकामल–शिलागतमादिदेव–मस्ना–पयन्सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याण–मीप्सुरह–मक्षत–तोय–पुष्पैः, सम्भावयामि पुर एव तदीय–बिम्बम्।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमा स्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर श्रीवर्ण पर प्रतिमा स्थापन करना चाहिए)

सत्पल्लवार्चित–मुखान्–कलधौतरौप्य–ताम्रारकूट–घटितान्पयसा सुपूर्णान्।
सम्वाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाञ्जिन वेदिकान्ते।।7।।

ॐ ह्रीं स्वहस्ते चतुःकोणेषु कलश स्थापनं करोमि।

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगल गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(एक कलश से अभिषेक करें)

दुरावनम्र सुरनाथ–किरीट–कोटी–संलग्न–रत्न–किरणच्छवि–धूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद–ताप–मल–मुक्तमपि प्रकृष्टैर, भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।8।।

1. **ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विञ्शति तीर्थंकर परं देवं आद्यानामाद्ये–मध्यलोके–जम्बूद्वीपे–भरत क्षेत्रे–आर्यखण्डे–भारतदेशे..... प्रदेशे.....जिले.....मासे..... पक्षे.....वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक–श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।**

(मुनि–आर्यिका–श्रावक–श्राविका जो तीर्थंकर भगवान् के ऊपर जल की धारा देवें देखें ताके कर्मन की क्षय।)

2. **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय–द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेकं करोमि।**

3. **तीर्थोत्तम–भवैर्नीरैः, क्षीर–वारिधि–रूपकैः।**
स्नपयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तान् जलेन स्नप्यामः

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगल गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चार कलशों से अभिषेक करें)

इष्टैर्मनोरथ–शतैरिव भव्य पुंसां, पूर्णै सुवर्ण कलशै–र्निखलै–र्वसानैः।
संसार सागर–विलंघन, हेतु–सेतु–माप्लावये त्रिभुवनैक–पतिं जिनेन्द्रम्।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महवीर पर्यन्त चतुर्विञ्शति तीर्थंकर परं देवं आद्यानमाद्ये–मध्यलोके–जम्बूद्वीपे–भरत क्षेत्र–आर्यखण्डे–
भारतदेशे..... प्रदेशे.....जिले.....मासे..... पक्षे.....वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक–श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

लघु शांतिधारा

(शान्तिधारा भगवान् के सिर पर अथवा यंत्र पर करें)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः, ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते श्री पार्श्व तीर्थङ्कराय, द्वादशगण परिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय,परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्यमही व्याप्ताय, अनंतसंसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, त्रैलोक्य वंशकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मण्डल–मण्डिताय, ऋष्यार्यिका–श्रावक–श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय।

(शान्तिधारा कर्ता का नाम)

अपवादं अस्माकं छिंद छिंद भिंद भिंद, **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिदं।
अतिकामं छिंद छिंद भिंद भिंद, **रतिकामं** छिंद छिंद भिंद भिदं।
क्रोधं पापं वैरं च छिंद छिंद भिंद भिंद, **अग्नि वायु भयं सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्वभयं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वराजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्वं चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वदुष्टभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वमात्म चक्रभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्वपरमंत्रं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व शूलरोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व क्षयरोगं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व कुष्ट रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व क्रूर रोगं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व गजमारिं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वाश्वमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व गोमारिं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व महिषमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व वृक्षमारिं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व पत्रमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व पुष्पमारिं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व फलमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व राष्ट्रमारिं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व देशमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व विषमारिं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व वेतालशाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्व मोहनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद, **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिदं।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र–विक्रम तेजो बल–शौर्य–वीर्य–शांतिं कुरु कुरु, सर्व जनानन्दनं कुरु, कुरु, सर्व भव्यानन्दनं कुरु कुरु, सर्व गोकुलानन्दनं कुरु कुरु, सर्व ग्राम–नगर–खेट–कर्वट–मटंब–पत्तन–द्रोणमुख संवाहानन्दनं कुरु कुरु, सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु, सर्व देशानन्दनं कुरु कुरु, सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु, सर्व दुःखं, हन–हन–दह–दह पच–पच–कुट–कुट शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि–व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम–मारोग्यं, स्वस्ति–रस्तु विधीयते।।

शिवमस्तु! कुल–गोत्र–धन–धान्यं सदास्तु पद्मप्रभ चन्द्रप्रभ–वासुपूज्य–मल्लि–वर्द्धमान–पुष्पदन्त शीतलनाथ–मुनिसुव्रत–नेमिनाथ पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रह शान्त्यर्थं गन्धोदकं धारा वर्षणं)

श्री शान्तिरस्तु, शिवमस्तु, जयोस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, सर्वेषां पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु, कल्यामस्तु, सुखमस्तु, अभिवृद्धिरस्तु, कुल गोत्र धन धान्यं सदास्तु, श्री सद्धर्म बल आयुः आरोग्य ऐश्वर्य अभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतुः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय, सर्व विघ्न प्रणाशनाय, सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय, सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्वक्षाम–डामर विनाशनाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व देशस्य चतुर्विध संघस्य तथैव सर्व विश्वस्य तथैव मम (शांतिधाराकर्ता का नाम) सर्व शान्तिं कुरु कुरु, तुष्टिं कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।
शान्तिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां, शान्तिः निरंतर तपोभव भावितानां।
शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां, शान्तिः स्वभाव महिमान–मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगल गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय शांतिधारा अभिषेकान्ते अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्मलं निर्मली करणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदक वन्दे, अष्ट कर्म विनाशनम्।।

(यह छंद पढ़ते हुए गंधोदक नाभि के ऊपर विभिन्न अंगों में लगावें।)

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति–वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार।।3।।

हरता अघ अँधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण राश।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण–सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछू उपाव।।6।।

भविजन को भवकूप तैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथ पति, आतम गुण भण्डार।।7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल।।8।।

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खग धर इन्द्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे प्रभु, जय-जय-जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधिविषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय-जय-जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भैंट्यो अबै, मैंटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद-कित नारकी-कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजैं सुरपति-अहिपति-नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कैं, कीजै आप समान।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।

जौ मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उर झार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।

वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमो, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु 'नमि', रच्यो पाठ सुखदाय।।22।।

मंगल मूर्ति परमपद, पंच धरों नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।23।।

मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अर्हत्देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव।।24।।

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दो मन वच काय।।25।।

मंगल सरस्वति मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म।।26।।

या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल "नाथूराम" यह, भवसागर दृढ़ पोत।।27।।

पठन करूँ श्री आदि का, अन्त नाम महावीर।
तीर्थंकर चौबीस जिन, तिन्हें नवाऊँ शीश।।28।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि (कायोत्सर्गं करोम्यहम्)

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।
ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं – अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा– अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।
अपराजित मन्त्रोऽयं, सर्वविघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।
एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी–भूत–पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे कल्याण–महं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञान–निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा
उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री जिनसूत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेन्द्र–मभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद–नायक–मनंत–चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ–सुदृशां सुकृतैक हेतुर, जैनेन्द्र–यज्ञ–विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।
स्वस्ति त्रिलोक–गुरवे जिन–पुंगवाय, स्वस्ति स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश–सहजोर्जित–दृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न–ललिताद्भुत–वैभवाय।।2।।
स्वस्त्युच्छलद् विमल–बोध–सुधा–प्लवाय, स्वस्ति स्वभाव–परभाव–विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक–विततैक–चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल–सकलायत–विस्तृताय।।3।।
द्रव्यस्य शुद्धि–मधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धि–मधिकामधि–गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्, भूतार्थ–यज्ञ–पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।4।।
अर्हत्पुराण–पुरुषोत्तम–पावनानि, वस्तून्यनून–मखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद् विमल केवल बोध वह्नौ, पुण्यं समग्र–महमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(यहाँ स्वस्ति कहते समय पुष्प क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानम्। पुष्पांजलिं क्षिपामि

परमर्षि उपासना

नित्याप्रकम्पाद् भुत–केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय–शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान–बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।
कोष्ठस्थ–धान्योपममेकबीजं, संभिन्न–संश्रोतृ–पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन–घ्राण–विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान–बलाद्बृहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा–प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धा दश सर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।
जंघानल – श्रेणि – फलांबु – तंतु – प्रसून – बीजांकुर – चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण–स्वैर–विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो–वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।
सकामरूपित्व – वशित्वमैश्यं, प्राकाम्य – मन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।
आमर्ष – सर्वौषधयस्तथाशी – र्विषाविषा – दृष्टि – विषाविषाश्च।
सखेल्ल–विड्जल्ल–मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतोमधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

इति परमऋषि स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि (कायोत्सर्गं करोम्यहम्)।

नवदेवता पूजन

तर्ज – तुझे सूरज कहूँ या चंदा

पूजन का अवसर आया, भक्ति से थाल सजाया,
नवदेव चरण आकर के, भक्ति कर यहाँ बुलाया।
अरहंत सिद्ध आचार्य, उपाध्याय साधु परमेष्ठी।
जिनधर्म जिनागम जिनवर, मंदिर पर है मम दृष्टि।।
मम उर में आन विराजो श्रद्धा से हृदय सजाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय नवदेव-समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय नवदेव-समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय नवदेव-समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नयनों को कलश बनाया, भक्ति का जल भरवाया,
अश्रूपूरित कलशों से, चरणों में आन चढ़ाया।
मम जन्म जरा मिट जाये, इस जग से मन अकुलाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन लाया, केशर के संग घिसाया,
इस तपती धूप में जिनवर, तव चरण है शीतल छाया।
संसार ताप नश जाये, जगताप ने बहुत तपाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल तंदुल, भरकर के थाल सजाया,
रत्नत्रय की बगिया से, अंतस् का बाग खिलाया।

अक्षय पद की आशा ले, अक्षत मैं चरणों लाया।
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

नंदनवन सा बन महका, गुण सुरभित पा मन चहका,
वह कामदेव भी आकर, जिनवर चरणों में झुकता।
हो कामबाण का नाश, पुष्पाञ्जलि चरण चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन बनवाया, स्वर्णिम है थाल सजाया,
पाने निज परमानंद, जिनदेव शरण में आया।
मम क्षुधा रोग नश जाये, नैवेद्य है चरण चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व का घना अँधेरा, किंचित् ना मिला उजेरा,
रत्नों के दीप सजाकर, आरती करता मन मेरा।
मन अंधकार मिट जाये, दीपक है चरण चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर आदिक ले, यह धूप दशांग बनाया,
धूपायन धूप को खेकर, जीवन आँगन महकाया।
मम अष्ट कर्म मिट जाये, जिन चरण में धूप चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्योऽष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु दाख छुहारा, चिलगोजा साथ सँवारा,
मुक्तेश्वर के चरणों में, मुक्ति का भाव सजाया।

शुभ मोक्षमहल को पाने, फल का शुभ थाल चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अगणित गुण के धारी जिन, तुम गुण के हो भण्डारा,
देवेन्द्र लोक से हमने, यह दिव्य द्रव्य मँगवाया।
अविनाशी पद को पाने, यह दिव्य अर्घ है चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शीतल जल धारा करूँ, सब जग शांति हेत।
नव देवों के चरण की, देव करें नित सेव।।
शांतये शांतिधारा.....
जुही चमेली केवड़ा, सुमन सु-मन से लाय।
नवदेवों के चरण में, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।।
दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

जाप्य-ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

नवदेवों की भक्ति ही, हर लेती सब पाप।
करें यहाँ गुणगान हम, हरपल करते जाप।।

(पद्धरि छंद)

जय जय हो श्री अरहन्त देव, शत इन्द्र करें तव चरण सेव।
कर दिये घातिया कर्म नाश, करते भव्यों के हृदय वास।।1।।
हो दोष अठारह रहित आप, छ्यालीस गुणों से पूर्ण नाथ।
है समवशरण जिनवर विशाल, चरणों में झुकते हम त्रिकाल।।2।।

कर दिए अघाति कर्म चूर, हो अष्ट गुणों से आप पूर।
हे सिद्धि प्रदायक! सिद्ध प्रभु, तव गुण को हम याचें विभु।।3।।
छत्तीस गुणों के धारी जो, सब शिष्यों के उपकारी जो।
शिष्यों को शिक्षित करें नाथ, मुक्ति पथ चलते साथ-साथ।।4।।
पाठक हैं जग में ज्ञान धनी, उपदेश की वर्षा करें घणी।
पच्चीस गुणों से शोभित जो, सन्मार्ग तुम्हीं उपदेशक हो।।5।।
हैं ज्ञान ध्यान तप में प्रवीण, निज आत्म तत्त्व में सदा लीन।
अठबीस गुणों से युक्त आप, भव्यों के करते दूर ताप।।6।।
जिनधर्म अहिंसा प्यारा है, भव्यों को यही सहारा है।
जो इसकी शरण में आ जाये, वो भव से मुक्ति पा जाये।।7।।
जिन आगम देता आत्म बोध, कर देता चेतन का सुशोध।
जो भवि जिन आगम पान करे, भव रोग मिटा शिवकांत बने।।8।।
जिन चैत्य वंदना कर त्रिकाल, चैतन्यरूप से हो विशाल।
जिन मूरत निज सूरत दिखाय, लखकर भवि भव से पार जाय।।9।।
कृत्रिम अकृत्रिम जिन मंदिर, जिनमें प्रभु प्रतिमा अति सुंदर।
अन्तर बाहर सब शत्रु नाश, सिद्धालय में जा करें वास।।9।।
नवदेवों की मैं भक्ति भाव, करता मैं पूजा बड़े चाव।
अरि कर्म जीतने हेतु नाथ, नित-शीश झुकाऊँ चरण माथ।।10।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये जयमालाये महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

बड़े पुण्य से हो यहाँ, नवदेवों का दर्श।
"विमल" बुद्धि पाने प्रभु, करूँ चरण स्पर्श।।
इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपामी)।

विद्यमान बीस तीर्थंकर का अर्घ

पंच विदेह सदा ही रहते, बीस तीर्थंकर प्रभु महान,
सीमंधर युगमंधर आदि, प्यारे तीन लोक में नाम।
जल फल आठों द्रव्य सजाकर, अर्घ चढ़ाऊँ पाने धाम,
अष्टकर्म तज शिवपद पाऊँ, प्रभु पद मेरा नम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ

भवन ज्योतिषी व्यंतरवासी, कल्पदेव में कहे विमान,
तीन लोक कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्यालय को करूँ प्रणाम।
जल चंदन ले अष्ट दरब को, थाल सजाकर लाया हूँ,
दुष्ट कर्म मम शांत करो मैं, अर्घ चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिन बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री सिद्ध प्रभु का अर्घ

निर्भय! निर्मल! निराकर! हे शोक रहित! निरहंकारी,
बंधरहित! हे विश्वशांत! है तुमको धोक सदा मेरी।
जल गंधादिक अष्ट दरब से, पूजूँ मैंटो आक्रंदन,
हे विशुद्ध! हे सिद्ध! प्रभु को, शत-शत बार विनम्र नमन।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आदिनाथ का अर्घ

आदि विधाता युगपत् ज्ञाता, भविजन को तुम साता हो,
ज्ञान दिवाकर मोह प्रहारक, दर्शन ज्ञान प्रदाता हो।
करुणावारिधि तेरे चरणों, अष्ट दरब को लाया हूँ,
कर्म नाशकर मुक्ति दिलाओ, नमूँ आश करि आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ का अर्घ

धवल वर्ण हे धवल! मनोहर, धवल तुम्हारा चेतनवास,
दर्शन-ज्ञान-शक्ति-सुख नंत, तेरा ध्यान महा विश्वास।
अष्ट दरब को चरण चढ़ाकर, धवल बनूँ पाने शिवधाम,
चन्दप्रभ के चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री चन्दप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ का अर्घ

कामदेव-चक्री-तीर्थंकर, सुंदर रूप तुम्हारा है,
करुणाधारी-आनंदकारी, तेरी अंतर धारा है।
तीन लोक से वन्दनीय तुम, मेरा अर्घ करो स्वीकार,
शांतिनाथ! हे शांतिनाथ प्रदाता! तुमको वन्दूँ बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ का अर्घ

हे प्रभु! तुमने ध्यान लगाकर, जीत लिया उपसर्ग महान,
तीन लोक से वंदनीय तुम, सब प्राणी गाते गुणगान।
तेरी महिमा अद्भुत लगती, अर्घ चढ़ाऊँ लेकर नाम,
पार्श्वनाथ दुख दूर करो मम, तुमको बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ

गणधर-हलधर-चक्रगदाधर, विद्याधर पूजैं मन लाय,
दु:ख विनाशक ज्ञान प्रकाशक, वंदन करत महासुख छाय।
अर्घ चढ़ाकर करूँ प्रार्थना, अंतिम महावीर भगवान,
नाश करो मेरे अघ सारे, मेरा सौ-सौ बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चौबीसी का अर्घ

कमलासन पर शोभित होते, दर्शन ज्ञान लीन भगवान,
जो भी तेरे गुण को गाते, वे पा जाते सम्यग्ज्ञान।
चौबीसों तीर्थंकर पद में, अर्घ बनाकर लाया हूँ,
शत-शत बार विनम्र नमन कर, गुण को पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलि का अर्घ

विंध्याचल पर्वत पर तुमने, शुक्लध्यान लगाया था,
मोह नाशकर वीतरागता, पाकर ज्ञान सजाया था।
अष्टद्रव्य ले तेरे चरणों, पाने आया दर्शन-ज्ञान,
गोमटेश के युगल चरण में, शत शत बार विनम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंच बालयति का अर्घ

ब्रह्मचर्यधारी हे भगवन्! अद्भुत शक्ति अकंप महान्,
वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व जिन! महावीर को करूँ प्रणाम।
वसुविधि द्रव्य मनोहर लेकर, अर्घ चढ़ाऊँ पाने धाम,
नमन करो स्वीकार हमारा, दो मुझको निज पद विश्राम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण भावना का अर्घ

एक इन्द्री से पंचइन्द्री तक, सब प्राणी होवे कल्याण,
ज्ञान-विनय-भक्ति कर पाऊँ, अर्हत् भगवन् के गुणधाम।
दरश विशुद्धि सोलह भावन, हृदय धरूँ हे जिन! भगवान,
अर्घ समर्पित कर तीर्थङ्कर, पद को पाने करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्धि आदि षोडश कारणेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ

मेरू पर्वत-विजय-अचल, मंदर-विद्युत्माली पच नाम,
अस्सी मन्दिर मणिमय मूरत, अकृत्रिम प्यारे भगवान।
सहस्र आठ जिन छह सौ चालीस, दर्शाते जो दर्शन ज्ञान,
अर्घ चढ़ाऊँ जिन सा बनने, सबके चरणों नम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरू सम्बन्धी अशीति जिनचैत्यालयेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर द्वीप का अर्घ

हाथ सहस दो अवगाहन की, प्रतिमा हैं नन्दीश्वर द्वीप,
पद्मासन में राजित आभा, सूर्य समां, सुर को संदीप।
वसुविध अर्घ चढ़ाकर चरणों, चारों दिश पूजूँ जिनधाम,
पंच सहस छह सौ सोलह जिन, चरणों में अति नम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण धर्म का अर्घ

उत्तम क्षमा आदि दश धर्म, जग के रोग मिटाते हैं,
जो भी ऋषिवर पाते उर में, वे ईश्वर बन जाते हैं।
भव आताप मिटाने भगवन्, दश धर्मों का गान करूँ,
अर्घ चढ़ाऊँ उर में पाऊँ, नमन् सदा श्रद्धान वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित ही, जन्म रोग भव नाशक हैं,
धन्य महाधरती पर प्राणी, जो रत्नत्रय साधक हैं।

अष्ट दरब को अर्पित करके, तीन रतन को पाऊँ धाम,
रत्नत्रयधारी को निशदिन, मेरा सौ–सौ बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

सात तत्त्व छह द्रव्य प्रकाशक, तीन लोक की माता हो,
तेरी करुणा महामहिम, जग देती सबको साता हो।
तीर्थंकर ध्वनि गणधर ने सुनि, द्वादशांगमय किया बखान,
हे सरस्वती! शिवसुखदायी, अर्घ समर्पण करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ

सूरज चाँद करें नित वन्दन, तीर्थंकर के लघुनन्दन,
कुंदकुंद सा चारित जिनका, पंचम युग के हैं भगवन्।
विद्या वारिधि ज्ञान दिवाकर, चरणों अर्घ करूँ अर्पण,
गुरुवर विरागसागर पद में, शत–शत बार विनम्र नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री परम पूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विनम्रसागर जी का अर्घ

पूजन की महिमा बतलाते, भक्तामर का ज्ञान महान,
तत्त्व–द्रव्य का राज बताते, जैन धरम की हैं गुरु शान।
हो विनम्र त्रय रत्न सजाते, हो विनम्र करता सम्मान,
गुरु विनम्र पद अर्घ चढ़ाऊँ, मेरा बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्य श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मुनिवरों का अर्घ

वीतरागमय लक्ष्य बनाया, भाव सहित मुनि पद को धार,
लीन रहें निज आतम में नित, छोड़ दिये संसार विचार।
मुनिवर तीन न्यून नवकोटि, शिवपुर गामी कहे प्रधान,
अर्घ चढ़ाऊँ सब मुनियों को, शत–शत बार विनम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री त्र्यून नवकोटि मुनिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

अष्ट करम को ध्यान अग्नि से, नाश दिया पाया निज सार,
अष्टापद–सम्मेदाचल, पावापुर–चंपापुर–गिरनार।
चौबीसों निर्वाण भूमि को, अर्घ चढ़ाऊँ विनती धार,
नित प्रति वन्दूँ पावन थल को, पाने निज में निज पद सार।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भक्तिः (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा उवजुत्ता दंसणेय णाणे य।
सायार मणायारा लक्खण–मेयं तु सिद्धाणं।।1।।
मूलोत्तर पयडीणं बंधोदय–सत्त–कम्म–उम्मुक्का।
मंगल–भूदा सिद्धा अट्ठ–गुणातीद–संसारा।।2।।
अट्ठ–विहकम्म वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ–गुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा।।3।।
सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्ध–बुद्धीय लद्धि–सब्भावा।
तिहुअण सिर सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे।।4।।
गमणागमण–विमुक्के विहडिय–कम्म–पयडि संघारा।
सासह–सुह–संपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं।।5।।
जय मंगल–भूदाणं विमलाणं णाण–दंसणमयाणं।
तियलोय–सेहराणं णमो सदा सव्वसिद्धाणं।।6।।
सम्मत्त–णाण–दंसण–वीरिय–सुहमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।7।।
तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मिय सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।8।।

इच्छामि भंते! सिद्धभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण– सम्मदंसण–सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पयट्ठियाणं तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं, अतीदाणागदवट्ट माण–कालत्तयसिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अच्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

(यहाँ नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर विधान का संकल्प करें तत्पश्चात् विधान आरंभ करें।)

मंगलाचरण

दोहा

चिन्तन से चिन्ता मिटे, बने नाम से काम।
चिन्तामणि प्रभु पार्श्व को, करूँ विनम्र प्रणाम।।

विष्णुपद छंद

गुण अनन्त धारी हे जिनवर! सकल पदारथ ज्ञात।
स्वयं गुणों से पूरित होकर, हुए स्वयंभू आप।।

नभ से उन्नत गुण वल्लरियाँ, भू पर हैं विख्यात।
रत्नाकर से गहरे गुण हैं, यति मुनिगण भी गात।।

तेईसवें तीर्थंकर हो प्रभु, इस जगती के नाथ।
भवि जन के आनन्द प्रदाता, कर दो नाथ सनाथ।।

"कुमुदचन्द्र स्वामी" ने देखो, अन्तस् ज्योति जलायी।
पार्श्व चरण को हृदय बिठाकर, जिनकी महिमा गायी।।

मान कमठ का भंग हुआ था, क्रोध का हुआ अभाव।
विभाव को तज दिया चरण में, ऐसा प्रभु प्रभाव।।

आत्म शक्ति का तेज देखकर, दैत्य शक्ति भागी।
सर्व हितंकर पार्श्व चरण की, भक्ति मन जागी।।

नाथ आपकी भक्ति करके, शिव पद पाना है।
जिस घर में सुख नंत समाया, वह घर पाना है।।

गुण विधान को जो भी भविजन, त्रियोग से करते।
जन्म मरण अरु रोग शोक नश, शुद्धातम वरते।।

कल्याण मंदिर विधान प्रारम्भ

तर्ज– भारत का रहने वाला हूँ

(स्थापना)

हो कल्याणों के धाम जिनम्, गाथा मृत्युञ्जयी गाता हूँ–sss
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–sss
मेरा हृदयांगन है सूना, जिसका प्रभु एक सहारा है–sss
सच्ची भक्ति करके जिनवर, श्रद्धालय आज बुहारा है–sss
आओ हिय के सिंहासन पर–2, मैं तुमको–2 आज बिठाता हूँ–ss
पारस चरणों का चाकर हूँ, भक्ति से आज बुलाता हूँ जय हो–sss जय हो–sss

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं–महाबीजाक्षर सम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! ममहृदये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं–महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! ममहृदये अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं–महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

समता रस का बहता झरना, स्वत्मानुभूति जल प्यारा है–sss
जो जन्म जरादिक रोगत्रय, उनको पल में निरवारा है–sss
मैं रोग मिटाने हेतु नाथ–2, जल की त्रय–2 धार दिलाता हूँ–ss
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–जय हो–sss

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग–द्वेष की अग्नि में जल, दस भव कमठ ने बैर किया–sss
क्षेमङ्कर प्रभु ने साम्य भाव से, हर दम उसको क्षमा किया–sss

तुम सम शीतलता पाने हेतु–2, मैं चंदन–2 चरण चढ़ाता हूँ–ss
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ– जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय निधि को धारण कर, निज आत्म तत्त्व का भान किया–ss
जग का नश्वर वैभव तजकर, फिर अविनश्वर पद प्राप्त किया–ss
अनुपम शाश्वत सुख पाने हेतु–2, अक्षत अखण्ड–2 मैं लाता हूँ–sss
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आत्म ब्रह्म में रम करके, शीलेश्वर नाथ कहाते हो–sss
जग में रहकर के भी हे प्रभु, जग से न्यारे हो जाते हो–sss
उस शुद्ध शील व्रत पाने को–2, मैं चनु–चुन–2 सुमन चढ़ाता हूँ–sss
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा वेदनी ने देखो, सारे जग को डस डाला है–sss
प्रभु ने अभेद रत्नत्रय पा, उस क्षुधा पे डाला ताला है–sss
चारों संज्ञा के नाश हेतु–2 नेवैद्य–2 चरण में चढ़ाता हूँ–sss
संकट मोचन तारण हारे–2 चिंतामणि पारस ध्याता हूँ– जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो अपूर्व दीपक स्वामी, जो प्रलय काल न बुझ पाये–ss
निज केवल ज्ञान दीप से जिनवर, त्रय जग को हैं प्रकटाये–ss
मैं पूर्णज्ञान ज्योति पाने–2, दीपक का–2 थाल सजाता हूँ–ss
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुए, तब सम्यक् था पुरुषार्थ किया–ऽऽऽ
प्रभु अष्ट कर्म को नष्ट किया, क्षण में अष्टम् भू प्राप्त किया–ऽऽऽ
मैं अष्ट कर्म के नाश हेतु–2, चरणों में–2 धूप चढ़ाता हूँ–ऽऽऽ
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय के तरु से देखो, शिवफल को प्रभु ने पाया था–ऽऽऽ
कृतकृत्य हुए निज में स्वामिन्, नहिं कोई फल को चाहा था–ऽऽऽ
मैं मोक्ष महाफल हेतु प्रभु–2, फल की शुभ–2 भेंट चढ़ाता हूँ–ऽऽऽ
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित गुण के धारी जिनवर, तव गुण पाने का भाव बना–ऽऽऽ
तुम हो अनर्घ्य पद धारी जिन, तव चरणों मन का कमल खिला–ऽऽऽ
तुम सम अनर्घ पद पाने को–2, यह दिव्य–2अर्घ्य मैं चढ़ाता हूँ–ऽऽऽ
संकट मोचन तारण हारे–2, चिंतामणि पारस ध्याता हूँ–जय हो–2

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ

छन्द–सखी

वैशाख कृष्ण द्वितीया थी, नगरी भी स्वर्ण समां थी ।
प्रभु प्राणत स्वर्ग विहाय, वामा कुक्षि में समाये ।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीया गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशी प्यारी, हुई जन–जन को सुखकारी ।
प्रभु पार्श्व ने जनम लिया था, सुरपति गिरि न्हवन किया था।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशी आयी, प्रभु बारह भावन भायी ।
फिर पंच महाव्रत धारा, मुक्ति का दिया इशारा ।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत चतुर्थी आयी, प्रभु विमलज्ञान प्रकटायी ।
हुई समवशरण की रचना, सुर नर पशु सुनते वचना ।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तम को, किया ध्वंस सर्व कर्मन को ।
गिरि स्वर्णभद्र शुभ ध्यान, करूँ कोटि कोटि प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

घाति–अघाति क्षय किये, पार्श्वनाथ भगवान।
तव गुण की जय मालिका, करूँ भक्ति से गान।।

तर्ज–हे दीन बंधु...

सुर नर असुर अरु योगिजन प्रभु आपको ध्याते।
यशगान गा के पार्श्व प्रभु महिमा बताते।।

जो ध्यान करे आपका प्रभु पास बिठाते।
रहता जो शरण आपकी संकट को मिटाते।।

प्रभु आपने जड़ देह व निज रूप को जाना।
तजकर के मोह आपने शुद्धात्म पहिचाना।।

जब आत्मध्यान में हुए तल्लीन पार्श्व जिन।
तब पूर्व भव के बैरी ने ली परीक्षा कठिन।।

प्रभु आप पै बरसाये ओले-शोले अरु पानी।
आलोक तपस्या के आगे झुक गया मानी।।

दश भव से जिसने बैर किया पीड़ा दी अपार।
वह हार मान करके झुका चरणों बारम्बार।।

हे नाथ! निर्विकल्प रूप आपने पाया।
प्रभु आप जैसे भाव हों मन मेरे समाया।।

तुम सर्व शक्ति धारी हो प्रभु मुझको शक्ति दो।
भक्ति वशात् माँगता हूँ मुझको मुक्ति दो।।

तन मन वचन से आपको जो पूजते सदा।
वे भक्त इस जगत में फलते-फूलते सदा।।

जिस पथ पै नाथ चल दिये शिवपुर को है जाता।
मैं भी चलूँ इस पथ पै नाथ मुक्ति प्रदाता।।

दोहा- पार्श्व चरण की जो सदा, भविजन पूज रचें।
भक्ति भाव जयमाल गा, चरणों अर्घ्य धरें।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमालाये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता- हे पार्श्व जिनन्दा, गुण आनन्दा, सारे संकट दूर करो।
हो "विनम्र" ध्याऊँ, पूज रचाऊँ, "विमल" मेरे परिणाम करो।।

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

पूर्णार्घ

1. गुण के मंदिर, ज्ञान समंदर, पाप विनाशक हो प्रभुवर।
भव पार लगाते, भविजन गाते, अर्घ चढ़ाते भक्ति कर।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. सुरगुरु भी गाते, पार न पाते, गुण समुद्र सी काया है।
मद कमठ का चूरा, बना वो कूरा, चरणों अर्घ चढ़ाया है।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. हो दिन में अन्धा, उलूक नंदा, कैसे रवि गुणगान करे।
मैं अल्पबुद्धि हूँ, आप भक्त हूँ, चरण पूज गुण अर्घ धरें।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. प्रभु मोह मिटाया, अनुभव पाया, कौन आप गुण गिन सकता।
है कौन? सिन्धु के, रत्न गिने जो, अर्घ चढ़ा मस्तक नमता।।

ॐ ह्रीं गहन गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

5. प्रभु गुण अनन्त हैं, मन्द बुद्धि है, बालक बन गुणगान करूँ।
है उदधि विशाल, लघु कर ताल, अर्घ चढ़ा प्रभु ध्यान धरूँ।।

ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. योगी जन हारे, थके विचारे, मैं अबोध असमर्थ रहा।
गा सकूँ नहीं गुण, पंछी सी धुन, चरणों में यह अर्घ्य चढ़ा।।

ॐ ह्रीं अगम्यगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

7. प्रभु नाम मात्र ही, हरे ताप भी, अर्घ्य चढ़ा कान्ति लेता।
चलते पथिकों को, तीव्र तपन हो,सरवर सी शान्ति देता।।
ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. जहँ मयूर आते, भुजंग भागें, बन्धन ढीले पड़ जाते।
प्रभु उर में आते, कर्म भगाते, अर्घ चढ़ा मुक्ति पाते।।
ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. पारस दर्शन से, अघ हैं टलते, कर्मचोर भग जाते हैं।
प्रभु मेरे स्वामी, हो जगनामी, अर्घ चढ़ा सुख पाते हैं।।
ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्गविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. ज्यों मशक तैरती,हवा तिराती, बात समझ में आ जाती।
प्रभु हृदय में आते, भव से तिराते, भक्ती अर्घ चढ़ा जाती।।
ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. रतिपति को जीता, आतम नेता, बाल ब्रह्म पद धार लिया।
मैं भक्ति बढ़ाऊँ, प्रभु गुण गाऊँ, श्रद्धा से यह अर्घ दिया।।
ॐ ह्रीं अनङ्गमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. गुरुवर प्रभुवर हैं, धार हृदय में, भवि भवदधि तर जाते हैं।
महिमा प्रभुवर की, हल्का करती, भक्ति से अर्घ चढ़ाते हैं।।
ॐ ह्रीं अतिशय गुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. कर दिया क्रोध क्षय, कर्मों पर जय, ज्यों हिम ने वन जला दिया।
अचरज है भारी, हे त्रिपुरारि! चरणों अर्घ को चढ़ा दिया।।
ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. ज्यों कमल कर्णिका, बीज कमल का, उत्पत्ति स्थान कहा।
मुनि हृदय कर्णिका, पवित्र आत्मा, ध्याते हैं हम अर्घ चढ़ा।।
ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. पाषाण अग्नि जा, तज के कालिमा, स्वर्णिमता को पाता है।
प्रभु ध्याये आत्मा, पा शिवात्मा, अर्घ चढ़ा सिर नाता है।।
ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. जिस तन से ध्याता, उसे नशाता, भक्त विदेही बन जाता।
जिस जगह सन्त हों, कष्ट अन्त हों, सुन ये अर्घ चढ़ा जाता।।
ॐ ह्रीं देहदेहि कलह निवारकायं क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. जल अमृत माना, जहर नशाना, श्रद्धा का यह काम रहा।
प्रभु अभेद बुद्धि, देती है सिद्धि, भक्त अर्घ्य यह चढ़ा रहा।।
ॐ ह्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18. प्रभु को हरि माने, नहिं पहिचाने, है अज्ञान दशा भारी।
हो पाण्डु रोग जब, दिखे पीत सब, भक्ति से अर्घ चढ़ा भाई।।
ॐ ह्रीं सर्वजनवन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

19. प्रभु संगति पाया, शोक भगाया, तरु अशोक कहलाया है।
विधिमल को धोता, सुखमय होता, भवि ने अर्घ चढ़ाया है।।
ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

20. पुष्पों की वर्षा, मन है हर्षा, ऊर्ध्व मुखी सुर बरसाते।
भवि चरणों में आते, कर्म गिराते, अर्घ चढ़ा हम सुख पाते।।
ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

21. प्रभु नि:सृत वाणी, पीकर प्राणी, अजर अमर पद पाते हैं।
आनन्दित ऋषिगण, पाने निज पद, चरणों अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22. नीचे ऊपर हो, चमर ढुरें जो, भव्यों को समझाते हैं।
प्रभु चरण जो झुकता, मुक्ति वरता, झुक-झुक अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं सुरचामर विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23. मेरु स्वर्णमय, मेघ कृष्णमय, देख मयूरा नृत्य करें।
स्वर्णिम सिंहासन, प्रभु श्यामल तन, भक्त भक्ति कर अर्घ धरें।।

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24. द्यति सहस्र सूर्य भी, भामण्डल की, आप सन्निधि से पायी।
भवि पास में आयें, भव दिख जायें, अर्घ चढ़ा निज सुध पायी।।

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

25. आकाश गुँजाती, दुन्दुभि पाती*, सुरगण भक्त बुलाते हैं।
आलस को छोड़ो, प्रीति को जोड़ो, भविजन अर्घ्य चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि नादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

26. त्रय छत्र सुशोभित, शशि सम मोहित, तारे सम मुक्ता झालर।
त्रैलोक्य प्रकाशी, विजय दिखादी, अर्घ चढ़ायें गुण गाकर।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयशोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. प्रभु समवशरण में, तीन कोट हैं, भूमि मणियों की प्यारी।
वैभव बतलाते, यश को गाते, अर्घ चढ़ाते नर नारी।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*पत्र

28. सुरगण नमते जब, मुकुटों को तज, माला प्रभु पदवास करे।
प्रभु श्रेष्ठ समागम, यही जान हम, चरणों में पूर्णार्घ धरें।।

ॐ ह्रीं भक्तजननोन्नतिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

29. ज्यों अधोमुखी घट, विमुख भी होकर, सरिता पार करा देता।
त्यों कर्म विदारक, भवि के तारक, भक्त अर्घ चरणों देता।।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्न भवतारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

30. निर अक्षर ज्ञानी, दरिद्र स्वामी, असहाय जगत्प्रकाशी हो।
है विरोधाभास, स्तुति खास, पूज रची सुखधामी हो।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

31. धूलि अरु पत्थर, बरसा सिर पर, व्यर्थ कमठ उपसर्ग किया।
प्रभु तन को इक क्षण, छुआ नहीं कण, चरणों में झुक्कर अर्घ दिया।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रवजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

32. मेघा गर्जाए, बिजली गिराए, मूसलधार गिरा पानी।
प्रभु ध्यान मग्न थे, डिगे नहीं थे, अर्घ चढ़ाता अभिमानी।।

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

33. नर कपाल माला, पिशाच काला, मुख से आग बहे भारी।
प्रभु रहे ध्यान में, निज स्थान में, अर्घ चढ़ाएँ नर नारी।।

ॐ ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रव जयनशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

34. वे धन्य धरा पर, पुलकित होकर, सन्ध्या त्रय वन्दन करते।
शुभ अर्घ बनाकर, शीश झुकाकर, प्रभु चरणों अर्पण करते।।

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

35. प्रभु वाणी मिली नहिं, नाम सुना नहिं, अत: विपद् नागिन घेरे।
हो प्रभु समीपता, नशे आपदा, अर्घ चढ़ा नशूँ भव फेरे।।

ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

36. नहिं पूज रचायी, पूरब भाई, इच्छित फल देने वाली।
अतएव दुखी हूँ, पार्श्व जजूँ हूँ, अर्घ चढ़ाऊँ भर थाली।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

37. मोहान्ध में पड़कर, श्रद्धा भरकर, प्रभु दर्शन नहिं किया कभी।
नित कर्म सतायें, सुख हम चाहें, चरणों अर्घ चढ़ाएँ अभी।।

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

38. प्रभु नाम को गाया, पूज रचाया, किन्तु हृदय में नहिं लाया।
यह भाव शून्य कृत, नहीं फले अब, भाव से अर्घ बना लाया।।

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनमाध्स्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

39. हे दुख नाशक जिन! नम्र निवेदन, सुन मम कष्ट मिटा देना।
हे दयाशील जिन! अर्घ है अर्पन, अपना नाथ बना लेना।।

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

40. पद पंकज पाये, गुण ना गाये, भाग्यहीन ही बना रहा।
कर्मों से हारा, प्रभु सहारा, चरणों अर्घ मैं चढ़ा रहा।।

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक पदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

41. भव सागर तारक, भव उद्धारक, दु:ख सिन्धु से पार करो।
यह अर्घ्य समर्पित, करो सुरक्षित, प्रभुवर मम उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

42. मुक्ती तक भगवन्, शरण मिले त्वम्, यही प्रार्थना करता हूँ।
हे पारस प्रभुवर,! अष्ट द्रव्य भर, अर्घ समर्पित करता हूँ।।

ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

43. जो भविजन ध्याते, भक्ति रचाते, रोम रोम पुलकित करते।
वे चन्द्रकांति सम, सुख जो अनुपम, अर्घ चढ़ा मुक्ति वरते।।

ॐ ह्रीं जन्म मृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

44. जो कुमुद से विकसित, भवि आनन्दित, होकर तव गुणगान करें।
वे अर्घ चढ़ाकर, स्वर्ग को पाकर, क्षिप्र: शिवरमणी को वरें।।

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ वीतराग शासन जयवंत हो ॥

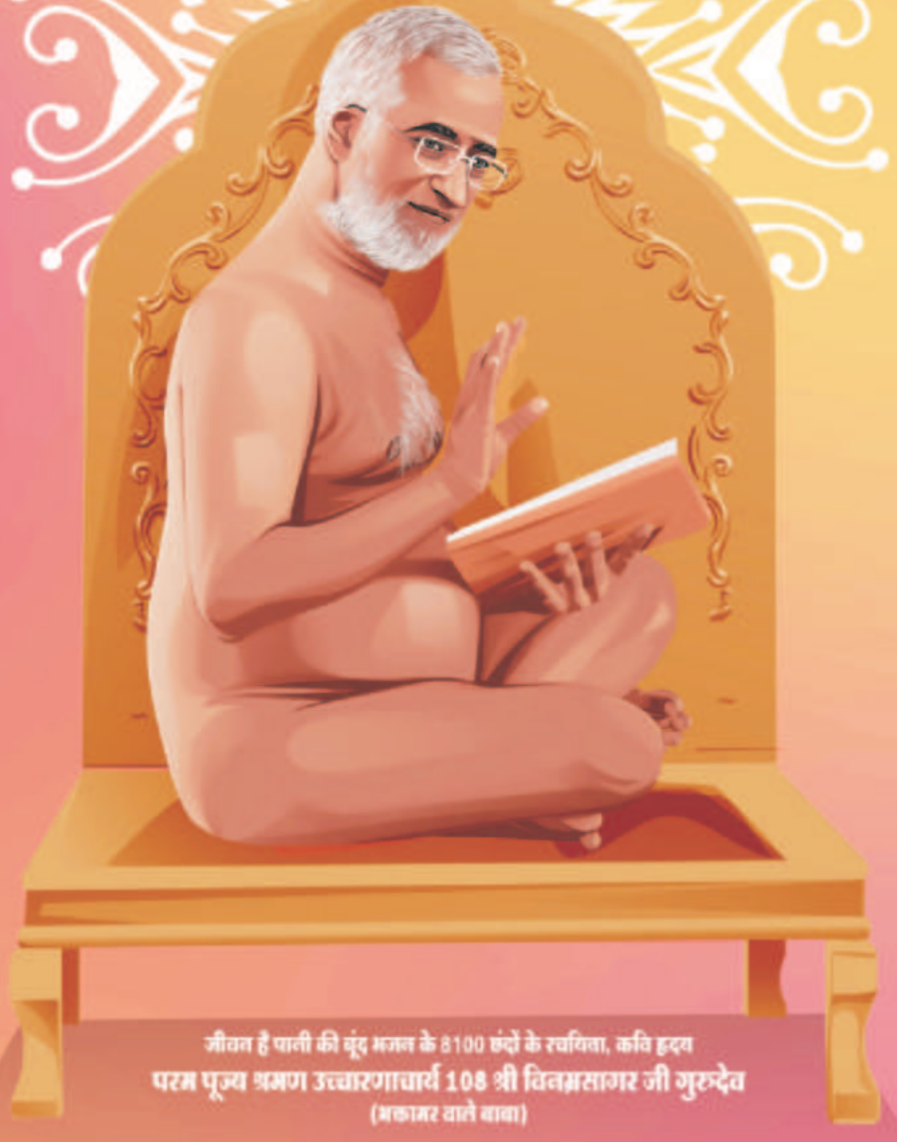

जीवन है पानी की बूंद भजन के 8100 छंदों के रचयिता, कवि हृदय
परम पूज्य श्रमण उच्चारणाचार्य 108 श्री वितमसागर जी गुरुदेव
(भक्तामर वाले बाबा)

श्लोक नं. 1

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

कल्याणमंदिर – मुदार – मवद्यभेदि,
भीताभय प्रद – मनिंदित – मंघ्रि पद्मम्।
संसार सागर निमज्ज – दशेषजन्तु,
पोतायमान–मभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

गीतिका छन्द

कल्याणों के महान मंदिर, करते सारे पाप विनष्ट,
अभय शुभम् पद दे भव्यों को, भव भय दूर करें सब कष्ट।
भवि जीवों को पोत समां हैं, जिनवर के द्वय चरण कमल,
अति आसक्त भक्ति में होकर, नमूँ करूँ परिणाम विमल।

जिनान् सर्वान् जितारातीन्, मुनि गण सुर नर सेवितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानोदय छंद

1. कल्याणों के धाम जिनेश्वर, कल्मष भवि का धोते हो ।
चरण शरण जो भी भवि पाते, उसको निज सम करते हो ।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. याद जिनेश्वर जो भवि कीनी, दया उसी पर बरसायी ।
झोली लेकर खाली आया, फिर भी शीघ्र भरी पायी ।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. णमोकार में नमस्कार कर, पारस प्रभु को ध्याता हूँ ।
अर्हत् पद का अभिलाषी हूँ, प्रभु के गुण को गाता हूँ ।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. मंत्रों में यह महामंत्र है, अविनाशी पद का दाता ।
महामनीषी बनता है वह, इसी मंत्र को जो ध्याता ।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. दिव्य दया का भाव आप में, करुणा के भण्डार महां।
जलते नाग नागिनी को प्रभु, दिया आप नवकार यहाँ ।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रत्नत्रय के महारतन से, जीवन आप सजाया है ।
तीन लोक के आभूषण बन, सब जग को चमकाया है ।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाबीज युक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. मुक्ति पथ पर कदम बढ़ाया, मुञ्च कषायें कर डालीं ।
लुञ्चन किया पंच मुष्टि से, जग को दी मुक्ति ताली ।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दान अभय जो दिया आपने, नाग नागिनी मंत्र सुना ।
सम्यक् बोध दिलाकर उनको , मरण यहाँ पर धन्य बना ।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. रवि करता है जगत प्रकाशित, अन्तर तम को नहिं हरता ।
पार्श्व प्रभु की दिव्य कान्ति से, जीवन सुन्दरतम् बनता ।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. मन को मना लिया प्रभु तुमने, ब्रह्मचर्य को धार लिया ।
अश्वसेन को आश्वासन दे, वन की ओर विहार किया।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वमन कषायों का करके प्रभु, वरी आप मुक्ति रानी ।
धन्य धन्य चारित्र आपका, नमन करूँ त्रिभुवन स्वामी ।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. वाद्य बजाये इन्द्रों ने आ, नृत्य रचाये आँगन में ।
जन्म लिया जब पार्श्व प्रभु ने, हर्ष हुआ हृदयाँगन में ।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भेद ज्ञान की पैनी छैनी, जब अन्तस् में डाली थी ।
द्रव्य भाव नो कर्मों की भी, कटती देखी जाली थी ।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. दिखा निजातम महका स्वातम, केवल ज्योती प्रकट हुई ।
भवि जीवों को मार्ग दिखाया, मुक्ति की विधि सरल हुई ।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भीषण ज्वाला बरसायी जब, कंकर पत्थर जल के संग ।
आत्म सरोवर में निमग्न रह, मान कमठ कीना तब भंग ।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तार दिया उसको भी प्रभु ने, दश भव जिसने बैर किया ।
इक तरफा वह बैर रहा तब, कमठ ने चरणों धरा जिया ।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. भविजन के भय नाशक हो प्रभु, भव का भंजन करते हो।
भक्त तुम्हारे दर जो आये, उसका रंजन करते हो ॥17॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यह भव कानन महा भयावन, प्रभु तुम ही रखवाले हो।
संकट मोचन तारण हारे, पार्श्व प्रभु मतवाले हो ॥18॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. प्रतिमा की महिमा अति सुन्दर, गोपाचल के आँचल में।
भक्त यहाँ भक्ति करता है, प्रभु बसे सिद्धालय में ॥19॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दश अतिशय धारी जन्मत ही, दश ही पाये केवलज्ञान।
अतिशय चौदह देवोंकृत थे, अनन्त चतुष्टय प्रभु की शान ॥20॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मनमानी करता क्यों चेतन, पर को अपना क्यों माने।
प्रभुवर हैं समझाते तुझको, सच्चा सुख क्यों न जाने ॥21॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. निन्दनीय बन फिरे जगत में, अब आनन्दित तुम हो लो।
गुरुवर का उपदेश धार हिय, पार्श्व प्रभु की जय बोलो ॥22॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दिव्य द्रव्य लेकर सुरेन्द्र गण, समवशरण में आये आज।
दिव्य अर्चना करते मिल सब, जिनवर हैं जग के सरताज ॥23॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तमहर उज्ज्वल तेज आपका, तम का कीना काम तमाम।
ज्योति पुंज हे ज्योतिर्मय प्रभु! आन बसो मन में अभिराम ॥24॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. महामहिम हे महिमा धारी! तव गुण का कोइ पार नहीं।
बृहस्पति भी तव गुण गाकर, पाया गुण का सार यहीं ॥25॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. जिनाङ्घ्रि[*1] द्वय में आन पड़ा हूँ, अब तो मम उद्धार करो।
भवाब्धि में बहु गोते खाता, प्रभु मुझको भव पार करो ॥26॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ङ्घ्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पर परिणति में रमकर हमने, कष्ट अनेकों पाये हैं।
निज परिणति नहिं पायी अब तक, जग में बहु भरमाये हैं ॥27॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. पद्मं पीतवर्ण के सुन्दर, पद पद्मों में रचाते हैं।
दो सौ पच्चिस स्वर्णिम आभा, भव्यों के मन भाते हैं ॥28॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. संबंधों में पड़कर भगवन्, निर्बन्धन को नहिं जाना।
भव बन्धन में फँसकर मैंने, लख चौरासी को छाना ॥29॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सार वस्तु का तत्त्व कहाता, उत्तम मोक्ष तत्त्व माना।
नाथ आपने प्राप्त कर लिया, रत्नत्रय का ले बाना ॥30॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. रमे आत्म में जब जिनवर जी, थमे कर्म सब दर पर ही।
झड़े कर्म जब तव आतम से, बने स्वयं तब जिनवर जी ॥31॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सागर मध्य पतन जब होवे, प्राणी चीखे चिल्लाये।
नाथ आपकी सन्निधि पाकर, वह भवदधि से तिर जाये ॥32॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. गगन गमन करने के हेतु, आतम में प्रभु मगन हुए।
नमन किया जिनने चरणों में, उनके जीवन चमन हुए ॥33॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रचना कीनी समवशरण की, शिला नीलमणि की सुन्दर।
चतुरंगुल ऊपर थे जिनवर, कमलासन शोभा मनहर ॥34॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[*1] चरण

35. निज आतम का शोध किया जब, बोध कर लिया प्रभुवर ने।
क्रोध किया था कमठ ने उन पर, बैर बाँध कर भव भव में ।।35।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. महातपस्वी महामनस्वी, महाप्रतापी थे युवराज ।
महाव्रतों को धारण करके, पारस बन बैठे सरताज ।।36।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. कज्ज रहा नहिं कुछ भी बाकी, कृतकृत्य हैं आप जिनेश।
करता भक्ति नाथ आपकी, तुम सम बनने को परमेश ।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दत्तभोजी* का अर्थ है श्रावक, श्रद्धा युत जो क्रिया करे।
हो विवेक युत रत्नत्रय पा, सम्यक् ढंग से मरण करे ।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. शेष न कुछ भी रहा पदारथ, जिसको आप न जान सकें।
केवलज्ञान रूप दर्पण में, लोक चराचर हैं झलकें ।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. षड् द्रव्यों अरु नव पदार्थ को, युगपत् देखें आप जिनम्।
लीन सदा रहते हैं निज में, स्तुति कर हम करें नमन् ।।40।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. जंग लगी हो यदि लोहे में, पारसमणि नहिं करता काम।
राग द्वेष की जंग छुड़ाने, आया पारस प्रभु के धाम ।।41।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तुलना योग्य नहीं हो भगवन्, अतुलनीय तुम हो जग में।
शब्द कथन के योग्य नहीं है, गुण अनन्त राजे तुममें ।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पोषण कीना आत्म तत्त्व का, शुभ दिन पौष एकादशि था।
पंच मुष्टि लोचन कर लीना, शोषण किया कर्म का था ।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*श्रावक

44. ताप मिटाया तापस ने निज, सुनकर प्रभु के दिव्य वचन।
मिली शरण जब जिनवर की तो, उसने पाया सद्दर्शन ।।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. यत्र तत्र मैं भटका जिनवर, ढूँढ़ा सौख्य जगत्त्रय में।
किया योग त्रय को एकत्रित, आप मिल गये क्षण भर में ।।45।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. जग में नाम मात वामा का, किया कुक्षि को धन्य जिनम्।
अश्वसेन का ह्रस्व हुआ जग, किया आपने धन्य जनम् ।।46।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नहिं होती टिमकार नयन में, जब जिनवर छवि लखते हैं।
मन मन्दिर की हृदय वेदि पर, हे प्रभु! आप हि बसते हैं ।।47।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. ममतामयी माता वामा ने, पुत्र रत्न को जन्म दिया ।
रत्नत्रय धारण कर जिसने, सब जग को सन्मार्ग दिया ।।48।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. भिन्न भिन्न हैं जड़ पदार्थ सब, भिन्न जगत्त्रय है मुझसे।
निज में अनुभव करके जिनवर, आप बताया है सबसे ।।49।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नर सुर नमते आप चरण में, झुकते नाग इन्द्र भी हैं ।
नंत गुणों के धारी जिनवर, नाम निरन्तर भव्य जपें ।।50।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. गम्य न राहू से होते हो, नहिं बादल से ढकते हो ।
गम्य नहीं प्रभु छद्मस्थों से, दिव्य ज्ञान से दिखते हो ।।51।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. जित इन्द्रिय हो गये जिनेश्वर, कमठ जीत नहिं पाया था।
विफल देखकर निज विद्या को, जिन चरणों में आया था ।।52।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नेक राह दिखलायी प्रभु ने, उपसर्गों को सहने की ।
सहन शक्ति पगडंडी बन गई, मुक्ति पथ के पथिकों की ।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नश्वर तन को छोड़ यहाँ पर, चेतन तन को प्राप्त किया ।
चिदानन्द अमृत सुख पाकर, भवि जीवों को बोध दिया ।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रहा न कोई शत्रु भू पर, सबको मित्र बनाया था ।
दश भव जिसने बैर किया वह, कमठ चरण में आया था ।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रहस्य आपकी समता का प्रभु, कोई समझ न पाया था ।
नंत चतुष्टय ने तब तुममें, अपना धाम बनाया था ।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

गुण के मंदिर, ज्ञान समंदर, पाप विनाशक हो प्रभुवर।
भव पार लगाते, भविजन गाते, अर्घ चढ़ाते भक्ति कर।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठकज्जसिद्धि पराणं जिणाणं ।

श्लोक नं. 2

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

यस्य स्वयं सुरगुरु – र्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत–मति र्न विभु र्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ – स्मय–धूमकेतोस्–
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

गीतिका–छन्द

महागुणी प्रभु! गरिमा सागर! चिन्मय पार्श्वनाथ भगवान,
मान कमठ का भस्म करन को, अग्नि समां है जिनका ध्यान।
सुरुगुरु जिनकी थुति गाने में, सक्षम नहीं करे बहुमान,
अचरज है हम अल्पबुद्धि से, करते हैं उनके गुणगान।।

अवधिज्ञान संयुक्तान्, जिनान् कर्म रिपु घातकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं नमो अवधि जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रेखता छंद-(तुम्हारे दर्श बिन) पुनः दर्शन-2

1. यति अनगार भी करते, हृदय में ध्यान जिनवर का ।
क्षणिक में कर्म को नशते, सार पाते निजातम का ।।57।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. यस्य करता यहाँ भक्ति, पूर्ण श्रद्धा से भर कर जो ।
तस्य वरता यहाँ मुक्ति, प्राप्त करता अमरता को ।।58।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. स्व शक्ति भूल कर हिरणी, शेर के पास आ जाती ।
प्रभु पारस के भक्तों को, भक्ति की रीति सिखलाती ।।59।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. स्वयं को लख स्वयं में ही, स्वयं का सार पाता है ।
भवि पारस को पाकर के, भवोदधि पार जाता है ।।60।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. सुमेरू है यहाँ ऊँचा, लाख योजन का बतलाया ।
सुरेन्द्रों ने वहाँ जाकर, प्रभु का न्हवन करवाया ।।61।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रहो मेरे लघु हिय में, हमेशा नाथ यह चाहूँ ।
न दौलत को यहाँ चाहूँ, न शौहरत को यहाँ चाहूँ ।।62।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. गुरु बिन ज्ञान नहिं होवे, गुरु बिन ध्यान नहिं होवे ।
शुरू जीवन नहीं होवे, गुरु बिन मुक्ति नहिं होवे ।।63।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, महेश्वर भी गुरुवर हैं ।
सभी की कल्पना पूरें*1, गुरुवर वो तरूवर हैं ।।64।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. गणों के हो प्रभूनायक, गुणों के आप सागर हो ।
एकादश गणधरों की भी, भरते थे आप गागर को ।।65।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रिश्ता है आपसे मेरा, मैं सेवक आप स्वामी हो ।
बना लो आपके जैसा, जगत में आप नामी हो ।।66।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. माम् रक्षा करो जिनवर, हो त्राता आप जगती के ।
शरण चरणों की अब दे दो, विधाता आप भक्ति के ।।67।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "माम्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. बुराई पर भलाई की, जीत होती हमेशा ही ।
कमठ मरुभूति ने इसको, दिखाया दश भवों तक भी ।।68।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. राग अरु द्वेष ने जग में, जाल अपना सजाया है ।
भोले अज्ञानी जीवों ने, इसे अपना बनाया है ।।69।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. अम्बुराशेः*2 की बूँदों को, कौन निज ज्ञान से गिनता ।
नंत गुण आप में राजित, वचन से कौन गा सकता ।।70।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शेः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. आपका स्तोत्र हे भगवन्!, सभी भक्तों का मन हरता ।
भक्ति करता चरण द्वय की, भवोदधि पार वो करता ।।71।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. स्वतंत्रं भाव मन भाया, जगत परतंत्र की माया ।
भविक को आप बतलाया, मुक्ति का मार्ग दिखलाया ।।72।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*1 पूर्ण करें *2 समुद्र की

17. सुहागन सी बनी धरती, पार्श्व प्रभु जन्म लीना जब ।
शची बालक को ले आयी, इन्द्र अभिषेक कीना तब ।।73।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. सुविस्तारी दया जग में, धर्म का मर्म समझाया ।
बचाया नाग-नागिन को, मंत्र कह स्वर्ग पहुँचाया ।।74।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "विस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तृप्त हो जाते हैं प्राणी, सुनें प्रभु पार्श्व की वाणी ।
अठारह सात सौ भाषा, में खिरती जगत कल्याणी ।।75।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तपन लगती उन्हें तप में, जो मन को रोध* न पायें ।
प्रभु पारस की तप महिमा, यहाँ तीनों भुवन गायें ।।76।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मनाया मात पितु को था, बताया राज मन का था ।
हटाया राग को दिल से, धरा वैराग्य वन में जा ।।77।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तिर्यञ्चादिक गति त्रय के, प्राणी चरणों में आते हैं ।
दर्श पा वचन सुन करके, अहो! सम्यक्त्व पाते हैं ।।78।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तिर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. न बढ़ते केश अरु नख हैं, पूर्ण जब ज्ञान हो जाता ।
पूर्व उत्तर दिशा में हों, चतुर्दिश मुख है दिख जाता ।।79।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विकार भी नहीं तुम में, विषाद भी नहीं तुममें ।
विराग से लबालब हो, वीतरागी बने जग में ।।80।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. विभुर्विधि बन्ध से मुक्त, ज्ञान धन से सदा युक्त ।
चरण रज को करे वंदन, कि आठों याम ये भक्त ।।81।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भुर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*निरोध

26. विरद अपना निहारा था, कमठ को भी उबारा था ।
जो आया आपकी शरणा, उसका संसार टारा था ।।82।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धाम अपना बनाया है, गिरि सम्मेद जाकर के ।
करोड़ों भव्य करते हैं, चरण वंदन भी आकर के ।।83।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तुंग धनु सहस्र पच*1 ऊपर, गगन में नाथ राजे हैं ।
बुलाने भव्य जीवों को, देव दुन्दुभि बजाते हैं ।।84।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तीर्थं कर्ता तुम्हीं भगवन्, पीर हर्ता तुम्हीं भगवन् ।
धीर धरता तुम्हीं भगवन्, शीर*2 भरता तुम्हीं भगवन् ।।85।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तीर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. प्रभु तीर्थेश हो जग में, तुम्हीं कीर्तेश हो जग में ।
हितेशी हो भविक जन के, तुम्हीं जीतेश हो जग में ।।86।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. ऐश्वर्य आपका जिनवर, जगत्त्रय में अनूपम था ।
देशना के समय प्रभुवर, समोशर्ण*3 भी अनूठा था ।।87।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रहूँ चरणों में हर दम ही, यही मन भावना करता ।
करूँ चरणों की भक्ति भी, प्राप्त कर लूँ मैं शाश्वतता ।।88।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. अस्य अरु कस्य करते ही, बीते हैं जन्म बहुतेरे*4 ।
निजातम को न पा पाया, खड़ा हूँ द्वार पर तेरे ।।89।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कठिन था मार्ग मुक्ति का, युक्ति पारस ने बतलायी ।
चले प्रभु नेता बन करके, राह भक्तों को दिखलायी ।।90।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*1पंच *2शान्ति *3समवशरण *4बहुत से

35. मदन के आप हो जेता, मुक्ति मारग के हो नेता ।
बाल ब्रह्मचारी जिनवर जी, आप भव्यों के हो त्रेता ।।91।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. ठगा माया ने पग-पग पर, जाल अपना बिछा करके ।
उसी माया को ठग डाला, निजातम से सलाह करके ।।92।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. रस्म ऐसी निभाओ अब, जगत की जो मिशाल हो ।
भक्ति ऐसी सिखाओ सब, सतत् चरणों में भाल हो ।।93।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यति अनगार भी प्रतिपल, ध्यान पारस का करते हैं ।
बनें हम आप जैसा ही, चरण का स्पर्श करते हैं ।।94।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. धूम अरु बाति के बिन ही, जगत्त्रय को प्रकाशा है ।
आपके ज्ञान केवल में, चराचर विश्व भासा है ।।95।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मत्त होता यहाँ प्राणी, मोह मदिरा को पीकरके ।
गँवाता जन्म सुन्दर सा, प्रेम के भ्रम में जीकरके ।।96।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. केलि करते हैं नित मुनिगण, निजातम रूप को लख कर ।
त्रिकाली शुद्ध होते हैं, ध्यान में करम को दह कर ।।97।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तोड़े सब मोह के बन्धन, जोड़ निर्बन्ध से नाता ।
हटा दी जग असाता सब, अनूपम पायी है साता ।।98।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्तवन करके बृहस्पति ने, सहस्रों मुख किये निर्मल ।
प्रभु पारस सा बनने का, किया उद्यम यहाँ प्रतिपल ।।99।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्यात् अस्ति स्यात् नास्ति, आदि भंग सात बतलाये ।
दिव्यध्वनि आपकी सुनकर, गणीश्वर ने हैं समझाये ।।100।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. हटायें पीर भक्तों की, धराये धीर भव्यों को ।
वरे शमशीर इस जग में, कहाये वीर जग में वो ।।101।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मेरा इक काम हो प्रभुवर, तेरा ही नाम लूँ प्रतिपल ।
हो आठों याम में जिनवर, प्राण निकलें आज या कल ।।102।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. षट्पदी घूमता ज्यों है, सुमन रस चूमता ज्यों है ।
भक्त बन मैं भी घूमूँगा, प्रभुवर चरण चूमूँगा ।।103।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. किनारा ढूँढ़ती कश्ती, करी भव भव यहाँ मस्ती ।
मिली जिनवर की अब भक्ति, दिलायेगी यही मुक्ति ।।104।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लगाई है लगन चरणों, प्रभु पारस को पाने की ।
गलन कर्मों को करके ही, प्रभुवर में समाने की ।।105।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. संकटों ने मुझे घेरा, पाप और पुण्य का डेरा ।
छुड़ाओ भव का अब फेरा, भक्त दर पर खड़ा तेरा ।।106।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. स्तवन मैं करूँ कैसे, न बुद्धि मुझमें है भगवन् ।
हृदय श्रद्धा से भर लाया, बसो मेरे हृदय भगवन् ।।107।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वक्त पर काम आये जो, वही बन्धु कहाता है ।
वन्दना करके जिनवर की, वही भव पार जाता है ।।108।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नंद॑ वन सा लगे सुन्दर, चरण की छाँव बैठूँ जब ।
नंत गुण का करूँ सुमिरन, उन्हीं को प्राप्त कर लूँ अब ।।109।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कमल स्वर्णिम सुशोभित हैं, चरण कमलों के नीचे जिन ।
विभूति आपकी भगवन्, हरण करती भविक का मन ।।110।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रिपु बन मोह ने जग को, अनादि से भ्रमाया है ।
मेरे पारस प्रभु ने उस, मोह रिपु को मिटाया है ।।111।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. करिष्येऽहं करिष्येऽहं, मानी दिन-रात रटता है ।
हुए कृतकृत्य जिनदेवं, जगत चरणों में नमता है ।।112।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

सुरगुरु भी गाते, पार न पाते, गुण समुद्र सी काया है।
मद कमठ का चूरा, बना वो कूरा, चरणों अर्घ चढ़ाया है।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्वकराणं ओहि जिणाणं।

जल भय निवारक

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशः कथ-मधीश! भवन्त्यधीशाः?
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?।।3।।

गीतिका-छन्द

हे स्वामिन्! तुम गुण वारिधि हो, कैसे हम कह सकते गुण,
अल्पबुद्धि है मुझमें जब वह, वृहस्पति कहने नहीं निपुण।
जैसे उल्लू सूर्य किरण का, वर्णन करे कहे विद्वान्,
वैसे धृष्ट हुआ थुति करने, पूर्ण न कर सकता गुणगान।।

परमावधि संयुक्तान्, जिनान् विश्व प्रकाशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो परमावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घावली

विष्णुपद छंद–(कहाँ गये चक्री)

1. साधा प्रभु ने योग यहाँ पर, साधन को छोड़ा ।
ध्येय बनाया निज आतम को, पर से मुख मोड़ा ।।113।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मान किया था कमठ ने यहाँ, मर–मर दुख तुम पाया।
मरुभूति ने नमन किया तो, शाश्वत सुख पाया ।।114।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. धन्य जिनेश्वर की जिनवाणी, श्रवण किया जिसने ।
पायी निश्चित शिव रजधानी, पल भर में उसने ।।115।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तोल–मोल कर बोलो भैया, जिनवाणी कहती ।
बोली ही तो घाव बनाती, यही घाव भरती ।।116।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. कोऽपि न जग में हुआ सहारा, सब जग झूठा है ।
अतः प्रभु का पा लो दुवारा, यही अनूठा है ।।117।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तव पद की मैं करूँ अर्चना, नाम जाप नित ही ।
भक्त शरण में आन खड़ा है, पार करो प्रभु जी ।।118।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वपु उतंग नव हाथ प्रभु की, श्यामल छवि सोहे ।
पार्श्व प्रभु की अनुपम मूरत, भवि का मन मोहे ।।119।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वर्ण–वर्ण के पुष्प संजोये, भक्ति से भर कर ।
कर्म नष्ट का भाव बनाया, प्रभु भक्ति कर कर ।।120।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. णमोकार के पहले पद में, प्रभु को वंदन है ।
सुमिरन करता जो भवि मन से, मिटता क्रंदन है ।।121।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. क्षायिक लब्धि प्राप्ति हेत प्रभु, क्षायिक श्रेणि चढ़े ।
काषायिक भावों को तजकर, सब कर्मों से लड़े ।।122।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. तुंग बियालीस फुट की प्रतिमा, गोपाचल पर है ।
पद्मासन की मिसाल बनकर, भवि श्रद्धालय है ।।123।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. स्वस्थ हुए जब जिनवर निज में, सारे कर्म झड़े ।
दश भव का बैरी भी आकर, देखो चरण पड़े ।।124।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रूपातीत जितेन्द्रिय जिनवर, भविजन के पोषक ।
रूप तिहारा लखता जो भवि, उसके भव शोषक ।।125।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. पर्व बनाया मुकुट सप्तमी, लोक शिखर पर जा ।
जग चूड़ामणि बनकर चमके, कर्म हुए स्वाहा ।।126।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मस्त रहो सब प्रभु भक्ति में, त्रस्त न हो जग में ।
व्यस्त रहो निज के चिंतन में, अस्त न हो भव में ।।127।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मानो बात कहे जिनवाणी, करो न मनमानी ।
नमा प्रभु चरणों में जो भी, नभ पहुँचे प्राणी ।।128।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. दृष्ट्वा नाथ भवन्तम् जिन को, नाग नागिनी ने ।
श्रुत्वा तव नवकार मुखं से, क्षण में देव हुए ।।129।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. आशः पाश बँधा यह प्राणी, पर को अपना कर ।
लगी निराशा हाथ हमेशा, जिन वैभव खोकर ।।130।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कर* की कीमत दान करन से, वैय्यावृत्ति से ।
वाणी की कीमत होती है, जिनवर भक्ति से ।।131।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. थम गईं साँसें उड़ गई चेतन, णमोकार सुनके ।
पुण्ययोग से समकित पाया, जिन चरणा छूके ।।132।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. महामंत्र को महाभाग्य ने, निज मुख उच्चारा ।
महायोग से पशु गति में भी, जिनमत को धारा ।।133।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. धीरज धारा पारस प्रभु ने, धीर नहीं खोया ।
वीर बने गम्भीर धरा पर, तीर जगत पाया ।।134।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शम दम जिनके परम मित्र थे, समता भगिनी थी ।
तब जाकर मुक्ति रमणी को, प्रभु ने परिणी थी ।।135।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. भगवन् मिलते हैं भावों से, भक्ति मन में हो ।
भाव बनाऊँ तुमसा बनने, शक्ति मुझको दो ।।136।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वंश आपका नाथ उग्र था, आप शान्त छवि हो ।
साम्य भाव रूपी धन का प्रभु, वैभव मुझको दो ।।137।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*हाथ

26. त्यक्त और च्यावित च्युत आदि, जिनवर मरण कहे ।
मरुभूति के जीव ने देखो, वे ही मरण गहे ।।138।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धीजन प्रभु का ध्यान लगाते, मन में धीरज धर ।
कर्मों के सब बंध छुड़ाते, एकाकी बन कर ।।139।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. ईशाः हो प्रभु तीन लोक के, नमत सुरेशा हैं।
धीशाः बन सद्बुद्धि पाते, मगन हमेशा हैं ।।140।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. धृष्ट बना हूँ मैं भी भगवन्, बिन बुद्धि गुण गा ।
कष्ट मेरे सब नष्ट होय प्रभु, मन भक्ति में लगा ।।141।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धृष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. टोली भक्तों की आयी है, भक्ति से भरकर ।
जयकारों से पर्वत गूँजा, कूट स्वर्ण चढ़कर ।।142।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कोऽपि निज भुजबल से देखो, सागर तर सकता ।
सोऽपि प्रभु भक्ति के बल से, भव सागर तिरता ।।143।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. कौन बचा है जग में जिसको, अपना नहिं माना ।
ठोकर खाई दर-दर जाकर, तब प्रभु पहिचाना ।।144।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. शिशु आया प्रभु आज द्वार पर, जोड़े हाथ खड़ा ।
इस अबोध पर किरपा करना, प्रभु दरबार बड़ा ।।145।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कल कल करती नदिया बहती, जग उपदेश करे ।
कल नहिं आया कभी किसी का, क्यों अभिमान करे ।।146।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. शिविका* विमला बैठ जिनेश्वर, अश्व वनी में गये ।
शिव का ध्यान लगाया जब ही, अष्ट कर्म को हने ।।147।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शिशुभंक्त जिन चरणों आकर, यह अरदास करे ।
हृदयार्णव के शीघ्र नष्ट हों, जो दुर्भाव भरे ।।148।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यत्न किया हर पल ही मैंने, दुःख मिटाने का ।
रत्न नहीं इक सम्यक् पाया, शिवपुर जाने का ।।149।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिव्य रत्न बरसाये आँगन, प्रभु जब जन्म लिया ।
सहस नेत्र से इन्द्र ने लखकर, तांडव नृत्य किया ।।150।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वाणी प्रभु की मोक्ष नसैनी, पैनी छैनी है ।
जीव रु पुद्गल जुदा कर दिए, वो ही जैनी है ।।151।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. दिखते हैं भवि को भव सातों, प्रभु भामण्डल में ।
कोटि सूर्य की भी द्युति फीकी, आभा मण्डल में ।।152।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ध्वान्त मिटाया निज आतम का, ज्ञान उजाले से ।
सब जग को सन्मार्ग दिखाया, आत्म हवाले से ।।153।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. धोक लगाऊँ चरणों आऊँ, तब गुण चाहूँ मैं ।
गुण को गा आनंद सरोवर, में अवगाहूँ मैं ।।154।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. रूपातीत छवी जिनवर की, रूप अनोखा है ।
जिसने इकटक देखा इसको, ये जग धोखा है ।।155।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*पालकी

44. पंडित-पंडित मरण को चाहूँ, पंडित बन जाऊँ ।
पापों को खंडित कर प्रभु गुण, मंडित हो जाऊँ ।।156।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. प्रलय काल की पवन ने देखो, गिरि को विलय किया ।
प्रभु की ज्ञान ज्योति का देखो, बुझा सकी न दिया ।।157।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रूप तुम्हारा जिनवर प्यारा, दर्शन भी न्यारा ।
जिसने देखा जिसने समझा, जग उससे हारा ।।158।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. परम पवित्र तीर्थ जिनवर का, जग से तिरने को ।
है चरित्र सुखदायी जिन का, निज में वरने को ।।159।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. यत्र तत्र सर्वत्र जगत में, पारस व्याप रहे ।
ज्ञान चक्षु से देखो जिनवर, सब जग झाँक रहे ।।160।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिगिञ्छ केशरि ह्रद से निकलीं, जुड़वाँ नदियाँ हैं ।
जिनवर का अभिषेक करत ही, कुण्ड को भरियाँ है ।।161।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. किंचित् न्यून देह के धारी, आप विदेह प्रभु ।
निराकार अरु निर्विकार हो, आप अदेह विभु ।।162।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. कितनी मटकी फोड़ी हमने, अरु चादर ओड़ी ।
पर वस्तु के पीछे भागा, मिली न इक कौड़ी ।।163।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. लगन लगी है नाथ चरण से, करने आराधन ।
अब आया हूँ द्वार तुम्हारे, मिटे जगत् भटकन ।।164।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. संघर्षों उपसर्गों में भी, समता भाव धरा ।
हार मान कर तव चरणों वह, कमठ भी आन पड़ा ।।165।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. ममता तजना समता भजना, प्रभु ने सिखलाया ।
उपसर्गों में रहे अकम्पित, जग ने यश गाया ।।166।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रहे अडोल अकम्प निरंतर, पर में नहिं डोले ।
तव चरणों में बैरी आकर, जय जय जय बोले ।।167।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रश्मे: नन्त धार जिनवर जी, ज्ञान सूर्य बन के ।
पारस प्रभु की ज्ञान किरण से, सारा जग चमके ।।168।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्मे:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

हो दिन में अन्धा, उलूक का नंदा, कैसे रवि गुणगान करे।
मैं अल्पबुद्धि हूँ, आप भक्त हूँ, चरण पूज गुण अर्घ धरे।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्दभयसामण बुद्धीणं परमोहि जिणाणं।

श्लोक नं. 4

असमय निधन निवारक

मोह क्षया – दनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्त पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,
मीयेत केन जलधे–र्ननु रत्नराशिः?।।4।।

गीतिका–छन्द

मिथ्यामल क्षय होने पर भी, कौन आप गिन सकता गुण,
नहीं समर्थ मनुष है कोई, निश्चय से नहिं कोइ निपुण।
प्रलयकाल में पानी के बिन, सागर में रह जाते रत्न,
कोइ नहीं गिन सकता उनको, चाहे कितने करे प्रयत्न।।

सर्वावधि संयुक्तान्, जिनान् घातिक्षयङ्करान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वावधि जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घावली

तर्ज–चौबीसी पूजन

1. मोहान्ध महारिपु नाथ, पल में संहारा ।
महामोक्षपुरी का राज, तुमने विस्तारा ।।
चिंतामणि पारसनाथ, चिंता दूर करो ।
मैं आया शरण हूँ नाथ, गुण से पूर्ण भरो ।।169।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. हर पल रहते तैयार, भक्ति करने को।
प्रभु भक्त पुकारें आज, तुमसा बनने को ।। चिंतामणि...।।170।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. क्षण भङ्गुर है पर्याय, क्षण भर का जीवन।
क्षण क्षण जप लो प्रभु नाम, मिले गुण संजीवन ।। चिंतामणि...।।171।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. या जग कानन में नाथ, कोई सहारा ना ।
प्रभु पकड़ो मेरा हाथ, जग से निकालो ना ।। चिंतामणि...।।172।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. दल बल देवी सब देव, पल के साथी हैं ।
कुछ पल देते हैं साथ, ये तो बाराती हैं ।। चिंतामणि...।।173।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. नुपुर सजते हैं पाँव, सुर अँगनाओं के ।
प्रभु देख देख हरषायें, झूमें अरु नाचें ।। चिंतामणि...।।174।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. भव दुख हारक जिनदेव, मैं भव–भव भटका।
किया हरिहरादि का सेव, मिथ्या मत अटका ।। चिंतामणि...।।175।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वन्दन कीना जिननाथ, मन नन्दन करके।
उन पाया पुण्य प्रताप, भव बन्धन तड़के ।।
चिंतामणि पारसनाथ, चिंता दूर करो ।
मैं आया शरण हूँ नाथ, गुण से पूर्ण भरो ।।176।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. नव पंकज स्वर्णिम नाथ, रचते देव यहाँ।
सजे दौ सौ पच्चीस साथ, रखते पाँव जहाँ ।। चिंतामणि...।।177।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. पिचकारी में भर रंग, ज्ञान गुलाबी रंग।
जिनवर खेलें होली, निज आतम के संग ।। चिंतामणि...।।178।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. नाता तोड़ा सबसे, जग से मुख मोड़ा।
मुक्तिवधु से प्रभु ने, है नाता जोड़ा ।। चिंतामणि...।।179।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. थर–थर काँपे हैं मन, भव दुख सुमरन से।
प्रभु पार्श्व बचाओ आन, भव की भटकन से ।। चिंतामणि...।।180।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाबीज युक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. इस मर्त्यलोक से नाथ, सिद्ध लोक पहुँचे।
हम भक्ति करके नाथ, तव गुण को पूजें ।। चिंतामणि...।।181।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नित्योद्घाटित तुम ज्ञान, सब जग भासा है ।
ऐसा गुण मैं भी पाऊँ, बस इक आशा है ।। चिंतामणि...।।182।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नूतन नूतन परिणाम, जीवों के होते ।
जब अध:करण से पार, वे अपूर्व होते ।। चिंतामणि...।।183।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाबीज युक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. नन्दन वामा के आप, अश्वसेन प्यारे ।
पितु मात को हर्ष अपार, अँगना में न्यारे ।। चिंतामणि...।।184।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. गुणधारी हे गुणधाम! तव गुण हम गायें ।
गुण पाने की है चाह, शरणा में आये ।।
चिंतामणि पारसनाथ, चिंता दूर करो ।
मैं आया शरण हूँ नाथ, गुण से पूर्ण भरो ।।185।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. गुणाणान् विस्तार, प्रभु तुमने कीना ।
तव गुण को हे गुणनाथ! हमने चित दीना ।। चिंतामणि...।।186।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. गणधर थे प्रभु के दश, महागुणी सब ही ।
प्रभु वाणी को गूँथे, सुनें वचन भवि भी ।। चिंतामणि...।।187।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. णमोकार बना है जहाज, पारस भक्तों को ।
जो जाने इसका राज, नाशे कष्टों को ।। चिंतामणि...।।188।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. सामायिक में मुनिराज, समता को धारें ।
वे साम्य भाव जल से, कर्मों को टारे ।। चिंतामणि...।।189।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. हो तुम्हीं नाथ मम मात, और पिता प्यारे ।
हो भक्तों के सरताज, भवि जन के प्यारे ।। चिंतामणि...।।192।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नहिं राग द्वेष है रंच, वीतराग प्रभु में ।
मैंटा सब जगत प्रपंच, लीन रहें निज में ।। चिंतामणि...।।191।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तमहर तव ज्ञान जिनेश, सूर्य समां भासे ।
वर दो इक किरण महेश, तव गुण हम याचें ।। चिंतामणि...।।192।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वह वन्दनीय भुवि है, जँह प्रभु मुक्ति वरी ।
उस शाश्वत गिरि पर आज, भवि की लगी झरी ।। चिंतामणि...।।193।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. क्षण क्षण हम करते ध्यान, पल-पल जाप करें।
प्रभु दर्शन दोगे आज, मन में आश धरें ।।
चिंतामणि पारसनाथ, चिंता दूर करो ।
मैं आया शरण हूँ नाथ, गुण से पूर्ण भरो ।।194।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मेरा-तेरा का भाव, भव वन भटकाता ।
करो शुद्ध चिदानन्द भाव, पाओ सुख साता ।। चिंतामणि...।।195।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तपवन में पहुँचे नाथ, तीस वर्ष वय में ।
लौकान्तिक भी तब आयें, दीक्षा उत्सव में ।। चिंतामणि...।।196।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. कल्मष होते सब दूर, जो कलिकुण्ड ध्यावें ।
हो मनवांछित सब पूर, श्रद्धा से गावें ।। चिंतामणि...।।197।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पांतु पद्मं हे नाथ! तुम जग त्राता हो ।
है भाव यही मम आज, सब जग साता हो ।। चिंतामणि...।।198।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

31. तज दिया राग परिवार, तप को धारा था ।
जब ध्यान किया प्रभु आप, कमठ भी हारा था ।। चिंतामणि...।।199।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वांछा अरु इच्छा नाथ, जग में भटकाती ।
निर्वांछित होकर आज, नाथ करूँ भक्ती ।। चिंतामणि...।।200।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तकदीर सफल हुई आज, चरणों में आकर ।
तदवीर बनी नई नाथ, तव दर्शन पाकर ।। चिंतामणि...।।201।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. परमार्थ दिला दो नाथ, पर परिणति छूटे ।
पुरुषार्थ करूँ वह आज, जिससे भ्रम टूटे ।। चिंतामणि...।।202।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. यह भव दधि बहुत विशाल, कैसे पार करूँ ।
भुजबल में बल दो सार, चरणों भाल धरूँ ।।
चिंतामणि पारसनाथ, चिंता दूर करो ।
मैं आया शरण हूँ नाथ, गुण से पूर्ण भरो ।।203।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नभसः बरसाते पुष्प, सुरगण हर्षाते ।
सब देव करें जयकार, जब प्रभुवर आते ।। चिंतामणि...।।204।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रशमित हों भाव जिनेश, शमित कषायें हों ।
अब मिले आप परमेश, जगें कलायें हों ।। चिंतामणि...।।205।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. करते तप अति ही उग्र, भाव साम्य रखते ।
कटते हैं कर्म समग्र, राम नाम जपते ।। चिंतामणि...।।206।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. टोली भक्तों की आज, जयकारा बोले ।
हम आज खड़े हैं द्वार, शिव द्वारा खोलें ।। चिंतामणि...।।207।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कोऽपि नहिं नाथ सनाथ, या जग के मांहि ।
सोऽपि भव भव से भाग, आयो तुम ठांहि ।। चिंतामणि...।।208।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. यस्य स्वयमेव ही बोध, जाग्रत कर लीना ।
तब ही भव कानन मांहि, निज आतम चीना* ।। चिंतामणि...।।209।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. धर्मान्ध हुआ वह नाथ, दश भव बैर किया ।
उसके चित को भी नाथ, तुमने जीत लिया ।। चिंतामणि...।।210।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मीरा सम भक्ति आज, मैं भी कर जाऊँ ।
प्रभु भक्ति का प्याला, पीकर तर जाऊँ ।। चिंतामणि...।।211।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*पहिचाना

44. ये रिश्ते जग के नाथ, अति दुःख देते हैं ।
कर ले इनसे जो किनार, वे सुख लेते हैं ।।
चिंतामणि पारसनाथ, चिंता दूर करो ।
मैं आया शरण हूँ नाथ, गुण से पूर्ण भरो ।।212।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तप त्याग भरा जीवन, जिसने चाहा है ।
पारस प्रभु ने उसका, भाग्य सजाया है ।। चिंतामणि...।।213।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. केशर चंदन की धूप, दश दिश महकाती ।
दह ध्यान अग्नि में कर्म, शिव पुर पहुँचाती ।। चिंतामणि...।।214।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नतमस्तक होकर नाथ, देव करें सेवा ।
प्रभु भक्ति का फल आज, लो गुण की मेवा ।। चिंतामणि...।।215।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जब प्रभुवर गमन करें, अन्य देश पहुँचें ।
तव गगनांगन में देव, दुन्दुभि से चहकें ।। चिंतामणि...।।216।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लख लख कर हे जिनराज! लिखना सीख लिया ।
तव भक्ति में दिन रात, पगता* मेरा जिया ।। चिंतामणि...।।217।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. विधेर्विधानात् नाथ, शिवमग के नेता ।
नहिं राग द्वेष किंचित्, हो जग के जेता ।। चिंतामणि...।।218।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धेर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नर से नारायण का, पथ प्रभु दर्शाया ।
कर चार घातिया नाश, सुख अनंत पाया ।। चिंतामणि...।।219।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. अनुनासिक पंच प्रकार, जिनवाणी गाये ।
व्याकरण का है ये सार, पढ़ प्राणी पाये ।। चिंतामणि...।।220।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*मग्न

53. रत्नों की राशि जिनेश, रत्नाकर में है ।
गुणराशि हे परमेश! आप सहारे हैं ।।
चिंतामणि पारसनाथ, चिंता दूर करो ।
मैं आया शरण हूँ नाथ, गुण से पूर्ण भरो ।।221।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नख केश न बढ़ते नाथ, पूर्ण ज्ञान जब हो ।
तव चरणों धरते माथ, चूर्ण मान सब हो ।। चिंतामणि...।।222।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रागादि भाव का त्याग, करने आया हूँ ।
तव गुण से निज गागर, भरने आया हूँ ।। ।। चिंतामणि...।।223।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणराशि: हे गुणधाम! गणपति नमन करें ।
हम हाथ जोड़ कर नाथ, अवगुण वमन करें ।। चिंतामणि...।।224।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु मोह मिटाया, अनुभव पाया, कौन आप गुण गिन सकता।
है कौन? सिन्धु के, रत्न गिने जो, अर्घ चढ़ा मस्तक नमता।।

ॐ ह्रीं गहन गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अकालमिच्चुवारयाणं सव्वोहि जिणाणं।

श्लोक नं. 5

प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लस–दसंख्य गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज बाहु युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशे: ?।।5।।

गीतिका–छन्द

मंदबुद्धि होकर भी तेरे, गुण अनंत मैं बता रहा,
हे स्वामिन्! भक्ती वश तेरी, थुति हो तत्पर जता रहा।
क्या लघु बालक अल्पबुद्धि से, करता नहीं जलधि विस्तार,
द्वय हाथों को विस्तृत करके, शक्ति बिना कहता आकाश।।

अनन्तावधि संयुक्तान्, जिनांस्तत्त्व विशारदान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अनन्तावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घावली

छंद–दोहा

1. अर्हत् पद धारी प्रभो, हो अचिन्त्य गुणधाम।
पार्श्व प्रभु के द्वय चरण, वन्दन हे अभिराम! ।।225।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. अभ्युदय जग जाये मम, सम्यक् उपजे नाथ।
आप शरण में आ पड़ा, दीजै शिवपुर पाथ ।।226।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. अद्य किया पुरुषार्थ है, सद्य वरो वरदान।
मध्य मिटे संसार मम, पाऊँ शिवपुर थान ।।227।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तोड़ दिए जग बन्ध सब, जोड़ा प्रभु से नेह।
मोड़ा मुख जग से प्रभु, बन गए आज अदेह ।।228।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. लोकेऽस्मिन् भारत प्रभो, तारक जन्मे नाथ।
तीर्थ चलाया धर्म का, हे प्रभु पारस नाथ! ।।229।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽस्मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तर जाता भवि जीव वह, करता चरण सनेह।
मर–मर जाता जीव वह, जिसे न प्रभू विनेह ।।230।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वर्ण आपका श्यामला, अति सुन्दर था शरीर।
जिसे देखकर दूर हो, भक्तों की सब पीर ।।231।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नाना जन्म धरे यहाँ, नाना किए कुकर्म।
ना जाना निज रूप को, ना पाय निज धर्म ।।232।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. थक कर तरु* पै आत हैं, पंछी हो जब साँझ।
भोर होत उड़ जात हैं, निज निज कारज गाँव ।।233।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. जंजीरों से नहिं बँधा, बँधा मोह की पाश।
मुझे दिखा दो रास्ता, शिवपुर की है आश ।।234।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. डागर*1 नहिं दीखै प्रभु, भव कानन फँस आज।
आगर निज का दो विभु, जानो तुम सब राज ।।235।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "डा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शक्य नहीं फिर भी जिनम्, शक्ति दिखाऊँ नाथ।
भक्ति करूँ तव चरण की, रख दो शिर पर हाथ ।।236।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. योजन सवा प्रमाण था, समवशरण जिननाथ।
जो भवि आया शरण में, पाता वो शिव पाथ ।।237।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. कोऽपि मम निज है नहीं, जान न पाया बात।
दर–दर मैं भटका फिरा, कोई न देता साथ ।।238।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कर्ता बन करके फिरा, भोगे संकट भार*2।
आप कृपा से जानिया, भव में दुःख अपार ।।239।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुम्बी जल में तैरती, नहिं होता जब लेप।
कर्म लेप मिट जाय तो, भवि होता निर्लेप ।।240।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*1 रास्ता *2 बहुत

17. स्तव करता हूँ प्रभु, शब्दों में बल दो ।
भक्ति ऐसी कर सकूँ, शक्ति से भर दो ॥241॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वंदन से बन्धन मिटें, नन्दन मन में होय ।
अभिनंदन प्रभु का करूँ, होऊ सहायी मोय ॥242॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. लगी लगन जिन चरण से, लखने को निज आज ।
लख करके लेखन करूँ, पूर्ण होय मम काज ॥243॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सराग बन कर घूमिया, यह सारा संसार ।
वीतराग की खबर पा, आया हूँ प्रभु द्वार ॥244॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दक्ष अक्ष विषयों रहा, नहिं प्रत्यक्ष प्रभु पाय ।
भक्ष अभक्ष यहाँ भखा, नरक पड़ा फिर जाय ॥245॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. संघ चतुर्विधि को नमूँ, नमूँ जिनेश्वर वैन ।
दान देय चउ संघ को, हरषे हैं मम नैन ॥246॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. संख्य असंख्य प्रदेश अरु, एक प्रदेशी जान ।
रूप गंध रस वर्ण युत, है पुद्गल पहिचान ॥247॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गुणधारी गुरुराज हैं, गुण का करूँ बखान ।
यथा नाम गुण हैं तथा, गुरु विनम्र गुणखान ॥248॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. णाणावरणी नाशिया, क्षीण मोह में जाय ।
क्षायिक ज्ञान है पा लिया, जय जय जय जिनराय! ॥249॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. कर को कर पर धर लिया, कृतकृत्य हुए आप ।
करना नहिं कुछ शेष अब, करूँ नाम का जाप ॥250॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रसना इन्द्रिय के वशी, फँसी मीन बतलाय ।
लोभ इन्द्रिय छोड़ दो, वरना प्राण गँवाय ॥251॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तस्य न कोई देखता, जस्य हृदय नहिं आप ।
यस्य हृदय राजे प्रभु, धुल गये सारे पाप ॥252॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बालक नन्हा हूँ प्रभु, पालक तुम जिननाथ ।
हाथ पकड़ कर काड़ लो, डूब रहा हूँ नाथ ॥253॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. लोकालोक प्रकाशते, आप त्रिलोकी नाथ ।
लोक शिखर पर जा बसे, हो जग के सरताज ॥254॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. बालोऽपि निज बाहु से, पकड़े चंद्र का बिम्ब ।
मैं भी बालक सम रहा, गुण चाहूँ प्रतिबिम्ब ॥255॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो, क्यों बैठे हो भ्रात ?
पुण्योदय पाये प्रभु, कह लो अपनी बात ॥256॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. नव वधु सम वसुधा भयी, जन्मे जब जिनराज ।
हर्षित वामा मात थी, पुलकित थे नृपराज ॥257॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. निज से निज को जानकर, निज में रमे जिनेश ।
पूर्ण ज्ञान को पा लिया, हे पारस परमेश! ॥258॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. जग में चहुँदिश ढूँढ़ता, तुम सा मिला न और ।
दर-दर फिरा मैं घूमता, तव दर पायी ठौर ।।259।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. बाधा रहित हुए जिनम्, अव्याबाध के पुंज ।
बाधा भव की नाश दूँ, जपूँ गुणों के कुंज ।।260।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. हुए वर्ष अष्टम् शुभम्, धारे अणुव्रत सार ।
बालक संग जब खेलते, हरषें भव्य अपार ।।261।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. युगपत् ज्ञान रु दर्श है, ज्ञाता दृष्टा आप ।
त्रय योगों से मैं नमूँ, दूर करो सब पाप ।।262।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. गंगा रूपी वाणी में, भव्य करें अवगाह ।
जन जन कल्याणी यही, आगम बनी अथाह ।।263।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विनती करता हूँ प्रभो, विनत भाव से आज ।
भव दधि नहिं भटकूँ यहाँ, ऐसा दे दो जहाज ।।264।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तत्त्व सात छह द्रव्य अरु, नव पदार्थ का ज्ञान ।
प्रभु वाणी में है खिरा, दूर करे अज्ञान ।।265।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यत्न क्रिया नहिं आज तक, बैठूँ प्रभु की छाँव ।
अत: आज तक भटक रहा, दर दर अरु हर गाँव ।।266।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. विस्मय चिंतादिक यहाँ, दोष अठारह जान ।
पार्श्व प्रभु ने नाश करि, पाया पद निर्वाण ।।267।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "विस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तीर्थ चलाया आपने, पहुँचाया भव तीर ।
धीर बँधा कर भव्य की, दूर करी भव पीर ।।268।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तीर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. णमोकार पढ़कर यहाँ, शुरू करो सब काम ।
पूर्ण होय सब काज त्वं, जपो पार्श्व प्रभु नाम ।।269।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. जगतां के दु:ख नाशते, प्रभुता को प्रभु देत ।
भविनां भवदधि तारणे, बन जाते प्रभु सेत* ।।270।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. करूँ त्रियोग से वंदना, पार्श्व प्रभु दिन शाम ।
नाम आपका ले सकूँ, जब हो जीवन शाम ।।271।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. थक कर बैठ न जाऊँ मैं, साहस देना नाथ ।
मुक्ति पुरी तक जाऊँ मैं, पारस देना साथ ।।272।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यत्र तत्र सर्वत्र ही, यश फैला जिनदेव ।
सुजश सुना जब से प्रभु, करूँ चरण नित सेव ।।273।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तिमिर हरो अज्ञान मम, हे त्रिपुरारि देव ।
ज्ञान भरो उर में शुभम्, जय जय जय जिनदेव।।274।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. स्वर्गों में भी इन्द्र का, आसन कम्पित होत ।
नगर बनारस झूमता, जिनवर जन्म जु लेत ।।275।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. धिक् धिक् इस संसार में, कहीं न दीखे सार ।
धन्य आप प्रभु पार्श्व को, प्राप्त कर लिया सार ।।276।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सेतु

53. आठों याम् तुम्हें जजूँ, हे पारस! अभिराम।
जाप जपूँ जिन नाम का, पाऊँ मोक्ष सुधाम ।।277।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "याम्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. बुरा किसी से मत कहो, बुरा न देखो भ्रात।
सुनो बुराई मत कभी, प्रभु समझाते बात ।।278।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. राग द्वेष ने हर जगह, फैलाया है जाल।
जाल हटाऊँ मैं सभी, प्रभु चरणों नत भाल ।।279।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणराशेः है अपार त्वम्, कोई न पावे पार।
गुण पाने जो डूबते, हो जाते भव पार ।।280।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शेः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु गुण अनन्त हैं, मन्द बुद्धि है, बालक बन गुणगान करूँ।
है उदधि विशाल, लघु कर ताल, अर्घ चढ़ा प्रभु ध्यान धरूँ।।

ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो गोधण बुड्ढिकराणं अणंतोहि जिणाणं।

श्लोक नं. 6

सन्तान सम्पत्ति प्रसाधक

ये योगिना–मपि न यान्ति गुणास्तवेश!
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव – मसमीक्षित कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज गिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

गीतिका–छन्द

बड़े–बड़े ऋषि और तपस्वी, सक्षम नहिं गाने गुणगान,
हे प्रभु! हम कैसे गा सकते, कितना तुझमें दर्शन ज्ञान।
मेरे द्वारा किया गया यह, तव स्तवन सुख का आधार,
परिणति अपनी दरशाई है, लेकिन लगती बिना विचार।।

कोष्ठ बुद्धीनृषीन् विश्व, शास्त्र विस्तृतमानसान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठबुद्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घावली

छंद–सखी

1. अध्येय आपको ध्याकर, निज ध्यान हिय में लाकर।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथगामी ।।281।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. योगों की है चपलायी, इन्हें रोक सके जिनरायी।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथगामी ।।282।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. गिरि सम्मेदाचल जाकर, प्रभु आठों कर्म खिपाकर।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।283।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नानाविध नाम धराये, इसे नाश सूक्ष्म गुण पाये।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।284।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. मकरध्वज सम जिन रूपा, बतलाया जगत अनूपा।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।285।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. पितु मात में हर्ष अपारा, बालक खेले जब द्वारा।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।286।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नवलब्धि आपने पायी, जब केवलज्ञान उपायी।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।287।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. प्रलयान्ति नाथ कर्माणि, अब निज हिय आप धरामि।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।288।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. तिरने की कला सिखाते, भव्यों को भव से तिराते।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।289।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. गुप्ति की गुफा बनायी, निज आत्मरक्ष जिनरायी।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।290।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. णाणं है णेय प्रमाणं, उस णेय का है गुणगानं।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।291।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. अभ्यस्त हुए जिनराज, निज ज्ञान गुफा गुरुराज।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।292।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. वेगावतार की बेला, प्रभु मैं हूँ निपट अकेला।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।293।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शम दम से कर्म खिपावें, वे कर्मजयी बन जावें।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।294।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. वक्ता तुम श्रेष्ठ कहाते, भवि मोक्ष डगर दिखलाते।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।295।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुम्बी बिन लेप के तैरी, रहे कर्म आत्मा बैरी।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।296।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. कल्मष कर्मों का हरना, प्रभु चरण शरण में रहना ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।297।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. थम्बे में विराजित प्रतिमा, कहे मानस्तम्भ की महिमा ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।298।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भक्ति भगवान दिखाती, हमें जिनवाणी समझाती ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।299।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वरदान प्रभु यह चाहूँ, क्षय कर्मों का कर पाऊँ ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।300।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तिर्यंच आदि त्रय गति के, प्रभु समवशरण में लख के।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।301।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेरा दर सबसे न्यारा, जहाँ शांति मिले अपारा ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।302।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. भवनेषु रहूँ या वनेषु, रहे प्रभु का ध्यान गुणेषु ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।303।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. महामन्त्र जगत में महान, करे परमेष्ठी गुणगान ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।304।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वामा माता के लाल, जा पहुँचे लोक के भाल* ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।305।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*मस्तक

26. वर ली प्रभु ने शिवनारी, नहिं हुए जगत में दुःखारी।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।306।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. कारज अब कुछ नहिं करना, प्रभु पार्श्व चरण चित धरना ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।307।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शस्त्रों से नहीं सजे हो, निर्वस्त्र जगत में रहे हो ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।308।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जागो प्रभु जगा रहे हैं, भव दुःख से बचा रहे हैं ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।309।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ताली मुक्ति की कहाती, प्रभु भक्ति राज बताती ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।310।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तरुवर अशोक के नीचे, जिनवर की छवि मुझे दीखे ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।311।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. देहादिक को न सजाना, प्रभु भक्ति में रम जाना ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।312।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. वन-वन भटका जीवन भर, नहिं मिली शांति किंचित्कर ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।313।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन मन्दिर आज बनाया, उसमें प्रभु को पधराया ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।314।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. सज धज आयी सुर ललना, पर डिगा सकी प्रभु मन ना ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।315।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मीरा सी भक्ति चाहूँ, तव गुण में मैं रम जाऊँ ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।316।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. क्षिति तल के निर्मल भूषण, प्रभु दूर करो मम दूषण ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।317।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तरना चाहूँ भव वारिधि, वरना चाहूँ गुण गण निधि ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।318।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. कारज इक नाथ करा दो, मम अरि रज रहस मिटा दो ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।319।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिश्ते नाते सब झूठे, हैं बंधन के सब खूँटे ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।320।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तेरा प्रभु जो है पंथ, वह पंथ रहा निर्ग्रंथ ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।321।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यूयं को दोष धराया, निज दोष समझ नहिं आया ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।322।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. जल्पों का बुना है जाल, प्रभु काटो मन जंजाल ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।323।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. पंकज में कमल खिला है, इक ज्ञान का दीप जला है ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।324।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तिरकालवर्ती पर्यायें, प्रभु ज्ञान झलकती पायें ।
जयवंत की पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।325।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वाणी कल्याणी जग में, कंटक हरती शिव मग में ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।326।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. निर्वांछित तप को करना, जिनवाणी उर में धरना ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।327।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जग है जड़ता का मेला, इसमें घूमा मैं अकेला ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।328।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गिरि पर परमाणु गिराये, जब प्रभुजी शिवपद पाये ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।329।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. राजा अश्वसेन दुलारे, यह बालक तुम्हें पुकारे ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।330।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नख केश न बढ़ते पाये, जब केवलज्ञान उपाये ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।331।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नुत–नत होकर जिनवर जी, करता प्रणाम प्रभुवर जी ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।332।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. परिणति को नहीं सुधारा, पर में है निज को निहारा ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।333।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अक्षिप्र–क्षिप्र से जाना, मतिज्ञान का भेद बखाना ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।334।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. समणो अमणो द्वय भेद, पंचेन्द्रिय कहे प्रभेद ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।335।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. भवान्तरेऽपि जिनशासन, अनुसरण करूँ मनभावन ।
जयवंत हो पारस स्वामी, मम बनो नयन पथ गामी ।।336।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

योगी जन हारे, थके विचारे, मैं अबोध असमर्थ रहा।
गा सकूँ नहीं गुण, पंछी सी धुन, चरणों में यह अर्घ चढ़ा।।

ॐ ह्रीं अगम्यगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्तइत्थिकराणं कोट्ठ बुद्धीणं।

श्लोक नं. 7

अभीप्सित जनाकर्षक

आस्ता–मचिन्त्य महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत पान्थ – जनान्निदाघे–
प्रीणाति पद्म सरसः सरसोऽनिलोऽपि।।7।।

गीतिका–छन्द

हे प्रभु! दूर रहे थुति तेरी, नाश करे दुख केवल नाम,
महिमा भक्ति अचिन्त्य तुम्हारी, शीतलता देना यह काम।
ग्रीष्मऋतु में कमल युक्त सर, सुखदायी जो पीड़ित धाम,
पर उनकी शीतल वायु भी, देती मनु को सुख स्नान।।

बीज बुद्धीनृषीन् बीजा-क्षराज्जाताखिलागमान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं बीजबुद्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घावली

छंद-नरेन्द्र

1. आस्था लेकर आया प्रभुवर, रस्ता आप दिखा देना ।
वास्ता नहिं रखना अब जग से, रिश्ता आप निभा देना ।।337।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. ता थेइ थेइ पग धरते धरते, अँगना नाचें सुर ललना ।
जन्म दिवस की देत बधइयाँ, अँगना खेले हैं ललना ।।338।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. मणि मुक्ता से रचित सिंहासन, जिस पर चतुरंगुल ऊपर ।
नाथ विराजे शोभा साजे, सूर्य चमक निषधाचल पर ।।339।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. चिंतित फल को देने वाले, चिंतामणि प्रभु पारस नाथ ।
चिंता की हैं चिता जलाते, चिन्मय करते पारस नाथ ।।340।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. सत्य तथ्य को पाया प्रभु ने, सत्पथ हमें दिखाया है ।
स्वयं चले प्रभु मुक्ति पथ पर, चलना हमें सिखाया है ।।341।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मन्दिर-मन्दिर ढूँढ़ा प्रभु को,मिले नहीं प्रभु उनमें आप ।
मन को मन्दिर बना लिया जब, स्वयं दिखे फिर हमको नाथ ।।342।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. हित और अहित जान नहिं पाया, मन का नहिं उपयोग किया ।
मनन किया नहिं मैंने मन से, जिनवर को नहिं नमन किया ।।343।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मान बढ़ाई के करने को, पर को अपना माना था ।
नमा नहीं मैं प्रभु चरणों में, तव स्वरूप नहिं जाना था।।344।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जिनके चरणों में आ बसते, जो हैं पूर्व बैर धारी ।
एक घाट पर पानी पीते, सिंह गाय करुणाधारी ।।345।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. नम्र भाव से आया भगवन्, चरणों अर्घ चढ़ाता हूँ ।
हो विनम्र तव गुण को गाऊँ, नित प्रति शीश झुकाता हूँ ।।346।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. संबंधों से नाता तोड़ा, निज से नाता जोड़ लिया ।
पार्श्व प्रभु ने राज पाठ से, निज आतम को मोड़ लिया ।।347।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. स्तव करता हूँ गुण गण का, लिखने का साहस दे दो ।
दास बना बैठा चरणों का, लखने का प्रभु बल दे दो ।।348।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. वर्तमान में वर्द्धमान के, आदर्शों का पालन हो ।
अणुबमों से अणुव्रतों तक, सबका मन संचालन हो ।।349।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. तेरह बीस पंथ ने देखो, अपना जाल बिछाया है ।
वीतराग पथ के पथिकों को, उसमें आज फँसाया है ।।350।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. ना जाने कब कौन किस घड़ी, राम बुलावा आ जाये ।
इसीलिए कहते प्रभु भवि से, प्रतिपल राम जपा जाये ।।351।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मानव होकर पर द्रव्यों से, अति अनुराग बढ़ाया है ।
अत: कर्म का आस्रव करके, निज संसार बढ़ाया है ।।352।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. पिया यहाँ भक्ति का प्याला, मुक्ति रस का पान किया।
जिया यहाँ जो निज चेतन में, जग वैभव का दान दिया ।।353।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पारिजात मन्दार आदि के, कुसुम मनोहर बरस रहे ।
गन्धोदक की मन्द वृष्टि से, भविजन के मन हरष रहे ।।354।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिल-तिल जोड़ा मैंने वैभव, जिन वैभव को छोड़ा है ।
प्रभु वाणी से समझ में आया, निज से नाता जोड़ा है ।।355।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड में, नगर बनारस है शुभ धाम ।
पौष कृष्ण एकादशि शुभ दिन, जन्म लिया पारस अभिराम ।।356।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

21. वन में जाकर स्वच्छ शिला पर, बैठ किया सिद्धों का ध्यान ।
पंच मुष्टि से लुंचन कीना, ग्यारस पौष कृष्ण की जान ।।357।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

22. तोरण द्वार सजाये सुरगण, नगरी रच दी स्वर्ण समां ।
प्राणत स्वर्ग से च्युत हो करके, जब आये प्राणेश महां ।।358।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

23. भय भी भय खाकर भग जाता, ध्यान हृदय जब आता है।
निर्भय होकर घूमे प्राणी, जब पारस प्रभु ध्याता है ।।359।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

24. वन मयूर के आते ही सब, भुजंग काले भग जायें ।
सम् मयूर जब उर में आये, मोह भुजंग न रह पायें ।।360।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

25. तोड़ दिए नाते सब जग के, समवशरण भी छोड़ दिया ।
योग निरोध किया जब जिनवर, जग में रहना छोड़ दिया ।।361।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

26. जन्मत ही त्रय ज्ञान सहित थे, दीक्षा लेकर चार हुए ।
केवल इक असहाय ज्ञान पा, नंत चतुष्टय प्राप्त किए ।।362।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. गन्ध सुगन्ध पवन है बहती, जहाँ जिनेश्वर वास करें ।
छह ऋतुओं के फल फूलों से, भूमि निज शृंगार करे ।।363।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिमिर नशाया ज्ञान किरण से, सर्व जगत उद्धार किया ।
तिरने का प्रभु गुण सिखलाया, जो सीखा भव पार हुआ ।।364।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तीन काल छह खण्ड में देखा, गुरु से बड़ा मिला नहिं कोय।
कर्ता कर्म न कर सकता है, गुरु करे जो वो ही होय ।।365।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ती" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तीव्रानल भी शान्त हो गया, प्रभु के नाम मंत्र जल से ।
कर्म कालिमा भी धुल जाती, ध्यान रूपी प्रभु के जल से ।।366।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तन मन धन अर्पण कर जाना, चिंतामणि प्रभु के दर पर।
महाभाग्य से अवसर पाया, कर लो अपना पुण्य प्रखर ।।367।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पोषण करते भवि जीवों का, शोषण भव का करते हो ।
आ जाए जो भक्त शरण में, उसको निज सम करते हो ।।368।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. परमानन्दामृत को पीते, निजानन्द में मग्न प्रभो ।
सुखानन्द का झरता झरना, ज्ञान झील में नित्य विभो ।।369।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. हस्त पाद से रहित जिनेश्वर, नहिं इन्द्रिय व्यापार रहा ।
चिदानन्द को वंदन मेरा, सिद्धों का परिवार महां ।।370।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तत्त्व अतत्त्व प्रकाशा जिनने, निज अस्तित्व को पाया है।
ऐसे पार्श्व प्रभु के चरणों, भक्तों ने सुख पाया है ।।371।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पांडुकशिल पर न्हवन हुआ जब, त्रद्धिधारी ऋषिगण भी।
अवलोकन कर हर्षित होते, धन्य धन्य कहें निज को ही ।।372।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. थर थर थर थर काँप उठा वह, संवर क्रोध भरा था जो।
साम्य भाव प्रभु का लख करके, चरणों आन पड़ा था वो ।।373।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जल था बरसा कंकड़ पत्थर, अरु ओले शोले बरसे।
पद्मावति धरणेन्द्र ने आकर, भक्ति भर प्रभु छाँव धरे ।।374।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जनान् गुणों को कहने में प्रभु, वृहस्पति सम नहिं सक्षम है।
मैं कैसे गाऊँ गुण को प्रभु, तव बालक यह अक्षम है ।।375।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. निर्मल गुण के धारक जिनवर, मेरा मन निर्मल कर दो।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वे गुण मुझमें भी भर दो ।।376।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. दानी तुम सा नहीं जगत में, जग को सब निधियाँ दे दीं।
समता रस का खुला खजाना, शम शम की मणियाँ दे दीं ।।377।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. घेवर बावर गूझा आदिक, लेकर स्वर्णिम थाल भरूँ।
पारस चरणों में अर्पित कर, चरणों में नित भाल धरूँ ।।378।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्रीतम तुम सा जग में हमने, नहीं दूसरा है देखा।
प्रीति निभाई उससे भी प्रभु, दश भव जिसने बैर रखा ।।379।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्री" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. णाणं णरस्स सारो का यह, सूत्र आपने बतलाया।
अमल किया जिसने भी इस पर, वह ही ज्ञानी बन पाया ।।380।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तिरे स्वयं भवि को भी तारा, तीर्थ चलाया सुन्दर सा।
तिरने की प्रभु कला सिखायी, देहालय बना मंदिर सा ।।381।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. पद्म सरोवर से निकली हैं, गंगा सिंधु द्वय नदियाँ।
पर्वत से चलकर के गिरतीं, अर्हत् शीश पे वे सखियाँ ।।382।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. छद्म हूँ भगवन् हूँ अज्ञानी, इतनी सी किरपा कर दो।
पाद पद्म में रहूँ हमेशा, शुभाशीष बरसा कर दो ।।383।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. समकित का प्रभु दान हमें दो, समीचीन श्रद्धा गुण दो।
आज्ञा पालन करने की विभु, उर में शक्ति भी भर दो ।।384।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रण आँगन में मरण भाव यह, नील लेश्या का लक्षण।
ऐसा भाव न हो मम भगवन्, लेश्या कर दो शुक्ल शुभम् ।।385।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सरसः रस से युक्त जिनेश्वर, मुख से निःसृत जिनवाणी।
भवि जीवों को आत्म बोध दे, अतः बनी जग कल्याणी ।।386।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. समता रस का बहता झरना, हर पल आत्म सरोवर से।
आत्म वापिका में ठहरे हैं, लखते ज्ञान झरोखे से ।।387।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रणनीति में महाकुशल हैं, अस्त्र शस्त्र नहिं रखते हैं।
कर्म शत्रु के हनन करन में, हाथ पैर नहिं हिलते हैं ।।388।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. सोऽहं हूँ प्रभु शक्ति नहीं कुछ, भक्ति आपकी करता हूँ।
मोह नाश करने की प्रभु जी, युक्ति आपसे वरता हूँ ।।389।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सोऽ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. निकला हूँ मैं आप ढूँढ़ने, कहाँ मिलोगे हे प्रभुवर !
अज्ञानी हूँ राह बता दो, जहाँ मिलेगा अपना घर ।।390।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लोकालोक निरखते जिनवर, लोक नहीं जिनके अन्दर।
आनन्दामृत को चखते हैं, शोक नहीं जिनके अन्दर ।।391।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. स्वप्नान्तरेऽपि जिनशासन को, कभी न मैं भूलूँ भगवन्।
निज शासन में रहने का प्रभु, संबल चाहूँ आप चरण ।।392।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु नाम मात्र ही, हरे ताप भी, अर्घ चढ़ा कान्ति लेता।
चलते पथिकों को, तीव्र तपन हो,सरवर सी शान्ति देता।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभिट्ठसाधयाणं बीजबुद्धीणं।

श्लोक नं. 8

कुपितोपदंश विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म बन्धाः।
सद्यो भुजंगम–मया इव मध्य भाग–
मभ्यागते वन–शिखंडिनि चन्दनस्य।।8।।

गीतिका–छन्द

हे जिन! जिसके उर तुम रहते, वह पावन हो निर्बन्धन,
क्षणभर में सब सघनकर्म के, तोड़े वह अपने बंधन।
चंदन तरु पर, कुण्डलि के सम, लिपटे सर्प महाविकराल,
मिलती जब आवाज गरुड़ की, बंधन ढीले दिखता काल।।

पदानुसारिप्राप्तर्द्धीन्, ज्ञात सर्व पदान् पदान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घावली

छन्द–नाराच

1. हृद्यलंकार बन के राजते सदा प्रभू।
भक्त भावना कभी न भूलते कदा विभू ।।
पार्श्वनाथ! देव सेव आपकी करूँ सदा।
लीजिए सु आप साथ भूलिए नहीं कदा ।।393।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हृद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. वर्ण और रूप गंध रस भी नहीं आपमें ।
ध्यान मैं धरूँ हमेश आपके सु जाप में।। पार्श्वनाथ...।।394।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तिक्त औ मधू कषाय स्वाद नहीं भासता ।
जीभ पै लगी लगाम बने आप शास्ता ।। पार्श्वनाथ...।।395।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नित्य ही जिनेश आनंद मैं जु झूमते ।
आत्म तत्त्व में रमे सु आत्म बाग घूमते ।। पार्श्वनाथ...।।396।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. त्वम् जिनं ज्ञान ध्यान से सने हो परम ।
मार्ग पै चले सुपाथ दे दिया परं धरम ।। पार्श्वनाथ...।।397।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. क्षायिकी सु भाव से विधी जु नाथ क्षय किया ।
औदयीक भाव से प्रभू किनार है किया।। पार्श्वनाथ...।।398।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. विस्तृतं जुं पंच कोश है जिनं समोशरण ।
भव्य जीव आयके सु पात हैं स्वयं धरम् ।। पार्श्वनाथ...।।399।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भोग भोग के यहाँ स्वयं ही भोग हो गया ।
योग को सुधार के प्रभू ने बोध दे दिया ।।
पार्श्वनाथ! देव सेव आपकी करूँ सदा।
लीजिए सु आप साथ भूलिए नहीं कदा ।।400।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. शिखा जु है सम्मेद की सु पाय ली वसू मही।
नंत सिद्ध ने जहाँ से मोक्ष की मही लही ।। पार्श्वनाथ...।।401।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. थिर्क थिर्क नृत्य गान को करें सुरी यहाँ।
पार्श्व जन्म के सुकाल झूमती जहाँ तहाँ ।। पार्श्वनाथ...।।402।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. लीन आत्म ध्यान में न कोइ है परं सुधं।
बाह्य आडम्बरादि की न कोइ है धुनं ।। पार्श्वनाथ...।।403।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ली" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. भक्त हाथ जोड़ के जु आप द्वार है खड़ा ।
भाव राग छोड़ के जु आप चर्ण में पड़ा ।। पार्श्वनाथ...।।404।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. वन्दना करूँ सदा हि वन्दनीय आपकी ।
शक्ति दो कि तोड़ दूँ मैं जंजीर पाप की ।। पार्श्वनाथ...।।405।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. तिरा नहीं यहाँ कोइ जिसे न प्रभू प्रीति है।
नमा वही यहाँ जिसे प्रभू से बड़ी प्रीति है ।। पार्श्वनाथ...।।406।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. जन्म मर्ण करते काल नंत हैं बिता दिए ।
वाम नंद आपने सभी मरण मिटा दिए ।। पार्श्वनाथ...।।407।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. जन्तोः[*1] सुक्ख देत दुक्ख हर लेत हो ।
हे प्रभू! आप भक्त टेर[*2] सुन लेत हो ।। पार्श्वनाथ...।।408।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तोः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[*1]जीवों को [*2]पुकार

17. अक्षय अनंत सौख्य के प्रभू जो स्वामी हो।
आप ही जु तीन लोक में ही अभिरामी हो।।
पार्श्वनाथ! देव सेव आपकी करूँ सदा,
लीजिए सु आप साथ भूलिए नहीं कदा ।।409।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. गुणेन पूजते नरं सुरं यहाँ जु आपको ।
धन्य धन्य आप हो जु आप ही सु जाप हो ।। पार्श्वनाथ...।।410।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. नैन ढूँढ़ते सदा जु आपको हि सर्वदा ।
चाह है हमेश नाथ दर्श की हे सुखप्रदा!। पार्श्वनाथ...।।411।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. निष्काम भक्ति नाथ आप की करें यहाँ।
पाप नाश होत क्षण में भक्त के अभी यहाँ।। पार्श्वनाथ...।।412।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. बिम्ब मोहता है मन को मध्यलोक मन्दिरम् ।
देव देवियाँ जु करें भक्ति बड़ी सुन्दरम् ।। पार्श्वनाथ...।।413।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. डाल-डाल वृक्ष की कह रही है झूम झूम।
पार्श्व प्रभू आये हैं भक्ति करो घूम घूम ।। पार्श्वनाथ...।।414।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "डा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. अर्हतादि हो गये कर्म शत्रु नाश के।
इन्द्र शत पाद पद्म पूजते हैं आपके ।। पार्श्वनाथ...।।415।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पिता के समीप मातु शीघ्र आवती भयीं ।
देखे सोल स्वप्न जु उन्हें सुनावती गयीं ।। पार्श्वनाथ...।।416।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कर्म विज्ञान पर थी आपकी कड़ी नजर ।
भेद विज्ञान छैनि ने किया बड़ा असर ।। पार्श्वनाथ...।।417।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मन्त्र नाम आपका तन्त्र देह है जिनम् ।
ध्यान से जु करे जाप सर्व नाश हो करम।।
पार्श्वनाथ! देव सेव आपकी करूँ सदा,
लीजिए सु आप साथ भूलिए नहीं कदा ।।418।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. बंध के जु भेद चार आपकी गिरा कहे।
कर्म बंध प्रति क्षणं हरेक प्राणी करे ।। हे पार्श्वनाथ...।।419।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. सुधाः समं पेय है आपके सु श्री वचन ।
बुद्धिजीव पान करें पात हैं यहाँ वतन ।। हे पार्श्वनाथ...।।420।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. सम्यक् प्रकार मैं करूँ सदा प्रयास हे प्रभू!
अंतरंग लक्ष्मी को वर सकूँ मैं हे विभु ।। हे पार्श्वनाथ...।।421।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. विद्योदयं प्रभा माम् जीवन में हो ।
नंत ज्ञान और सुक्ख मात्र चेतन में हो ।। हे पार्श्वनाथ...।।422।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मुक्ति की हि युक्ति में सर्व प्राणी लगे ।
भक्ति देय मुक्ति नाथ आप वाणी कहे ।। हे पार्श्वनाथ...।।423।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. जंग जीत रात्रि भर में सूर्य आता जहां।
कर्म से जंग जीत प्राणी बनता महां ।। हे पार्श्वनाथ...।।424।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

33. गर्भ में प्रभू जु आय देव आँगना सजाय।
षण्ण मास पूर्व से हि रत्न थे दिए गिराय ।। हे पार्श्वनाथ...।।425।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मर्त्यलोक से प्रभु की आज भक्ति करें ।
ऊर्ध्वलोक प्राप्त होय ऐसी शक्ति वरें ।। हे पार्श्वनाथ...।।426।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मन:पर्यय हो गया केश लोंच जो किया।
आय लोक ब्रह्म से जु देव अनुमोदिया।।
पार्श्वनाथ! देव सेव आपकी करूँ सदा,
लीजिए सु आप साथ भूलिए नहीं कदा ।।427।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. याद नाथ आपकी हमेश आत है हमें ।
दया करो आपके चर्ण में सदा नमें ।। पार्श्वनाथ...।।428।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. इत्र व चरित्र को नहीं प्रमाण चाहिए ।
एक को गंध और एक कार्य जानिए ।। पार्श्वनाथ...।।429।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. वस्त्र और भूषणम् आपने हैं तज दिए ।
चार ज्ञान का प्रकाश आत्मा में वर लिए ।। पार्श्वनाथ...।।430।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. महाभाग्य आप हैं मिरा जु भाग्य शोधिये ।
महा मोह अंध से निकालने सु बोधिये ।। पार्श्वनाथ...।।431।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. अध्याय चार चऊ अनुयोग के कहे।
वर ज्ञान साम्य और चारित को गहे ।। पार्श्वनाथ...।।432।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भाव शून्य कार्य हो तो फल यहाँ नहीं मिले।
भाव पूर्ण ध्यान होय मोक्ष की मही मिले ।। पार्श्वनाथ...।।433।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. गती चार लाख चउरासी में फिरा यहाँ ।
आपका सु दर्श पाय पा लिया है सुख महां ।। पार्श्वनाथ...।।434।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मध्यलोक से प्रभू लोक अग्र जा बसे ।
मर्त्यलोक से प्रभू सु आपके चरणा जजें ।। पार्श्वनाथ...।।435।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. ज्ञान अभ्यास से ही ध्यान उत्तम बने ।
तत्त्व को पाय करके आत्म तत्त्व में रमें ।।
पार्श्वनाथ! देव सेव आपकी करूँ सदा,
लीजिए सु आप साथ भूलिए नहीं कदा ।।436।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गर्व और मान दोय भ्रात जुड़वां कहे ।
छोड़ दो अब इन्हें ये बात गुरूवर कहें ।। पार्श्वनाथ...।।437।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तेइसवें हो आप नाथ तीर्थंकरं प्रभो ।
मात पिता के भी प्रियंकर बने हो विभो ।। पार्श्वनाथ...।।438।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. वसू मद को टारिके त्रिषठता निवारिके ।
प्राप्त करो सम्यक्त्व पाद उर में धारिके ।। पार्श्वनाथ...।।439।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नाश कर्म का करूँ सुज्ञान आज दीजिए ।
निजात्म को लखूँ सदा ये वरदान दीजिए ।। पार्श्वनाथ...।।440।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. शिव सत्य सुन्दरम् के आप प्रभु धाम हो ।
अत: आप द्वय चर्ण में मेरा प्रणाम हो ।। पार्श्वनाथ...।।441।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. खण्ड षष्ठ लोक तीन में न कोई कर सके ।
गुरु की कृपा न हो तो मुक्ति भी न वर सके ।। पार्श्वनाथ...।।442।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. ज्यों शिखण्डिनी स्वरात् सर्प दर्प छोड़ता।
त्यों हि आप देखके जु मोह राग भागता।। पार्श्वनाथ...।।443।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "डि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नित्य ही निगोद बीच जीव रहा नंत काल ।
अष्टदशं बार एक श्वास में मरा त्रिकाल ।। पार्श्वनाथ...।।444।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. चंद्र कांति के समान ये आपकी छवी लगे।
चंदनादि द्रव्य लेय आपके चरण जजें ।।
पार्श्वनाथ! देव सेव आपकी करूँ सदा,
लीजिए सु आप साथ भूलिए नहीं कदा ।।445।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. दर्प को मिटा के नाथ आत्मदर्शी हो गये।
आपकी कृपा जु नाथ भक्त पार हो गये ।। पार्श्वनाथ...।।446।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नमः प्रभू नमः प्रभू आप पाद पर्श है।
आपके जु पाद में मिले मुझे सु स्वर्ग है।। पार्श्वनाथ...।।447।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. कस्य को सुनाऊँ नाथ मैं व्यथा निजात्म की।
वश्य होउँ चाहता मिली जु शर्ण आपकी ।। पार्श्वनाथ...।।448।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

जँह मयूर आते, भुजंग भागें, बन्धन ढीले पड़ जाते।
प्रभु उर में आते, कर्म भगाते, अर्घ चढ़ा मुक्ति पाते।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हगदहारीणं पदाणुसारीणं।

श्लोक नं. 9

सर्प वृश्चिक विषनाशक

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रैर–रुपद्रव–शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो–स्वामिनि स्फुरित–तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।

गीतिका–छन्द

तेजस्वी नृप देख चोर सब, माल छोड़ भग जाते हैं,
हे प्रभु! हाहाकार मचाते, अपने प्राण बचाते हैं।
वैसे भवि जो दर्शन करते, सभी उपद्रव हों निष्प्राण,
तेरा दर्शन महा शक्तिमय, अघ रक्षा करते निज प्राण।।

ऋषीन् संभिन्नश्रोत्रर्द्धीन्, सर्वशब्द प्रकाशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं सभिन्नश्रोतृभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सोलह कारण पूजन

1. मुक्ति पथ के स्वामी जिनेश, भक्त को युक्ति दो परमेश।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
पार्श्व प्रभु चरणों जो आये, उसके सब संकट टल जायें।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।449।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. वाच्य प्रभु के हैं गुण सार, हृदय धरे वो हो भव पार।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।450।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. अनन्त गुणधारी जिनराज, भक्त पुकार करे महाराज।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।451।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. एकल न कभी करो विहार, कुंद कुंद गुरु करें गुहार।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।452।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. वन अरु भवन में रहना होय, फिर भी मन में समता होय।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।453।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मनहारी मूरत प्रभु आप, देखत दूर भगें सब पाप।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।454।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नुत नत रहते इन्द्र गणेश, तव चरणों में हे परमेश!
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।455।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. अरजा: आप कहाते नाथ, जरा* आपका नहिं दे साथ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।
पार्श्व प्रभु चरणों जो आये, उसके सब संकट टल जाये।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।456।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सब जग है स्वारथ का नाथ, तव उपदेश होय नि:स्वार्थ ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।457।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. हरदम देखो हैं तैयार, पाप कमाने में संसार ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।458।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. सादर सविनय करूँ प्रणाम, वामानन्दन को दिन शाम ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।459।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. जिनशासन है आदि अनंत, शरण रहे हो भव का अंत ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।460।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. जय जिनेन्द्र बोलो मुख खोल, वाणी में मिश्री को घोल ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।461।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नें" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. द्रह से चौदह नदियाँ आयें, जिनवर का अभिषेक करायें ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।462।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. रौद्र ध्यान है अति दुखदाय, त्याग करो होवे सुखदाय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।463।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. इन्द्रै: पूजें संग परिवार, सम्यग्दर्शन पावैं सार ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।464।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्रै:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*बुढ़ापा

17. रुचि सम्यक्त्व प्रकट जब होय, आतम से मिलना तब होय।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।
पार्श्व प्रभु चरणों जो आये, उसके सब संकट टल जाये।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।465।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. परदेशी बन भटका नाथ, चौरासी लख योनि पाथ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।466।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. द्रव्य थाल स्वर्णिम सजवाय, जिनवर चरणों लाय चढ़ाय।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।467।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वसुधा वधु सी सजी है आज, जन्म लिया जब श्री जिनराज।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।468।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. शम दम से प्रभु कर्म खिपायें, अरु श्रेणी पर चढ़ते जायें।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।469।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. शतैस्त्वाम् वन्दें सुरराय, मेरु पर जा न्हवन कराय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।470।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्वम् जिन मेघ मयूर हूँ नाथ, वैन सुनत हरषें मम गात।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।471।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. क्षायिक दर्शन ज्ञान महान, अरु शोभे चारित भगवान।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।472।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वीत गया है राग जिनेश, जीत लिया निज आत्म धनेश।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।473।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. क्षितिज विहारी हो जिनराय, भवि को भव से पार कराय।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
पार्श्व प्रभु चरणों जो आये, उसके सब संकट टल जाये।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।474।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तेज करोड़ों सूर्य हराय, भामण्डल शोभें जिनराय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।475।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कोऽपि दुःखी रहे नहिं जीव, सुख पावें सब नाथ सदीव ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।476।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गोपन इन्द्रिय मन कर लीन, बैठे नाथ स्वयं में लीन ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।पार्श्व प्रभु...।।477।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. स्वारथ का मेला जग झूठ, रिश्ते सब बंधन के खूँट ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।478।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मिला नहीं अब तक हमराज, भक्त को निज सम करें जिनराज।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।479।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. नित उठ करुँ प्रभु से अरदास, मुझे बिठाओ अपने पास।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।480।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. स्फुरदंशु* जाल बिखरेय, प्राची दिशा से प्रकटित होय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।481।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्फु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रिक्त कषायें करीं जिनेश, फिर लक्ष्मी करती अभिषेक ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।482।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सूर्य

35. तद्भव शिवगामी अभिराम, अविनाशी सुख जिनका धाम।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।
पार्श्व प्रभु चरणों जो आये, उसके सब संकट टल जाये।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।483।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तेरह बीस पंथ को छोड़, वीतराग के पथ पर दौड़ ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।484।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. जल जाये जब ध्यान अनल, कर्म हनन होते तिस पल ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।485।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सिर पर से सब केश उखाड़, दिये प्रभु ने कर्म पछाड़ ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।486।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दृष्ट्वा नाथ आप अनिमेष, इन्द्र बनाये शत सौ नेत्र ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।487।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. टल जातीं सब ही बाधाएँ, जो चल कर प्रभु चरणों आए।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।488।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ट" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मान भंग कर सके न कोय, जब तीर्थंकर पदवी होय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।489।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रेधा वन्दन जो कर जाय, वह आनन्द अपूरब पाय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।490।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चौराहा नर गति कहलाय, जीव यहाँ से चउगति जाय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।491।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. रेन बसेरा सम घर द्वार, यात्री सम रिश्ते परिवार।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।
पार्श्व प्रभु चरणों जो आये, उसके सब संकट टल जाये।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।।492।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. रितु छहों फल फूल दिखाय, जहाँ पर पहुँचे श्री जिनराय।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।493।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वात्सल्य की बही थी धार, ज्ञानी विमल गुरु के द्वार ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।494।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. शुद्ध बुद्ध हो आप विशुद्ध, कर्म असाता से अविरुद्ध ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।495।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. पथ मुक्ति का दुर्गम नाथ, हाथ पकड़ गुरु चलते साथ ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।496।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. शब्द नहीं गुण कहने पास, शब्दांजलि चरणों की दास ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।497।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. गुरवः पान्तु पाद हमेश, पाद दिलाते पद परमेश ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।498।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. अप्रतिम गुणधाम जिनेश, जिन मूरत निरखूँ अनिमेष ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।499।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. परमानन्द का पान महान, करते हैं जिन जगत प्रधान ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।500।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. लाल न लोचन देखे पाय, निष्कषायता को दिखलाय।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
पार्श्व प्रभु चरणों जो आये, उसके सब संकट टल जाये।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।501।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. यम और नियम दोय हैं रूप, वीतरागता के अनुरूप।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।502।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. माया मिथ्या और निदान, शल्य तीन त्यागी मतिमान।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।503।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रत्नैः जो पूजै जिनराज, रत्नत्रय का पाये जहाज।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। पार्श्व प्रभु...।।504।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

पारस दर्शन से, अघ हैं टलते, कर्मचोर भग जाते हैं।
प्रभु मेरे स्वामी, हो जगनामी, अर्घ चढ़ा सुख पाते हैं।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्गविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो विसहरविसविणासयाणं संभिण्ण सोदाराणं।

श्लोक नं. 10

तस्कर भय विनाशक

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्–जलमेष नून–
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः।।10।।

गीतिका–छन्द

मशक भरी वायु तो वह भी, डूब न सागर पाती है,
सागर में रह करके भाई, वारिधि से तिर जाती है।
हे प्रभु आप भरे जिस उर में, वह भव डूब न पाता है,
तारन हारे तुम हो लेकिन, मनु भव से तिर जाता है।।

यतीनृजुमतीन् सूक्ष्म, पदार्थानेकसंविदः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द-चाल

1. त्वं दर्शन पाय जिनन्दा, भवि सुख पाये आनन्दा।
सम्यग्दर्शन को पाये, जो मोक्ष पुरी पहुँचाये।।505।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. तापस ने प्रभु वाणी सुन, छोड़ी अपनी मिथ्या धुन।
मिला प्रभु सान्निध्य सहारा, वह कीना भव का किनारा।।506।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. रहना प्रभु सदा हृदय में, यह आश लगी है मन में।
जब प्राण भी मेरे निकलें, मन सोऽहं सोऽहं बोलें।।507।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. कोयल सुर में है कुहकती, जब आम्र मञ्जरी लखती।
मम मन मयूर हरषा है, प्रभु दर्शन पा चहका है।।508।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. जिनवाणी का रसपान, देता आनन्द महान।
मैं भी रसपान करूँगा, प्रभु सम आनन्द वरूँगा।।509।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. नत मस्तक नाथ हुआ हूँ, प्रभु आज सनाथ हुआ हूँ।
चरणों में नाथ रहूँगा, नहिं कभी अनाथ होऊँगा।।510।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. कर्तव्य रोज तुम करना, माँ जिनवाणी चित धरना।
कर्तव्य बोध जब होता, निज का सुशोध तब होता।।511।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. निर्ग्रन्थं आप हुए हो, मन ग्रन्थिं नाश किए हो।
चौदह प्रकार के संग को, तिल अञ्जलि आप दिए हो।।512।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्थं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भरपूर थी सुख सम्पत्ति, नहिं कोई दिखी विपत्ति।
फिर भी निज को संबोधा, निज आतम को संशोधा।।513।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विघ्नों से नाथ घिरा हूँ, चरणों में आन पड़ा हूँ।
सब विघ्न उपद्रव नाशो, हे प्रभु! सौभाग्य विकासो।।514।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. द्रव्यानां थाल सजाया, भक्ति से भाल भराया।
तव चरणों अर्घ समर्पित, मम भक्ति पद में अर्पित।।515।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. तरसा हूँ पद पर्शन को, बरसा हूँ प्रभु दर्शन को।
प्रत्यक्ष दर्श कब पाऊँ, चरणों में प्रीति लगाऊँ।।516।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. एकत्व भावना भायी, जब प्रभु विरक्तता आयी।
एकाकी ध्यान लगाया, तब केवल ज्ञान उपाया।।517।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वर ली प्रभु सिद्धिप्रिया को, दे अपना उसे जिया को।
रहें नंतकाल तक साथ, शिवरमणी के प्रभु नाथ।।518।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. गत्वा धनु पंच सहस पै, तव नाथ रूप अनुपम है।
कर दी धनेश ने रचना, अब सुनाना है जिन वचना।।519।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मुद् अर्थ बहुत सुन्दर है, हर्षित मन भी अन्दर है।
प्रभु पार्श्व को जब भी देखा, प्रमुदित हुई जीवन रेखा।।520।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. वधिरा सुने मूक भी बोले, वह पूर्ण स्वस्थ भी होले।
हो प्रभु चरण का पर्शन, तब पाये नव संजीवन।।521।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. हंसा जब तन से निकले, इंसा भी घर से निकले।
चेतन की महिमा न्यारी, इस बिना रहे ना यारी।।522।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिमिरारि नाथ कहाते, सम्यक् प्रकाश दिखलाते।
भूले भटके पथिकों को, प्रभु समिकत राह चलाते।।523।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हृदयांगन आन पधारो, प्रभु भक्ति मेरी सजा दो।
हे अजरामर अभिरामी! मम हृदय वेदी चमका दो।।524।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दर्पण सम ज्ञान तुम्हारा, झलके पदार्थ हैं सारा।
सब जगत चराचर जाना, प्रभु केवलज्ञान महाना।।525।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. कायेन वचन अरु मन से, आस्रव होता योगों से।
प्रभु योगों को निरवारा, निज आतम तत्त्व निहारा।।526।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नमता जो प्रभु चरणों में, रहता है सब नयनों में।
वह शुद्ध दशा को पाता, भर लेता जीवन साता।।527।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. यश फैला है चहुँ दिशि में, यशकीर्ति रही उदय में।
जिनवाणी मात बताती, यश प्राप्त करो सिखलाती।।528।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. दुषमा सुषमा जो काल, प्रभु जन्म हुआ शुभ काल।
यह है मुक्ति का थाना*, इसमें शुभ ज्ञान उपाना।।529।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*स्थान

26. उन्मत्त हुआ जो मन है, उसका ही भव में भ्रमण है।
सम्यक्त्व दशा को पाओ, अपना भव भ्रमण मिटाओ।।530।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रंजन मन का नहिं करना, भंजन मन का तुम करना।
निरअंजन रूप निहारो, निज शुद्ध स्वरूप विचारो।।531।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. निज अंतःकरण सम्भालो, त्रय रत्न से इसे सजालो।
है भव भव में सुखदायी, प्रभुवर ने युक्ति दिखायी।।532।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. यश पाने की अभिलाषा, करवाती सभी तमाशा।
निज–पर उपकार करो तुम, फिर यश भरपूर वरो तुम।।533।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. द्वादश भावन को भाया, वैराग्य सु स्थिर पाया।
लौकान्तिक देवों ने आकर, किया अनुमोदन रत्नाकर।।534।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दृष्टि से दृश्य है बनता, पर दृष्टि से पर भ्रमता।
सद्दृष्टि प्राप्त करो तुम, प्रभु का आशीष वरो तुम।।535।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तिमिरकृत भी सूर्य है होता, प्रभु भामण्डल द्युति देता।
सूरज करे जगत प्रकाश, भामण्डल करे विकाश।।536।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तिमृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तन धन की सुध नहिं होती, जब भक्ति हिलोरें लेती।
भक्ति मुक्ति है दिलाती, वह शिवपुर डगर दिखाती।।537।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रथ धर्म का बहुत भला है, दो पहियों पर ये चला है।
श्रावक साधु दो पहिये, दोनों ही निज पद गहिये।।538।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तिर जाता है भव प्राणी, जो हृदय धरे जिनवाणी।
यह नौका पार कराये, भव सागर से तिरवाये।।539।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. यज्ञानामृत का प्याला, पीता है किस्मत वाला।
जिसने इसे पान किया है, उसका कल्याण हुआ है।।540।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. जब जब मम पाप उदय हो, तब तब नवकार हृदय हो।
ये है जहाज वो प्यारा, जिसने लाखों को तारा।।541।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लग जाये नाथ लगन मम, हो जाये आप मगन मन।
चरणों में लगन लगायी, पापों की गलन है पायी।।542।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मेरी इक बात सुनो प्रभु, मुझे भव से पार करो विभु।
नन्हा हूँ बाल*1 तुम्हारा, आकर दरबार पुकारा।।543।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. षट्पद*2 जैसे सुमनों का, रस पीकर के है चहका।
मुझे षट्खण्ड ज्ञान करा दो, आतम के रस को चखा दो।।544।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नूतन कमलों की रचना, जहाँ पाद प्रभु को रखना।
देवेन्द्र करें हरषा के, अरु मंद-मंद मुस्का के।।545।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नयनाभिराम जिनवर जी, मम पाप हरो अघहर जी।
करूँ त्रिकाल तुमको वंदन, हे वामा माँ के नंदन!।।546।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मंदिर है हृदय बनाया, कमलासन वेदी लगाया।
हे नाथ! विराजो आकर, चिन्तामणि पारस ध्याया।।547।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*बालक *भँवरा

44. तर्कागम और अनुमान, सद्ज्ञान की ये पहिचान।
गुरु ज्ञान देते मतिमान, हम करते अति बहुमान।।548।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गर्भावतार अति सुन्दर, प्रभु आये कुक्षि अंदर।
देवों ने रत्न गिराये, अरु मंगलाचार कराये।।549।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तन मन यह तरस रहा है, सावन बन बरस रहा है।
हे पार्श्वनाथ! जगनामी, सादर चरणों प्रणमामि।।550।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. कमठस्य भी मान गिरा है, चरणों में आन पड़ा है।
अपनी सब विद्या समेटी, प्रभु चरणों कान उमेठी*2।।551।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महाभाग्य से आप मिले हो, निर्बन्धन आप चले हो।
अब मम दुर्भाग्य मिटाओ, प्रभु अपने पास बुलाओ।।552।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रूपादि प्रेम नहिं करना, रूहादि से नेह सँवरना।
रूपादि कर्म बढ़ायें, इस जग में भ्रमण करायें।।553।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. यतः ततः नहिं जाना, निज में है भरा खजाना।
जिसने निज वैभव जाना, वह पाया केवलज्ञान।।554।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सत्कर्म को कर ले प्राणी, कहती है माँ जिनवाणी।
सत्कर्म ही कर्म खिपाये, फिर शिवपुर राज कराये।।555।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. कितनी देहरी हैं छोड़ीं, कितनी मटकी हैं फोड़ीं।
फिर भी क्यों लगती थोड़ीं, क्यों करता हाथाजोड़ी।।556।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*क्षमा माँगी

53. लाया हूँ सुमन सँजोकर, क्षीरोदधि जल से धोकर।
मम मन को सु मन बना दो, मुझे सिद्धों से मिलवा दो।।557।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अनुगामी आप बनूँ मैं, पथगामी बन के चलूँ मैं।
अनुरागी नाथ तुम्हारा, दे दो शिवपुर का इशारा।।558।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भाया तब रूप जिनेश्वर, पाया तव द्वार महेश्वर।
सौभाग्य से अवसर आया, प्रभु दर्शन मैं कर पाया।।559।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. बहवः तुम भक्त हैं आते, भक्ति कर तुम्हें लुभाते।
वे पार्श्व भक्ति को करके, फिर अचिन्त्य वैभव पाते।।560।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

ज्यों मशक तैरती,हवा तिराती, बात समझ में आ जाती।
प्रभु हृदय में आते, भव से तिराते, भक्ती अर्घ चढ़ा जाती।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खर भय पणासयाणं उज्जुमदीणं।

श्लोक नं.11

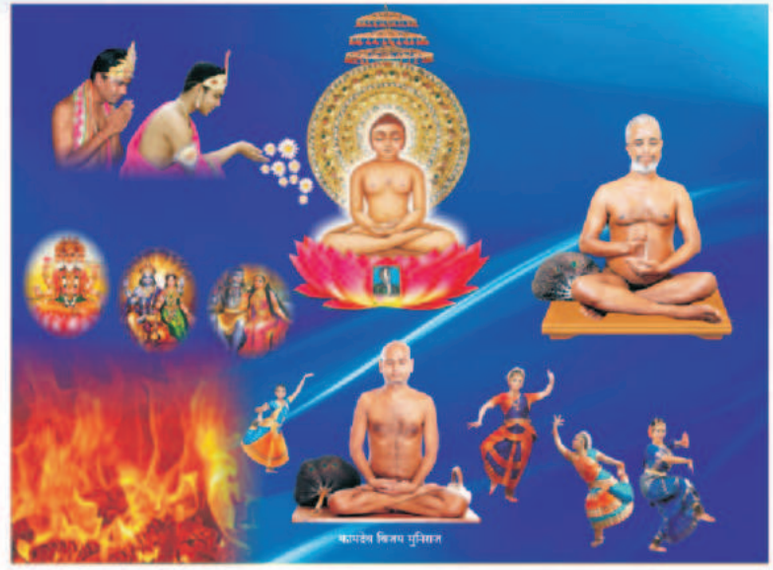

जलाग्नि भयविनाशक

यस्मिन् हर – प्रभृतयोऽपि हत–प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रति–पतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्द्धर–वाडवेन?।।11।।

गीतिका–छन्द

हरि–हर ब्रह्मा आदि सभी जन, हार गए जब आया काम,
हे प्रभु! तुमने ब्रह्मशक्ति से, किया काम का काम तमाम।
जिस जल ने विंध्याचल गिरि की, अग्नि बुझाई सच ये बात,
बड़वानल की आग बुझाने, उस जल में क्या शक्ति बिसात।।

ऋषीन् विपुलमत्याख्यान्, मनःपर्यय विद्युतान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–धत्ता

1. यस्यावतार है, पितु द्वार है, रत्नों की वर्षा मनहर।
माता पुलकित है, सभी मुदित हैं, भवि जीवों को है सुखकर।।561।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. अहमिन्द्र बनूँ मैं, चरण जजूँ मैं, इक भव का अवतारी बनूँ।
प्रभु सम गुण पाऊँ, ध्यान लगाऊँ, लोक शिखर का वासी बनूँ।।562।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मिन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. हम द्वार पै आये, प्रभु गुण गाये, ज्ञान प्रभु सम वरने को।
प्रभु ध्यान धरो मम, अरज करें हम, शक्ति दो विधि हनने को।।563।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रम्भा उर्वशी जो, करें युक्ति वो, प्रभु के मन को हरने की।
प्रभु अचल मेरु सम, डिगा नहीं मन, लगी लगन निज रमने की।।564।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. प्रभु नाम जाप त्वं, हरे पाप मम, महिमा कौन करे वर्णन।
रहूँ शरण तिहारी, हे त्रिपुरारि! जीवन चरणों में अर्पण।।565।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भृङ्गार ताल हैं, कलश भाल है, मंगल द्रव्य सजे भारी।
तव शरणा पाऊँ, ध्यान लगाऊँ, समवशरण तव मनहारी।।566।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. तत्त्वों की चर्चा, हो नित अर्चा, अहमिन्द्रों के बीच सदा।
इक दो भव में ही, कर्म हने ही, बसते सिद्धों बीच सदा।।567।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. योगीजन गाते, ध्यान लगाते, सतत साधना करते हैं।
गुण लखते जायें, निज को पायें, नित प्रभावना करते हैं।।568।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यों" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सोऽपि हूँ भगवन्, शक्ति नहीं तन, भक्ति से गुणगान करूँ।
प्रभु नंत वीर्य है, नहीं पीर है, भक्ति कर भगवान बनूँ।।569।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. यह दुनियाँ माया, छल करवाया, मोह राग अरु द्वेष लगे।
निज आतम जाने, जिन की माने, उसके सारे कर्म भगे।।570।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. तरसे है प्राणी, सुनने वाणी, इक टक प्रभु की ओर लखे।
प्रभु समवशरण में, द्वादश गण हैं, हर गण को प्रभु आप दिखे।।571।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. प्रज्ञा जब आती, ज्ञान बढ़ाती, मतिश्रुत ज्ञान की महिमा है।
वह तर्क सिखाती, वाद जिताती, अकलंक सम ही बनना है।।572।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भावों से बन्ध, हो निर्बन्ध, भव में भाव का खेल यहाँ।
मनमानी करता, भाव गर यहाँ, भावों से ही जेल यहाँ।।573।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. मनवाः तुम जपना, कभी न तजना, मन्त्र महा नवकार कहा।
है यह जहाज वह, पार करे भव, लाखों भवि जप तरे यहाँ।।574।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. सोऽहं सोऽहं कह, हो प्रभु सम वह, भगवन् भक्त में दिखते हैं।
अर्हं को जपकर, अर्हत् पद धर, कर्म सभी वह नशते हैं।।575।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. सोऽपि भी हारा, मोह विचारा, अधःकरण के करने से।
सम्यक् को पाया, मोह भगाया, विनम्र गुरु के वचनों से।।576।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सोना

17. तत्त्वज्ञ हो प्रभुवर, सजे हो भू पर, बिन आभूषण रत्नों से।
जग के आभूषण, रहा न दूषण, मिले तो लगते सपनों से।।577।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पाया निज धन को, आत्म वतन को, अमरापुरी के वासी हो।
पंचम गति पायी, अति सुखदायी, आप सदा अविनाशी हो।।578।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. रग-रग में बसती, जिनवर भक्ति, सविनय प्रभु का वन्दन है।
मेरे प्रिय भगवन्, मम यह जीवन, चरणों करना अर्पण है।।579।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तिर गये वो प्राणी, सुनी जो वाणी, शरण आपकी आकर के।
भव भव में भटके, दु:ख में अटके, दूर चरण से जाकर के।।580।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पत्थर थे बरसे, पर प्रभु चहके, आत्म ज्ञान की बगिया में।
अरि अग्नि जलायी, धूलि उड़ायी, प्रभु रहे निज कुटिया में।।581।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. गति: चार चौरासी, लख ही खासी, प्राणी इनमें भ्रमण करे।
उनमें इक खासी, नर की राशि, नर मुनि बन भव भ्रमण हरे।।582।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. क्षयने कर्मों को, दश धर्मों को, उत्तमता से धारण कर।
फिर क्षमा मूर्ति बन, पारस सा बन, कर्मों का संहारण कर।।583।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पिछले कई जन्मों, अच्छे कर्मों, का फल आज उपाया है।
पारसमणि का सा* पार्श्व प्रभु का, दर्शन आज जो पाया है।।584।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. प्रात: उठ करके, भक्ति भर के, जिनवर का गुणगान करूँ।
बीते दिन सारा, भक्ति द्वारा, निज का नित सम्मान करूँ।।585।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*समान

26. क्षय करना तन को, वश में मन को, मरने से नहिं डरना है।
करूँ मरण समाधि, हर लूँ व्याधि, मुक्ति का पथ वरना है।।586।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. णेयं प्रमाण है, नंत ज्ञान है, ज्ञानी सर्व जगत जाने।
ज्ञाता दृष्टा बन, निज सृष्टा बन, ध्यानी सर्व करम हाने।।587।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नख से शिख तक ही, बँधी देह भी, जाँघें भी छिल गई हों गर।
पारस प्रभु भक्ति, देती शक्ति, बंधन का नहिं कोई डर।।588।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. विज्ञान भानु है, पूर्णज्ञान है, केवलज्ञान लहा जिसने।
बचे शेष अघाती, हनकर घाती, योग निरोध किया उसने।।589।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ध्याया जिसने भी, पारस प्रभु जी, ध्याता ध्येय स्वयं ही है।
ज्ञाता दृष्टा वह, निज सृष्टा वह, ज्ञायक नित्य स्वयं ही है।।590।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. पिच्छी के धारी, पाद बिहारी, मुनिगण जग विचरण करते।
स्व-पर उपकारी, कर* आहारी, वे निज आत्म रमण करते।।591।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. ता थेई थेई धावें, वाद्य बजावें, प्रभु भक्ति में किन्नरियाँ।
छम छम कर नाचें, प्रभु गुण जाँचें, सम्यक् की पावें निधियाँ।।592।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. हुआ रोग जलोदर, महाभयंकर, जीने की आशा छोड़ी।
पारस के दर पर, आय धरे शिर, कंचन सी काया जोड़ी।।593।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तव गुण को वरना, नहिं कुछ करना, णिक्कमा बन जाना है।
धर वीतरागता, निज में समता, सिद्धों के पथ जाना है।।594।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*हाथ

35. भुवनत्रय स्वामी, हे जगनामी! गुण अभिरामी आप जिनम्।
त्रययोग से वन्दूँ, नित आनन्दूँ, चरणों शत-शत बार नमन्।।595।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मुरज: नहिं सोचे, कोई भी ठोके, ध्वनि प्रसारण करती है।
तीर्थंकर वाणी, सुन ले प्राणी, दुभग निवारण करती है।।596।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. परिवर्तन सारा, पंच प्रकारा, नंत काल करता आया।
सौभाग्य हमारा, प्रभु का द्वारा, भ्रमण पंच अब नहिं भाया।।597।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यह भक्त निबल है, भक्ति बल है, सद्य भवोदधि पार करूँ।
तव गुण को ध्याऊँ, पूज रचाऊँ, निज का मैं उद्धार करूँ।।598।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. सागर तर जाना, कुछ कर जाना, भगवन् की भक्ति करके।
भक्ति है युक्ति, देती मुक्ति, निज आतम शक्ति वरके।।599।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. थर-थर वह काँपे, क्षमा को याचे, कमठ जीव चरणों पड़ कर।
प्रभु आप दयालु, बड़े कृपालु, किया माफ उसको क्षण भर।।600।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ये महल अटारी, बड़े दुखारी, साम्य भाव नहिं वरने दें।
जग में दु:ख जितने, प्रभु ने मेटे, इनमें दु:ख नहिं करने दे।।601।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नन्हा हूँ बालक, आप हो पालक, तव चरणों में आन खड़ा।
प्रभु पद झुकता हूँ, पद नमता हूँ, झुकते ही मम ज्ञान बड़ा।।602।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पीकर विष मदिरा, मन नहिं सुधरा, प्रीति न दिखती प्राणी में।
अतएव चरण में, लगा लगन ले, कहती माँ जिनवाणी हमें।।603।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तं पारस देवम्, पूज रचें हम, संकट तारण हारण जो।
हरता अंधियारं, पूर्ण प्रकाशं, भवजल शोषण कारण हो।।604।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नव वधु सी सजती, है ये धरती, षड् ऋतु के फल-फूल सजे।
यह नगर बनारस, बना है इक रस, घर-घर तोरण द्वार सजे।।605।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. किंचित् है न्यून, देह अमून, सिद्धालय में जाय प्रभु।
कृतकृत्य हुए प्रभु, आत्म रमे विभु, श्रद्धालय में आय विभु।।606।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तव शरणा पाकर, ध्यान लगाकर, भविजन बहु भवपार हुए।
अद्भुत प्रभु शासन, निज अनुशासन, स्वर्ण भद्र से मोक्ष गये।।607।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. दर्पणवत् ज्ञान, हुआ महान, जगत चरा चर दिखता है।
जन-जन में गाऊँ, प्रीति बढ़ाऊँ, प्रभु दर अच्छा लगता है।।608।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पिया मोह जहर है, पड़ा कहर है, पीकर प्राणी मरा यहाँ।
प्रभु अमर है वाणी, सुन लो प्राणी, कर्म निर्जरा करो यहाँ।।609।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दुर्भाव सम्हालूँ, ज्ञान बढ़ालूँ, प्रेम भाव सब जीव रहें।
वन भवन समाना, मित्र शत्रु ना, विपरीतं माध्यस्थ रहें।।610।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. धनवान भी आते, कथा सुनाते, प्रभु से धन को पाने की।
देखे सब याचक, प्रभु पद वाचक, याच करूँ गुण पाने की।।611।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रत्नों के आगर, गुण रत्नाकर, रत्न ज्योति चमके उर में।
हम आये द्वारे, तुम्हें पुकारे, भविजन के बसते उर में।।612।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वार किया प्रभु, शस्त्र नहीं विभु, कैसे आपने यत्न किया।
हारा मोहारि, बड़ा दुःखारी, जिनवर ने प्रयत्न किया।।613।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. डगमग है डोले, नाव हिंडोले, नैया नाथ तिरा देना।
मुक्ती के स्वामी, हे ध्रुव धामी! सेवक गले लगा लेना।।614।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ड" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वेदी है बनायी, हृदय सजायी, भक्ति से प्रभु शुद्ध करो।
हे नाथ आइए, बैठ जाइए, जाने की नहिं बात करो।।615।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नत मस्तक स्वामी, ध्रुव पद धामी, अजर-अमर अविकारी तुम।
मैं चरणों आऊँ, अर्घ चढ़ाऊँ, सर्व जगत हितकारी तुम।।616।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

रतिपति को जीता, आतम नेता, बाल ब्रह्म पद धार लिया।
मैं भक्ति बढ़ाऊँ, प्रभु गुण गाऊँ, श्रद्धा से यह अर्घ दिया।।

ॐ ह्रीं अनङ्गमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारियालण बुद्धीणं विउलमदीणं।

श्लोक नं.12

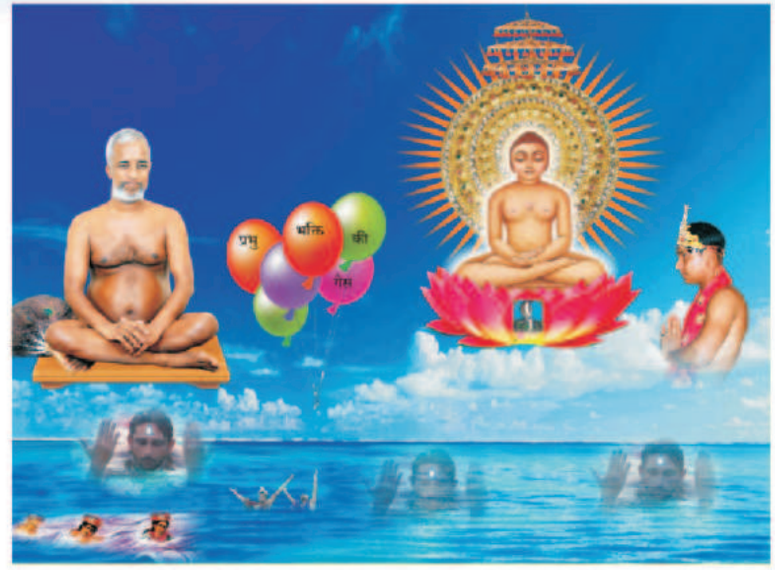

अग्निभय विनाशक

स्वामिन्-ननल्प गरिमाण-मपि प्रपन्नास्,
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

गीतिका-छन्द

जिनका था गौरव अति जग में, वो भी हुए समर्पित आप,
हे प्रभु! अचरज भारी तुमको, उर में धरे तजे वह पाप।
महापुरुष भी चिंतन करते, तुम्हें नहीं उर पाते हैं,
चिंतन से भी दूर प्रभु तुम, महिमा ऋषि बताते हैं।।

दशपूर्वधरान् विश्व, सिद्धान्ताब्धिप्रपारगान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्हयं, वंदे तुदगुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–पद्धरि

1. स्वातम अनुभव का स्वाद चखा, निज ज्ञान चक्षु से लोक लखा।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।617।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. अहमिन्द्र स्वर्ग से आते हैं, मुनि बन के कर्म नशाते हैं।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।618।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मिन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. नव लब्धि आपने पायी प्रभु, जब केवलज्ञान उपायी विभु।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।619।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. हे अनल्प कान्ति धारी जिनेश! सब जग के उपकारी महेश।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।620।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. परमार्थ आप में पलता है, छवि देख सुखामृत मिलता है।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।621।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. गन्तव्य आपका था महान, जिसे पाकर के हुए सुख निधान।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।622।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. रिमझिम–रिमझिम होती फुहार, प्रभु समवशरण में मनोहार।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।623।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. माता वामा समझाती हैं, बेटे को गले लगाती हैं।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।624।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. णमोकार है मन्त्रों का राजा, चौरासी लख मंत्रों साजा।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।625।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. महामैत्री भाव सजाया प्रभु, सबको मिलना सिखलाया विभु।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।626।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पितामह प्रभु आप कहाते हो, भव्यों के भाग्य जगाते हो।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।627।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. प्रसव: प्रभु नाम तुम्हारा है, जिनसेन स्वामी ने पुकारा है।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।628।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. पंडित पंडित हो मरण मेरा, मिट जाये कर्म का सब फेरा।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।629।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नास्तिकता का परिहार किया, आस्तिकता मैंने धार लिया।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।630।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नास्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. त्वाम् चरणों की छाया जिनेश, माम् सिर पर होवे हे महेश!
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।631।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. जंगल में मंगल होय नाथ, अतिशय चलते तुम साथ–साथ।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।632।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तव वाणी सुन करके प्रभुवर, भवि सम्यक् प्राप्त करें सुखकर।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।633।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पशवः बैरी भी जन्म जात, चरणों में बैठे एक साथ।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।634।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. करके विहार प्रभु गगन मार्ग, पहुँचे अक्षयगिरि* कर्म दाग।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।635।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. थमते ही साँसों के भगवन्, संसार बदल जाता प्रियजन।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।636।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. महाक्लेशांकुश जिनवर जी तुम, अब शीघ्र मिटा दो क्लेश भी मम।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।637।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. होतृ में होम करें जग जन, प्रभु ध्यान में कर्म को करें दहन।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।638।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हृदयाम्बुज आज पधारो प्रभु, मम जीवन आज सँवारो विभु।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।639।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. दश दिश के प्राणी को बुलाय, दुन्दुभि जिनवर संगम कराय।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।640।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. ध्यायेत् मंत्र जो नमस्कार, पापों से मुक्ति पाये सार।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।641।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सम्मेदशिखर

26. दश दिग्पाल नमें नित भाल, करें नित ही जिनधर्म सम्भाल।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।642।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धारी समता प्रभु ने अपार, निज सम शक्ति मुझे दो सुमार।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।643।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. प्रभु जनाः आपके गीत गायें, तुम सा हरदम हम मीत पायें।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।644।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जन्मत ही हो त्रयज्ञान धार, दीक्षा लेते ही भये चार।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।645।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. मो उर में निश्चय भयो आज, भव तारण को हो तुम जहाज।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।646।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दश धर्म को लेकर चले नाथ, शिवरमणी का लेने जु हाथ।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।647।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. आधिं व्याधिं सब होय दूर, अन्धे हो जाते नेत्र पूर।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।648।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. लगन लगी तुम चरण सेव, भव-भव में वर दीजै सुदेव।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।649।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. घुटनों जब चलते थे पारस, घुँघरु बजते थे मनहारक।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।650।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तस्वीर हृदय में जो धरता, तकदीर को सुन्दर वो करता।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।651।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रंक अरू राजा भी होय, प्रभु चरणन् में झुक रहे दोय।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।652।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. आदित्य आप इस भू के हो, करते प्रकाश जगती को हो।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।653।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तिथी पौष कृष्ण की ग्यारस थी, प्रभु जन्म उसी दिन दीक्षा ली।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।654।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. यह लाभ लोभ करवाता है, फिर लोक में ये भटकाता है।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।655।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. घण्टा ज्योतिषियों में बाजें, प्रभु जन्म समय नगरी साजे।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।656।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वेष दिगम्बर धार लिया, प्रभु स्व-पर का उपकार किया।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।657।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नमता चरणों में आकर जो, उठता प्रभुता को पाकर वो।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।658।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चिन्मय का ज्ञान कराते हो, अरु चिदानन्द कहलाते हो।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।659।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. नित्योदय आप रहें जिनवर, जग पाप अन्ध को हरें प्रभुवर।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।660।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नख से शिख तक हो देह बँधी, छिल गईं जाँघ बेड़ी से बँधी।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।661।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. हे हंस गामिनी! जिनवाणी, सर्वांग खिरी बनी कल्याणी।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।662।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तत्त्वों का सार बताया है, निज तत्त्व का ज्ञान कराया है।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।663।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महाव्रत के धारी हो जिनेश! महातप से काटे सब क्लेश।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।664।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. हर्षित होते लख छवि आप, भक्ति करते भवि और जाप।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।665।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल सुसाजत है।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।666।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. यथा-यथा ज्यों तत्त्व समाय, तथा न रुचते विष कषाय।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।667।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. दिक्षा शिक्षा देते जो नाथ, आचारज हैं जग के सुनाथ।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।668।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वामाक्षि का पड़ता नहिं प्रभाव, है काम सुभट का ही अभाव।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।669।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. प्रत्यक्ष अरु हैं परोक्ष दोय, इनसे प्रामाणिक ज्ञान होय।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।670।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भागीरथी गिर जिनदेव शीश, फिर गंगा कुण्ड से बही ईश।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।671।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. विभवः भव से हो रहित देव, भवि जीव करें नित चरण सेव।
चिंतामणि चिंता दूर करो, मन चिंतित काज को पूर्ण करो।।672।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

गुरुवर प्रभुवर को, धार हृदय में, भवि भवदधि तर जाते हैं।
महिमा प्रभुवर की, हल्का करती, भक्ति से अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं अतिशय गुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणलभय वज्जयाणं दसपुव्वीणं।

श्लोक नं.13

जल मिष्ट कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म–चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नील–द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी?।।13।।

चौपाई

हे भगवन्! तुम क्रोध रहित थे, कैसे पाई अरि पर जय,
क्रोध बिना इस भव में प्राणी, कैसे पाता कभी विजय।
बर्फ पड़े जब भारी तब–तब , हरे वृक्ष जल जाते हैं,
वैसे क्षमा ठंड सी अग्नि, कर्म सभी मिट जाते हैं।।

चतुर्दश महापूर्वान्, धरान् विद्याविशारदान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छंद–ज्ञानोदय

1. क्रोध अग्नि से ज्वलित कमठ ने, दश भव तक था बैर किया।
पूर्ण शक्ति उपसर्ग किया पर, प्रभु समता ने हरा दिया।।673।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. क्रोध स्वभाव नहीं है मेरा, क्षमा भाव मेरा धन है।
इन विचार से पारस प्रभु ने, पाया निज वैभव धन है।।674।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्स्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तत्त्व अतत्त्व को जान प्रभुवर, आत्म तत्त्व में लीन हुए।
स्वानुभूति का अनुभव करते, कर्मदहन में प्रवीण हुए।।675।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. याद प्रभु की भक्तजनों के, सारे संकट हर लेती।
जो जिन वचन धरे निज उर में, उसको बोधि वर देती।।676।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. यत्र तत्र विचरण करके नहिं, कोई तत्त्व को पा सकता।
स्थिर हो निज ध्यान करे तो, आत्म तत्त्व को पा सकता।।677।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. दिव्य द्रव्य लेकर सुरेन्द्र भी, समवशरण में आते हैं।
प्रभु के चरणों की पूजन कर, हर्षित मन हो जाते हैं।।678।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. विनम्र गुरु समझायें हमेशा, बेटा नम्र बने रहना।
विनय मोक्ष का द्वार है कहते, इसको याद सदा रखना।।679।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भोग और उपभोग में पड़कर, निज उपयोग न भूलो तुम।
चउ अनुयोग का अध्ययन करके, रत्नत्रय को छूलो तुम।।680।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. प्रक्षालित हो गया वदन मम, चरण धूलि मिल जाने से।
हृदय कमल भी धन्य हो गया, जिनवर उर में आने से।।681।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. थककर बैठ कभी मत जाना, भव्यो चलते जाना तुम।
चलना चलते ही तुम रहना, निज गन्तव्य को पाना तुम।।682।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मंद मंद मुस्कान आपकी, हे प्रभु! मन को हरती है।
मन मंदिर में पार्श्व प्रभु की, मूरत हमने धर ली है।।683।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. निश्चय और व्यवहार है दोनों, दो नयनों का कार्य करें।
इन दो पहियों के रथ–चढ़कर, मुक्ति महल को प्राप्त करें।।684।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रत्तो बंधदि कम्मा का यह, सूत्र कुंद कुंद जी कहते।
राग छोड़कर हो विराग तुम, वीतराग प्रभु को भजके।।685।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. स्तोत्र आपका जो भी पढ़ता, मोद अत्यधिक पाता है।
स्तुति करके हो निमग्न निज, शोध स्वयं कर जाता है।।386।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. ध्वनि आपकी दिव्य कहाती, ॐकार मय खिरती है।
गणधर देव ने गूँथा इसको, द्वादशांगमय सजती है।।687।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. रस्ता है मुक्तिपुर लम्बा, चलना यहाँ अकेला है।
जिस पर आप चले जिनवर जी, मुझे उसी पर चलना है।।688।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. अस्त व्यस्त हो गया है जीवन, पर में मस्ती करने से।
करूँ स्तवन् आज प्रभुवर, इस बस्ती से बचने से।।689।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. दान देय मन को हर्षाता, भोग अधिक वह पाता है।
भोगभूमि फिर सुरपद पाता, मुनि बन मुक्ति पाता है।।690।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. वन्दन निर्बन्धन का कर लो, बन्धन मुक्ति पा जाओ।
निर्बन्धन का ध्यान धरो तो, नन्दन आतम में पाओ।।691।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दयामूर्ति गुरुदेव हमारे, इतनी दया सिखा देना।
पार्श्व प्रभु से आप मिले हो, हमको भी मिलवा देना।।692।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. करता हूँ प्रभु एक निवेदन, करुणा कर स्वीकार करो।
जिस आतम बल के धारी हो, मुझको भी वह संबल दो।।693।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. थम्ब बनाये चौ आराधन, भवन बनाया अति सुन्दर।
अर्हत् रूप में स्वयं विराजे, करता हूँ शत-शत वन्दन।।694।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कितनी प्रभु अब करूँ प्रतीक्षा, और परीक्षा मत लेना।
नन्हा सा बालक हूँ भगवन्, आप्त की शिक्षा दे देना।।695।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. ललना मुक्ती को परिणाया, ध्यान की माला डाल गले।
निजानन्द सुख को है पाया, नंत काल तक रहे भले।।696।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कर्त्तव्यों को मत भूलो तुम, ये ऊर्धत्व दिखाते हैं।
कर्त्तव्यों का पालन करके, गुणमय भवि हो जाते हैं।।697।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मत भूलो यह बात भविक जन, तुम पर गुरु कृपा कितनी।
नित्य निगोद से बाहर लाये, परम गुरु की दया इतनी।।698।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. चौदिश में मुख दिखते जिनवर, चौंतिश अतिशय धारी हैं।
दर्शन कर सब सुखमय होते, जिनवर परमुपकारी हैं।।699।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जरा: नहीं है आप सहेली, कर्म निर्जरा करते हो।
कर्मास्रव को छोड़ने भगवन्, भक्त खरा मन बसते हो।।700।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्लोषति आत्मानं[*1] कर्मों को, ध्यान अग्नि के ही द्वारा।
पोषत्यात्मीय धर्मों को, अन्तर्जल्पों के द्वारा।।701।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. षट्खण्डाधिपति बन करके, पूरब भव में त्याग किया।
वज्रनाभि चक्री ने देखो, विराग भाव को धार लिया।।702।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मृत्य लोक में मृत्यु महोत्सव, को जो भव्य मनाते हैं।
दो-तीन या सात आठ भव, में वो मुक्ति पाते हैं।।703।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मुनि बनकर के ध्यान लगाते, श्रेणी आरोहण करते।
एक-एक पैड़ी चढ़ करके, क्रमश: कर्म क्षरण करते।।704।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रस पर्याय महादुर्लभ है, दुर्लभ मनु व जैन धरम।
दुर्लभ मुनि बन ध्यान लगाना, दुर्लभतम है बोधि परम।।705।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. यशोगान चहुँ दिश में फैला, पार्श्व प्रभु का इस भू-पर।
गुणोद्यान की खुशबू बिखरी, झूम उठा है अब भूधर[*2]।।706।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[*1] प्लोषित=जला देता है। [*2] पर्वत

35. दिवस तीन उपवास धर लिया, जब दीक्षा को धारा था।
क्षीरान्न धनदत्त दिया तब, अचरज पंच प्रकारा था।।708।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. वाह-वाह करके सुरपति भी, दिव्य ध्वनि का श्रवण करे।
कब नर होकर मुनि बन जाऊँ, नित्य ही ऐसा भाव धरे।।709।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शिक्षा तापस को देकर के, वन जा दीक्षा धरते हैं।
ऐसे पार्श्व प्रभुवर को हम, शत-शत वन्दन करते हैं।।710।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. शिक्षा देते मुनियों को जो, शैक्ष्य कहाते हैं मुनिगण।
स्वयं पढ़े अरु अन्य पढ़ावें, ऐसे पाठक को वन्दन।। 711।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. राज ऋषि और ब्रह्मर्षि भी, आकर शीश नवाते हैं।
प्रभु वैराग्य का अनुमोदन कर, स्व स्थान को जाते हैं।।712।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पिण्ड रूप व अपिण्ड प्रकृतियाँ, सबका प्रभु ने क्षरण किया।
तभी तो मुक्ति अँगना ने आ, पारस प्रभु का वरण किया।।713।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लोक और आलोक निरखते, नहिं लोचन से दिखते हो।
अन्तस् में जब ध्यान करें मुनि, उनको निज सम लगते हो।।714।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. केश और नख रहे थे बाँकी, जब प्रभु को निर्वाण हुआ।
अग्नि कुमार देव ने आकर, फिर उनका संस्कार किया।।715।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नीलमणि की शिला वो सुन्दर, रचना समवशरण प्यारी।
देवेन्द्र की आज्ञा पाकर, की कुबेर ने तैयारी।।716।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. लगन लगी है प्रभु चरणों में, मगन प्रभु की भक्ति में।
लीन हुए जब ध्यान में भविजन, गमन हुआ मग मुक्ति में।।716।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. द्रुतगति से चरणों में आया, सद्गति मेरी हो जावे।
जन्म-मरण का मिटे चक्र अब, पंचम गति को हम पावें।।717।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मानव की पर्याय मिली है, दानव तुम नहिं बन जाना।
पारस प्रभु के पथ पर चलकर, कर्म नाश कर सुख पाना।।718।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. णिक्कमा हो करके बैठे, हे सिद्धालय के वासी!
निजधर्मा प्रभु मुझे बना दो, बन जाऊँ शिवपुर वासी।।719।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. विनय आदि मिथ्यात्व पंच हैं, पंचम गति को रोक रहे।
विनय द्वार है मुक्तिपुर का, उसको स्वामिन् खोल रहे।।720।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पिता आपके अश्वसेन थे, आश्वासन प्रभु दे आये।
नहीं बनाऊँ पिता किसी को, कहकर निज घर में आये।।721।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. ना मुझमें शक्ति है भगवन्, ना ही मुझमें साहस है।
आप गुणों का अनुरागी हूँ, गुण पाने की चाहत है।।722।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. निज पर का जो भेद जानता, वो अभेद को पा लेता।
निज पर अनुशासन जो करता, मुक्ती पथ का हो नेता।।723।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नन्दन वन की चार दिशा में, चार जिनालय हैं शोभे।
अकृत्रिम प्रतिमा जो उनमें, भव्य जनों के मन मोहे।।724।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. किंकर भी मालिक बन जाता, पुण्य उदय जब आता है।
पत्थर भी मूर्ति बन जाता, जब वो तराशा जाता है।।725।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. हित-मित-प्रिय उपदेश प्रभू का, जिसने भी उर धारा है।
सर्व जगत को मित्र बनाया, वही हुआ भव पारा है।।726।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. माता जिनवाणी कहती है, घर से बाहर मत जाना।
जो भवि निज घर आँगन खेला, निज का वैभव है जाना।।727।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नीर क्षीर का अन्तर जानो, पारस प्रभु कहें भक्त अहो।
पर संकल्प विकल्पों में तुम, अब तो भविजन नहीं रहो।।728।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

कर दिया क्रोध क्षय, कर्मों पर जय, ज्यों हिम ने वन जला दिया।
अचरज है भारी, हे त्रिपुरारि! चरणों अर्घ को चढ़ा दिया।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिक्खभय वज्जयाणं चोद्दसपुव्वीणं।

श्लोक नं.14

शत्रु स्नेह जनक

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोष देशे।
पूतस्य निर्मल रुचे-र्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकाया:।।14।।

गीतिका-छन्द

हे स्वामिन्! ध्यानी योगीश्वर! तुमको खोजे हृदय कमल,
उर में ही राजित रहता है, शुद्धातम चैतन्य विमल।
महा सरोवर में खिलते हैं, सुरभित सुन्दर बहुत कमल,
लेकिन बीज कमल कणिका में, होता है यह बात अटल।।

अष्ट महानिमित्तांग, कुशलान् सन्मुनीश्वरान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगनिमित्त कुशलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छंद–रेखता

1. त्वाम् स्तोत्र हे भगवन्! भविक की पोत बन जाता।
चढ़ा इस पोत प्राणी तो, वही भव पार कर जाता।।729।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वाम्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. योग को धारते हैं जो, महायोगी कहाते हैं।
मोह को नाश करके वो, वीतरागी कहाते हैं।।730।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. गिरा गूँथी गणेशी ने, भेद द्वादश बताये हैं।
ज्ञान इनका हुआ जिनको, वे ही शुभ ध्यान पाये हैं।।731।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नोट अरु वोट माँगे वो, खोट जिस सोच में होती।
प्रभु गुण याचता है वो, सोच जिसकी खरी होती।।732।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. जितेन्द्रिय वो कहाते हैं, जीतते इन्द्रियों को जो।
प्रभु पारस को ध्याते हैं, काटते बन्धनों को वो।।733।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. नहीं मैं राजपद चाहूँ, न ही सुर सम्पदा स्वामी।
गुणों को आपके चाहूँ, बनूँ पथ का मैं अनुगामी।।734।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. सजाया आज चेतन है, बुहारा आज मन को है।
प्रभु पारस जी आयेंगे, प्रतीक्षा आगमन की है।।735।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दाता नहिं आप सम कोई, मुक्ति की दी हैं विधियाँ भी।
प्रभु पारस ने भक्तों पर, लुटा दीं आप निधियाँ भी।।736।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परम उपकारी हो भगवन्, जगत् उद्धार करते हो।
झुकाता शीश चरणों जो, उसे भव पार करते हो।।737।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रत्न त्रय हैं जगत्त्रय में, बाकी सब काँच मणियाँ हैं।
जिसने धारण किया इनको, पाये वो आत्म निधियाँ हैं।।738।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मान जिसने किया जग में, न उसका वंश रह पाया।
कि रावण और कौरव हैं, साथ में कंस बतलाया।।739।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. आत्मन् कहके जिनवर जी, आपने प्राणी को बोधा।
निजात्म को लखो क्षण ही, ज्ञान देकर के संशोधा।।740।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रूप को मत सजाओ तुम, रूह का ध्यान अब रख लो।
लीन होकर निजातम में, स्वरूपं आज तुम लख लो।।741।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. पतंग मेरी उड़ी नभ में, डोरी है आप हाथों में।
सम्भाले आप ही रहना, न आना जग की बातों में।।742।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मन्द होतीं कषायें जब, गुरु की बात आती उर।
आप क्षय दी कषायें सब, मुझे भी दे दो ऐसा वर।।743।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वेदना अरु कषाय भी, समुद्घात कहाते हैं।
तभी इस देह से बाहर, प्रदेश आतम के जाते हैं।।744।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. षडज गंधार धैवत आदि, सात सुर का ही संगम है।
आप गुण गीत को गाना, मेरे संगीत का दम है।।745।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यन्त्र और तन्त्र जीवन में, नहीं तब काम आते हैं।
कि जब यमराज आते हैं, सभी तब भाग जाते हैं।।746।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिमिर को आपने नाशा, किया लोकाग्र पर वासा।
द्रव्य नो भाव को नाशा, बने मुक्ति पुरी राजा।।747।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हृदय कोमल बनाया है, कमल दल भी खिलाया है।
प्रभूवर आके तो बैठो, भक्ति से ही बुलाया है।।748।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दशा मेरी लखो प्रभुवर, कृपा मुझ पर करो जिनवर।
बना लो आप सम जिनवर, बुला लो सिद्धों के घर पर।।749।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सौम्यां छवि जिनेश्वर की, लगे भवि को ये सुखकर भी।
जगत में देव बहु देखे, दिखा नहिं आप सम जिन जी।।750।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "याम्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. बुलाती नाथ है मुझको, छवि जो वीतरागी है।
कराती गान है मुझसे, जो मुक्ति की ही चाबी है।।751।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. जगत के जाल में फँसकर, मैं रोया चीखा चिल्लाया।
प्रभूवर आपके बिन ना, कोई मुझको बचा पाया।।752।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कोई आता नहीं जब काम, जिनवर नाम आता है।
मन्त्रों का है पितामह ये, जगत सारा ही गाता है।।753।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. शक्ति नहिं है प्रभु मुझमें, भक्ति नहिं है विभु मुझमें।
मुझे शक्ति प्रभुवर दो, उर में भक्ति विभु भर दो।।754।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. देशना आपकी जिनवर, दिशा भवि को दिखाती है।
किया उपदेश का अनुगम, दशा शुद्ध हो ही जाती है।।755।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शेष कुछ भी रहा नहिं जग, आपके ज्ञान सब झलका।
चराचर लोक को जाना, पूर्ण यह ज्ञान का फल था।।756।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पूर्ण ज्ञानी जिनेश्वर जी, कार्य सब पूर्ण कर लीने।
ध्यान में बैठकर तुमने, कर्म सब चूर्ण कर दीने।।757।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तख्त और ताज की हमको, नहीं प्रभु जी जरूरत है।
रहे मन शान्त अब मेरा, बने प्रभु की सी सूरत है।।758।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हास्य आदिक कषायें नव, आपने दाग दीं सबही।
बने क्षीण कषायी प्रभु, प्राप्त फिर की यहाँ लब्धी।।759।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. निर्ममत्व हो दशा मेरी, नहीं ममकार मुझमें हो।
समाधि से मरण जब हो, कण्ठ नवकार गुरुपद हों।।760।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. महा पुण्योग से देखो, मिला है योग पारस का।
प्रभु साहस मुझे दे दो, बनाऊँ भाव ज्ञायक का।।761।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लगायी है लगन चरणों, प्रभु ध्रुवधाम पाने की।
समायी है प्रभू भक्ति, गुणों के धाम जाने की।।762।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुग्ण है आतमा मेरी, तीन रोगों से घायल है।
राग अरु द्वेष के कारण, पैर चलने में कायल हैं।।763।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शुचेर्मन पूजते योगी, त्रिलोकी नाथ को निशदिन।
त्रियोगों से करें वंदन, पाप कटते हैं हर क्षण क्षण।।764।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चेर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यदर्चा भाव से प्रमुदित, पाँखुड़ी मुँह में लाता है।
वो दर्दुर भी यहाँ क्षण में, स्वर्ग के सुख को पाता है।।765।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिया है दान जिसने भी, विधी द्रव्य पात्र को लखकर।
विशेषण में विशेष भी, प्राप्त हो फल उसे सुखकर।।766।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वाङ्मय आपका सुन्दर, सलौना और सुखकारी।
धरा जिसने हृदय अपने, बना वो ज्ञान गुणधारी।।767।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. किया अपराध जो मैंने, प्रभु जी जाने अंजाने।
क्षमा कर दो प्रभु मुझको, आप ही हो क्षमादानी।।768।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मन्द मारुत बहे सुखकर, सुगन्धित साथ गंधोदक।
लगे भव्यों को मनहारी, प्रभु पारस हैं उद्बोधक।।769।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. धन्य हुईं आज की घड़ियाँ, धन्य मेरा जनम भी है।
धन्य हुईं आज ये अँखियाँ, किया प्रभु पार्श्व दर्शन है।।770।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दमकती आपकी मूरत, लगे चंदा सी मनहारी।
नजर हटती नहीं है अब, प्रभु पारस हे त्रिपुरारी!।।771।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. क्षरण करके करम सब ही, आप निज गाँव में पहुँचे।
करूँ अब करम क्षय मैं भी, पार्श्व की छाँव में रहके।।772।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. उपास्य तुम मेरे प्रभुवर, उपासक मैं तुम्हारा हूँ।
रहूँ करता पासना[*1] मैं, मरूँ दामन तुम्हारा हो।।773।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. संस्कृति की है संवर्द्धक, आपके मुख खिरी वाणी।
सजाया संस्कारों से, दिला दी मुक्ति कल्याणी।।774।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भक्त के वश में हैं भगवन्, ये हम दिन रात सुनते हैं।
करे भक्ति तुम्हारी जो, उसे प्रभु पास रखते हैं।।775।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वचन को तोल कर बोलो, वाणी में मिश्री तुम घोलो।
नहीं कर पाओ गर इतना, तो फिर अब मौन भी हो लो।।776।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पद्म खिले पंक के मध्ये, पंक नहिं पद्म में होवे।
बनूँ मैं भी प्रभु पंकज, कदम[*2] विधि[*3] मुझमें न होवे।।777।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दन्त धोवन नहीं करते, सन्त चिरकाल जीवन में।
अदन्त धावन मूलगुण की, पालना करते जीवन में।।778।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. न चाहूँ सम्पदा स्वर्गी, न चाहत है बहारों की।
मिले जिनसे मुक्तिरानी, जरूरत प्रभु इशारों की।।779।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नुक्श ढूँढ़े वही गुरु में, जिसे बहुमान नहिं उन पर।
गुणों की खान हैं गुरुवर, मुझे अभिमान है उन पर।।780।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[*1]उपासना [*2]कीचड़ [*3]कर्म

53. कर्म की मार पड़ती जब, बचा नहिं कोई पाता है।
धर्म की धार जो चलता, हमेशा उसको साता है।।781।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मणि मुक्ता जड़ित सुन्दर, आप जिनदेव सिंहासन।
विराजे पार्श्व प्रभु उस पर, लगे यह दृश्य मन भावन।।782।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. काल बैठा है खोले गाल, प्राणी ग्रसने को आतुर है।
आपका ध्यान भवि कर ले, काल बन जाता चाकर है।।783।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. मिथ्या: भ्रम छोड़कर प्राणी, शरण वर लो प्रभु वाणी।
यही है राह सुखदानी, दिलाती मुक्ति कल्याणी।।784।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

ज्यों कमल कणिका, बीज कमल का, उत्पत्ति स्थान कहा।
मुनि हृदय कणिका, पवित्र आत्मा, ध्याते हैं हम अर्घ चढ़ा।।

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो भंसणभय झवणाणं अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं।

चोरी गत द्रव्य दायक

ध्यानाज्–जिनेश! भवतो भविन: क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म–दशां व्रजन्ति।
तीव्रानला–दुपल–भाव–मपास्य लोके,
चामीकरत्व–मचिरादिव धातु भेदा:।।15।।

गीतिका–छन्द

महा अग्नि से पत्थर जलकर, राख शीघ्र हो जाता है,
हे प्रभु! अपनी पर्यय तजकर, दूजी पर्यय पाता है।
वैसे ही भवि प्राणी करते, अग्निमयी जब तेरा ध्यान,
क्षण भर में पर्याय छोड़कर, पा लेते परमातम धाम।।

विक्रियार्द्धिपरिप्राप्तान्, संयतान् सुरपूजितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं विक्रियार्द्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली
छंद-विष्णुपद

1. ध्याता ध्येय बने प्रभु खुद ही, ध्यान मगन होके।
ध्यान अग्नि में कर्म दहन से, कौन इन्हें रोके।।785।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. बन्धनात् भवि भव में भटके, सुख दुःख को सह के।
निर्बंधन का ध्यान करे तो, पंचम गति पहुँचे।।786।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. जिन शासन की धर्म ध्वजा को, प्रभु ने फहराया।
इस ध्वज के जो नीचे आया, उसने सुख पाया।।787।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नेवज लेकर स्वर्ण थाल भर, चरणों में आया।
पारस प्रभु को अर्पित करके, मन ये हर्षाया।।788।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. शठ बुद्धि वह कमठासुर था, निज पर बौराया।
प्रभु आपकी दिव्य शक्ति को, जान नहीं पाया।।789।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भगवन् ऐसा वर दो मुझको, निज को पहिचानूँ।
वीतरागता उर में लाऊँ, तुम सम बन जाऊँ।।790।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वर्तमान में वर्द्धमान की, बहुत जरूरत है।
अणुबमों पर विश्व खड़ा है, व्रत की जरूरत है।।791।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तोड़ नहीं सकता है कोई, अपने रिश्ते को।
भक्त बना हूँ भगवन् माना, आप फरिश्ते को।।792।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भव सागर में दुःख न होता, तो फिर क्यों आता।
पारस चरण में सुख न मिलता, तो दर क्यों आता।।793।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विधि हरने को विधान करते, भव्य अनेकों ही।
पारस प्रभु जी निदान करते, भक्त गणों के भी।।794।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पुनः पुनः दर्शन हो स्वामी, चरणों का पर्शन*।
इक पल भी प्रभु ओझल न हों, देख के हर्षे मन।।795।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. क्षण-क्षण जीवन बीत रहा, जीवन पानी की बूँद।
नाशवान जग के पदार्थ सब, देख न आँखें मूँद।।796।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. फणेन सिर पर छाँव थी कीनी, धरणेन्द्र ने आकर।
पद्मावती ने भी बैठाया, फण सिंहासन पर।।797।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नई उमंग जागी है जिनवर, तव दर्शन पाकर।
जनम जनम की खुशियाँ मिल गईं, चरणों में आकर।।798।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. देवालय में पार्श्व विराजे, देहालय में आत्म।
दोनों का अभिनन्दन कर लूँ, पाने को पद आप्त।।799।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. अहं कभी भी तुम मत करना, ये भव वर्द्धक है।
अर्हं बीज को निज में बोना, जो सुख वर्द्धक है।।800।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*स्पर्श

17. विनय भरा प्रभु हृदय मुझे दो, भक्ति करने को।
आप कृपालु पथ दिखला दो, मुक्ति वरने को।।801।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. हार मान कर इस जग से मैं, आया चरणों में।
नाथ आप बिन कौन है सक्षम, पीड़ा हरने में।।802।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. यश पाने के खातिर देखो, अन्य को गिरा रहा।
माँ जिनवाणी बता रही वह, खुद ही गिरा अहा।।803।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. पथ पर चलता नाथ आपके, साहस दे देना।
मिलो आप पथ दर्शक बन के, पुण्य जगा देना।।804।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रज अरि रहस विहीन आप हो, करे घातिया नाश।
सकल ज्ञेय ज्ञायक हो प्रभु जी, करते जगत प्रकाश।।805।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मारा मारा फिरा जगत में, प्रभु चित नहिं धारा।
धारा जिसने प्रभु हृदय में, उससे जग हारा।।806।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. आत्म तत्त्व को जिसने जाना, उसने जग जाना।
जिनवाणी पढ़ जड़ कर्मों का, स्वरुप पहिचाना।।807।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. दर्पणवत् सब जगत झलकता, पूर्णज्ञानी जिनवर।
इसीलिए मन वच अरु तन से, नमन् करूँ प्रभुवर।।808।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. शांत स्वरूपी छवि को लखकर, कुछ अब ना लखना।
धन्य हो गया मेरा जीवन, और मेरे नयना।।809।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. व्रतोद्यान की क्यारी में प्रभु, संयम सुमन खिला।
स्वात्मानुभव सागर में भी, आतम रतन मिला।।810।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जंगल जंगल बात चली थी, पता चला था ये।
वामा माता के आँगन में, पारस प्रभु जन्मे।।811।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिथी पौष वदि एकादश थी, थी प्रातः बेला।
अश्वसेन के राज भवन में, पुत्र रतन खेला।।812।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तीर दिखाया जिसने भव का, तीर्थ चलाया था।
तीर्थंकर बन करके भवि को, मार्ग दिखाया था।।813।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ती" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तीव्रानल बरसायी कमठ ने, प्रभु निज धार बहे।
कमठासुर की माया नश गई, केवलज्ञान तले।।814।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नर से नारायण बनने का, उपक्रम दिखलाया।
भक्तों ने भी निज जीवन में, उसको अपनाया।।815।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लाल-लाल लोचन को करके, आया कमठासुर।
शांत छवि लख कर प्रभुवर की, पड़ गया चरणों पर।।816।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दुख देती है तृष्णा हरदम, भव भव भटकाती।
प्रभु आपकी वाणी हमको, शिव पथ दिखलाती।।817।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. पलक पाँवड़े बिछा के स्वामी, भक्त करे आशा।
आएँगे प्रभु हृदयांगन में, ये ही अभिलाषा।।818।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लगन लगी है प्रभु चरणों में, कभी ये छूटे ना।
बीच भँवर में फँसी नाव है, पार लगा देना।।819।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. भाव शून्य किरिया नहिं फलती, व्यर्थ कही जाती।
भावपूर्वक करें साधना, शिवपुर ले जाती।।820।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. वक्ता आप ही श्रेष्ठ कहाते, वक्त बताते हो।
रहते वक्त में चेतो चेतन, यह समझाते हो।।821।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मन वच तन अरु आत्म समर्पण, से गुणगान करूँ।
नाम प्रभु का जिसमें आये, वो ही भजन कहूँ।।822।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. पारस मणि छू सोना बनता, लोहा इस जग में।
पार्श्व प्रभु को छू ले प्राणी, पारस बने जग में।।823।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. हास्य आदि है कषाय किंचित्, फिर भी बंध करें।
निज आतम अनुभूति होन में, ये ही रोक करें।।824।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लोभ और लालच की दृष्टि, लेकर मत आओ।
आत्म हिताहित की दृष्टि से, प्रभु द्वारे आओ।।825।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. केशर और सुगन्धित वस्तु, जग को महकाये।
पार्श्व प्रभु की ध्यान सुगन्धी, आतम चहकाये।।826।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चार अराधन का फल पाकर, अर्हत् पद पाया।
इसीलिए तो आप ज्ञान में, जग खुद झलकाया।।827।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मीत आप सम कोइ न दूजा, प्रीति करूँ तुम से।
रीति निभा दो आप प्रभू जी, अरज करूँ तुम से।।828।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कर्म शत्रु को मीत बनाकर, बहु दुख पाया है।
इसीलिए अब पार्श्व प्रभु को, मीत बनाया है।।829।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रथ शिवपथ का लेकर आये, पार्श्व जिनेश्वर हैं।
आओ भव्यो बैठो इसमें, चलना शिवपुर है।।830।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. त्वरित गति से लेकर जाये, यह सिद्धालय तक।
स्वानुभूति का रथ नहिं देखा, प्रभु मैंने अब तक।।831।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मलयागिरि चंदन की खुशबू, गुण आगे फीकी।
प्रभु की वाणी सुनकर मेरी, अब चेतन भीगी।।832।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. चिर परिचित मैं रहा हूँ दुख से, काल अनंतों से।
हुआ प्रभू से आज परीचय, पुण्य अनंतों से।।833।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. राग द्वेष हैं दोनों भाई, सदा साथ चलते।
है अज्ञान दशा भगिनी इन, भव-भव में फिरते।।834।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. दिग्भाषापति प्रभु आप हो, दिशा बोध देते।
भव्य जीव प्रभु वाणी सुनकर, दशा शोध लेते।।835।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वन में हो या भवन में प्राणी, प्रभु भक्ति कर लो।
भक्ति से ही भेद ज्ञान कर, फिर मुक्ति वर लो।।836।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. धाता और विधाता जग के, पार्श्व प्रभु जी हैं।
संयम पथ के दाता जग में, आप गुरु जी हैं।।837।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तुम जिन मेघ मयूर बनूँ मैं, गरजो बरसो नाथ।
तव छवि लखकर मन मयूर मम, झूम उठा है आज।।838।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भेरी घण्टे और नगाड़े, बजते देवों में।
सुनकर सब ही मिलकर आते, प्रभु कल्याणक में।।839।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वरदा: पूर्ण मनोरथ कर दो, श्रद्धा धर लाये।
पारस प्रभु ही बतलाते हैं, शिवपुर की राहें।।840।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

पाषाण अग्नि जा, तज के कालिमा, स्वर्णिमता को पाता है।
प्रभु ध्याये आत्मा, पा शिवात्मा, अर्घ चढ़ा सिर नाता है।।

ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खर धणप्पयाणं विउव्वणपत्ताणं।

श्लोक नं.16

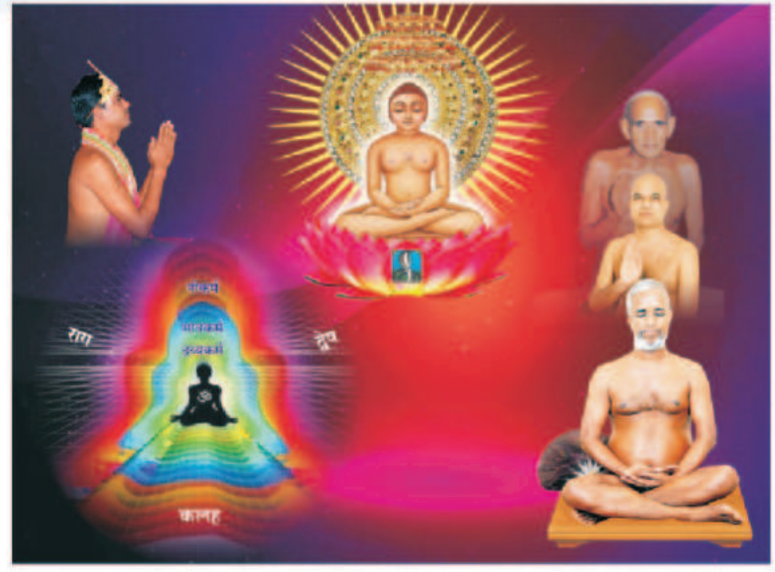

गहन वन पर्वत भय विनाशक

अन्त: सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यै: कथं तदपि नाशयसे शरीरम्?
एतत् स्वरूप–मथ मध्य–विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावा:।।16।।

गीतिका–छन्द

जिससे तुमको ध्याया जाता, उसका तुम कर देते नाश,
लोक विरुद्ध बात यह भारी, कौन करे तुम पर विश्वास।
महापुरुष जिस तन में रहते, दुख से उसे छुड़ाते हैं,
तन ही महादुखों का डेरा, तन को नाश कराते हैं।।

विद्याधरान् प्रलब्धर्षीन्, विश्वत्त्वोपदेशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं विद्याधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द–चौबीसी पूजन

1. अंतिम निकले जब श्वास, पारस प्रभु दर हो।
हो गुरु शरण में वास, चरणों में सर हो।।
हे संकट मोचन नाथ! संकट दूर करो।
कर दो मेरा कल्याण, भव दुख दूर करो।।841।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. स्वत: दुखी हूँ नाथ, राग भाव से मैं।
है पुण्य उदय मम आज, जुड़ा पद राग से मैं।। हे संकट...।।842।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. सद् भक्तों ने ही नाथ, तव अनुसरण किया।
पाया है पुण्य समाज, गुण का वरण किया।। हे संकट...।।843।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. दैदीप्यमान छवि है, मम प्रभु पारस की।
पायी है सन्निधि आज, भव दु:ख तारक की।। हे संकट...।।844।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. वरदान वरो हे नाथ! वर लूँ शिवनारी।
तुम भक्तों के सरताज, हे करुणाधारी!। हे संकट...।।845।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. जितने भी रुचि परमाणु, इस जगती पर थे।
उनसे निर्मित प्रभु आप, इस धरती पर थे।। हे संकट...।।846।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नश्वर सुख तज जिनराज, अविनश्वर पाया।
यह सम्यक् था पुरुषार्थ, जो मुझको भाया।। हे संकट...।।847।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. यथा शक्ति जिनदेव, तप मुझे करना है।
जो पद तुम पाय जिनेश, मुझको वरना है।।
हे संकट मोचन नाथ! संकट दूर करो।
कर दो मेरा कल्याण, भव दुख दूर करो।।848।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. हास्यस्पद है जीवन, कुछ नहिं कर पाया।
हृदयेश मिले प्रभु आप, सम्यक् वर पाया।। हे संकट...।।849।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विद्या अरु ज्ञान का फल, प्रभु मुझको देना।
कर लूँ मम आत्म विमल, शक्ति दे देना।। हे संकट...।।850।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भावन सोलह को भाऊँ, भव दधि पार करूँ।
प्रकृति तीर्थंकर पाऊँ, पर उपकार करूँ।। हे संकट...।।851।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. अव्यय अचिन्त्य हो आप, अक्षय पद धारी।
चिन्तन से कटते पाप, हे गुणगणधारी!। हे संकट...।।852।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. सेवा करूँ मैं नित देव, तव चरणों आकर।
देना अवसर जिनदेव, हूँ चरणों चाकर।। हे संकट...।।853।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "से" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. त्वम् निर्मापित जिन देह, अणु उतने ही थे।
हे शान्त स्वभावी आप! सम नहिं और दिखें।। हे संकट...।।854।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भक्ति का फल मिल जाय, अरु कछु नहिं चाहूँ।
मुक्ति फल दो जिनराय, ये ही वर याचूँ।। हे संकट...।।855।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. द्रव्यै: ले अष्ट प्रकार, स्वर्ण थाल भरकर।
करूँ अर्चा बहुत प्रकार, भक्ति से भरकर।। हे संकट...।।856।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्यै:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. कर दिया करम का अंत, अन्तर मुहूरत में।
करते प्रयास हैं संत, त्रिकाल मुहूरत में।।
हे संकट मोचन नाथ! संकट दूर करो।
कर दो मेरा कल्याण, भव दुख दूर करो।।857।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पंथं ने बाँटा धर्म, पथ नहिं दिखलाया।
किया धर्म सदा परकाश, संत चरण आया।। हे संकट...।।858।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तकतीं हैं राह जिनेश, अखियाँ भर कर जल।
थकतीं है श्वास महेश, आओ जल्दी कर।। हे संकट...।।859।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हो दक्ष आप जिनराज, निज कारज करने।
पहुँचे हो सिद्ध समाज, प्रभु उनमें मिलने।। हे संकट...।।860।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पिण्डस्थ ध्यान मुनिराज, करते कर्म जलें।
उपयोग हो थिर महाराज, तब श्रेणी पे चढ़ें।। हे संकट...।।861।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नादान हूँ मैं मुनिनाथ, महिमा नहिं जानूँ।
मैं अल्प बुद्धि जिननाथ, गुण पाना चाहूँ।। हे संकट...।।862।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शरणागत हे गणनाथ! शरण गहूँ तेरी।
बनूँ स्वयं यहाँ गुणवान, मत करना देरी।। हे संकट...।।863।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. यम का जब दूत वो आय, कालबली बनकर।
पारस प्रभु ने धमकाय, कालजयी बनकर।। हे संकट...।।864।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. सेवा से नाथ तेरी, शिव फल मिलता है।
मेवा मिलती गुण की, आनन्द फलता है।। हे संकट...।।865।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "से" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. शक्ति से भक्ति करो, कहते नाथ यमी।
शक्ति बिन श्रद्धा धार, बनना कर्म दमी।।
हे संकट मोचन नाथ! संकट दूर करो।
कर दो मेरा कल्याण, भव दुख दूर करो।।866।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रीता उसका जीवन, जिन भक्ति नहिं की।
भर गया वही चेतन, जब प्रभु शक्ति ली।। हे संकट...।।867।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. रंजायमान नहिं होय, रंजन निज करते।
मन वांछित फल फिर होय, मन भंजन करके।। हे संकट...।।868।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. एकल विहारी नहिं, पंचम काल मुनी।
चाहे दुश्मन हो मेरा, कहते कुंद गणी।। हे संकट...।।869।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. एतत् स्वरूप जिनराज, तुमने अपनाया।
सब जीते अक्ष समाज, निज धन को पाया।। हे संकट...।।870।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. स्व-पर का हुआ विवेक, निज घर में आये।
छोड़े विकार सब भाव, वीतराग भाये।। हे संकट...।।871।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रूपी पदार्थ जग माँहि, सब पुद्गल भासे।
हूँ मैं अरूपी जग माँहि, चिदानन्द खासे।। हे संकट...।।872।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. परमावधिज्ञान जु होय, केवल मुनि जन को।
दे केवलज्ञान संजोय, पाये निजधन को।। हे संकट...।।873।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मत करना वाद विवाद, तुम संवाद करो।
कहते हमसे गुरुराज, निज आनन्द वरो।।हे संकट...।।874।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. थक गया हूँ मैं अब नाथ, जग के भरमन से।
उपजा अब पुण्य है आज, प्रभु के दर्शन से।।
हे संकट मोचन नाथ! संकट दूर करो।
कर दो मेरा कल्याण, भव दुख दूर करो।।875।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मध्यम परिणाम से हो, जग में आयु का बंध।
शीतल परिणामों से, कट जाते प्रभु द्वन्द।। हे संकट...।।876।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मध्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यह भव कानन जिनदेव, कब से भटक रहा।
नहिं राह मिली मुझे नेक, दर्श को तरस रहा।। हे संकट...।।877।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विद्यालय में जा प्राणी, विद्याध्ययन करते।
श्रद्धालय में आ ध्यानी, कर्म दहन करते।। हे संकट...।।878।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. फल वर्ष एक उपवास, चौथे काल मिले।
इसी पंचम काल में वह, इक उपवास मिले।। हे संकट...।।879।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तिल में ज्यों तेल भरा, त्यों तन में आतम।
पा जाऊँ ज्ञान खरा, होऊँ परमातम ।। हे संकट...।।880।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नो इन्द्रिय अर्थ है मन, सबसे चंचल है।
हो जाये यदि वश में, सब जग मंगल है।। हे संकट...।।881।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हितकारी है प्रभु वाणी, जग हितकार करे।
करता है जो रसपान, जग अधिकार करे।। हे संकट...।।882।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यज्ज्योति हे जिनदेव! जगत प्रकाश करे।
तज्ज्योति हे विमलेश! आत्म विकाश करे।। हे संकट...।।883।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. विपदायें आयें तो, मन नहिं घबराये।
कर पूर्व करम को याद, संबल बढ़ जाये।।
हे संकट मोचन नाथ! संकट दूर करो।
कर दो मेरा कल्याण, भव दुख दूर करो।।884।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. ग्रसता जिसको नहिं राहु, बादल नहिं ढकते।
ऐसे जिन सूर्य कहाए, नहिं प्रभाव रुकते।। हे संकट...।।885।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. हंसा जब उड़ जाये, पिंजर खाली दिखे।
शुद्धात्म का रस आये, आत्म सुधा पीके।। हे संकट...।।886।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. प्रतिमा की महिमा नाथ, कौन कहे जग में।
जीते सब अक्ष समाज, मौन खड़े मग में।। हे संकट...।।887।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शर्वरीं* है घनी काली, पग पग डर लागे।
आ जाओ वनमाली! बालक भय भागे।। हे संकट...।।887।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मद में फूला रहकर, मैं निज को भूला।
चारों गतियों में जा, मैं दुख में झूला।। हे संकट...।।888।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. यन्त्रं तन्त्रं नहिं काम, मन पवित्र जब हो।
जग में है मन्त्र महान, नमोकार जप लो।। हे संकट...।।889।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तिरषा अरु क्षुधा यहाँ, देती कष्ट महां।
तुम जीता इन्हें यहाँ, पाया सौख्य महां।। हे संकट...।।890।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मद भंजक हे जिनराज! मदन विजेता हो।
पद पंकज सजे समाज, मुक्ति नेता हो।। हे संकट...।।891।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*रात्रि

53. हारा तुमसे वह नाथ, काम सुभट देखो।
मुक्ति पथ किया विहार, छोटी वय लेखो।
हे संकट मोचन नाथ! संकट दूर करो।
कर दो मेरा कल्याण, भव दुख दूर करो।।893।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नुत-नुत होकर जिनराज, करूँ प्रार्थना ये।
बनो तुम मेरे हमराज, धरूँ भावना ये।। हे संकट...।।894।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भारत की वसुधा पर, प्रभु ने जन्म लिया।
अगणित भटके भवि को, मुक्ति मार्ग दिया।। हे संकट...।।895।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. देवाः नित करें सुसेव, चतुर्णिकायी जिन।
भक्ति करते हैं हमेश, शुद्ध भाव शुद्ध मन।। हे संकट...।।896।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

जिस तन से ध्याता, उसे नशाता, भक्त विदेही बन जाता।
जिस जगह सन्त हों, कष्ट अन्त हों, सुन ये अर्घ चढ़ा जाता।।

ॐ ह्रीं देहदेहि कलह निवारकायं क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहणवणभयणासयाणं विज्जाहराणं।

श्लोक नं.17

युद्ध विग्रह विनाशक

आत्मा मनीषिभि रयं त्व-दभेद बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीय - मप्यमृत - मित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष विकार-मपाकरोति।।17।।

गीतिका छन्द

हे प्रभु! महामनीषी! तुमको, निर्विकल्पमय जब ध्याते,
तुम जैसे वैभवशाली बन, केवलज्ञानी हो जाते।
निरत चिंतवन अमृत जल क्या, विष को दूर नहीं करता,
तेरे जैसा ध्यान अगर हो, तो क्या मुक्ति नहीं वरता।।

यतीन्द्रांश्चारणान् पोत, समान नृणां भवार्णवे।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं चारणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद–दोहा

1. आप्त बने इस जगत में, हे पारस परमेश।
पूर्ण ज्ञान को प्राप्त कर, काटे क्लेश महेश।।897।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. आत्मा धरती है यहाँ, परमात्मा का रूप।
आप भक्त बन जायें प्रभु, निज आतम के भूप।।898।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. मन मरघट की जात इक, कभी न बैठे शान्त।
मान ले गुरु की बात तो, मिट जायें भव क्लान्त।।899।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नीर क्षीर सी धार जब, गिरती जिनवर माथ।
गन्धोदक बन बह चली, भक्त लगायें माथ।।900।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. ऋषि यति मुनि अनगार भी, करें आपका ध्यान।
ध्यान अग्नि में कर्म दह, बन जाते भगवान।।901।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भिन्न–भिन्न प्राणी जगत, भिन्न है भाव दशा।
भिन्न किया पर को यहाँ, पाते शुद्ध दशा।।902।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. रचा पार्श्व स्तोत्र यहाँ, कुमुदचन्द्र आचार्य।
किया बड़ा उपकार यह, उन्हें नमूँ बहु बार।।903।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. यं पाण्डुक शिल पर हुआ, प्रभू जन्म अभिषेक।
मेरु शिखर सिर मौर पर, आये देव अनेक।।904।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. त्वम् तीर्थंकर पार्श्व प्रभु, नमूँ अनंतो बार।
भक्ति में रम जाऊँ मैं, पाऊँ शिव का द्वार।।905।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. दया धर्म का मूल है, प्रभु बतलायी बात।
याद भव्य रखना इसे, शिवपुर तक तुम साथ।।906।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भेद ज्ञान छैनी कही, मोक्ष नसैनी जान।
धारण कर सैनी इसे, कहे जिनवाणी मात।।907।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. दरश विशुद्धि धार कर, आवागमन मिटाओ।
सम्यग्दर्श की नाव चढ़, भवदधि तुम तर जाओ।।908।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. बुद्ध्यादि ऋद्धि महाँ, जानो अष्ट प्रकार।
प्राप्त करें ऋषिवर यहाँ, जाते हैं भव पार।।909।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बुद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. ध्यान अग्नि में बैठ कर, वसु विध कर्म जलाय।
मुरझायी जो ज्ञान कली, उसको प्रभु खिलाय।।910।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. ध्याता ध्यान अरु ध्येय का, भेद रहा नहिं आप।
ज्ञायक रूप को पाय कर, नष्ट किए भव ताप।।911।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तोरण द्वार सजे यहाँ, और सजाये दीप।
प्रभू आगमन हो यहाँ, भक्त लगायें भीड़।।912।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जिनवाणी रसपान कर, पाओ निज का धर्म।
यही सार संसार का, पा जाओ शिव शर्म।।913।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नेत्र हुए पावन यहाँ, श्रोत्र महा सुख पाय।
छवि लखी प्रभु पार्श्व की, वचन प्रभु सुखदाय।।914।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. इन्द्र और धरणेन्द्र भी, बैठे धर्म सभा।
आप रूप को देखकर, निज का रूप लखा।।915।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भगवन् मेरे तुम प्रभु, भक्त मैं नन्हा सा।
कभी छोड़ना हाथ नहिं, बालक सम रखना।।916।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वन में हो या भवन में, समता धारी नाथ।
मन में आन विराजिये, कभी न छूटे साथ।।917।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तीरथ वन्दन बहु किया, नहीं भेद विज्ञान।
देह क्रिया सब व्यर्थ की, नहीं मिटा अज्ञान।।918।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ती" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हरा कमठ का मान प्रभु, स्वाभिमान से आप।
माया विनशी एक क्षण, पड़ा चरण में आय।।919।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. भक्ति का फल चाहता, बन जाऊँ भगवान।
और नहीं कुछ याचता, कीजै आप समान।।920।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मृगवत् तृष्णा से बढ़ा, ये सारा संसार।
कस्तूरी आतम बसे, ढूँढ़ रहा संसार।।921।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रवचन सभा ही आपकी, समवशरण कहलाय।
शरण गहे जो आपकी, भव सागर तर जाय।।922।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भावों की पगडंडी पर, सरपट दौड़ा जाय।
मन चलता बड़ा तेज है, पल में बंध कराय।।923।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. विभवः हुए विमुक्त प्रभु, भव से पारसनाथ।
वैभव पा निज आत्मा, किया निजातम वास।।924।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पावन घड़ी है आज मम, शरण मिली भगवान।
शुभ उपयोग हुआ है मम, हृदय हुआ धनवान।।925।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नीरज खिलते हैं हृदे, भवि खिलते प्रभु पाद।
हृदय कमल विकसाओ मम, प्रभु पद में मम माथ।।926।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. यशोगान प्रभु का करूँ, कर लूँ शुद्ध स्वभाव।
निज आतम में जा बसूँ, शाश्वत हे जिनराय!।927।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. महिमा सुनकर आपकी, दौड़ा आया नाथ।
वीतराग प्रभु रूप लख, चरण झुकाया माथ।।928।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. प्राप्य किया प्रभु मोक्ष को, मैंने यह जाना।
प्रभु आपके वचन को, अब है पहिचाना।।929।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मृत्युञ्जयी यह पाठ है, करें भक्ति कर ठाठ।
मृत्युञ्जय की यह कथा, बना देती सम्राट्।।930।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तत्त्व को पाया आपने, भवि को तत्त्व दिखाय।
जीवन है प्रभु धन्य मम, धर्म के मर्म को पाय।।931।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मिला प्रभु का द्वार है, पुण्य योग से आज।
मिथ्यातम का नाश कर, पाऊँ शाश्वत राज।।932।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. नित्य निरंजन सिद्ध पद, पाया पारस नाथ।
अविनाशी अविकार हो, अष्ट गुणों के साथ।।933।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. अनुगामी बनूँ आपका, अनुचर बन चलूँ साथ।
अन्य नहीं हूँ आपसे, नाथ पकड़ लो हाथ।।934।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. चिन्तामणि चिन्ता हरो, दो चिंतन अभ्यास।
चिदानन्द को लख सकूँ, ऐसा दो विश्वास।।935।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. नृत्य गान करें देव सब, करें मंगलाचार।
तीर्थंकर प्रभु आये हैं, करके गगन विहार।।936।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मात पिता संगी सखा, हैं इस तन के साथ*।
आत्म हितैषी नाथ हैं, हम दीपक तुम बाति।।937।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नंत काल से फिर रहा, चौरासी लख योनि।
नाथ आपका दर्श कर, कर दी सबकी हानि।।938।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. किंपाक फल के समां, भव में सुख नहिं कोय।
शाश्वत सुखधारी जिनम्, लोक शिखर पर सोह।।939।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*साथी

44. ना चाहूँ हीरा रतन, ना मणिक के हार।
मैं चाहूँ प्रभु पार्श्व को, दीजें जगत किनार।।940।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. मण्डल महाविधान का, सजा लिया है नाथ।
इक इक बीजाक्षर सहित, करूँ अर्चना नाथ।।941।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नो कर्म द्रव्य भाव को, नष्ट किया जिनदेव।
पथ भटके शिवराही को, प्रभु पाथेय सु देय।।942।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. विचरण करते हैं गगन, बिन इच्छा के नाथ।
तीव्र पुण्य भवि का जहाँ, वहीं विचरते आप।।943।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. षट्खण्डागम ग्रन्थ महां, रचा पुष्पदंत भूत।
प्रथम बार लिपिबद्ध हुआ, णमोकार का सूत्र।।944।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. विभ्रम ने भ्रम डालकर, दीना भ्रमण बढ़ाय।
भ्रम नाशा प्रभु आपने, भवि के बने सहाय।।945।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. काल अनन्तों ही भ्रमा, किया न काल का अंत।
अनन्त गुण धामी जजूँ, हो भव दुख का अंत।।946।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. रहना उस स्थान पर, बसते–जहाँ अनन्त।
रूद्ध किसी से होय नहिं, एक में सिद्ध अनन्त।।947।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मदधारी यदि मन हुआ, दिखे न उसमें धर्म।
जिनवर वचन सुने नहीं, वृद्धि करे वो कर्म।।948।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पाप अनन्तों ही किए, जाप नहीं कर पाये।
जिसने पारस प्रभु जपा, मुक्ति पथ वो पाये।।949।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कनक कामिनी कञ्चनी, भव भव में भटकाय।
ज्यों कस्तूरी मृग बसे, वन में ढूँढ़न जाय।।950।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रोता है तोता यहाँ, रात-दिवस त्रैकाल।
प्राप्त किया नहिं आत्म धन, नहीं झुकाया भाल।।951।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिहुँ जग में पारस जिनम्, आप ही एक महान।
अतः आपको हे शुभम्! शत-शत बार प्रणाम।।952।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

जल अमृत माना, जहर नशाना, श्रद्धा का यह काम रहा।
प्रभु अभेद बुद्धि, देती है सिद्धि, भक्त अर्घ यह चढ़ा रहा।।

ॐ ह्रीं संसारविषसुघोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धि णासयाणं चारणाणं।

श्लोक नं.18

सर्प विष विनाशक

त्वामेव वीत तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो हरि-हरादि धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।18।।

गीतिका-छन्द

मिथ्या उदय रहे जिस मनु का, रागी कहते करि संजोग,
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आदी, अन्यमती कहते सब लोग।
रोग पीलिया ग्रस्त श्वेत रंग, देखे पीला दिखता है,
हे प्रभु! दृष्टि दोष है इसमें, इस बिन क्या हो सकता है।।

ऋषीन् प्रज्ञाश्रमणाख्यान्, सर्वप्रज्ञा गुणान्वितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आशीर्विषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–सखी

1. नत्वा लख पार्श्व जिनेशं, नहिं कर्म रहे अवशेषम् ।
संसार में फिर नहिं आवें, भवि को भी वहीं बुलावें ।।953।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मेरु सम अचल है आतम, सुरअंगना का पुरुषाथम् ।
दृढ़ता प्रभु की अति भारी, जो शिवसुख की करतारी ।।954।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. वक्त्रं लखि आप जिनेन्द्रं, भक्ति करते हैं सुरेन्द्रं ।
बने शीघ्र ही वे शिवकांतं, नमते ही मिटते ध्वान्तम् ।।955।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. वीरों में वीर कहाते, उपसर्ग जीत शिव पाते ।
ऐसा आतम बल पाने, हम चरणों शीश नवाते ।।956।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. तरुणी में मन को रमाया, नहिं तारण तरण दिखाया ।
इन्द्रिय भोगों में रमकर, जीवन ही व्यर्थ गँवाया ।।957।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तप करके कर्म जलाये, प्रभु ज्ञान सूर्य प्रकटाये ।
सब जगत चराचर जाना, निज पर कीना कल्याणा ।।958।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. मनमोहनी छवि तुम्हारी, भक्तों को लगती प्यारी ।
लख कर जो आनन्द पाते, वे चिदानन्द रम जाते ।।959।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. संसार में सार समाया, प्रभु ने यह भेद बताया ।
सम्यक् जब उर में आया, तो सार स्वयं ही पाया ।।960।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परमेष्ठी पंच हैं गायें, प्रभु आप प्रथम ही पाये ।
फिर सुख अनन्त है पाया, जो अचल अनश्वर गाया ।।961।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रत्नों का भरा खजाना, रत्नाकर नाम से जाना ।
त्रय रत्न मुझे दो स्वामी, दे अपने पास बुलाना ।।962।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वार्ता जो करे तुम्हारी, उसके कटते दुःख भारी ।
जिस हृदय में आप समाये, वह तुम सम ही बन जाये ।।963।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. दिव्यादिक द्रव्य लिये हैं, चरणों अर्पण भी किये हैं ।
स्वीकारो समर्पण मेरा, मिट जाये भव का फेरा ।।964।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नोकर्म और द्रव भाव, ये मिलकर भ्रमण कराव ।
नव कर्म और नहिं बाँधू, पूरब कर्मों को हानूँ ।।965।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. सोऽपि न मम जिनराज, जिसे माना है हमराज ।
अपना कह कहके हारा, नहिं बना वो कभी सहारा ।।966।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नूतन गृह ऐसा पाऊँ, जिसमें प्रभु आप बसाऊँ ।
बस प्रभु अरु मैं ही दिखाऊँ, वे मुझ मैं उन रम जाऊँ ।।967।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. दानं जो नहिं देता है, दाता नहिं कहलाता है ।
जो देकर मन में हरषे, उस पर प्रभु किरपा बरसे ।।968।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. विमलं प्रभु रूप तुम्हारा, है विमल गुरु का सहारा ।
पाया विनम्र गुरु द्वारा, बने विमल ही भाव हमारा ।।969।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. भोगों को इतना भोगा, निज की सुध को भी खोया ।
प्रभु आपने भोग भगाया, निज आत्मयोग को पाया ।।970।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हरिहरादि जीत लिया है, जग में प्रभु नाम किया है ।
रतिपति को किया पराजित, कहलाये प्रभु अपराजित ।।971।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रिश्ता प्रभु से है बनाना, नहिं जग रिश्तों में फँसाना ।
रिश्ते रिस रिस दुःख देते, प्रभु से मिलने नहिं देते ।।972।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हर्षे मम नयना बरसे, प्रभु पद दर्शन को तरसे ।
मुझे आज मिला प्रभु द्वारा, जागा है भाग्य हमारा ।।973।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रागी द्वेषी सब छोड़ूँ, नाता प्रभु से अब जोड़ूँ ।
मिले वीतरागी जिनस्वामी, दुःख मैंटो अन्तर्यामी ।।974।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दिग्दिगन्तरों तक फैली, जिनवर के यश की रैली ।
देवों ने वाद्य बजाये, शुभ संगम हैं करवाये ।।975।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. धिक्कार है उस जीवन को, जिसने नहिं माना जिन को ।
जीवन को व्यर्थ गँवाया, भव भव भ्रमता ही पाया ।।976।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. याचक बन कर आया हूँ, साधक का मन लाया हूँ ।
रत्नत्रय निधि मुझे वर दो, अपने सम गुण से भर दो ।।977।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रणमामि सदा जिनदेवं, करता ही रहूँ पद सेवम् ।
पूज्यों में पूज्य जिनेशं, प्रत्यक्ष रहो परमेशम् ।।978।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पञ्चम गति पायी प्रभु ने, हुए पंच भाव से युत ये ।
लघु पंच अक्षरी काल, पहुँचे प्रभु लोक के भाल ।।979।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जनाः नमन्ति सर्वं, श्री पार्श्वनाथ जिनदेवम् ।
फिर भक्त करें पदसेवं, पाते शिव सुख की मेवम् ।।980।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. किंचित् है न्यून शरीरं, अंतिम शरीर से देवम् ।
नहिं पाना है अब देहं, सुनो पार्श्वनाथ जिनदेवम् ।।981।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. काजल से काला कलंक, प्रभुवर तुम हो अकलंक ।
कर दिया दूर सब पंक, झुकते राजा अरु रंक ।।982।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. चर अचर जगत को जानें, निज आतम को पहिचानें ।
प्रभु महिमा लिखी ना जाय, सागर की ले लूँ स्याह ।।983।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. काला था कमठ का भाव, काली लेश्या सा स्वभाव ।
प्रभु के स्वभाव को लखकर, पड़ गया वो प्रभु के पाँव ।।984।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मन का मयूर है चहका, गुण बगिया देख के महका ।
स्वात्मानुभूति की गन्ध, सब दूर करे भव फन्द ।।985।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लिख गया स्वर्णअक्षर में, प्रभु हुए प्रसिद्ध अभय में ।
वह मानी कमठ सँवारा, दिलवाया भव का किनारा ।।986।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भिन्नार्त्त रौद्र ध्यान से, रहूँ लिप्त धर्म ध्यान से ।
गुण पर्यय द्रव्य को जानूँ, निज आतम को पहिचानूँ ।।987।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रीति नहिं जानूँ जगत की, प्रभु प्रीति निभाओ भगत की ।
चरणों में झुकाऊँ माथ, मुझे ले चलो शिवपुर साथ ।।988।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शक्ति से हीन भले हूँ, प्रभु भक्ति से मैं भरा हूँ ।
तुम हो अनन्त गुणधारी, उन्हें लिखने की तैयारी ।।989।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सिसकी ले बालक रोये, माता की गोद में सोये ।
जिन माँ दुलार मिल जाये, बेटा शिव सुख को पाये ।।990।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तोता वह जग में रोता, जिसे आत्मज्ञान नहिं होता ।
निज धन को है वह खोता, जग में रहता है सोता ।।991।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. सोऽपि जिनदेव स्वरूपं, जिसे देख लखूँ निज रूपम् ।
पाया निज आत्म अनूपं, प्रभु हैं जगती के भूपम् ।।992।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. शंख बजने लगे स्वत: ही, भावन सुरवासी घर ही ।
जब जन्मे पारस स्वामी, हर्षायी सृष्टि सुधामी ।।993।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. खोना नहिं जीवन पाना, इस देह को धन्य बनाना ।
संयम से पावन कर लो, गुरु वच को उर में धर लो ।।994।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मानो जिनवर जिनगुरु की, जो बात कहें शिवपुर की ।
खुद चलते राह दिखाते, मंजिल तक हैं पहुँचाते ।।995।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. गृहभोजी श्रावक होता, गृह त्यागी हो मुनि बनता ।
मुनि बनकर जो वन जाता, वह शुद्ध दशा को पाता ।।996।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. बाह्याभ्यन्तर कहे परिग्रह, चउबीस भेद कहे जिनवर ।
इन सबका त्याग किया है, वो ही निज तत्त्व जिया है ।।997।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तेरह अरु बीस जु पंथ, नहिं बनने दें निर्ग्रन्थ ।
जो पथ तुमने अपनाया, उसने ही शिव दर्शाया ।।998।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. विपरीत मार्ग नहिं चलना, जिनवर पथ को आचरना ।
इक लक्ष्य यही है मेरा, तोड़ूँ कर्मों का घेरा ।।999।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. विज्ञान भानु है चमका, परमौदारिक बन दमका ।
स्व-पर का भेद प्रकाशा, सब जगत चराचर भासा ।।1000।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धन धन्य हुआ मम जीवन, पायी प्रभु नाम संजीवन ।
मम जीवन आप सँवारा, मिल गया है भव का किनारा ।।1001।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वर्धन तप का प्रभु कीना, पाया तब ज्ञान नगीना ।
चउ घाति कर्म नशाये, फिर सब जग को प्रकटाये ।।1002।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तृण सम वैभव को त्यागा, जब आत्म तत्त्व मन लागा ।
चले वन की ओर प्रभु जी, पाने को आप विभूति ।।1003।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विज्ञों से पूज्य जिनेश्वर, नहिं दूजा कोई महेश्वर ।
तुम ज्ञान पूर्ण परमेश्वर, युगपत् देखें जगतेश्वर ।।1004।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पर्यूषण पर्व महान, देते भवि को बहुज्ञान ।
जो हृदय धरे सम्मान, कर ले अपना कल्याण ।।1005।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पर्यू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. यम नियम पालता है जो, निज को सम्भालता है वो ।
पर्याय बनाये पावन, निज जीवन को करे सावन ।।1006।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. ये रागद्वेष जो घेरे, भव में लगवाये फेरे ।
प्रभु ने यह दोष मिटाया, निज गुण का कोष बढ़ाया ।।1007।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. णमोकार मन्त्र है न्यारा, भव्यों को लगता प्यारा ।
यह तारण तरण बताया, भव्यों ने हृदय बसाया ।।1008।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु को हरि माने, नहिं पहिचाने, है अज्ञान दशा भारी।
हो पाण्डु रोग जब, दिखे पीत सब, भक्ति से अर्घ चढ़ा भाई।।

ॐ ह्रीं सर्वजनवन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो फणि सत्तिसोसयाणं पण्णसमणाणं।

श्लोक नं.19

नैत्र रोग विनाशक

धर्मोपदेश समये स–विधानुभावा–
दास्तां जनो भवति ते तरु–रप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोध–मुपयाति न जीव लोकः।।19।।

गीतिका–छन्द

धर्म उपदेश समय हे भगवन्! निकट आपके जो आता,
मानव तो बहु दूर रहे जब, तरु भी सुखमय हो जाता।
सूर्य उदित होने पर क्या सब, ज्ञान विकास नहीं पाते?,
वृक्ष कमल दल देख दिवाकर, विकसित हो नहिं मुस्काते?।।

आकाशगामिनो धीरान्, कृत्स्न सत्त्व हितोद्यतान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगामिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–जोगीरासा

1. धर्म ध्यान के फूल खिलाकर, गुण बगिया महकाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1009।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मोह मल्ल को जीत यहाँ पर, मदन जयी बन जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1010।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. पर निन्दा नहिं मुख से उचरूँ, गुण सदैव ही गाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1011।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. देश–देश व नगर–नगर में, जिन महिमा के गाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1012।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. शबरी जैसी भक्ति करके, प्रभु गुण से भर जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1013।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. सकल वाङ्गमय के ज्ञाता जो, पारस प्रभु गुण गाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1014।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. महाभाग्य से नरतन पाया, इसको सफल बनाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1015।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. ये तन माटी ये धन माटी, इनको तज निज पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1016।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सब जीवों को बोधि प्रदाता, सदा आप गुण गाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1017।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विश्व हिताय उदार भावना, नित्य हृदय में लाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1018।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. धाम आपका सिद्धालय है, उसको कब मैं पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1019।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. अनुपम उपमातीत जिनेश्वर, तव स्वरूप को ध्याऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1020।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भामण्डल की शोभा न्यारी, सप्त भवों को जानूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1021।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वाणी आप जगत कल्याणी, पान करूँ तर जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1022।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. दारुण दुःख नरक में भोगे, अब उनको नहिं चाहूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1023।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. आस्तां रहते आप जिनेश्वर, फिर भी हृदय बिठाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1024।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जला कर्म को ध्यान अग्नि से, जरा जन्म नहिं पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1025।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मनोहारी प्रभु छवि आपकी, देख-देख सुख पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1026।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भय हर्ता भवि को सुख कर्ता, सुख अनंत मैं चाहूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1027।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वन-वन डोलूँ सबसे बोलूँ, जय पारस की गाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1028।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तिमिरहारि प्रभु अपूर्व दीपक, अपना दीप जलाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1029।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेज पुंज हे ज्ञान दिवाकर! तव चरणों नम जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1030।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तरस रहे मम नयना कब से, प्रभु दर्शन कर पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1031।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रुग्णावस्था आन से पहले, आप रूप लख जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1032।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. रमते रमते आप गुणों में, निज में ही रम जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1033।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. जाप्य जपूँ दिन रात आपका, जपते प्राण गँवाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1034।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. शोभा समवशरण की न्यारी, लख समदृष्टि पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1035।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कः कौन इस जग में स्वामिन्, किसको अपना मानूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1036।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. अभ्युदय जो प्राप्त कराये, पुरुषारथ कर जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1037।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अभ्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. युद्ध किया बिन अस्त्र शस्त्र प्रभु, तुम सी शक्ति पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1038।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "युद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. गगन विहारी जिनवर को लख, मगन हो गुण को गाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1039।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरा मेरा एक वतन है, कब इसको मैं पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1040।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दिग् दिगन्त तक फैला प्रभु यश, मैं इसको फहराऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1041।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. नव-नव पंकज स्वर्णमयी प्रभु, तव पद मैं भी रचाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1042।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. पलक पाँवड़े बिछा दिये प्रभु, हृदयांगन में बुलाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1043।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तीर तरीका भक्ति का प्रभु, मैं कुछ भी नहिं जानूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1044।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ती" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. समताधारी प्रभु आपसे, मैं समत्व को चाहूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1045।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. महानदस्य के तीर बैठकर, निज आतम लख जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1046।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. ही से भी की राह बतायी, उस पर चल सुख पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1047।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ही" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रुक जाता जहाँ कर्म बन्ध है, वह वन्दन कर जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1048।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. होना है भगवान स्वयं तो, भक्त अभी बन जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1049।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. कोऽपि मेरा नहीं जगत में, मैं ज़ग का बन जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1050।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. किंकणी वीणा और झालरी, प्रभु भक्ति में बजाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1051।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वाग्मी वाणी को पाकर के, वर्धमान गुण पाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1052।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विघ्न विनाशी हे सुखराशि! तुम्हें छोड़ कहाँ जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1053।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. बोधि समाधि भाव विशुद्धि, शुद्ध दशा उर लाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1054।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. धर्मराज जिनराज हमारे, धर्म हृदय में धारूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1055।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मुख्य स्वयंभू गणधर प्रभु के, उन जैसा बन जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1056।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. परधन को मैं कभी न चाहूँ, निज वैभव को ध्याऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1057।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. यान ज्ञान है अनुपम प्रभु का, बैठ शिवालय जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1058।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

51. तिमिर हरणकर्ता प्रभु पारस, ज्ञान रोशनी चाहूँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1059।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नन्त गुणों के आप कोश हो, गुणग्राही बन जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1060।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. जीवन झाँकी प्रभु आपकी, सबको आज दिखाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1061।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. वन्दन करके आप चरण में, वंदनीय बन जाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1062।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लोकालोक प्रकाशी जिनवर, तुमसा दीप जलाऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1063।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. एकः सदा शाश्वता जिनवर, शान्त स्वरूपी ध्याऊँ।
चिन्तामणि का अर्चन करके, गुण अचिंत्य मैं पाऊँ।।1064।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु संगति पाया, शोक भगाया, तरु अशोक कहलाया है।
विधिमल को धोता, सुखमय होता, भवि ने अर्घ चढ़ाया है।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदणासयाणं आगास गामीणं।

श्लोक नं.20

उच्चाटन निरोधक

चित्रं विभो! कथ–मवाङ्मुख–वृन्तमेव,
विष्वक्पतत्यविरला सुर पुष्प वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नून–मध एव हि बन्धनानि।।20।।

गीतिका–छन्द

सभी दिशा में खिले पुष्प को, देव स्वयं बरसाते हैं,
डंठल नीचे होकर आते, महिमा तेरी गाते हैं।
हे जिन! तेरे निकट जो बंधन, आते वो झुक जाते हैं,
तेरी शक्ति गुणों को लखकर, विनत सुधी हो जाते हैं।।

आशीर्विषद्धिं सम्पन्नान्, समर्थान क्षमयाचलान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगामिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–नरेन्द्र

1. चिन्तन प्रभु का रहा अनुपम, जिसने चित्त सम्भाला था।
चित चोरों को नहीं मिला कुछ, ज्ञान पै डाला ताला था ।।1065।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. यंत्रं तंत्रं रूप आप जिन, मंत्रं नाम जपा जिसने ।
मुक्ति पथ पर चला वही फिर, दीने कर्म खपा उसने ।।1066।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. विविध विधाओं अरु विद्याओं, के जिनवर जी स्वामी हो।
जगनामी सुखधामी प्रभुवर, तुम ही अन्तर्यामी हो ।।1067।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. भोग और उपभोग को तुमने, क्षण भर में ठुकराया था।
स्वात्मभोग करके जिनवर जी, सिद्ध लोक को पाया था ।।1068।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. करके वन्दन धरा धन्य है, धन्य भाग्य जहँ तप कीना।
बड़भागी वे श्रावक जिनने, निज गृह पड़गाहन कीना ।। 1069।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. थर थर काँप रही धरती है, हिंसा का बाजार लगा ।
शीघ्र बचालो पापों से प्रभु, क्षेमंकर पद आन पड़ा ।।1070।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. महामहिम निर्दोष प्रभु की, वचनावली भी शीतल है ।
गौरवशाली हुई आपसे, भारत की यह भूतल है ।।1071।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वाङ्मय निर्मल प्रभु आपका, भक्तों का मन धोता है।
हृदयंगम करता इसको जो, वाचस्पति वह होता है ।।1072।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वाङ्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. मुख्य गौण दो भेद बताये, कथन पद्धति के जिनवर ।
इस प्रकार यदि कथन करें तो, नहिं विवाद हो धरती पर ।।1073।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. खड़े आपके चरणों में हैं, खगपति नरपति सुरपति भी।
भक्ति भाव से करते पूजन, भाव बनाते सुन्दर ही ।।1074।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वृहस्पति मुख सहस्र बनाकर, जिनवर का गुणगान करे।
नंत गुणों को गाने में वह, निज को भी अक्षम समझे ।।1075।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. बसन्त ऋतु में आम्र बौर लख, कोयल स्वयं कुहुकती है।
सन्त जनों की भक्ति भी तो, प्रभु को देख मचलती है ।।1076।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मेरा तेरा का यह फेरा, भव के फेर कराता है ।
तेरे पथ को जो अपनाये, वह भव से तर जाता है ।।1077।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वहम् अहम् में सुख नहिं भाई, पारस प्रभु बतलाते हैं।
अर्हम् पद का ध्यान करो तुम, भक्तों को समझाते हैं ।।1078।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. विष्वक् यानि सर्व ओर से, जयकारों की गूँज उठी ।
प्रभुवर का आगमन हुआ है, सृष्टि सारी झूम उठी ।।1079।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "विष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वक्त आज आया है सुन्दर, भक्त बनो प्रभु चरणों के।
हो आसक्त प्रभु भक्ति में, काटो बंधन कर्मों के ।।1080।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. पवन प्रभु के तल को छूकर, इठला करके आती है ।
प्रभु की सन्निधि को पाकर के, निज आतम सुख पाती है ।।1081।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तन से मन से और वचन से, जिनवर का गुणगान करूँ ।
निज स्वभाव की प्राप्ति हेतु मैं, परमातम का ध्यान करूँ ।।1082।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्यक्त च्युत अरु च्यावित जग में, मरण गुरुवर बतलाते ।
उनमें श्रेष्ठ त्यक्त बतलाया, कर समाधि भवि सुख पाते ।।1083।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विरले जग में संयम धारें, विरले तप कर पाते हैं ।
विरले प्राणी ही इस जग में, बोधि ज्ञान वर पाते हैं ।।1084।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रत्नाकर कहलाता सागर, रत्नराशि धारण करता ।
गुण रत्नाकर आप जिनेश्वर, तव गुण में मम मन रमता ।।1085।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. लाख जन्म का पुण्योदय जो, जिनवर कुल पर्याय मिली ।
जिनगुरु का उपदेश मिला अरु, मुक्तिपुर की राह मिली ।।1086।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सुरगण नभ में वाद्य बजाते, दुन्दुभि घोष कराते हैं ।
आओ भक्तो भगवन् आये, शुभ संगम करवाते हैं ।।1087।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रत्नवृष्टि आँगन में हुई थी, जब प्रभु माँ के उर आये ।
सोलह सपने देखे माँ ने, सुनकर पिता भी हर्षाये ।।1088।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. पुष्पाञ्जलि बिखरातीं सुरियाँ, माता की सेवा करतीं ।
उत्तम द्रव्य के थाल सजाकर, वामा के मन को हरतीं ।।1089।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पुष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. परमौदारिक काया हो गयी, परछाईं नहिं पड़े कभी ।
केवलज्ञान का अतिशय गाया, हाथ जोड़ खड़े भक्त सभी ।।1090।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वृष* को पाकर कृश की काया, अरु कषाय कर्षण कीना ।
उन मुनिजन ने छोड़ी माया, पाया संयम का मीना ।।1091।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. दृष्टि: ही तो दृश्य बनाती, सम्यक् हो या मिथ्या हो ।
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि, प्रभु मुझको सम दृष्टि दो ।।1092।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्टि:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वद् भक्ति से भक्त अनेकों, इस भव से हैं पार हुए ।
अदना सा मैं भक्त आपका, पुण्य उदय से प्राप्त हुए ।।1093।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. गोपुर द्वार की रक्षा करते, देव सदा ही सजग रहें ।
श्रद्धा से नत हो भवि आवे, जहाँ प्रभुवर राज रहे ।।1094।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. चरमोत्तम प्रभु देह के धारी, उपक्रम विदेही बनने को ।
तत्पर रहता मन ये मेरा, प्रभु आराधन करने को ।।1095।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रसिन्दीगिरि पर आया है, समवशरण श्री पार्श्व जिनम् ।
चतुर्णिकाय के देव हैं आये, चरणों का करने अर्चन ।।1096।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. सुमति प्रदाता सुख के दाता, दाता तुम सम और कहाँ ।
भक्त शरण में जो भी आता, उसको निज सम करें यहाँ ।।1097।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मदन पराजित हुआ आपसे, दिव्य कांति को लख करके ।
जिसने सारा जग है जीता, भाग गया वह डर करके ।।1098।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*धर्म

35. नख से शिख तक देह आपकी, जिन अणुओं से बनी प्रभो।
वे ज़ग में उतने थे भूतल, अतः अन्य नहिं रूप विभो ।।1099।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. सांसारिक बन्धन को तोड़ा, निज से नाता जोड़ा है ।
तुमसे नाता जोड़ लिया अब, सब तुम पर ही छोड़ा है ।।1100।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यथाशक्ति तप करना भक्तो, जिनवर का यह कहना है।
भक्ति बिना नहीं रहना तुम अब, यह भक्तों का गहना है ।।1101।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिव्य शक्ति कल्याणकारिणी, इस विधान की देखी है।
श्रद्धा भक्ति से जो भी करता, मृत्यु बनी सहेली है ।।1102।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वादी का प्रभु वाद मिटाया, निर्विवाद पद को पाया ।
अव्याबाध से सजे जिनेश्वर, मुझको भी यह गुण भाया ।।1103।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मुकलित कमल खिले हैं सुन्दर, दिनकर की किरणों को पा।
मुरझाया मम हृदय खिला है, पार्श्व प्रभु के दर्शन पा ।।1104।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नील गगन में गमन करें प्रभु, सुरगण स्वर्ण कमल रचते।
दो सौ पच्चीस रचना सुन्दर, उन पर नहिं प्रभु पद रखते ।।1105।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. शब्द नहीं मम शब्दकोश में, जिन से प्रभु गुणगान करूँ।
नहीं लेखनी में वह ताकत, रचना नंत गुणान् करूँ ।।1106।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. गति चार से ऊपर जाकर, पंचम गति को प्राप्त किया ।
पंच भाव से युत हो करके, सिद्ध शिला पर वास किया ।।1107।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्वच्छ सरल परिणामों से ही, कर्म यहाँ पर नशते हैं ।
सच्ची भक्ति करने वालों, के मन में प्रभु बसते हैं ।।1108।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च्छ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कान्तिमान जग की सब वस्तु, प्रभु के आगे फीकीं हैं।
आप चन्द्रवदनं के आगे, सब उपमायें फीकीं हैं ।।1109।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नूपुर पग में पहिन देवियाँ, छन छन छन छन पग धरतीं ।
जन्मोत्सव की करें बधइयाँ, जन जन का हैं मन हरतीं ।।1110।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नश्वर देह को तज कर जिनवर, अविनश्वर पद प्राप्त किया।
कर सम्यक् पुरुषार्थ आपने, शिवरमणी संग वास किया ।।1111।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महाशक्ति के स्रोत आप हो, निज शक्ति को प्रकट किया।
तव भक्ति से कर्म नाश हों, प्रभु मैंने यह जान लिया ।।1112।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धवल वृक्ष की छाँव में जिनवर, तुमने दीक्षा को धारा ।
धवल किए परिणाम स्वयं के, कर्म कलंक को संहारा ।।1113।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. एकल ध्यान कक्ष में रह कर, ज्ञान दीप प्रज्जलित किया ।
लोकालोक प्रकाशित करके, मुक्ति वधु से मिलन किया ।।1114।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वन्दन करता पार्श्व प्रभु का, चरणों अभिनन्दन करता ।
सब जग के प्यारे जिनवर लख, मन आनन्द से है भरता ।।1115।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. हित मित प्रिय वाणी जिनवर की, हितङ्करी कहलाती है।
सुन करके जो धारण करता, प्रीतिङ्कर बनवाती है ।।1116।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. बंधन सारे हैं जग झूठे, निर्बन्धन ने छोड़ दिये ।
वन्दन करके जिन चरणों का, इनसे बन्धन जोड़ लिये ।।1117।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. धरणीधर भी हर्षित होता, जिस पर जिनवर थमते हैं ।
आकर के फिर समवशरण की, रचना धनपति करते हैं ।।1118।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नाथ आप मुक्ति के स्वामी, शिवमग गामी कहे यहाँ ।
जहाँ आप पग रख देते हैं, स्वर्ण जलज सुर रचें तहाँ ।।1119।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नित्य हो रहे उत्सव देखो, नन्दीश्वर जिन भवनों में ।
उस उत्सव को करें यहाँ हम, कर विधान प्रभु चरणों में ।।1120।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

पुष्पों की वर्षा, मन है हर्षा, ऊर्ध्व मुखी सुर बरसाते।
भवि चरणों में आते, कर्म गिराते, अर्घ चढ़ा हम सुख पाते।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिलगहणासयाणं आसीविसाणं।

श्लोक नं.21

शुष्कवनोपवन विकाशक

स्थाने गभीर–हृदयोदधि–सम्भवाया:,
पीयूषतां तव गिर: समुदीरयन्ति।
पीत्वा यत: परम–सम्मद–संग–भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्।।21।।

गीतिका–छन्द

हृदयरूप गंभीर जलधि में, वाणी जन्मी अमृत सम,
पीकर लोग जिनेश्वर! उसको, सभी मिटाते अपने गम।
जन्म जरा मृत रोग हटाकर, अजर अमर हो जाते हैं,
तेरी दिव्य ध्वनि को सुनकर, सिद्ध रूप भवि पाते हैं।।

दृष्टि विषर्द्धि योगीन्द्रान्, सर्वकोपातिगान् क्षमान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–अडिल्ल

1. स्थापन करूँ आज हृदय प्रभु आपका ।
मरण समय तक जाप जपूँ प्रभु नाम का ।।
क्षेमंकर श्री पार्श्व चरण वंदन करूँ ।
त्रय योगों से आज प्रभु अर्चन करूँ ।।1121।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्था" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. नेत्र हमारे तृप्त हुए प्रभु दर्श पा ।
कर की शोभा बड़ी चरण स्पर्श पा ।। क्षेमंकर...।।1122।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. गमनागमन मिटाया है प्रभु आपने ।
शाश्वत सुख को पाया है विभु आपने ।।क्षेमंकर...।।1123।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. भीम भगंदर गलित कुष्ट मिट जात हैं ।
स्वर्णिम स्वस्थ शरीर मिले प्रभु जाप से ।।क्षेमंकर...।।1124।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रतिपति ने वश में कर लीना जगत को ।
किन्तु आपके निकट झुकाये नजर को ।।क्षेमंकर...।।1125।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. हृदय विराजे हृदयेश्वर बन भगत के ।
मनवाञ्छित सब पूर्ण किये प्रभु जगत के ।।क्षेमंकर...।।1126।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. दर–दर की ठोकर खायी है जगत में ।
मिथ्यातम को ठुकराया प्रभु भगत ने ।।क्षेमंकर...।।1127।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. योजन सवा के समवसृति[*1] राजे प्रभो ।
सिंहासन पर पद्मासन साजे विभो ।।
क्षेमंकर श्री पार्श्व चरण वंदन करूँ ।
त्रय योगों से आज प्रभु अर्चन करूँ ।।1128।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. दलन किया दुर्भावों को प्रभु हन दिया ।
धन्य धन्य जिनवर तुम कर्मन क्षय किया ।।क्षेमंकर...।।1129।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. धिक्कारूँ निज परिणति को हर पल प्रभो ।
तव चरणों में बदलूँ निज परिणति विभो ।।क्षेमंकर...।।1130।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. सम्यक् का जो बीज प्रभु तुम बो दिया ।
उसको हर क्षण नाथ सम्भाले मम जिया ।।क्षेमंकर...।।1131।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. भव–भव में प्रभु दर्श आपका लख सकूँ ।
जीवन कोरी कॉपी जिस पर प्रभु लिखूँ।।क्षेमंकर...।।1132।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. वाणी वीणा बनी हितङ्करी हे प्रभु!
सुनकर भवि की आतम झंकृत हुई विभु ।। क्षेमंकर...।।1133।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. मुख्या: तीन भुवनपति प्रभु नमते चरण ।
बन जाते त्रिभुवनपति प्रभु की पा शरण ।।क्षेमंकर...।।1134।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. पीकर भक्ति का प्याला झूमे जिया ।
पाकर मुक्ति का द्वारा हरषे हिया ।।क्षेमंकर...।।1135।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मयूर मन का नाच उठा जिन दर्श पा ।
बढ़ गई क्षमता अन्तस् की प्रभु पर्श पा ।।क्षेमंकर...।।1136।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[*1] समवशरण

17. षट् कालों का परिवर्तन होता जहाँ ।
मुक्ति का द्वारा भी खुलता है वहाँ ।।
क्षेमंकर श्री पार्श्व चरण वंदन करूँ ।
त्रय योगों से आज प्रभु अर्चन करूँ ।।1137।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तांता लगा है भक्तों का प्रभु दर्श को ।
होड़ लगी है पाने प्रभु के पर्श को ।।क्षेमंकर...।।1138।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तम हर मनहर प्रभु चरणों में वन्दनम् ।
नाथ आपके नाम से कटते बन्धनम् ।।क्षेमंकर... ।।1139।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वस्तु स्वरूप बताने वाले आप हो ।
भवि को सम्यग्ज्ञानी बनाते आप हो ।।क्षेमंकर...।।1140।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. गिरि सम्मेद शिखर से प्रभु मुक्ति गये ।
स्वर्णभद्र श्री कूट पे हम भक्ति करें ।।क्षेमंकर...।।1141।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. गिरः* आपकी जग हितकारी नाथ है ।
महिमा लखकर चरण झुकाया माथ है ।।क्षेमंकर...।।1142।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सबसे मैत्री भाव बना कर मैं रखूँ ।
दीन दुखी जीवों पर मैं करूणा धरूँ ।।क्षेमंकर...।।1143।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. मुख मुद्रा प्रभु आपकी मन को भा रही ।
बार-बार प्रभु दर्शन को उकसा रही ।।क्षेमंकर...।।1144।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. दीक्षा लेकर तीन दिवस अनशन किया ।
श्रेष्ठी धनदत्त के गृह में पारण किया ।।क्षेमंकर...।।1145।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*वाणी

26. रसिक भक्त यह प्रभु दर्शन की आश है ।
अपलक निरखूँ जिनवर मुख यह प्यास है ।।
क्षेमंकर श्री पार्श्व चरण वंदन करूँ ।
त्रय योगों से आज प्रभु अर्चन करूँ ।।1146।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. स्वयं तिरे प्रभु निज भक्तों को तारते ।
बीच भँवर में नैया उसे उवारते ।।क्षेमंकर...।।1147।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिरा वही भवि है जिस पर पारस लिखा ।
डूब गया भव में जिसने प्रभु नहिं लखा ।।क्षेमंकर...।।1148।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पीकर विषयों की मदिरा बड़ी भूल की ।
निजगृह को नहिं जाना कर्म की धूल ली ।।क्षेमंकर...।।1149।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. गत्वा पंच सहस धनु ऊपर राजते ।
समवशरण की गंध कुटी में साजते ।।क्षेमंकर...।।1150।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. यथा जात धर रूप पायी शिव नार है ।
ऐसे प्रभु पारस को नमन हजार है ।।क्षेमंकर...।।1151।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. स्वतः दुखी हूँ राग भाव से मैं प्रभु ।
अतः वीतरागी से नाता जोड़ लूँ ।।क्षेमंकर...।।1152।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. पत्थर शिल्पी हाथ लगे मूरत बने ।
शिष्य गुरु के हाथ लगे भगवन् बने ।।क्षेमंकर...।।1153।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रक्षक भी भक्षक बन जाता है यहाँ ।
कर्म असाता फल जब देता है यहाँ ।।क्षेमंकर...।।1154।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मनमानी अब नहीं करूँगा नाथ मैं ।
जिनवाणी को हृदय धरूँगा नाथ मैं ।।
क्षेमंकर श्री पार्श्व चरण वंदन करूँ ।
त्रय योगों से आज प्रभु अर्चन करूँ ।।1155।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. संघर्षों में समता धारी थी जिनम् ।
कमठासुर की मति भी हारी थी शुभम् ।।क्षेमंकर...।।1156।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. महापुण्य का उदय मिला संयोग जो ।
जब तक मुक्ति नहीं मिले पद योग हो ।।क्षेमंकर...।।1157।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दया भाव की पुष्प वल्लियाँ खिल रहीं ।
अर्हत् महानद में क्षम भँवरी उठ रहीं ।।क्षेमंकर...।।1158।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. संवर निर्जर तत्त्व का हम आदर करें ।
मोक्ष तत्त्व का लक्ष्य बनाकर के रहें ।।क्षेमंकर...।।1159।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. गगन चूमता शिखर यहाँ शाश्वत कहा।
संकटहारक पारस ने कर्मन दहा ।। क्षेमंकर...।।1160।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भाग्य सँवारा महाविभव को पायकर।
नंत चतुष्टय धारी जिन को ध्याय कर ।।क्षेमंकर...।।1161।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. जो भी प्रभु का नाम जपेगा भक्ति से।
उसके सारे विघ्न नशें प्रभु शक्ति से ।।क्षेमंकर...।।1162।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. भय हरता सुख करता प्रभुवर जाप हो।
भक्तों को शिवसुख करता प्रभु आप हो।।क्षेमंकर...।।1163।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. व्याधिं आधिं नाश करूँ प्रभु जाप से।
मरण समाधि कर जाऊँ प्रभु द्वार पे।।
क्षेमंकर श्री पार्श्व चरण वंदन करूँ ।
त्रय योगों से आज प्रभु अर्चन करूँ ।।1164।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. व्रत और शील दो कूल महानद के कहे।
गुप्ति समिति की बालू से चमके रहे।।क्षेमंकर...।।1165।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. जंजीरें दो पुण्य पाप की हैं पड़ी।
मोक्ष मार्ग में बाधा बन करके खड़ीं।।क्षेमंकर...।।1166।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तिग्म* उदित होता है नित प्राची दिशा।
सांझ पड़े वह अस्त होय पश्चिम दिशा।।क्षेमंकर...।।1167।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तन्मय होकर जो पारस भक्ति करे।
जनम जनम के पातक से मुक्ति वरे।।क्षेमंकर...।।1168।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रम्य वस्तु भी अरम्य लगती है प्रभो।
अशुभ कर्म जब उदय में आता है विभो।।क्षेमंकर...।।1169।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सादर वन्दन करूँ मैं रामानन्द को ।
वन्दन करके पाऊँ परमानन्द को ।।क्षेमंकर...।।1170।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. जाप्य जपूँ दिन रात प्रभु के नाम की ।
मिल जाये ताली मुझे शिवसुख धाम की ।।क्षेमंकर...।।1171।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. जलज खिले ज्यों पंक में दिनकर देखकर ।
भव्य खिलें जिनवर की छवि को देखकर ।।क्षेमंकर...।।1172।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सूर्य

53. राग–द्वेष की ज्वाला को प्रभु नाश दूँ।
वीतराग की आभा से परकाश लूँ ।।
क्षेमंकर श्री पार्श्व चरण वंदन करूँ ।
त्रय योगों से आज प्रभु अर्चन करूँ ।।1173।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मन मर्कट अति चंचल मेरा है बना ।
कैसे नाशूँ भव का फेरा है घना ।।क्षेमंकर...।।1174।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रत्न तीन को धार त्रिजगपति हो गये ।
त्रय कर्मों को नाश मुक्तिवधु को गहे ।।क्षेमंकर...।।1175।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. शिवं शुद्ध बुद्ध परम विश्व के नाथ हो ।
चिदानन्द इक रूप चरण मम माथ हो ।।क्षेमंकर...।।1176।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु नि:सृत वाणी, पीकर प्राणी, अजर अमर पद पाते हैं।
आनन्दित ऋषिगण, पाने निज पद, चरणों अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि विराजिताय क्ष्वीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फियतरुवत्तयराणं दिट्ठि विसाणं।

श्लोक नं.22

मधुरफल प्रदायक

स्वामिन्! सुदूर–मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचय: सुर चामरौघा:।
येऽस्मै नतिं वि–दधते मुनि–पुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्व–गतय: खलु शुद्धभावा:।।22।।

गीतिका–छन्द

नीचे से ऊपर फहराते, चँवर ढुराते सारे देव,
ऐसा ऋषि कहते हैं यह फल, मिलता उन्हें करे वृष सेव।
जो चरणों में झुक जाता है, वह ऊपर उठ जाता है,
स्वर्ग मोक्ष का स्वामी बनता, भव सागर तिर जाता है।।

गृहीत तपसोऽत्यक्तान्, यतीनुग्रतपोयुक्तान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–नाराच

1. स्यात्म बोध पायके सु आत्म तत्त्व पा लिया ।
भव्य जीव बोध के, सुमार्ग मुक्ति का दिया ।।
नाथ! आप चर्ण की उपासना सदा करूँ ।
स्वर्ग सौख्य पाय के सु मोक्ष सम्पदा वरूँ।।1177।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. अस्मिन् सुदूर देश जाय प्रभु बस गये ।
भक्त आप जो यहीं से वन्दना हैं कर रहे ।। नाथ...।।1178।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मिन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. सुक्ख पाय आज वो न पूर्व में कभी मिला।
नाथ आप जो मिले तो शुरु हुआ सिलसिला ।। नाथ...।।1179।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. दूर चर्ण से रहे अनन्त काल दुःख सहे ।
पाद नहीं छोड़गे ये कौल* आज खा रहे ।। नाथ...।।1180।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रत्नज्योति दीप लेय स्वर्ण थाल में धरूँ ।
आरती उतारिके मैं मोह ध्वान्त को हरूँ ।। नाथ...।।1181।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मनो रञ्जन किया सुआत्म तत्त्व पाय के ।
मोह भञ्जनं किया सुध्यान को लगाय के ।। नाथ...।।1182।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वधू सी सजी धरा कि जन्म पार्श्व हो गया।
मातु–पिता आँगने में नृत्य गान हो रहा ।। नाथ...।।1183।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*कसम

8. नयन एक रूप भये आप रूप देख के।
दक्षिणेन्द्र* ने लखा सहस्र नेत्र खोल के।।
नाथ! आप चर्ण की उपासना सदा करूँ ।
स्वर्ग सौख्य पाय के सु मोक्ष सम्पदा वरूँ।।1184।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. गम्य पार्श्व हो नहीं आप छद्मस्थ के ।
ध्यान में हि आवते हो प्रभू आत्मस्थ के ।। नाथ...।।1185।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10.. सम्य दृष्टि पायकर के सृष्टि सारी देख ली ।
आप गुणगान में चलायी आज लेखनी ।। नाथ...।।1186।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मुत्त द्रव्य एक ही रहे सभी अमुत्त हैं ।
मूर्त छोड़ पार्श्व ने हि पाया आत्म तत्त्व है ।। नाथ...।।1187।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. पथ्य को न जान नाथ, भाय ही अपथ्य है ।
सत्य भूल भोग वस्तु जो कि सब असत्य है ।। नाथ...।।1188।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तन्तु चारण बीज आदि ऋद्धि के धनी हो नाथ ।
आप पर्श पायकर के जीव सब हुए सनाथ ।। नाथ...।।1189।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. तोड़ दिये बन्ध सर्व जो जहां बढ़ाय थे ।
छोड़ सभी बन्धु वर्ग आत्म तत्त्व ध्याय थे ।। नाथ...।।1190।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मन्द मुस्कुराट त्वं मुखाब्ज पै विराजती ।
मुखाकृती सुहावनी भक्ति को बढ़ावती ।। नाथ...।।1191।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ध्येय आपको बनाय ध्यान आपका धरूँ ।
ध्याने से हिये सु धार नाथ आप सा बनूँ ।। नाथ...।।1192।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सौधर्म इन्द्र

17. वज्र की शलाक से इन्द्र पाद खोदता ।
भक्त आय भक्ति करे थान को सहेजता।।
नाथ! आप चर्ण की उपासना सदा करूँ ।
स्वर्ग सौख्य पाय के सु मोक्ष सम्पदा वरूँ।।1193।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. दन्त कान्ति आपकी द्युती रही मणी समां ।
पाप पंक धोवने सु जीव बैठते सभा ।। नाथ...।।1194।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिमिर मिथ्यात्व का समीपता न पा सके ।
आपकी समीपता से भक्त पाप को नशे ।। नाथ...।।1195।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. शुद्ध और बुद्ध का सरूप है दिखा दिया ।
शुभ योग से प्रभू जु भक्त को मिला दिया ।। नाथ...।।1196।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. चक्रधारि इन्द्र आदि आप चर्ण में बसें ।
चर्ण धूलि माथ पै लगाय के स्वयं सजें ।। नाथ...।।1197।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. भव्यः जो ध्याय नाथ तीन योग से यहाँ ।
सर्व बैर भाव नाश त्यागता यहाँ जहां ।। नाथ...।।1198।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सुमेरु पर्वतेषु जाय इन्द्र न्हवनं किया ।
ताण्डवं रचाय के भक्ति को दिखा दिया ।। नाथ...।।1199।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रहूँ नाथ आप साथ है यही सु कामना ।
भाव शाम्य पावने की कर सकूँ सु साधना ।। नाथ...।।1200।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. चाह नाथ आज उठी आप दर्श की मुझे ।
पर्श आप दीजिए कि दास चर्ण में सजे ।। नाथ...।।1201।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मन्त्र नाम जाप से कहे सभी जु पाप हैं।
मन्त्र में विराज आप देते भव्य साथ हैं।।
नाथ! आप चर्ण की उपासना सदा करूँ ।
स्वर्ग सौख्य पाय के सु मोक्ष सम्पदा वरूँ।।1202।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रौद्र ध्यान से जु जीव नर्क जावते प्रभो ।
धर्म ध्यान जो करें सु स्वर्ग पावते विभो ।। नाथ...।।1203।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. यौघाः विनष्ट होय पार्श्व चर्ण भक्ति से ।
सर्व भूत प्रेत भागें आपकी सु शक्ति से ।। नाथ...।।1204।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गाय गीत पार्श्व के जु रात दैव एककार ।
पाय मीत पार्श्व को हि आत्मानु ध्यान धार ।। नाथ...।।1205।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तस्मै नमः करूँ जिन्हें कि भव्य ने नमः किया।
ध्यान अग्नि में जिन्होंने कर्म सर्व दह दिया ।। नाथ...।।1206।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्मै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नरं सुरं जु आयके प्रभू सु याचना करें।
समोसृती विराज आप सौम्य रुप को लखें ।। नाथ...।।1207।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. गतिं चऊ को छोड़ आप पाँचवीं गती गये ।
क्षणेन एक जाय आप सात लोक अंत में बसे ।। नाथ...।।1208।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विज्ञता जु आपकी प्रसिद्धिता बढ़ात है ।
अर्घ थाल लेय भक्त चर्ण में चढ़ात है ।। नाथ...।।1209।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. दर्श योग्य आप देख दर्श ही किया प्रभो ।
आत्म रूप को लखा सु बोध स्व हुआ विभो! ।। नाथ...।।1210।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. धर्म का स्वरूप आज आपने बता दिया।
दया भाव धारने सु सूत्र भी सिखा दिया।।
नाथ! आप चर्ण की उपासना सदा करूँ ।
स्वर्ग सौख्य पाय के सु मोक्ष सम्पदा वरूँ।।1211।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तेजपुंज! आप देख भानु भी शर्मात है ।
शीघ्र दिशा पश्चिमी में जाय छिप जात है ।। नाथ...।।1212।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मुग्धमंत्र जो करे सुवाणी नाथ आपकी ।
पाप ताप को हरे कथा सुनाथ आपकी ।। नाथ...।।1213।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नित्य दर्श पाय पार्श्व अर्चना सदा करो ।
पाप पंक धोय पार्थ स्वर्ग सम्पदा वरो ।। नाथ...।।1214।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. पुङ्गि दाख साथ बादाम श्रीफल धरूँ ।
भक्ति भाव से हे नाथ! चर्ण अर्पण करूँ ।। नाथ...।।1215।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. राग आग छोड़ वीतरागता को पा चले ।
तोड़ के जु मोह बंध आत्म छाँव में पले ।। नाथ...।।1216।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वाद्य बाजते नभेषु आगमन बतावते ।
लो करो प्रभु का दर्श देव हैं बुलावते ।। नाथ...।।1217।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यमो* यहाँ जु हारता प्रभू व्रतों के सामने ।
अतः व्रतों को धार लो जन्म शुभ बनावने ।। नाथ...।।1218।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तेरा पंथ जो प्रभू वही मिरा भी हो यहाँ ।
आप पंथ छोड़ आज जाऊँ मैं प्रभू कहाँ ।। नाथ...।।1219।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*यमराज

44. नूर आपका मिले जु कोहिनूर बनूँ यहाँ।
चमकता ही रहूँ मैं नाथ सारे जहां।।
नाथ! आप चर्ण की उपासना सदा करूँ ।
स्वर्ग सौख्य पाय के सु मोक्ष सम्पदा वरूँ।।1220।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नरस्य सार ज्ञान है सु ध्यान भी प्रधान है ।
ध्यान से सु प्राप्त किया आप केवलज्ञान है ।। नाथ...।।1221।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मूर्च्छा परिग्रहः सु ज्ञान गुरु ने दे दिया ।
त्याग के इसे चला जु मुक्ति वधु पा लिया ।। नाथ...।।1222।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. ध्वनि दिव्य पायके मैं दिव्यता यहाँ वरूँ ।
ध्यान ध्येय ध्यात होय कर्म को यहाँ दहूँ ।। नाथ...।।1223।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. गजराज* पै बिठाय इन्द्र लेय के चला ।
मेरु पर्वतेषु जाय के न्हवन है किया भला ।। नाथ...।।1224।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तरू अशोक नीच बैठ आप मूर्ति यूँ लगे ।
ज्यों कि बादलों जु मध्य सूर्य की प्रभा सजे ।। नाथ...।।1225।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. धन्यः कहें उचार भव्यं को पुकार के ।
भक्ति से झुको जु चर्ण प्रभू को निहारिके ।। नाथ...।।1226।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. खण्ड तीन हैं किए प्रथम ही मिथ्यात्व के ।
प्राप्त साम्य को किया लखा जु आत्म भाव से ।। नाथ...।।1227।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. लुप्त हो गया जु राग सुप्त हैं कषाय भी ।
गुप्ति त्रय को धरा अरू समीति पंच भी ।। नाथ...।।1228।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*ऐरावत हाथी

53. शुक्ल ध्यान के द्वि पाय पाय कर्म चऊ हने।।
प्रकृति त्रेसठ को नाश नंत चतुष्ट धरे।।
नाथ! आप चर्ण की उपासना सदा करूँ ।
स्वर्ग सौख्य पाय के सु मोक्ष सम्पदा वरूँ।।1229।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. शुद्ध आत्म पा लिया सु बोधिज्ञान को जिया ।
बोध देय भव्य को सु मुक्ति को भी पा लिया ।। नाथ...।।1230।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भाव शून्य है क्रिया तो फल नहीं मिले जहां ।
भाव पूर्ण हो क्रिया सु मोक्ष भी मिले यहां ।। नाथ...।।1231।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. भावाः त्रिधा कहे यहाँ, शुभाशुभं औ शुद्धसाः ।
भजो शुभं तजो परान् शुद्ध रुप हो सदा ।। नाथ...।।1232।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

नीचे ऊपर हो, चमर ढुरे जो, भव्यों को समझाते हैं।
प्रभु चरण जो झुकता, मुक्ति वरता, हम झुक अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं सुरचामर विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरुपत्तणासयाणं उग्ग तवाणं।

श्लोक नं.23

राज्य सम्मान दायक

श्यामं गभीर–गिर–मुज्ज्वल हेमरत्न–
सिंहासनस्थमिह भव्य शिखण्डिनस्–त्वाम्।
आलोकयन्ति – रभसेन नदन्त – मुच्चैश्,
चामीकराद्रि–शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।

गीतिका–छन्द

स्वर्णमयी मेरु पर्वत पर, गरजें काले मेघ फुहार,
देख मयूर खुशी से नाचें, शोभा जिसकी अपरंपार।
वैसे सिंहासन सोने पर, राजित पार्श्वनाथ भगवान,
भक्त मयूर लखें जब उनको, हर्षित हों गाते गुणगान।।

प्रदीप्त तपसा संयुक्तान्, रवितेजोऽधिकप्रभान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द–सोलह कारण

1. श्याम वर्ण जिनकी छवि जान, पार्श्व प्रभु हैं गुण की खान।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
चिंतामणि चिंतित फलदाय, पूजूँ चरण कमल चित लाय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।1233।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मंगल में मंगल जिनराय, सबके मंगल दोष नशाय ।
परम गुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो।। चिंतामणि...।।1234।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. गमनागमन मिटाकर नाथ, अष्टम भू पर किया प्रवास ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1235।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. भीषण ज्वाला अरि बरसाय, आत्म ध्यान में खलल न पाये ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1236।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रत्नजड़ित सिंहासन आप, जिस पर शोभें पारसनाथ ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1237।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. गिरि सम्मेद है शाश्वत थान, सब जिनवर पाते निर्वाण ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1238।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. रथ संयम पर आप सवार, पहुँचे जिनवर मोक्ष मँझार ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1239।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मुक्ता माणिक चरणों लाय, भक्ति से जिन चरण चढ़ाय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
चिंतामणि चिंतित फलदाय, पूजूँ चरण कमल चित लाय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।1240।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. उज्ज्वल कीर्ति तव जिनराय, फैली दशों दिशा में जाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1241।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्ज्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. लगन लगी तव गुण से नाथ, गुण रत्नाकर करो सनाथ ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1242।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. हे स्वामिन्! इक अरज सुनाऊँ, तुम जैसे गुण कब मैं पाऊँ ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1243।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मन्दमति मैं गुण को गाऊँ, मन्द मन्द मन में मुस्काऊँ ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1244।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रत्न तीन से सजे जिनेश, तीन लोक नत हैं परमेश ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1245।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नन्त जन्म का शुभ फल पाय, आज प्रभु के दर्शन पाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1246।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. सिंह वृत्ति होती मुनिराज, मुनियों के हो प्रभु सरताज ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1247।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. हाथ के ऊपर हाथ जिनेश, कृतकृत्य का दें उपदेश ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1248।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. समताधारी आप जिनेश, ममता का कीना उच्छेत् ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
चिंतामणि चिंतित फलदाय, पूजूँ चरण कमल चित लाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।1249।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नग्न दिगम्बर रूप जिनेश, जग नश्वरता का उपदेश ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1250।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. आत्मस्थ हुए पार्श्व जिनेश, निस्पृहता का दें उपदेश ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...1251।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मिथ्यातम का होय विनाश, सम्यक् का होवे परकाश ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1252।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हरि हल चक्री भी गुण गायें, तव चरणन् में शीश झुकायें।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...1253।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. भवि भागन वश ध्वनि खिर जाय, सब के हित की बात बताय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...1254।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. अव्यय अविनाशी अविकार, नित्य निरंजन निर आकार।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1255।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शिष्य भूल जाये हर बात, पर नहिं भूले गुरु का साथ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1256।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. खम्बे चऊ आराधन होय, जिस पर अर्हत् महल सु सोह ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1257।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. डिगा न सकती मारुत झोक, आप अपूरव दीप अशोक ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
चिंतामणि चिंतित फलदाय, पूजूँ चरण कमल चित लाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।1258।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "डि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जिनस्तुति में मन रम जाय, जिनवर के गुण निज में पाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1259।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्वां तीर्थंकर पद परमेश, त्रय योगों से नमूँ जिनेश ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1260।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. आप जानते हो सब स्वामी, कहलाते हो अन्तर्यामी ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1261।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. लोक अलोक सभी दिख जाय, आप ज्ञान चक्षु जिनराय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1262।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कर्म सर्प ढीले पड़ जायें, जब मयूर पारस दिख जायें ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1263।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. यन्त्र देह यह जीव चलाय, जीव को ही प्रभु मुख्य बताय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1264।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तिगिञ्छ नाम का ह्रद सुखदाय, सीता नदी विदेह बहाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1265।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रग-रग में बस गये हो आप, हर पल करूँ नाम का जाप ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1266।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भक्त आपके झूमें गायें, तव गुण में प्रभुवर रम जायें ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
चिंतामणि चिंतित फलदाय, पूजूँ चरण कमल चित लाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।1267।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. सेतु बने हैं श्री गुरु राय, भक्त को भगवन् से मिलवाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1268।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "से" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. नवधा भक्ति करूँ आह्वान, घरे* पधारो गुरु गुणखान ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1269।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नवलब्धि प्रभु तुमने पाय, नर से नारायण जिनराय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1270।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दंसण णाण चरित जो पाय, वह सीधा मुक्तिपुर जाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1271।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तन मन धन की सुध नहिं होय, जो जिनवर के गुण में खोय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1272।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मुक्ति अंगना बाट जु जोय, वर लीजै अब प्रभु जी मोय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1273।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. उच्चैः पंच सहस धनु सोह, समवशरण भवि का मन मोह ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1274।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चाकर तुम चरणन् का बनूँ, चार घातिया कर्मन् हनूँ ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1275।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*गृह में

44. मीरा सम भक्ति उर आय, जो मिथ्या को सम्य बनाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।
चिंतामणि चिंतित फलदाय, पूजूँ चरण कमल चित लाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।।1276।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कभी कण्ठ अवरुद्ध न होय, मरण समय प्रभु नाम जु लेय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1277।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. राम नाम ही सत्य बताय, आतम राम जपो सुखदाय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1278।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. इंद्रिय मन जब बस में होय, तब ही जितेन्द्रिय पद होय ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1279।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शिशु प्रार्थना सुन लो नाथ, मुक्ति महल बिठा लो साथ ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1280।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रतिपति भी नतमस्तक होय, ब्रह्म आपके तेज को जोय* ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1281।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सीमन्धर आदि जिनराज, बीस विदेह में रहे विराज ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1282।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वर ली शिवनारी जिनराय, नंत काल तक संग रहाय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1283।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नम्र बनो मानी नहिं कोई, यही सीख जिनवर ने देई ।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ।। चिंतामणि...।।1284।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*देखकर

53. वादिराज मुनिराज महान, भक्ति कर की कुष्ट की हान।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ॥
चिंतामणि चिंतित फलदाय, पूजूँ चरण कमल चित लाय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ॥1285॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अम्बुज हिय का लिया खिलाय, आओ तिष्ठो हे जिनराय!
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ॥ चिंतामणि...॥1286॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वातरसना मुनिराज कहायें, बात पते की हमें बतायें।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ॥ चिंतामणि...॥1287॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. हंस समां मुनिश्रेष्ठ सुहाय, अर्हत् महानद है सुखदाय।
परमगुरु हो जय जय पार्श्व प्रभु जय हो ॥ चिंतामणि...॥1288॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

मेरु स्वर्णमय, मेघ कृष्णमय, देख मयूरा नृत्य करें।
स्वर्णिम सिंहासन, प्रभु श्यामल तन, भक्त भक्ति कर अर्घ धरें॥

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंधणहरणाणं दित्ततवाणं।

श्लोक नं.24

शत्रुविजित राज्य प्रदायक

उद्गच्छता तव शिति – द्युति – मण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छवि – रशोक – तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥24॥

गीतिका–छन्द

श्याम प्रभामण्डल अति तेरी, कांतिहीन तरु हुआ अशोक,
हे प्रभु! रहे सामने तुम छवि, तरु अशोक तब करता शोक।
वीतरागता निकट रहे तो, राग रहित वह हो जाता,
कौन पुरुष ऐसा नहिं होता? जिसे नजर भव ना आता॥

विडादि रहितान् धीरान्, मुनींस्तप्त तपोऽन्वितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं तप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द-चाल

1. उद्भव है दिवस तुम्हारा, वदि पौष एकादशि प्यारा।
सुर गिरि पर न्हवन कराया, सुरपति ताण्डव रचवाया ।।1289।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. गच्छन्ति ऋषि गण पश्यं, प्रभु पार्श्व जन्म अभिषेकं।
क्षीरोदधि की बहे धारा, जिनवर का रूप है प्यारा ।।1290।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गच्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. छन्दों का ज्ञान नहीं है, वन्दन का भाव सही है।
स्वच्छन्द नहीं अब होना, जिनवर का भवि से कहना ।।1291।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "छ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तारों के मध्य में सोहे, चन्दा सबका मन मोहे।
हम तारें हैं तुम चन्दा, प्रणमूँ हे पार्श्व जिनन्दा! ।।1292।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. तप त्याग की तुम मूरत हो, सन्मार्ग की प्रभु सूरत हो।
तलस्पर्शी ज्ञान तुम्हारा, है पार्श्व प्रभु का सहारा ।।1293।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. वसुधा वधु सी शर्मायी, जब जन्म लिया जिनरायी।
माया से माँ को सुलाकर, शची बालक को ले आयी ।।1294।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. शिव पथ तुमने दर्शाया, खुद चलकर के दिखलाया।
जो पद चिह्नों पै चला है, उसका ही हुआ भला है ।।1295।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तिथि पौष एकादशी आयी, वन में पहुँचे जिनरायी।
वन वन फिरे राजकुमारा, बनने को शिव भर्तारा ।।1296।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. द्युति तन की है अतिभारी, बन्धु बान्धव को प्यारी।
इसे देख के मन हर्षाया, भवि को आनन्द बढ़ाया ।।1297।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तिरती भव्यों की नैया, क्योंकि प्रभु आप खिवैया।
आँधी तूफां चाहे आवें, कोई भी डुबा नहिं पावें ।।1298।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मण्डल सुन्दर बनवाया, रत्नों से इसे सजाया।
करके बीजाक्षर अर्चा, बढ़ गई धरम की चर्चा ।।1299।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. डरता हूँ पाप से जिनवर, करता हूँ जाप को हर क्षण।
पापों से मुझे बचाना, देना निज गुण का खजाना ।।1300।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ड" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. लेता जो नाम प्रभु का, चलते फिरते ही विभू का।
सञ्चित हो पुण्य अपारा, मिल जाता भव का किनारा ।।1301।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ले" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नरकादिक गति में घूमा, नहिं जिन चरणों को चूमा।
पाये दु:ख नाथ अनन्ता, सब जानत हो भगवन्ता ।।1302।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. लुप्त हो रहे सब संस्कार, हिंसा का है व्यापार।
प्रभु पुन: पधारो जगती, होवे जिन धर्म की बढ़ती ।।1303।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लुप्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तच्चाम्र चारु जो कलिका, कोयल का मन जो कुहका।
तव भक्ति मुझे बुलाती, कोयल सम है बुलवाती ।।1304।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तच्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. है तुच्छ ज्ञान प्रभु मुझमें, सर्वज्ञ आप हो जग में ।
कैसे मैं गुण को गाऊँ? बालक सम ही तुतलाऊँ ।।1305।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "छ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. दश दिश से पंछी आकर, तरुवर पर रैन बिताकर ।
हुई भोर उड़े दिश दिश में, यूँ ही प्राणी मिले जग में ।।1306।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. गच्छन्ति जिनवर द्वारे, वे भवि निज भाग्य सँवारें ।
करें कर्म निर्जरा सारे, पहुँचे तब मुक्ति द्वारे ।।1307।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च्छ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विचरण किया ज्ञान गगन में, रहते प्रभु ध्यान मगन हैं ।
मम ज्ञान बाग महकाओ, गुण पुष्प प्रभु विकसाओ ।।1308।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रथ जिनवर चढ़ शिव जाऊँ, पथ से नहिं मैं घबराऊँ ।
पीकर निजात्म के रस को, मैं भूलूँ भव के रस को ।।1309।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. शोषक हो भव सागर के, पोषक हो शिव मारग के ।
भक्ति से भव को सुखाऊँ, हो ध्यान मगन शिव पाऊँ ।।1310।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. करते विहार प्रभु नभ में, पहुँचे भव्यों के मध* में ।
जहाँ थमे करें सुर रचना, प्रभु समवशरण क्या कहना ।।1311।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तप्तादिक ऋद्धि गही है, प्रभु अक्षय सिद्धि लही है ।
ऋद्धि तव चरण पखारें, प्रभु को पा भाग्य सँवारे ।।1312।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. हैं गुरु ब्रह्मा गुरु शंकर, गुरुवर ही परम दिगम्बर ।
भव्यों को हैं क्षेमंकर, पद दिलवाते तीर्थंकर ।।1313।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*मध्य

26. बहती है ज्ञान की धारा, प्रतिपल जिनवर के द्वारा ।
उस धार बहूँ मैं स्वामी, पद पाऊँ अन्तर्यामी ।।1314।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भूतल के निर्मल भूषण, नहिं कोई आप में दूषण ।
आभूषण तुम्हें बनाकर, सज जाऊँ मैं गुणआगर ।।1315।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. वसु द्रव्य सजाकर लाया, सब मिला के अर्घ बनाया ।
भक्ति से चरण चढ़ाया, पा लूँ सम्यक् का पाया ।।1316।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. सावन का सुखद महीना, सुदी सप्तमी का दिन भीना ।
प्रभु पाया स्वयं नगीना, शिव रमणी को वर लीना ।। 1317।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सन्निकट विराजो स्वामी, मम बात सुनो सुखधामी ।
आकर अब कहीं न जाओ, प्रभु उर मेरे बस जाओ ।।1318।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. आराध्य तुम्हीं हो मेरे, तव चरणन के हम चेरे ।
प्राणों से प्यारे तुम्हीं हो, मेरे आकाश जमीं हो ।।1319।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तोरण से द्वार सजाये, हैं वन्दनवार लगाये ।
बैठे हम आश लगाये, कब प्रभु मेरे घर आयें ।।1320।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. एकाऽपि समर्थेयं है, जिन भक्ति बड़ी सुगम है ।
मुक्ति की डगर दिखाती, भवि को शिवपुर ले जाती ।।1321।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. यह शक्ति अचिन्त्य तुम्हारी, दैवी शक्ति पर भारी ।
उस आत्मशक्ति के आगे, सब ही उपसर्ग थे भागे ।।1322।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. दिखती जग में जो माया, कोई भी जान न पाया ।
सब मतलब के हैं भाया, अब निज स्वरूप चित लाया ।।1323।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. वागीश्वरी माता रानी, सब तत्त्व पदार्थ है जानी ।
जीव अरु पुद्गल को हटाने, बन गई जो पैनी छैनी ।।1324।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तस्वीर आपकी देखी, निज आतम मैंने लेखी ।
जो है प्रभु रूप तुम्हारा, हो मेरा करो इशारा ।।1325।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. वर्द्धित गुण हो धारी जिन, नहिं काज सरे है तुम बिन ।
हों वर्धमान गुण मेरे, मिट जायें भव के फेरे ।।1326।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वीणा वादिनी तुम नाम, माँ ज्ञान का दो वरदान ।
मैं पल पल करूँ पुकार, हो वन्दन बारम्बार ।। 1327।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तप तेज आपका भारी, है भव्यों को सुखकारी ।
कर्मों का क्षरण किया है, शाश्वत सुखधाम लिया है ।।1328।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रात्रि दिव तुमको ध्याऊँ, प्रभु आठों याम् जु गाऊँ ।
तारो मुझको जिनरायी, तव भक्ति है सुखदायी ।।1329।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. गन्तव्य भी दिख जाता है, जब भक्त प्रभु ध्याता है ।
बन ध्याता ध्यान लगाऊँ, निज ध्येय को अब मैं पाऊँ ।।1330।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नीले प्रभु नयन कमल हैं, नीला ही नील गगन है ।
है शिला भी नीलमणि की, जिस पे रचा समवशरण है ।। 1331।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. रागी सुख कभी नहिं पावे, वैरागी कर्म नशावे ।
वाञ्छा कुछ रहे न मन में, वह बैठे आत्म वतन में ।।1332।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गति पंचम को है पाया, पंचाक्षर समय लगाया ।
संसार से हो गये मुक्त, हुए पाँच भाव से युक्त ।।1333।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. धृगतां धृगतां गति बाजे, सुरताल रसाल जु छाजे ।
सननं सननं फिर नभ में, धरि रूप अनेक भ्रमें हैं ।।1334।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. व्रत समिति गुप्ति मुनि धारी, यह अष्टमातृका सुखारी।
इनका जिन ज्ञान किया है, उन्हें केवलज्ञान हुआ है ।।1335।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जब जग विषयों में सोता, मुनि का मन ध्यान में खोता ।
संवर निर्जर हो करके, कर्मों का दहन है होता ।।1336।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिहुँ लोकपति तुम स्वामी, जो जग में प्रभु अभिरामी ।
पहले आतम अवलोका, फिर जगत चराचर देखा ।। 1337।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. कोई नहीं यहाँ किसी का, मतलब का रिश्ता सभी का ।
जग में नहिं कोई साथी, सब स्वारथ के हैं बराती ।।1338।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नयनोत्सव आज हुआ है, जिनवर शुभ दर्श हुआ है ।
बहु पुण्य से मिला संयोग, वन्दूँ सुखकर त्रय योग ।।1339।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सर्पाधिराज आया था, फणमण्डप बन छाया था ।
मन में उमड़ी थी भक्ति, पायी उपसर्ग से मुक्ति ।।1340।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. चेतनता है अब जागी, चैतन्य प्रभु पद लागी ।
हे वीतराग! गुणधारी, चरणों में धोक हमारी ।।1341।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तन्मय होकर भक्ति कर, भक्ति करके मुक्ति वर ।
माँ जिनवाणी समझाती, बेटे को राह दिखाती ।।1342।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नोकर्म द्रव्य अरु भाव, सब खत्म किये हैं विभाव ।
उपदेश प्रभु जब करते, भवि जीव हृदय में धरते ।।1343।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणेऽपि आप गुणधारी, हो निर्विकार अविकारी ।
निर्दोषी नाथ बनूँ मैं, गुणकोश को आज भरूँ मैं ।। 1344।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

द्युति सहस्र सूर्य भी, भामण्डल की, आप सन्निधि से पायी।
भवि पास में आयें, भव दिख जायें, अर्घ चढ़ा निज सुध पायी।।

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो रज्जदावयाणं तत्ततवाणं।

श्लोक नं.25

असाध्य रोग नाशक

भो भो प्रमाद–मवधूय भजध्वमेन–
मागत्य निर्वृति पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्–नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।

गीतिका–छन्द

हे प्रभु! तेरी दुंदुभि प्यारी, गूँज रही शुभमय आकाश,
सूचित करती भव्य जनों को, आओ सब जिनवर के पास।
मुक्ति महल यदि जाना तुमको, राग द्वेष तज कर लो ध्यान,
सेवा कर लो भक्ति भाव से, आए पार्श्वनाथ भगवान।।

महातपोयुतान् षण्मा-सादि प्रोषधकारकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द-धत्ता

1. भोगों को त्यागा, वन मन पागा, आत्म ध्यान में ठहर गये।
प्रभु आत्म हितैषी, मन संतोषी, कर्म दहन कर मोक्ष गये ।।1345।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. कह विभो: पुकारें, भक्त तुम्हारे, दर्शन की अभिलाषा है।
निजगुण को ढाँके, पर परकाशे, सम्यक् की परिभाषा है ।।1346।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. प्रण आज किया है, धर्म जिया है, दर से अब नहिं जाऊँगा।
है भँवर में नैया, आप खिवैया, आश है भव तर जाऊँगा ।।1347।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. माया का जाल, है जंजाल, कर्मों का वर्द्धन करता।
प्रभु इसको तोड़ा, मुख को मोड़ा, हो सब कर्मों के हर्ता ।।1348।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. दर पर आया हूँ, सुख पाया हूँ, दर्शन की बलिहारी है।
कुछ और न दीखे, प्रभु ही सूझे, पूजन की तैयारी है ।।1349।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।,

6. मम मिटे कामना, यही प्रार्थना, आप समां बन जाना है।
धर वीतरागता, मन में समता, पाने को वन जाना है ।।1350।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वन भवन में समता, प्रभु में ममता, सब जीवों में साम्य धरूँ।
धनपति निर्धन में, काँच कनक में, सबसे सम व्यवहार करूँ ।।1351।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. धूलि चन्दन है, पद वन्दन है, पार्श्व प्रभु के चरणों की।
मस्तक पर धारूँ, भाग्य सँवारूँ, भक्ति करूँ पद कमलों की ।।1352।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. यहाँ वहाँ है, सर्व जहाँ है, जिनवर का अस्तित्व बड़ा।
तव शरणा पाकर, ध्यान लगाकर, भविजन होते पार यहाँ ।।1353।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. भविजन के प्यारे, भदन्त* न्यारे, चातक सम सब टेर रहे।
बालक अधीर है, भरा नीर है, नयनों से अब पीर बहे ।।1354।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. जपता दिन शाम, प्रभु का नाम, आगत विघ्न विनशते हैं।
अघ कटते उनके, नमते मन से, गुण गण शीघ्र प्रकटते हैं ।।1355।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. ध्वज है फहराया, धर्म को ध्याया, सर्व जगत प्रभु पारस ने।
जिसने प्रभु ध्याया, चरणों आया, कर्म लगे सब ही भगने ।।1356।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मेधा अरु बुद्धि, की हो वृद्धि, जो जिन वच श्रद्धान वरे।
अल्पज्ञ भले हो, साम्य सजे जो, सद्ज्ञानी हो ज्ञान बरे ।।1357।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नर सुर पद पूजें, प्रभु सम दूजे, नहीं जगत में स्वामी हैं।
इन्द्रिय को जीता, कर मन रीता, नंत गुणों के धामी हैं ।।1358।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. माङ्गल्य कहा है, दर्श अहा है, नित उठ जो जन प्रभु निरखे।
मंगलमय दिन हो, तन्मय मन हो, अविनाशी हो सौख्य चखे ।।1359।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. गङ्गा सा पावन, है मन भावन, जिनवर की अमृत वाणी।
जो पान करे हैं, मन में धरे हैं, होते अजर अमर प्राणी ।।1360।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*मुनि

17. हैं नित्य निरंजन, मन के भंजन, निराकार पद प्राप्त किए ।
कर्मों का क्षय कर, अक्षय पद वर, जगत हितंकर आप्त हुए ।।1361।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. निर्मल मन मेरा, करे बसेरा, प्रभु पारस के चरणों में ।
कटता भव फेरा, जग का डेरा, हलन चलन हो कर्मों में ।।1362।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. वृत्ति हो पावन, मन हो सावन, सुरगुरु सम गुणगान करूँ ।
जग वैभव लखकर, मन से तजकर, विस्मृत जग का ध्यान करूँ ।।1363।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तिर गये भवार्णव, वे सब मानव, जिनने प्रभु का ध्यान किया ।
निजआत्म ध्यान धर, कर्म नाशकर, शिवआलय में वास किया ।।1364।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पुलकित होता मन, भव्यों का सुन, प्रभु की महिमा लख करके ।
सब तजकर आओ, पूज रचाओ, भक्ति से हिय भर करके ।।1365।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सब खत्म हो मारीं, जीव सुखारी, सर्व जगत में सुख फैले ।
मम यही कामना, हृदय भावना, पारस की सब जय बोलें ।।1366।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रीं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रभु महिमा भारी, सुन नर नारी, आकर आप का दर्श करें ।
जिन मूरत लखकर, स्व-पर परखकर, निज का ही उद्धार करें ।।1367।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तिहुँ लोक प्रकाशी, आत्म विकासी, जग पदार्थ युगपत् जानें ।
जो प्रभु को जाने, निज पहिचाने, शुद्धातम को वह जाने ।।1368।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. सार्थक हो जाये, जीवन लाये, भक्त प्रभु गुणगान करे ।
सब अघ हैं नशते, पुण्य हैं बढ़ते, जिनवर का जो ध्यान करे ।।1369।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. थम गया समय था, सर्ग* घोर था, जिनवर ध्यान मगन बैठे ।
मम भाव यही है, मोक्ष मही में, जिनवर के संग हम बैठें ।।1370।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वाणी कल्याणी, शिव पद दानी, जो इसका रसपान करे ।
मेरे प्रिय भगवन्, मेरा ये मन, तेरा ही गुणगान करे ।।1371।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. हन्ता कर्मों के, दश धर्मों से, प्रभुवर आप सुशोभित हो ।
हो ज्ञाता दृष्टा, सबके सृष्टा, जीवन चरण समर्पित हो ।।1372।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. एकाकी न रहना, सबसे कहना, जिनवर का सब मुनियों से ।
सब संघ में चलना, है प्रभावना, बिन उपदेश ही गुणियों से ।। 1373।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तप की अग्नि में, निज सन्निधि में, कर्म मलों को नष्ट किया ।
प्रभु आप शरण में, ध्यान करन में, अतिशय पुण्य है कमा लिया ।।1374।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. सन्निधि प्रभुवर की, हरे दुखद ही, गुरुवर ने बतलाया है ।
जो प्रभु को भजते, निज में रमते, जीवन सफल बनाया है ।।1375।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वेतन तन चाहे, क्रिया कराये, चेतन को कुछ चाह नहीं ।
प्रभु पथ का दर्शक, आत्म समर्पक, चलूँ आप की राह सही ।।1376।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दल बल अरु देवी, करें न सेवी, कालजयी जब आ जाये ।
वे मात-पिता सब, कर किनार अब, प्राण पंछी जब उड़ जायें ।।1377।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. यतिपति हैं आते, जिन गुण गाते, निज गुण कोश सजाते हैं ।
मन में हर्षाकर, छवि को लखकर, अन्तर सौख्य बढ़ाते हैं ।।1378।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*उपसर्ग

35. तिल तिल हैं मरते, प्रभु न जपते, आर्त रौद्र परिणाम करें ।
प्रभु प्रवचन सुन लें, विभाव तज दें, धर्म ध्यान से पूर्ण भरें ।।1379।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. देखा नयनों से, ध्याया मन से, पार्श्व प्रभु को नमन किया ।
निज भाव बनाया, मोक्ष को ध्याया, रत्नत्रय को धार लिया ।।1380।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. वन्दन जो करता, बन्धन हरता, गुरुवर का यह कहना है ।
नित प्रभु जाप कर, अघ को हरकर, मोक्ष मार्ग पर बढ़ना है ।।1381।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जन जन मन हरषा, रत्न की वर्षा, जब जिनवर का जन्म हुआ ।
प्रभु तन तेजोमय, श्याम वर्णमय, मात-पिता को धन्य किया ।।1382।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जगतप्रभु लख, स्तुति को लिख, गुण गाने का भाव किया ।
नहिं अब कुछ पाना, प्रभु को ध्याना, व्रत संयम को धार लिया ।।1383।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. त्रय शल्य विमुक्तं, वसु गुण युक्तं, सिद्ध शिला के वासी जिन ।
प्रभु महिमा गाऊँ, सबको सुनाऊँ, अविनाशी अभिरामी जिन ।।1384।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. याचक बन आया, प्रभु दर पाया, मात्र मोक्ष की वाञ्छा है ।
दृष्टि शुभ पाऊँ, सुदृष्टि कहाऊँ, मात्र यही अभिलाषा है ।।1385।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रय शल्य विनाशी, ज्ञान प्रकाशी, कर्म महल विध्वन्स किए ।
जो भक्ति करते, युक्ति देते, उनके विधि मल दूर हुए ।।1386।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मंगल में मंगल, पार्श्व जिनेश्वर, मंगलमय गुणगान करूँ ।
प्रभु ज्ञान प्रदाता, जग विख्याता, तेरा हर पल ध्यान धरूँ ।।1387।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. निज ध्येय बनाया, स्वभाव पाया, अविरल चलते जाना है ।
है भक्ति नैया, प्रभु खिवैया, भवदधि से तर जाना है ।।1388।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नर मुनि से वंदित, मन आनंदित, हो जाता प्रभु दर्शन से ।
छवि वीतराग लख, बार-बार नत, धन्य भाग्य प्रभु पर्शन से ।।1389।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. दंसण अरु णाणं, जगत् प्रधानं, प्रभु ने युगपत् प्राप्त किये ।
प्रभु सम बन जाऊँ, युगपत् जानूँ, केवलज्ञान का भाव हिये ।।1390।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नवलब्धि क्षायिक, ऋद्धि चौंसठ, पाकर के शिवनारी वरी ।
है यही प्रार्थना, मिटे वासना, इस कारण प्रभु भक्ति करी ।।1391।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भिक्षा अरु दीक्षा, की नहिं इच्छा, वह प्राणी भव भ्रमण करे ।
भव-भव में भटके, पाये दु:खड़े, मैट न पाये श्रमण कहें ।।1392।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नत नयन हमारे, हृदय पुकारे, मुझको भव दधि तरना है ।
प्रभु करुणा सागर, भर दो गागर, गुण आगर सम बनना है ।।1393।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शुभ: पुण्य का, पाप अशुभ का, हेतु आस्रव बतलाया ।
तुम अशुभ को तजना, शुभ को भजना, गुरुवर ने है समझाया ।।1394।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सुमनों की डोरी, भावों जोड़ी, भक्ति से स्तोत्र सजा ।
प्रभु गुण की चर्चा, पद की अर्चा, दिव्य द्रव्य का थाल सजा ।।1395।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रमणीय जिनालय, दर्शन सुखमय, सिद्धालय पहुँचाते हैं ।
जो प्रभु गुण गाते, ध्यान लगाते, बन्धन सब कट जाते हैं ।।1396।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दुंदुभि जिन पाती, दिशा गुँजाती, शुभ संगम करवाती है ।
इसे देव बजाते, भक्त बुलाते, मंगल गान कराती है ।।1397।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. दु:ख भरी दशा है, इक आशा है, प्रभुवर आप बचा लोगे ।
मैं व्यथा सुनाऊँ, किसे बताऊँ, अरज भक्त की सुन लोगे ।।1398।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भिन्न भिन्न जन, भिन्न भिन्न मन, भिन्न भिन्न परिणाम कहे ।
सत् भिन्न सभी का, सब द्रव्यों का, सम्यक्त्वी जन मान रहे ।।1399।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रस्ते जो जग के, मुक्ति मग के, भिन्न भिन्न बतलाये हैं ।
जो प्रभु भक्त हैं, गुणासक्त हैं, जिन पथ कदम बढ़ाये हैं ।।1400।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

आकाश गुँजाती, दुन्दुभि पाती, सुरगण भक्त बुलाते हैं।
आलस को छोड़ो, प्रीति को जोड़ो, भविजन अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि नादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिंडलमलणासं महातवाणं।

श्लोक नं.26

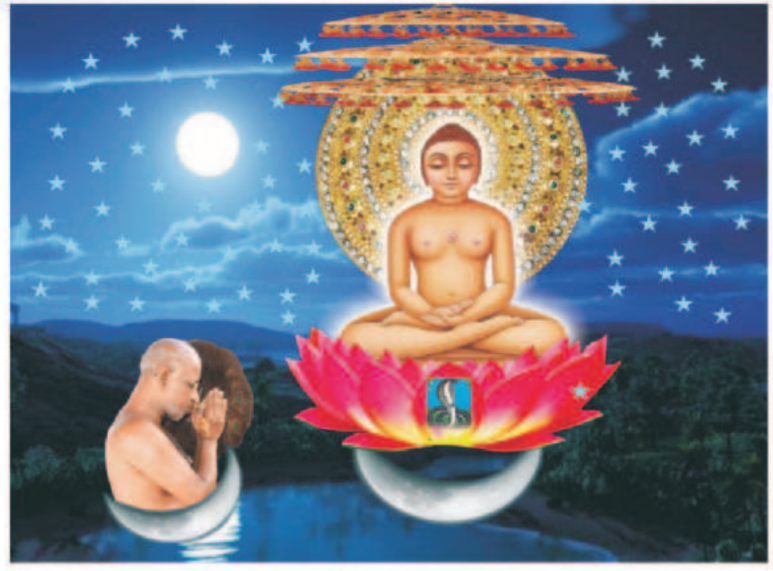

वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकार:।
मुक्ता – कलाप – कलितोरुसितात पत्र–
व्याजात् त्रिधा धृत तनुर्ध्रुव–मभ्युपेत:।।26।।

गीतिका–छन्द

अपनी आभा से परकाशित, करते हैं त्रयलोक महान्,
चन्द्रकांति का काम रहा क्या, जहाँ विराजे हैं भगवान।
तीन छत्र त्रयचन्द्र समां हैं, मोती को तारागण जान,
सूर्य प्रताप रोकने हेतु, देवों ने यह किया सुकाम।।

त्रिकालयोगिनो घोर, तपस्यार्पितमानसान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं घोरतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द पद्धरि

1. उद्यम कीना जिनवर जु आप, तब नष्ट कर दिए सभी पाप।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1401।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. उद्योगी आरम्भी विरोध, संकल्पी हिंसा दई छोड़ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1402।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तिहुँ लोक शिखर पर रहे विराज, हैं नंत गुण से सजे नाथ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जापे पार ।।1403।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तेज देख कर के जिनाय, शशि भानु की द्युति शर्म खाय।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1404।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. सत्त्वेषु मैत्री का गुण सु आय, गुणियों को लख मन पुलक जाय।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1405।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भव-भव में जिन कुल मिले नाथ, भव-भव में संयम धरूँ नाथ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1406।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वरदान मुझे प्रभु एक देओ, भव सागर से मम नाव खेओ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जापे पार ।।1407।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तारण भी तरण हो नाथ आप, कर रहे नष्ट भविजन के ताप।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1408।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भुवनत्रय के भूषण हो नाथ, शत इन्द्र चरण नमते हैं माथ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1409।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. वत्सल गुण जिसमें जगमगाय, वह समदृष्टि जग में कहाय।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1410।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. नेता हो प्रभु तुम मोक्षमार्ग, जेता हो प्रभु कर्मन के आप।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1411।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शीलेषु स्वामी अठ दश हजार, चरणों में वंदन बार-बार।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1412।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नाता तुमसे अद्भुत् जिनेश, कभी छूट न पायेगा महेश।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1413।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. थक जाते हैं जब मेरे नैन, लखकर प्रभु मुझको मिले चैन।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1414।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. तारागण के मध सोहे चन्द्र, भवि जीवों के मध में जिनन्द।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1415।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तिमिरान्तक कहलाते जिनेश, हो दिव्य ज्योति धारक गुणेश।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1416।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. विज्ञान भानु अनुपम जिनाय, तिहुँ लोक चरण में शीश नाय ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1417।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तोड़ूँ सब रिश्ते जग के नाथ, जोड़ूँ प्रभु से रहूँ साथ-साथ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1418।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. विद्या अरु ज्ञान का वर जु श्रेष्ठ, मुझको दीजौ हे जगज्येष्ठ!
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1419।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. धुन लगी आपके गीत गाऊँ, अरु जग में सच्चा मीत पाऊँ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1420।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रक्षण कीजै हे जगत्पाल! तव चरणों में हम नमत भाल ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1421।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. गम्यं नहिं होते अज्ञ आप, प्रभु करते विज्ञों से मिलाप ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1422।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विशदार्थ सहित खिरती जु वाणी, जन-जन को बन जाती कल्याणी।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1423।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. हन दिये प्रभु ने कर्म आठ, पहुँचे शिवपुर में हुए ठाठ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1424।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तारे टिम टिम करते अनेक, उनमें चमके बस चाँद एक ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1425।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. धिक्कार जनम उनका जिनेश, जिनके जीवन नहिं धर्म लेश ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1426।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. काया की सुध नहिं जिन्हें लेश, वे कर्म नाश बनते महेश ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1427।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. वीरः जिन हुए प्रभु पार्श्व बाद, जिनने सुलझाये सब विवाद ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1428।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. मुक्तीपुर पहुँचे आप नाथ, मुक्तिवधु के संग रमे नाथ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1429।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ता थेई थेई थेई पग धरें सुरी, छम छम घुँघरू से गुँजे पुरी।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1430।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कल्याणों के प्रभु धाम आप, प्रतिपल करते तुम नाम जाप ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1431।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लाली वामा के लाल लखी, सब मन में हर्षित हुईं सखी ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1432।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. पन्ना माणिक मोती मँगाय, प्रभु चरणों भक्ति से चढ़ाय ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1433।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कविता करते हैं कविराज, उस अर्थ को जाने विज्ञराज ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1434।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लिख दिया भक्ति से यह विधान, भक्ति का फल दो गुण निधान ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1435।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तोड़ूँ सारे सब दन्द फन्द, मैं चिदानन्द में रहूँ जिनन्द ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1436।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. रुकना नहीं आगे बढ़ूँ नाथ, मुक्ति के फल को चखूँ नाथ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1437।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सिद्धालय में जा बसे आप, जहाँ नन्तकाल तक करें वास ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1438।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तारे तुमने हैं भवि अनन्त, भक्ति करते जो नमत सन्त ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1439।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तप द्वादश विधि करते जु आप, रहे गुप्ति साधना कटें पाप ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1440।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पश्चात् आपके वीर हुए, वे धर्म धुरन्धर धीर हुए ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1441।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रय शल्य हटा के हुए निःशल्ल, प्रभु आप पछाड़ा मोह मल्ल ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1442।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. व्याघ्रादिक का भय होय दूर, निर्जन वन में तप करें शूर ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1443।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. जात्यन्तर प्रकृति को नष्ट किया, क्षायिक सम्यक् भी प्राप्त किया ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1444।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्रिभुवनदर्शी पारस जिनेश, भवि को मुक्ति पथ दें हमेश ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1445।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. धारण कीना जब प्रभु विराग, निज आत्म तत्त्व में निज को पाग ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1446।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. धृति आदिक षड् देवी जु आयें, माता की सेव में जुटत जायें ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1447।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तस्कर इन्द्रिय के रहे घूम, विषयों में हैं आसक्त खूब ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1448।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तप तैल भरा है ज्ञान दीप, निज आत्म तत्त्व खोजा प्रदीप ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1449।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. हैं तनुमुक्त पारस जिनेश, जिन्हें नमन करे सुर नर खगेश ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1450।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. ध्रुव धाम धनी हो नाथ आप, हम बनें ज्ञान धनी करें जाप ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1451।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वसु याम् जपूँ मैं नाम जाप, जपते ही कटते सभी ताप ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1452।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मर्मज्ञ आप मम चित्त जान, सर्वज्ञ आप जग में प्रधान ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1453।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अभ्युदय की कुछ नहीं चाह, चल पड़ूँ मैं आतम की सु राह ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1454।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. पेटी नहीं भरना पेट आप, करना हर क्षण प्रभु नाम जाप ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1455।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. प्रातः उठकर के जाप करूँ, पारस प्रभु का ही ध्यान वरूँ ।
प्रभु पारस की महिमा अपार, गुण गाये भव दधि जाये पार ।।1456।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

त्रय छत्र सुशोभित, शशि सम मोहित, तारे सम मुक्ता झालर।
त्रैलोक्य प्रकाशी, विजय दिखादी, अर्घ चढ़ायें गुण गाकर।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयशोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयंपदाईणं घोरतवाणं।

श्लोक नं.27

वैर विरोध विनाशक

स्वेन प्रपूरित जगत्त्रय पिण्डितेन,
कान्ति प्रताप यशसामिव संचयेन।
माणिक्य – हेम – रजत प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्–नभितो विभासि।।27।।

गीतिका–छन्द

रत्नमयी भू–समवशरण की, स्वर्ण कमल राजित भगवान,
कनकमयी त्रय कोट आपकी, महिमा अनुपम अद्भुत जान।
तीन लोक में पुण्य महाफल, यशोगान शुभकीर्ति महान,
ऐसे पार्श्वनाथ जिनवर को, करता हूँ अति नम्र प्रणाम।।

कर्मारिघातनेऽत्यन्तो–द्यतान् घोर पराक्रमान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं घोर पराक्रमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छंद–जोगीरासा

1. स्वेदादिक जो दोष अठारह, उनको शीघ्र नशाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1457।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. नमन करूँ निज गमन करूँ अरु, निज में ही रम जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1458।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. प्रशम और संवेग भाव को, निज अन्तस् में बसाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1459।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. पूजन करके नाथ आपकी, पुण्य कोष भर जाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1460।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रिक्त हुए प्रभु सब कषायों से, तुम सम ही बन जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1461।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तमहर अघहर आप जिनम् हैं, तव गुण में चित लाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1462।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. जननी तुम सम वामा देवी, मैं भी माँ अब पाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1463।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. जगत्प्रकाशी निज गुण भासी, ज्ञान रोशनी पाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1464।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. त्रय रत्नों के धारी जिनवर, गुण रत्नाकर ध्याऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1465।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. यतिपति ऋषिगण के सम भगवन्, तव गुण को मैं गाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1466।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पिण्ड पतन अंतराय पालते, मुनिवर को पड़गाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1467।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मंडित नंत गुणों से जिनवर, उनमें मैं पग जाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1468।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "डि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

13. तेरा पथ जो शिवपुर जाता, उस पर चलना चाहूँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1469।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

14. नर से नारायण बनने का, उपक्रम मैं कर जाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1470।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

15. काण्डक घात को करके प्रभुवर, स्थिति सत्त्व घटाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1471।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

16. तिरस्कार को अब नहिं सहना, तिरने को वन जाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1472।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. प्रथम देव अरिहन्त जिनेश्वर, चरणों पूज रचाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1473।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तारा तुमने नाथ जमाना, अब मैं भी तर जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1474।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. परमाह्लाद मुझे प्रभु होता, तुम्हें हृदय में पाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।। 1475।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. यत्र तत्र विचरण करने का, भाव नष्ट कर जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1476।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. शम-शम की लड़ियाँ जीवन में, कब मैं बिखरा पाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1477।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. साथ आपका जिनवर जी मैं, मुक्तिपुर तक चाहूँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के,चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1478।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. मिलने का अब छूटे बहाना, तुममें ही मिल जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1479।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. बन जाते वो प्रभु बन जाते, मैं भी बनना चाहूँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1480।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. संस्कार का बीजारोपण, करके शिवफल पाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1481।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. चरम शरीरी के चरणों में, नित प्रति अर्घ्य चढ़ाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1482।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. ध्येय बनाया शुद्धातम का, सिद्धों में बस जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1483।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नवप्रभात की नई किरण को, नवजीवन में लाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1484।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. माया अरु काया की चिन्ता, को जीवन से हटाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।। 1485।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. अणिमा महिमा आदि ऋद्धिधर, को नित ही मैं ध्याऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1486।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. शक्य नहीं है गुण को गाना, तव गुण को ही पाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1487।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. हे पारस! परमेश्वर मेरे, द्वार पे तेरे आऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1488।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मन भरने की चीज नहीं है, भक्ति से भर जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1489।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रमता जोगी बहता पानी, यह गुण निज में लाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1490।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. जड़ पदार्थ नहिं अपना मानूँ, इनसे नेह हटाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1491।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तरस रहे द्वय नयन हमारे, कब प्रभु दर्शन पाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1492।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रभुवर की वाणी सुनकर के, मिथ्या तम को नशाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1493।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विपुल ऋजु मनपर्यय ज्ञानी, मुनिवर को नित ध्याऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1494।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. निर्विकारी निर्मद गुणधारी, ऐसे गुण मैं पाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1495।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मिथ्यातम का घना अँधेरा, उसको आज मिटाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1496।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तेरा मेरा इक स्वरूप है, ऐसा तत्त्व विचारूँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1497।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नग्न दिगम्बर मुद्रा धरकर, वनचारी बन जाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1498।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सावधान रहूँ हर क्षण स्वामी, संवर निर्जर ध्याऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1499।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. लघुता से प्रभुता मिलती है, लघुता उर में लाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1500।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्रय लोकों में सारभूत जो, वीतरागता पाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1501।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. ध्येय प्राप्ति जब तक नहिं होवे, ध्यान हृदय में धारूँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1502।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. णमो णमो अरिहन्ताणं कह, शीश विनम्र झुकाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1503।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भगवन् ऐसा भक्त बना लो, छोड़ न दर कहीं जाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1504।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गगनचुम्बी सम्मेद शिखर से, मैं भी मुक्ति पाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1505।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वन्दन करके बन्धन काटूँ, निर्बन्धन हो जाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1506।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नश्वर देह का त्याग करूँ मैं, अविनश्वर पद पाऊँ ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1507।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. अभिनव श्रद्धा धारण करके, क्षायिक सम्यक् पाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1508।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तोड़ जगत से नाता जिनवर, तुमसे जोड़ बनाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1509।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

54. विश्वविलोकी निज आलोकी, निज में ही अवगाहूँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1510।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

55. भाव बने नहिं अब तक जैसे, वही भाव उर लाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1511।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

56. सिद्धि साधना पूर्ण करूँ मैं, सिद्धालय बस जाऊँ।
मृत्युञ्जयी श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों ध्यान लगाऊँ ।।1512।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु समवशरण में, तीन कोट हैं, भूमि मणियों की प्यारी।
वैभव बतलाते, यश को गाते, अर्घ चढ़ाते नर नारी।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो खलदुट्ठणासयाणं घोरपरक्कमाणं।

यश: कीर्ति प्रसारक

दिव्य–स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना–
मुत्सृज्य रत्न रचिता–नपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सु–मनसो न रमन्त एव।।28।।

गीतिका–छन्द

दिव्य पुष्प की मालाएँ सुर, मुकुटों में जगमग करतीं,
हे प्रभु! तव चरणों को पाकर, छोड़ मुकुट पद को वरतीं।
तुमको पाकर कोई सुधीजन, जाता नहीं अन्य स्थान,
जहाँ प्रेम उत्तम मिलता है, प्राणी वहीं करे विश्राम।।

मुनीन् घोर गुणान् शक्तान्, परीषह विनिर्जये।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं घोरगुणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – अडिल्ल

1. दिग् दिगन्त तक फैली प्रभु यश कीर्ति है।
नाथ आपके ध्यान से मिलती शक्ति है ।।
हे पारस प्रभु! तव चरणों का दास हूँ ।
पुण्य उदय मम आया प्रभु का खास हूँ ।।1513।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

2. अव्यय आप अचिन्त्य प्रभु सुख धाम हो।
अविनाशी अविकार परम रसधाम हो।। हे पारस प्रभु..।।1514।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

3 स्रग्वी* बन महकूँ जिनवर के आँगना ।
भक्ति कर चहकूँ अब कुछ नहि चाहना ।। हे पारस प्रभु..।।1515।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

4. जो भी दर्शन करता पुण्य बढ़ाता है ।
छोड़ के इस संसार को शिवपुर जाता है ।। हे पारस प्रभु..।।1516।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

5. जितेन्द्रिय बन के मोह आपने जीता है ।
कर्म नाश कर काटा मोक्ष का फीता है ।। हे पारस प्रभु..।।1517।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

6. नमन करूँ मैं यथाजात मुद्राधनी ।
गमन करूँ तव पथ में सब बिगड़ी बनी ।। हे पारस प्रभु..।।1518।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

7. नजर एक डालो प्रभु अपने भक्त पर ।
असर न हो किसी कर्म का पद आसक्त पर ।। हे पारस प्रभु..।।1519।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

*तुलसी

8. श्रीमत् नंत चतुष्टय के धारी जिनम् ।
चहुँ गति का प्रभु ने कर दीना है क्षरण ।।
हे पारस प्रभु! तव चरणों का दास हूँ ।
पुण्य उदय मम आया प्रभु का खास हूँ ।।1520।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

9. त्रिभुवन तिलक जगत्पति तुमको ध्यावते ।
समवशरण में आकर पूज रजावते ।। हे पारस प्रभु..।।1521।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

10. दशा देख दयनीय दया प्रभु कीजिए ।
किसे सुनाऊँ व्यथा अभय वर दीजिए ।। हे पारस प्रभु..।।1522।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

11. शासन प्रभु का भव्य जीव का मन हरे ।
अनुपालन को कर के वह शिवसुख वरे ।। हे पारस प्रभु..।।1523।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

12. धिक्कारूँ निज परिणति को प्रभु आज मैं।
अन्तर्मन की आँखियाँ खोलूँ नाथ मैं ।। हे पारस प्रभु..।।1524।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

13. पाप विनाशक धर्म विकाशक आप हो ।
मंत्र तंत्र पूजा प्रभु तुम ही जाप हो ।। हे पारस प्रभु..।।1525।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

14. नाना योनि के दुख मैंने पाये हैं ।
मिले आज प्रभु तब मैंने ये सुनाये हैं ।। हे पारस प्रभु..।।1526।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

15. मुत्तामुत्त पदारथ सब ही जानते ।
फिर भी केवल स्वात्म तत्त्व पहिचानते ।। हे पारस प्रभु..।।1527।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

16. सृष्टि सारी आप दृष्टि में आयी है ।
इसीलिये प्रभु नासा दृष्टि बनायी है ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1528।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

17. जगत्पूज्य की पूजन को मैं आ गया ।
रत्नत्रय का भाव हृदय में समा गया ।।
हे पारस प्रभु! तव चरणों का दास हूँ ।
पुण्य उदय मम आया प्रभु का खास हूँ ।।1529।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रत्न तीन के धारी जग उपकारी हो ।
जयवन्तो प्रभु चरणों धोक हमारी हो ।। हे पारस प्रभु..।।1530।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. नयन हमारे पथराये प्रभु आयेंगे ।
करुणासागर करुणा को बरसायेंगे ।। हे पारस प्रभु..।।1531।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रज रहस्य से रहित अरि को जीतकर ।
कर्म चउ क्षय करके हो गये तीर्थंकर ।। हे पारस प्रभु..।।1532।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. चिन्तन चिरस्थायी बनाता आपका ।
वन्दन करके सुख पाया प्रभु पार्श्व का ।। हे पारस प्रभु..।।1533।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तामस वृत्ति ने जग में डाला डेरा है ।
साधक वृत्ति बताकर प्रभु ने रोका है ।। हे पारस प्रभु..।।1534।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नहिं मुझमें बल है अरु ना ही शक्ति है ।
प्रभु के गुण पाने की अन्तस् भक्ति है ।। हे पारस प्रभु..।।1535।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पिच्छी और कमण्डल लेकर वन चलूँ ।
ईर्यापथ से चलकर जग में संचरूँ ।। हे पारस प्रभु..।।1536।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मौत सामने देख प्राणी डर जात है ।
मृत्यु गले लगाकर नव तन पात है ।। हे पारस प्रभु..।।1537।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. लिखना चाहूँ आप नंत गुण को प्रभु ।
लखना चाहूँ निज आतम को हे विभु !
हे पारस प्रभु! तव चरणों का दास हूँ ।
पुण्य उदय मम आया प्रभु का खास हूँ ।।1538।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. बंध आदि संवर निर्जर ये तत्त्व हैं ।
बंध हटाकर पाना आतम सत्त्व है ।। हे पारस प्रभु..।।1539।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. धान्यादिक की वृद्धि जिनेश्वर कीजिए ।
कर्मों को क्षय करने की सुधि दीजिए ।। हे पारस प्रभु..।।1540।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पावन पान हुए प्रभु का दर्शन किया ।
जीवन मेरा धन्य हुआ हरषे जिया ।। हे पारस प्रभु..।।1541।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. दौलत शौहरत है जग में क्षणभंगुरी ।
त्यागा प्रभु ने इनको शिवरमणी वरी ।। हे पारस प्रभु..।।1542।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. श्रमण कहाते हैं वे ही जो श्रम करें ।
इन्द्रिय मन का निग्रह करके शाम वरें ।। हे पारस प्रभु...।।1543।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. यंत्र से वस्तु ऊपर उठती जाती है ।
मंत्र से आतम पावनता को पाती है ।। हे पारस प्रभु..।।1544।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तिर जाते भवि प्राणी प्रभु का ध्यान कर ।
शुद्धातम रम जाते सिद्ध का ध्यान कर ।। हे पारस प्रभु..।।1545।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. भव-भव में प्रभु आप शरण पाता रहूँ ।
जिनभक्ति से तन मन को सजाता रहूँ ।। हे पारस प्रभु..।।1546।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वर ऐसा प्रभु आज मुझे दे दीजिए ।
कभी न छूटे साथ उपक्रम कीजिए ।।
हे पारस प्रभु! तव चरणों का दास हूँ ।
पुण्य उदय मम आया प्रभु का खास हूँ ।।1547।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तोड़े सब रिश्ते नाते प्रभुवर आज हैं ।
स्वातम रस चखने का आया भाव है ।। हे पारस प्रभु..।।1548।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यतिपति भी मृत्युञ्जयी की चर्चा करें ।
हम भी भक्ति से भरकर अर्चा करें ।। हे पारस प्रभु..।।1549।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिगम्बरी बनकर मुनि जग विचरण करें ।
समता को धारण कर निज में रमण करें ।। हे पारस प्रभु..।।1550।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वाचस्पति भी आपके गुण नहिं गा सकें ।
महिमा बड़ी महान न जग प्रकटा सकें ।। हे पारस प्रभु..।।1551।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पर परिणति से दूर सदा प्रभु मैं रहूँ ।
निज परिणति में रम कर के प्रभुता वरूँ ।। हे पारस प्रभु..।।1552।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रति-अरति को त्याग आत्मरित मैं करूँ ।
पर विरक्ति को पाय स्वात्म में संचरूँ ।। हे पारस प्रभु..।।1553।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रय रत्नों को धार शल्य त्रय मुक्त हैं ।
श्यामवर्ण मन भाय नंत गुण युक्त हैं ।। हे पारस प्रभु..।।1554।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. त्वत् पद पंकज की अर्चा मैं नित करूँ ।
छवि निहार कर अन्तर्मन में सुख वरूँ ।। हे पारस प्रभु..।।1555।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. संघ चतुर्विधि के नायक आचार्य हैं ।
शिष्यों के परिपालन में वे आर्य हैं ।।
हे पारस प्रभु! तव चरणों का दास हूँ ।
पुण्य उदय मम आया प्रभु का खास हूँ ।।1556।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गलती जो अपनी माने तो गलत* है ।
वरना अहं बढ़ाकर फूलत फलत है ।। हे पारस प्रभु..।।1557।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मेरे जिनवर मम हृदयाँगन आ बसो ।
अन्दर बैठे अहंकार को अब नसो ।। हे पारस प्रभु..।।1558।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सुप्रभात की बेला आयी ध्यान कर ।
ब्रह्म में रमकर के निज का बहुमान कर ।। हे पारस प्रभु..।।1559।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. ममता तजकर समता को वरना सदा ।
जिनवर की भक्ति में तुम रमना सदा ।। हे पारस प्रभु..।।1560।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नयन ढूँढ़ते रहते आपको हर कहीं ।
साक्षात् प्रभु हुआ आप से है नहीं ।। हे पारस प्रभु..।।1561।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सोऽहं सोऽहं जपना शिव को पावना ।
शुद्धातम में रमकर गुण प्रगटावना ।। हे पारस प्रभु..।।1562।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नयनोत्सव हुआ आज प्रभु दर्शन किया ।
पद में नूपुर बाँध के नाचे है जिया ।। हे पारस प्रभु..।।1563।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रग-रग में प्रभु आप छवि है बस गई ।
वीतरागता पाने की धुन लग गई ।। हे पारस प्रभु..।।1564।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*नष्ट होती

53. मण्डलीक नृप भी आकर चरणों नमें ।
थिरक थिरक गुण गायें प्रभु भक्ति करें ।।
हे पारस प्रभु! तव चरणों का दास हूँ ।
पुण्य उदय मम आया प्रभु का खास हूँ ।।1565।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तन मन की सुध खो सुर अंगना नच रहीं ।
प्रभु की भक्ति करके गुण में पच रहीं ।। हे पारस प्रभु..।।1566।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. एकचित्त होकर पवित्र अर्चा करें ।
सर्वार्थसिद्धि में अहमइन्द्र चर्चा करें ।। हे पारस प्रभु..।।1567।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "एं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वचन अगोचर हो प्रभु गुण नहिं कह सकें ।
उपमातीत जिनेश्वर छवि मन में धरें ।। हे पारस प्रभु..।।1568।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

सुरगण नमते जब, मुकुटों को तज, माला प्रभु पदवास करे।
प्रभु श्रेष्ठ समागम, यही जान हम, चरणों में पूर्णार्घ धरें।।

ॐ ह्रीं भक्तजननोन्नतिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो उवदववज्जणाण घोर गुणाणं।

आकर्षण कारक

त्वं नाथ! जन्म जलधे–र्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्य सुमतो निज पृष्ठ लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव – निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो यदसि कर्म विपाक शून्य:।।29।।

गीतिका–छन्द

भव में कमल समां रहते भी, भविजन तारन हारे हो,
ऐसी महिमा के तुम ईश्वर, हर प्राणी को प्यारे हो।
अचरज है बहु उत्तम इसमें, राग द्वेष से रहते दूर,
फिर भी कर्म बंध बिन हो तुम, ध्यान लीन हो चेतन शूर।।

स्व्युपसर्गसहिष्णून्, अघोरगुण ब्रह्मचारिणः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अघोरगुणब्रह्मचारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – ज्ञानोदय

1. त्वं जग के निर्मल आभूषण, पार्श्व चरण में है वन्दन ।
वामा के नन्दन हो प्यारे, काटो भव के सब क्रन्दन ।।1569।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. नाम आपका जपने भर से, काम सभी हो जाते हैं ।
थामा जिसका हाथ आपने, भव सागर तर जाते हैं ।।1570।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. थलपति भी पूजन करता है, त्रिभुवनपति की आकर के ।
शिवपद की आशा है रखता, चरणों शीश झुका करके ।।1571।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. जन्म समय क्षीरोदधि जल ले, सुरपति न्हवन कराता है ।
मेरुगिरि से लौटा करके, ताण्डव नृत्य रचाता है ।।1572।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. मनमानी अब नहीं करूँगा, जिनवाणी की मानूँगा ।
माता देती सही राह को, उसको अब नहिं टालूँगा ।।1573।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. जगमग–जगमग होत दशों दिश, केवलज्ञान की ज्योति है ।
नष्ट कभी नहिं होती है यह, भवि के कल्मष धोती है ।।1574।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. लहराता है ज्ञान का सागर, नयी तरंगें उठती हैं ।
जो इसमें अवगाहन करता, उसकी किस्मत चोखी है ।।1575।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. विधेर्विधाता नाथ आप हैं, बुद्धि प्रदाता भविकों को ।
त्रिविध मलों से मुक्त आप हैं, शुद्ध कराते हो मन को ।।1576।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धेः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. विचरण करते ज्ञान बाग में, अचरज कभी नहीं करते ।
चउ आराधन के मण्डप में, शिव अँगना को हैं वरते ।।1577।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. परभव में जो संग न जाये, उसका संग नहीं करना ।
हर पल जो भी संघ निभाये, उसको कभी नहीं तजना ।।1578।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. सुराङ्गनाएँ नाच रही हैं, भक्ति से वे गान करें ।
प्रभु अँगना में घुटुअन खेलें, मात पिता को नंद करें ।।1579।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मुनि बन करके ध्यान लगाते, मन मरकट को रोक रहे ।
आत्म उदधि में गोते खाते, अन्तस् मणि को खोज रहे ।।1580।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. खो जाते हैं स्वात्म वतन में, शुक्ल ध्यान में रमण करें ।
निज परिणति को पाकर के वे, चार घातिया हनन करें ।।1581।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. एकोऽपि भक्ति प्रभु तेरी, शक्ति इतनी रखती है ।
भव सागर से पार लगाती, दुर्गति को ही नशती है ।।1582।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. यतिवर करते यत्न हमेशा, भव सागर से तिरने का ।
मेरा भी प्रयत्न यही है, प्रभुवर तुमसा बनने का ।।1583।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. धत्ता है जो उत्तम सुख में, वह ही धर्म कहाता है ।
सम्यक् दे उपदेश सभी को, कर्म से मुक्त कराता है ।।1584।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. रक्षण करता धर्म है जिसका, भक्षण नहिं कर सके कोई ।
परमातम की शरण गहे जो, बाल न बाँका करे कोई ।।1585।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यह तन माटी का पुतला है, पानी से गल जाना है ।
रत्नत्रय का लेप लगाकर, पारस सम बन जाना है ।।1586।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. उपास्य मेरे पार्श्व प्रभु हैं, बनूँ उपासक उनका ही ।
पर्युपासना करता प्रतिपल, कर्म नाश हों तुम सम ही ।। 1587।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सुन्दर पारिजात सन्तानक, समवशरण में बरसे हैं ।
खग पंक्ति सम शोभ रहे हैं, भक्तों के मन हरषे हैं ।।1588।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मणि मुक्ता की झालर जिसमें, तीन छत्र सिर सोह रहे ।
तीन लोक अधिपति जिनवर जी, भवि के मन को मोह रहे ।।1589।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तोता रोता है प्रभु तब ही, जब विषयों में खोता है ।
मुख मोड़े जब जग विषयों से, आत्मानन्द में सोता है ।।1590।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. निज परिणति को पाने हेतु, पर परिणति मैं छोड़ रहा ।
जिस जग को माना था अपना, उससे मुख अब मोड़ रहा ।।1591।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. जयवन्तो जिनदेव सदा ही, जिनशासन जयवन्त रहे ।
जिनवाणी माँ इस बालक पर, हर दम ही खुशवन्त रहे ।।1592।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. पृथ्वीतल पर आप सरीखा, रूप दूसरा नहिं पाया ।
जीव जगत में भरे अनन्तों, पर कोई मन नहिं भाया ।।1593।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वरिष्ठ बनने की खातिर मैं, कष्ट अनेकों सहता हूँ ।
जग में श्रेष्ठ प्रभु से मिलकर, अन्तर्मन को धोता हूँ ।।1594।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्ठ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. लग्न और चौघड़िया शुभ हो, कहते हैं तब काम बनें ।
लगन लगायी तुमसे जिनवर, मेरे सब ही काम बने ।।1595।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जिनान् जिताराती हैं जग में, गरिष्ठ गुण में हैं प्रभुजी ।
गुण पाने मैं आज उन्हीं के, स्तुति करता हूँ जिन जी ।।1596।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. युक्ति बतायी हे परमेश्वर! मुक्तीपुर को जाने की ।
लगन लगी है हे विमलेश्वर! तुम सम ही बन जाने की ।। 1597।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "युक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तं पार्श्वं त्रैकाल्य वंदना, त्रय योगों से करता हूँ ।
त्रयरत्नों को धारण करके, भव वारिधि से तिरता हूँ ।।1598।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हित-मित-प्रिय प्रभु वचन आपके, हितङ्करी कहलाते हैं ।
तीर्थंकर पदवी दिलवाते, जग कल्याण कराते हैं ।।1599।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पार्श्व नाम बड़ा प्यारा लागे, बाल वृद्ध उर धारे हैं ।
नाव बना इसे जो भी बैठा, भव से पार उतारे हैं ।।1600।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. थिर पद का अभिलाषी हूँ मैं, स्थिर मन से कहता हूँ ।
स्थिरता से स्वात्म गगन में, पँछी बनकर उड़ता हूँ ।।1601।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वस्तु स्वरूप को जान जिनेश्वर, वास्तव रूप दिखाया है ।
वस्त्र त्याग विश्वास जो करता, शाश्वत रूप को पाता है ।।1602।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निशदिन वैय्यावृत्ति जो करता, निश्चित भव से तिरता है।
गुण वारिधि के गुण को पाकर, गुण अनंत वो वरता है।।1603।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. परमावधि के धारक मुनिवर, परम ज्ञान को पाते हैं ।
पर द्रव्यों से नेह हटाकर, परम धाम को जाते हैं ।।1604।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. रहस्य विद्याओं का जाना, सर्व अविद्या दूर करी ।
सर्व ऋद्धि के स्वामी बनकर, केवलज्ञान की ऋद्धि वरी ।।1605।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सहस अठोत्तर कलशाओं से, जिनवर का अभिषेक हुआ ।
तभी बनारस नगरी देखो, हर्षित मन अभिषिक्त हुआ ।।1606।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तन पिंजर में फँसी है मैना, सद्गुरु का वह ध्यान करे ।
पा करके उपदेश गुरु का, पिंजरे से बाहर निकले ।। 1607।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रशस्त गति जाति को पाकर, अब प्रशस्त परिणाम करो ।
अप्रशस्तता छोड़ सदा को, शाश्वतता का भान करो ।।1608।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वैभव काशी का जब देखा, स्वर्ग का वैभव शर्माया ।
निज वैभव पाने वाले ने, जन्म यहाँ पर जब पाया ।।1609।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वर्द्धमान तीर्थेश हुये हैं, मेरे प्रभु पारस के बाद ।
धर्म अहिंसा फैलाया था, जग करता है उनको याद ।।1610।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चिर सञ्चित जन्मों का शुभ फल, आज उदय में आया है।
चिन्मय चिन्तामणि पारस का, शुभ दर्शन जो पाया है ।।1611।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. गात्रं को बहु बार है धोया, पात्रं को नहिं शुद्ध किया ।
देव गुरु जिनवाणी माँ से, होकर सदा विरुद्ध जिया।।1612।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विशद अर्थ अरु भाषा मय है, ऊँकार ध्वनि जिनवर की ।
निर्ममत्व का बोध कराती, सौम्य छवि प्रभु पारस की ।।1613।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. भोगों में रत रहकर निश दिन, स्वयं भोग ही बन बैठा ।
देख स्वयंभू की छवि को मैं, तीन योग से नम बैठा ।।1614।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. यद् अर्चा के भाव से जिसने, पत्ती मुख में दबायी थी ।
भक्ति भाव से मरकर उसने, स्वर्ग सम्पदा पायी थी ।।1615।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. दर-दर की ठोकर खाता वह, जो प्रभु दर पर नहिं आता ।
एक बार प्रभु दर पर आता, वह भव दधि से तर जाता ।।1616।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. सिद्ध शिला पर जाय विराजे, शुद्ध आत्मा बन कर नाथ ।
शुभ भावों से आज पुकारूँ, प्रभू बुला लो अपने पास ।। 1617।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. कर्ता बन कर नहिं रहना है, हर्ता कर्म का बनना है ।
ममतामय परिणति को तजकर, समता धर्म में रहना है ।।1618।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. मति सुमति कर दो हे जिनवर! जिससे गति सुधर जाये ।
ऐसा दो वरदान जिनेश्वर, पंचम गति को हम पायें ।।1619।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विगत भवों से पुण्य संजोया, तब दर्शन कर पाया है ।
प्रभु की सौम्य छवि को लखकर, निज दर्शन मन भाया है ।।1620।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पाते अक्षय धाम वही हैं, अक्षत चरण चढ़ाते जो ।
रत्नत्रय को धारण करके, अक्षय पद को पाते वो ।।1621।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कल पर कुछ भी नहीं छोड़ना, कल न किसी का आया है ।
जिसने अपना आज सँवारा, कल भी उसी ने पाया है ।।1622।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. शून्य हूँ भगवन् आप अंक हो, अंक में अपने ले लो तुम ।
बन जाये पहिचान मेरी भी, संग में अपने रख लो तुम ।।1623।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शून्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. प्रायः करता प्रभु प्रार्थना, प्रातः ही मैं उठ करके ।
मुझे बना लो अपने जैसा, अपनी गोद बिठा करके ।। 1624।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

ज्यों अधोमुखी घट, विमुख भी होकर, सरिता पार करा देता।
त्यों कर्म विदारक, भवि के तारक, भक्त अर्घ चरणों देता।।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्न भवतारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो देवाणुप्पियाणं अघोर गुणबंभयारीणं।

श्लोक नं.30

असंभव कार्य साधक

विश्वेश्वरोऽपि जन पालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर प्रकृति–रप्यलिपिस्त्वमीश!।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व विकास हेतुः।।30।।

गीतिका–छन्द

जीवों के रक्षक हे प्रभु! तुम, दबा नहीं धन रंच न लेश,
अक्षर ज्ञान समुद्र है लेकिन, लेखन क्रिया नहीं शुभ भेष।
इस ढंग से अज्ञानी लगते, ज्ञान आपमें भरा विशेष,
सब पदार्थ दरशाने वाला, दिखा आप में दर्श अशेष।।

आमर्द्धीन् नाम संस्पर्द्धीन्, कृत्स्न रुग्नाशकान् जनाम्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं आमर्षौषधर्द्धिप्राप्तयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – रेखता

1. विभावों को तजा प्रभुवर, स्वभाव को ही पाया है।
विकारों से उठे जिनवर, निजातम को सँवारा है ।।1625।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. श्वेत त्रय छत्र राजे हैं, झालरों से भी साजे हैं।
तीन लोकों के भूपति हो, ये दुनियाँ को बताते हैं ।।1626।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. श्वभ्र सागर में पढ़ कर के, घोर दुःख पाया मैंने है।
आया पुण्य का उदय अब है, दर्श प्रभु पाया मैंने है ।।1627।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रोक सकता नहीं कोई, मुझे प्रभु भक्ति करने से।
रोग हरते मेरे प्रभु हैं, चरण रज स्पर्श करने से ।।1628।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. कोऽपि गुण गा नहीं सकता, वृहस्पति के समां प्रभु के।
जैसे सागर नहीं तरता, कोई भी बाहुबल अपने ।।1629।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. जगत्प्रभु आपको पाकर, मुझे अब कुछ न पाना है।
ध्यान प्रभु का हृदय धरके, भवोदधि पार जाना है ।।1630।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. न दौलत की तमन्ना है, न शोहरत की ही आशा है।
मेरे प्रभुवर को देखो तुम, जिनकी दृष्टि ही नाशा है ।।1631।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. पा लिया आश्रय जिसने, प्राणी हो जाता वो पावन।
प्रभु चरणों में चढ़ जाये, जन्म होता वही सावन ।।1632।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. लगन लागी है प्रभु तुमसे, इसे मत तोड़ना प्रभु जी।
पड़ी मझधार में नैया, इसे मत छोड़ना प्रभु जी ।।1633।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. कसके पकड़ो प्रभु कर को, छुड़ाये से न छूटे जो।
बँधू भक्ति के बन्धन से, टुड़ाये से न टूटे जो ।।1634।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. दुर्जनों को किया सज्जन, प्रभुवर आप शक्ति ने।
भक्त को कर दिया भगवन्, प्रभुवर आप भक्ति ने ।।1635।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. गति ऋजु से पधारे हो, लोक के अग्र में जाकर।
मति सबकी सुधारे हो, भक्त के हृदय में आकर ।।1636।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तस्य जीवन सँवारा है, यस्य प्रभु को पुकारा है।
जन्म जन्मों का रिश्ता तो, प्रभु का और हमारा है ।।1637।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. त्वं क्षितितल के आभूषण, दूर करते हो सब दूषण।
करे चहुँ ओर से ऊषण, पर्व बन जाये पर्यूषण ।।1638।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. किं? कहाँ? कौन? अपना है, ये चिंतन मैं न कर पाया।
स्वयं अस्तित्व को जिनवर, आज तक मैं न लख पाया ।।1639।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वासना के समन्दर में, डूबता ही गया हूँ मैं।
प्रार्थना से स्वमन्दिर में, पूजता ही गया हूँ मैं ।।1640।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. क्षपक श्रेणी चढ़े मुनिवर, क्षरण कर्मों का कर करके ।
सुआतम में रमण करते, वरण मुक्ति वधू वरके ।।1641।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रहूँ रटता प्रभु का नाम, अंत जब होवे जीवन शाम ।
कण्ठ मम हो कभी ना जाम, गुरु पद में ही लूँ विश्राम ।।1642।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. प्रभुवर आप प्रस्तोता, वाणी सुनकर सफल श्रोता ।
हृदय करता समर्पित जो, नहीं भव-भव में वो रोता ।। 1643।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कृपा इतनी करो स्वामी, बनूँ बस आप अनुगामी ।
वरूँ निज आत्मा स्वामी, बनूँ सम आप अभिरामी ।।1644।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तिरस्कार सहा हरदम, किया नहीं पाद में वन्दन ।
मिटाओ दु:ख आक्रन्दन, हे वामादेवी के नन्दन! ।।1645।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रहस्य कर्मों का बतलाकर, युक्ति क्षय की है दिखलायी ।
युक्ति से कार्य करता जो, मुक्ति वधु को वो परिणायी ।।1646।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्राप्य है नाथ पथ तेरा, कराता मुक्ति में डेरा ।
मिटाता भव का जो फेरा, दिखाता स्वात्म जो मेरा ।।1647।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. लिखने का भाव आया है, दर्श प्रभु का जो पाया है ।
ये सब संसार माया है, प्रभु ने सब बताया है ।।1648।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. पिस्ता बादाम फल लेकर, ये सुन्दर थाल सजवाया ।
मुक्ति की भावना लेकर, प्रभु के चरण चढ़वाया ।।1649।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पिस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तत्त्व निज प्राप्त कर लीना, निजातम स्वाद चख लीना ।
चिदानन्द भाव है कीना, सिद्ध पद प्राप्त कर लीना ।।1650।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मीत बनकर प्रभु मेरे, गीत में आप बस जाओ ।
प्रीति सब प्राणी से कर लूँ, प्रीति की रीति सिखलाओ ।।1651।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शतक वन्दन करूँ जिनवर, विखण्डन कर्म का कर दूँ ।
मेरे प्रभु पार्श्व स्वामी का, चरण वन्दन मैं अब कर लूँ ।।1652।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. अखण्ड आतम के ज्ञायक हो, मुक्ति पथ के विधायक हो ।
धर्म के आप नायक हो, ज्ञान देते भी क्षायिक हो ।। 1653।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ज्ञान की जब कली खिलती, तो दुनियाँ में दमकती है ।
कि जिसकी खुशबू से देखो, सारी दुनियाँ महकती है ।।1654।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्ञा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नहीं डगमग है अब होती, नाथ नैया खिवैया है ।
प्रभु जयवन्त जग में हैं, मेरे पारस सँवरिया हैं ।।1655।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वन्दना आपकी करता, करो हृदये बसेरा तुम ।
ध्यान करता हूँ मैं हर क्षण, करो जीवन उजेरा तुम ।।1656।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. यज्ञ करते हैं कर्मों का, विज्ञजन ध्यान को करके ।
ज्ञान ईंधन में तब ही तो, सभी कर्मों को हैं दहते ।। 1657।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. पितु रक्षा करे शिशु की, यही जग रीति बतलायी ।
भक्त रक्षा करें हरदम, मेरे प्रभु पार्श्व जिनरायी ।।1658।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. सर्व ज्ञाता हो दृष्टा प्रभु, फिर भी निज लीन रहते हो ।
निजातम को लखें हर क्षण, प्रभु लवलीन दिखते हो ।।1659।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. दैत्य आया कुपित होकर, किया उपसर्ग मनमाना ।
चैत्य सम बैठे थे जिनवर, चरण में हार को माना ।।1660।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. वक्त है पुण्य का आया, धन्य जीवन बनाना है ।
प्रभु का ध्यान करके ही, सिद्धिपुर को भी पाना है ।।1661।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. कब कहाँ कौन किस घड़ी में, बुलावा राम आ जाये ।
मरण के अन्त क्षण में याद, प्रभु का नाम आ जाये ।।1662।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. थम्भ लख मान गल जाये, वो मानस्तम्भ कहलाता ।
लखा प्रभु की जो मुद्रा को, तभी यह भाव बन पाता ।।1663।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. चिदानन्द नाथ पारस हैं, सोना भवि को बनाते हैं ।
भर के आनन्द जीवन में, उसे निज सम बनाते हैं ।।1664।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. देव-देवी शरण आकर, नाथ की भक्ति करते हैं ।
देव से पद मनुज पाकर, मुनि बन मुक्ति वरते हैं ।।1665।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वर्ष धर बाँट देते हैं, भाग सातों में जम्बूद्वीप ।
उसी के भरतक्षेत्र से, करूँ आरति जला के दीप ।।1666।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. ज्ञान का मान नहिं जिनमें, वे ही ज्ञानी हैं कहलाते ।
ज्ञान का मान जो करते, वो अज्ञानी हैं दुख पाते ।।1667।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्ञा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. नन्दनं आप वामा के, चित्त आनन्द भरते हो ।
धार ले चित्त जो तुमको, उसे भव पार करते हो ।।1668।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्वमेव मात-पितु भगवन्, त्वमेव बन्धु मित्रं हो ।
जो चलता आपके पथ पर, उसका चारित्र इत्र हो ।।1669।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वैनयिकी है यहाँ प्रज्ञा, साथ परभव में जाती है ।
कर विनय देव जिनगुरु की, पार भव से लगाती है ।।1670।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. स्फुरन् नाथ करता है, आपका मुख कमल जग में ।
जैसा मणि का उजाला है, न दिखता काँच के कण में ।।1671।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्फु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रत्नवृष्टि हुई त्रय बार, श्री अश्वसेन आँगन में ।
गर्भ में आये हैं प्रभुवर, खबर फैली जमाने में ।।1672।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिरस्कृत कांतिमय वस्तु, नाथ भामण्डलम् से है ।
दिखाते सात भव भवि को, देख आनन्दनम् हैं ।।1673।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. विरागी भी हो त्यागी भी, वीतरागी भी तुम भगवन् ।
देख छवि आपकी अनुपम, मेरा मोहित हुआ है मन ।।1674।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. अश्वसेन भी इस जग में, शीघ्र ही मोक्ष जावेंगे ।
आप सम कर्म को क्षय कर, वे भी सुख नंत पावेंगे ।।1675।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विराग के चिराग जो, उनसे अनुराग मुझको है ।
विनम्र गुरु के चरण में रह, करना कल्याण मुझको है ।।1676।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. काला विषधर भी आकर के, सामने फण को फैलाये ।
नाम प्रभु नागदमनी से, कभी भय को न भवि खाये ।।1677।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. सहस्र नामों से करता हूँ, प्रभु गुणगान मैं प्रतिपल ।
सहस्रों कष्ट मिट जाते, भक्त को मिलता है प्रतिफल ।।1678।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हे मेरे पार्श्व प्रभुवर जी! चरण में आश्रय दे दो ।
मरण तक मैं करूँ भक्ती, मिलूँ में आप लय दे दो ।।1679।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. चतुः कोणेषु कलशों को, सजा अभिषेक करता हूँ ।
शान्ति जब जगत में फैले, भावना रोज करता हूँ ।।1680।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

निर अक्षर ज्ञानी, दरिद्र स्वामी, असहाय जगत्प्रकाशी हो।
है विरोधाभास, स्तुति खास, पूज रची सुखधामी हो।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अपुव्वबल पदाईणं आमोसहि पत्ताणं।

श्लोक नं.31

शुभाशुभ प्रश्न दर्शक

प्राग्भार संभृत नभांसि रजांसि रोषा–
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभि–रयमेव परं दुरात्मा।।31।।

गीतिका–छन्द

दुष्ठ कमठ ने पार्श्व प्रभू पर, ताकत भरके डाली धूल,
लेकिन हे प्रभु! उसने ही खुद, बंधन कर डाले प्रतिकूल।
तन की तो बहुदूर बात है, धूल न छाया छू पायी,
कर्म रजोमय धूल उसी पर, गिरी बनी भव दुखदायी।।

क्ष्वेलर्द्धीन् जगज्जन्तूनां, परोपकारादिकारिणः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो क्ष्वेलौषधर्द्धिप्राप्तभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – विष्णुपद

1. **प्राग्भार ईषत् पृथ्वी पर, प्रभुवर जाय बसे ।**
   अष्टम् वसुधा हेतु हे स्वामी, अष्ट कर्म थे नशे ।।1681।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्राग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. **भाग्य हमारे धन्य हो गये, धनदत्त सेठ कहे ।**
   पारस प्रभु पारण करवा के, पुण्य कोश है बढ़े।।1682।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. **रत्नों की वर्षा अति सुन्दर, पंचाश्चर्य हुए ।**
   जय हो जय हो जय हो, धुनि से भूमण्डल गूँजे ।।1683।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. **संस्कार प्रभु ऐसे भर दो, सम्यक् को पाऊँ ।**
   तीन रतन को धारण करके, सिद्धिपुर जाऊँ ।।1684।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. **भृङ्गारु कलशा पंखादिक, मंगल अष्ट कहे ।**
   मंगल द्रव्यों से करूँ भक्ति, मंगल विश्व बने।।1685।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. **तत्त्वों का कर ले जो चिंतन, वो चिरकाल जिये ।**
   निजानुभव के आनन्द रस को, वो चिरकाल पिये ।।1686।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. **नव्य गव्य पकवान बनाकर, सुन्दर थाल सजा ।**
   पारस प्रभु के चरण चढ़ाओ, गाओ वाद्य बजा ।।1687।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **भान्ति सर्व पदारथ जग के, दिव्य ज्ञान प्रभु के ।**
   व्यय उत्पाद ध्रौव्य से युत हो, समकितमय झलके ।। 1688।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. **सिद्धं शुद्धं आप विशुद्धं, अविनाशी जिन हो ।**
   त्रय योगों से नमन करूँ मैं, शुद्ध योगी प्रभु को ।।1689।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. **रम्यक् लगता सबके मन को, समवशरण जिनका ।**
    सम्यक् को पा लेता प्राणी, जो चरणों झुकता ।।1690।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. **जाम्बुनद का आप सिंहासन, मनहारी लगता ।**
    जिस पर आप सुशोभित जिनवर, सूरज सा चमका ।।1691।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. **सिद्धान्तों के आप प्रणेता, नेता मुक्ति के ।**
    अन्त सिद्धि को प्राप्त कर लिया, अपनी युक्ति से ।।1692।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. **रोगत्रय को आप नशाया, निज को रौशन कर ।**
    भव के दुःख को नाथ भगाया, निज का शोधन कर ।।1693।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. **भाषा मैत्री आप सिखायी, जग के जीवों को ।**
    ओंकारमय ध्वनि सुनायी, प्रभु ने भविकों को ।।1694।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. **दुक्ख नाश हों कर्म नाश हों, बोधि लाभ होवे ।**
    प्रभु जिनगुण से आप भरे हैं, प्राप्ति मुझे होवे ।।1695।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. **जत्था* साथ चला भक्तों का, भगवन् जहाँ चलें ।**
    मत्था टेक रहे हैं सब जन, सारे कर्म धुलें ।।1696।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्था" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*समूह

17. पिछले भव का पुण्य कर्म जो, आज उदय आया।
साम्य भाव धारी जिनवर को, निज के उर पाया ।।1697।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तार्किक शक्ति आप जिनेश्वर, कोई न काट सके।
अन्य मती सब हार चुके हैं, कोई न वाद करे ।।1698।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. नित्य अर्चना करते प्रभु की, चर्चा उनकी हो।
चारित को जो धारण करते, अर्चा उनकी हो ।। 1699।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कलियुग में भी देखो भवि का, भाव भक्ति का है।
उसने ही रख लिया कलेवा, मुक्ति पथ का है ।।1700।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मनमानी नहिं करो यहाँ पर, जिनवाणी को सुनो।
धार हृदय में प्रभु वाणी को, निज कल्याणी बनो ।।1701।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. बैठे ज्ञान गुफा में जो मुनि, वे निज सार लिए।
सिद्धि रथ पर चढ़ कर के ही, वे भव पार हुए ।।1702।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नयनों को लगती छवि प्यारी, प्रभु अभिरामी की।
शिवधामी सुखदानी जिनवर, अन्तर्यामी की ।।1703।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शरण तुम्हारी आया भगवन्, सहज बना देना।
शाश्वत सुख से भेंट करा कर, पास बिठा लेना ।।1704।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. बैठे हैं प्रभु भक्त द्वार पर, दर्श की अभिलाषा।
आप छवि लख पायी सच्चे, सुख की परिभाषा ।।1705।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. नन्हा सा बालक हूँ भगवन्, खड़ा द्वार तेरे।
व्यथा सुनाने आया भगवन्, मिटें जगत फेरे ।।1706।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. यादों में प्रभु की सोया था, सपने में आये।
आत्म ध्यान में बैठा जब ही, अपने में पाये ।।1707।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. निराबाध सुख तुमने पाया, निष्कामी होकर।
मदन विजेता को था हराया, जितकामी होकर ।।1708।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. छाया प्रभु की पड़े नहीं पर, सब पर छाया है।
केवलज्ञान का ऐसा अतिशय, मन को भाया है ।। 1709।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "छा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. यात्री आते दूर-दूर से, प्रभु पद दर्शन को।
रात्री भर हैं धूम मचाते, गिरि पर वंदन को ।।1710।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. पिघला दो मम मोह गिरि को, यही प्रार्थना है।
पा जाऊँ प्रभु मोक्ष पुरी को, यही भावना है ।।1711।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तैर रहा है भक्त तुम्हारा, भक्ति बाहुबल से।
पार हो रहा श्रद्धा भर के, निज आतम बल से ।।1712।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. स्तव को लिखने पढ़ने से, कर्म सभी टलते।
तव गुण को लखने से भगवन्, ज्ञान सुमन खिलते ।।1713।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वन्दन करता पार्श्व जिनेश्वर, जग के परमेश्वर।
आप छवि को हृदय में धरता, हे मम हृदयेश्वर! ।।1714।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नयन तरसते हैं प्रभु मेरे, आप नहीं दिखते ।
जीभ छिल गई भगवन् मेरी, आप नाम रटते ।।1715।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नाग-नागिनी जलत बचाये, प्रभु उद्धार किया ।
महामन्त्र नवकार को सुनकर, स्वर्ग विहार किया ।।1716।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. थकता नहीं कभी मन मेरा, जिनवर स्तुति से ।
रमता यहीं सदा मन मेरा, भक्ति प्रस्तुति में ।।1717।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. हस्त पकड़ लो मेरा भगवन्, छूट नहीं जाऊँ ।
भव सागर से पार लगाओ, डूब नहीं पाऊँ ।।1718।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तारणहारा नाम तुम्हारा, लाखों तार दिये ।
भव अटवी में राह दिखाकर, भवि को पार किये ।।1719।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. हरष-हरष गुण गाऊँ भगवन्, चरणन परश करूँ ।
सम्यग्दर्शन गुण को पाकर, जीवन सरस करूँ ।।1720।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ताला तोड़ा मुक्तिपुर का, भक्ति ताली से ।
आत्मबाग में बहार ला दी, प्रभु वनमाली ने ।।1721।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. शोभ रहे हैं जिनवर देखो, तरु अशोक नीचे ।
शोक मिटाकर चले दिवाकर, काली घटा नीचे ।।1722।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. ग्रस्त रहा हूँ राग रोग से, त्रस्त हुआ भारी ।
प्रशस्त जिनवर की मुद्रालख, मस्त हुआ भारी ।।1723।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग्रस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तस्य हुये हैं कर्म नाश भी, यस्य ने सुमरा है ।
मन मन्दिर में लगी बुहारी, तव भव सुधरा है ।।1724।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. त्वद् भक्ति ही बसी श्वास में, पगी है आतम में ।
मेरी आतम शाश्वत होगी, मिल परमातम में ।।1725।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मीठे-मीठे बेर खिलाये, चखकर शबरी ने ।
राम प्रभु ने हँसकर खाये, भक्त झोपड़ी में ।।1726।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. अभिलाषा प्रभु एक मेरी है, जिन अभिषेक करूँ ।
गिरि सुमेरु पर न्हवन कराऊँ, भव संतति को हरूँ ।।1727।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रवि शशि मिलकर करें अर्चना, समवशरण जिनकी ।
भक्ति करते चतुर्णिकायी, सुर भी मिल उनकी ।।1728।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यत्नाचार का पालन करते, यतिवर कहलाते ।
यतियों के प्रभु आप हैं नायक, गणधर बतलाते ।।1729।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. मेरा मन चंचल है भगवन्, इसको अचल करो ।
मेरु समान अकम्प बने यह, ऐसा यतन करो ।।1730।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वसुधा पर है सुधा बरसती, भविजन मन भाती ।
मन्त्र मुग्ध हो पिये सुधा को, प्रभु पाती* आती ।।1731।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. पत्थर प्रभु पर बरसाये थे, भव भव त्रास मिला ।
आत्म शक्ति से तव जिनवर ने, आत्म विकास किया ।।1732।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*पत्र

53. रंचमात्र भी जिनका मन नहिं, खेद खिन्न होता ।
मोक्ष महाफल पाने को वह, साम्य बीज बोता ।।1733।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. दुखमा काल कहा यह पंचम, सब को दुख दाता ।
प्रभु की भक्ति कर लो प्यारे, पंचम गति दाता ।।1734।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. राग हटाया प्रभु ने पर से, शिवपुर राज किया ।
तीन लोक के भूपति होकर, जग को त्याग दिया ।।1735।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. आत्मा से परमात्मा तक की, यात्रा लम्बी है ।
पार्श्व प्रभु से मिला तो जाना, मुझमें दम भी है ।। 1736।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

धूलि अरु पत्थर, बरसा सिर पर, व्यर्थ कमठ उपसर्ग किया।
प्रभु तन को इक कण, छुआ नहीं क्षण, चरण में झुककर अर्घ दिया।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रवजिताय क्ष्वीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठविण्णत्तिदावयाणं खेल्लोसहि पत्ताणं।

दुष्टता प्रतिरोधी

यद्गर्ज–दूर्जित घनौघ – मदभ्र भीम–
भ्रश्यत्तडिन् मुसल मांसल घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर वारि कृत्यम्।।32।।

गीतिका–छन्द

पानी मूसलाधार गिराकर, गर्जाए बादल अतिभीम,
मगर तुम्हारा कुछ नहिं बिगड़ा, बिजली कड़की महा असीम।
स्वयं कमठ ने घाव किए तन, लेकर भावमयी तलवार,
बंध हुआ कर्मों का भारी, सहना पड़ी जगत में मार।।

जल्लर्द्धीन् मलतोऽशेष, दुष्टव्याधि क्षयङ्करान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लौधर्द्धि प्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – चौबीसी पूजन

1. यद्यपि वंदित जिनदेव शत इन्द्रों से भी।
तद्यपि आनन्दित देव, निजानन्द रस ही ।।
हे पार्श्वनाथ जिनचंद! आया शरण तेरी।
मम कल्मष हों निर्द्वन्द्व, भक्ति करूँ प्रभुजी ।।1737।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. गर्भावतार उत्सव, इन्द्रों ने कीना ।
हुई रत्नवृष्टि त्रयबार, पूर्व से छह महीना ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1738।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. जन्मोत्सव हुआ महान, ऐरावत चढ़कर।
सौधर्म इन्द्र ले जाय, मेरु पर्वत पर ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1739।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. यद्यूर्ध्व लोक में जाय, प्रभुवर आप बसे।
प्रभु एक क्षणिक में जाय, राजू सात चले ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1740।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. जितना झुकता यह जीव, उतना उठता है।
झुकना है एक कला, प्रभु से सीखा है ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1741।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तम हर मनहर जिनदेव, पूजूँ मैं चरणा।
तुम जैसा आत्मस्वरूप, मुझको है वरना ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1742।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. घर द्वार भूल कर शिष्य, गुरु द्वारे आया।
हो हर पल यही प्रयास, सिर पर गुरु छाया ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1743।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नौका संयम की बैठ, भवदधि तरना है।
हो पार्श्व प्रभु से भेंट, युक्ति वरना है ।।
हे पार्श्वनाथ जिनचंद! आया शरण तेरी।
मम कल्मष हों निर्द्वन्द्व, भक्ति करूँ प्रभुजी ।।1744।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. घन घण्ट बजें जिन द्वार, झाँझरियाँ बाजें।
भक्ती की हो झनकार, किन्नरियाँ नाचें ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1745।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. मन होता आज विभोर, जिनवर छवि लखकर।
पा जाऊँ भव का छोर, प्रभु समीपता वर ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1746।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. दर पर आया हूँ नाथ, दर्शन दे देना।
हे दयासिन्धु जिनदेव! पर्शन दे देना ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1747।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. भ्रमरावली का गुञ्जन, ज्यो सुमनों चुम्बन।
भक्तों का ऐसा मन, भक्ती का चन्दन ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1748।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भीषण है कर्म तपन, प्रभुवर ताप हरो।
है भक्त खड़ा दर पर, भव सन्ताप हरो ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1749।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. महाभाग्य से हे जिनराय! जिनशासन पाया।
मम ज्ञान कमल खिल जाय, जो है मुरझाया ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1750।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भ्रमता आया जिननाथ, भव रूपी वन में।
रमना नहिं आया नाथ, निज के आतम में ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1751।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. अदृश्य आप जिनदेव, ध्यान में दिखते हो।
अस्पृश्य आप परमेश, आतम छूते हो ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1752।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. उत्तम है द्रव्य मँगाय, भाव भी उत्तम हैं ।
पुरुषोत्तम चरण चढ़ाय, पद लूँ उत्तम मैं ।।
हे पार्श्वनाथ जिनचंद! आया शरण तेरी ।
मम कल्मष हों निर्द्वन्द्व, भक्ति करूँ प्रभुजी ।।1753।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. है तड़ित्* महाभयकार, नभ में चमकी है ।
जग में हो हाहाकार, जब यह गिरती है ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1754।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ड़ि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. मुनि मुद्रा धारूँ नाथ, तन्द्रा को त्यागूँ ।
रहूँ निज आतम के साथ, निज में ही पागूँ ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1755।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सम्यक् हो मरण समाधि, समकित ज्ञान सहित ।
समता से तज दूँ देह, कर लूँ आतम हित ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1756।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. ललना शिव आप बरी, चलकर शिव मग में ।
शाश्वत शान्ति है लही, बसकर आतम में ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1757।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. माङ्गल्य भाव जिनदेव, जग मंगलकारी ।
शाङ्कल्य लगाई ध्यान, कर्मेंधन दागी ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1758।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सरिता बहती निर्बाध, सिन्धु तक जाती ।
आतम करती जब ध्यान, भगवत् पद पाती ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1759।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. है लक्ष्य मेरा बस एक, शिवपुर जाने का ।
आशीष वरो प्रभु नेक, अन्तस् पाने का ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1760।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. घनघोर सहा उपसर्ग, समताधारी ने ।
विधि मल का किया है नाश, जग त्रिपुरारी ने ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1761।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*बिजली

26. रस गन्ध वर्ण स्पर्श, पुद्गल के लक्षण ।
इनमें पड़कर के जीव, पाये दुःख क्षण क्षण ।।
हे पार्श्वनाथ जिनचंद! आया शरण तेरी ।
मम कल्मष हों निर्द्वन्द्व, भक्ति करूँ प्रभुजी ।।1762।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धारा का हुआ प्रवाह, पुण्य धरा हो गई ।
प्रभु ज्ञान धार रसपान, करके सफल हुई ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1763।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. रंग मंच बना संसार, जीव की प्रस्तुति है ।
धरता है भेष अपार, मोह की स्थिति है ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1764।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. दैत्य शक्ति जिननाथ, आप चरण पड़ती ।
आतम शक्ति प्रभु आप, पापों को दहती ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1765।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. है ध्येय बनाया आप, ध्यान आपका ही ।
ध्याकर तुमको जिननाथ, पाऊँ मोक्ष मही ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1766।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नश्वर है यह जग सर्व, सार नहीं पाया ।
प्रभु एक सहारा आप, शरण तेरी आया ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1767।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मुक्ति की युक्ति बतायी, प्रभु ने भक्तों को ।
भक्ति से अघ छिन जायी, कहा ये भक्तों को ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1768।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तज कर के सर्व विभाव, निज स्वभाव पाया ।
होवे मम कर्म अभाव, शरण तेरी आया ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1769।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन्दार सुन्दरं पुष्प, दिव्य सुगन्धी है ।
बरसे प्रभु समवशरण, पक्षी सी पंक्ति है ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1770।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. थकता नहिं भक्त कभी, प्रभु की भक्ति से।
रुकता नहिं संत कभी, चलता मस्ती से ।।
हे पार्श्वनाथ जिनचंद! आया शरण तेरी ।
मम कल्मष हों निर्द्वन्द्व, भक्ति करूँ प्रभुजी ।।1771।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. दुस्सह सहे कष्ट अनेक, नरकों में स्वामी ।
नहिं जाना अगली बार, कौल* करूँ स्वामी ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1772।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तम का होता तब नाश, जब सूरज आता ।
मिथ्यातम होय विनाश, जब सम्यक् पाता ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1773।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रत्नों का लगा है ढेर, समवशरण आगे ।
रत्नत्रय का यह तेज, सब जग पहिचाने ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1774।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वामा नन्दन को आज, मैं वन्दन करता ।
बन्धन सब टूटें नाथ, अभिनन्दन करता ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1775।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिश्ता तुमसे है नाथ, अब नहिं टूटेगा ।
मुक्तिपुर तक का साथ, अब नहिं छूटेगा ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1776।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. दर्पण सम ज्ञान विमल, अमल स्वभावी हो ।
परिणाम हों मम निर्मल, ज्ञान की चाबी दो ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1777।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. दधे जिनवचन सुरम्य, धारण करूँ उर में ।
कर लूँ इन्हें आत्मसुसात्, जाऊँ शिवपुर में ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1778।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तेरा पथ जो भगवान, वह मेरा भी है ।
तेरे ही रूप समान, रूप मेरा भी है ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1779।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*कसम

44. नैगम संग्रह व्यवहार, नय प्रभु बतलाये ।
चले जो इनके अनुसार, वो सम्यक् पाये ।।
हे पार्श्वनाथ जिनचंद! आया शरण तेरी ।
मम कल्मष हों निर्द्वन्द्व, भक्ति करूँ प्रभुजी ।।1780।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. वन जाना मुझे जिनराज, नव जीवन पाना ।
बनना है अब मुनिराज, सिद्धालय जाना ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1781।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तन्द्रा को तजकर प्रातः, पार्श्व प्रभु सुमरूँ ।
करूँ निश्चय कर यह काम, मैं निष्काम बनूँ ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1782।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. प्रभु कस्य सुनाऊँ पीर, अपनी आत्मव्यथा ।
प्रभु आज मिले बन मीत, जानी सब विपदा ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1783।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जिनवाणी कहे पुकार, अपने भक्तों से ।
तुम जिओ जीने दो सार, मत लड़ो अपनों से ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1784।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नमता हूँ बारम्बार, प्रभु तव चरणों में ।
सुमरन करता हूँ नाथ, अन्तिम श्वासों में ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1785।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दुनियाँ में देव सुमार, पारस सम नहिं है ।
भक्तों की भीड़ अपार, करती दर्शन है ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1786।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. ध्वस्त किया है नाथ, अष्ट कर्म रिपु को ।
पाकर प्रशस्तता भाव, ध्याया शिवपुर को ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1787।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रग-रग में बसे हो आप, कण कण के वासी ।
तुम सम ही बनना नाथ, मुझको सन्यासी ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1788।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वाचनिक भक्ति से नाथ, कर्म नहीं कटते ।
आत्मिक शक्ति से नाथ, पल में ही कटते ।।
हे पार्श्वनाथ जिनचंद! आया शरण तेरी ।
मम कल्मष हों निर्द्वन्द्व, भक्ति करूँ प्रभुजी ।।1789।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. रिश्ते नाते सब छोड़, वन में जा बैठे ।
किया आत्म तत्त्व से जोड़, लोक शिखर तिष्ठे ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1790।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. कृतकृत्य हुए हैं नाथ, अब कुछ नहिं करना ।
धर कर हाथों पे हाथ, नंत काल रहना ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1791।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. सत्यं शिव सुन्दर नाथ, आप स्वरूप कहा ।
रहे आप आत्म में लीन, अनुपम सौख्य चखा ।। हे पार्श्वनाथ ...।।1792।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

मेघा गर्जाए, बिजली गिराए, मूसलधार गिरा पानी।
प्रभु ध्यान मग्न थे, डिगे नहीं थे, अर्घ चढ़ाता अभिमानी।।

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमदणासयाणं जल्लोसहि पत्ताणं।

उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक

ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृति मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद् भय दवक्त्र विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्त-मपीरितो यः,
सोऽस्याभवत् प्रतिभवं भवदुःख हेतुः।।33।।

गीतिका-छन्द

ध्यान समय में कमठ दुष्ट ने, भूतों को दौड़ाया था,
लेकिन कमठ आपको विचलित, कभी नहीं कर पाया था।
उन पिशाच को कर्मबंध हो, हे स्वामिन्! दुख हुए अपार,
भव भव में भोगे तन धरकर, उनका बढ़ा स्वयं संसार।।

सर्वौषधर्द्धि संयुक्तान्, निःशेषामय* नाशिनः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सर्वौषधिर्द्धि प्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – दोहा

1. **ध्वस्त कर्म चउ कर दिये, नंत चतुष्टय धार।**
   ऐसे पार्श्व जिनेश को, नमहूँ बारम्बार ।।1793।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. **स्तोत्र आपका जो पढ़े, संकट सब टल जाय।**
   मंगल में मंगल प्रथम, करूँ नमन चित लाय ।।1794।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. **ऊर्ध्व लोक में आपका, बना है सुन्दर धाम।**
   मध्य लोक से मैं करूँ, पार्श्व प्रभु गुणगान ।।1795।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्ध्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. **केश उखाड़े आपने, पंच मुष्टि से नाथ।**
   पंचम गति पाने प्रभु, सदा नवाऊँ माथ ।।1796।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. **शक्ति नहिं मुझमें प्रभु, तव भक्ति के काज।**
   मुक्ति का मम भाव है, युक्ति बताओ आज ।।1797।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. **विष को अमृत कर दिया, शत्रु को किया मित्र।**
   आप नाम की जाप ने, मन को किया पवित्र ।।1798।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. **कृष्ण वर्ण तन आपका, हे साँवलिया पार्श्व !**
   मनहर भक्तों को लगे, लखते कटते पाप ।।1799।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* सर्वेषामय (कप)

8. **तारण तरण जहाज हो, भव दधि मेरी नाव।**
   आप कृपा से हो प्रभु, उसका आज बचाव ।।1800।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. **कृतकृत्य हो गये प्रभु, शेष रहा नहिं काम।**
   करनी का फल दो मुझे, निज पद में विश्राम ।।1801।।
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. **तिरता भवदधि वह भविक, जिस उर में प्रभु नाम।**
    पाता निश्चित वह उसे, जो प्रभु का है धाम ।।1802।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. **मर्त्य लोक से मैं करूँ, प्रभु का गुणानुवाद।**
    ऊर्ध्वलोक से दे रहे, प्रभु मुझे आशीर्वाद ।।1803।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. **त्यक्त च्युत च्यावित कहे, भूत शरीर के भेद।**
    इन्हें त्याग कर पार्श्व प्रभु, पहुँचे निज के देश ।।1804।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. **मुण्डन सिर का सरल है, बालक का हो जाय।**
    मन मुण्डन अति कठिन है, मुनिजन ही कर पाय ।।1805।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. **डर लगता प्रभु जगत से, शूल बिछे हर पाथ।**
    डगर मोक्ष की मैं चलूँ, पकड़ो मेरा हाथ ।।1806।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ड" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. **प्राप्त हुआ प्रभु दर्श है, पुण्य योग से आज।**
    प्रणाम शत शत बार है, हे जग के सरताज! ।।1807।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. **आलम्बन प्रभु आपका, दे आनन्द अपार।**
    आवश्यक नहिं जगत अब, आप हाथ पतवार ।।1808।।
    ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. बर्तन भरता है तभी, जब वह झुकता नाथ ।
गुण से भरना तो झुको, चरणों पारस नाथ ।।1809।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. गुणभृद् प्रभुवर आप हो, मुनिजी करें प्रणाम ।
गुण से भरकर वे तभी, पाते हैं निज धाम ।।1810।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भृद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भगवन् तुम में भक्त हूँ, बस इतनी पहिचान ।
अपना रिश्ता है अटल, इसका है अभिमान ।।1811।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. यथाजात मुद्रा जिनम्, वीतरागमय रूप ।
तव चरणों में नमत हैं, तीन लोक के भूप ।।1812।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दर्शन ज्ञान अनन्त तव, सुख अनन्त अरु वीर्य ।
नंत चतुष्टय शोभते, प्रभुवर का गाम्भीर्य ।।1813।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. वक्ता आप महान हैं, तीन लोक में नाथ ।
दिव्य ध्वनि रसपान कर, पाते भवि शिव पाथ ।।1814।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्रय रत्नों को धार कर, रोग किये त्रय नाश ।
त्रिविध कर्म मल को हटा, पाया मोक्ष निवास ।।1815।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विजयादिक चउ द्वार हैं, समवशरण में नाथ ।
दर्शन पा करके भविक, हो जाता है सनाथ ।।1816।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. निर्मद होकर के जिऊँ, निर्ममता ले भाव ।
निराकार को ध्याऊँ मैं, निर्मल होय स्वभाव ।।1817।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. यत्र तत्र सर्वत्र ही, व्याप्त आपका ज्ञान ।
पूर्ण ज्ञान पाने प्रभु, विमल करूँ परिणाम ।।1818।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दग्ध कर दिये कर्म सब, ध्यान अग्नि में आप ।
ध्यान लगाऊँ आपका, नष्ट करूँ सब पाप ।।1819।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. निःशङ्कादि अष्ट गुण, हैं समकित की शान ।
जो उर में धरता इन्हें, करता निज कल्याण ।।1820।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्रेम भाव सब जीव में, गुणियों में अनुराग ।
करुणा बरसे दीन पर, मध्य भाव दुर्भाग ।।1821।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तरणि समान जिनेन्द्र तुम, अगणित भव्य तिराय ।
पद मैं नमें सुरेन्द्र तव, जय जय जय जिनराय ।।1822।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. व्रत तप धारण कर लिया, अश्वसेन के लाल ।
शुद्धातम को लख लिया, तव चरणों नत भाल ।।1823।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रजः ज्ञान दर्शनावरण, प्रभु ने दई उड़ाय ।
शिवनगरी में जा बसे, अक्षय पद को पाय ।।1824।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. प्रशम और संवेग का, भाव हृदय में धार ।
आस्तिक अनुकम्पा सहित, हो जाओ भव पार ।।1825।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तिहुँ लोक तिहुँ काल के, युगपत् जाने पदार्थ ।
नमूँ आपके ज्ञान को, पाने पद परमार्थ ।।1826।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भजन करे प्रभु नाम का, वह चेतन सुख पाय ।
ध्यान करे जो आपका, वह शिवपुर को जाय ।।1827।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. वंश आप इक्ष्वाकु है, इच्छा तज दी नाथ ।
अश्व वनं में जायकर, दीक्षा ली सिद्ध साक्ष ।।1828।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तप अरु ध्यान की अग्नि में, कर्म किए सब दाह ।
प्रभुवर परम विशुद्धि से, परमातम पद पाय ।।1829।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मनमानी तज दो सभी, जिनवाणी उर लाओ ।
जिनप्रभु के सुन वचन को, हिय को सुमन बनाओ ।।1830।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. पीर बहुत भोगी यहाँ, धीर बँधाओ नाथ ।
भक्त पुकारे आपको, जग में कोई न साथ ।।1831।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिद्धि-सिद्धि के धाम हो, ऋषिवर यही बताएँ ।
सिद्धि पद को ध्येय कर, निज आतम रम जाएँ ।।1832।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तोड़ रहा नाता जगत, प्रभु से जोड़ रहा ।
प्रभु सम बनने को यहाँ, अब मुख मोड़ रहा ।।1833।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यः सोता खोता वही, जागे वह पा जाये ।
जाग्रत रहना प्रति समय, कब मृत्यु आ जाये ।।1834।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सोऽहं सोऽहं बोलकर, अर्हं ध्यान लगाओ ।
ध्यान अग्नि में कर्म दह, अर्हत् पद को पाओ ।।1835।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सोऽ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्याद्वाद वाणी विमल, सारे वाद मिटाय ।
प्रस्तोता प्रभु आप हो, सत्पथ दिया दिखाय ।।1836।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड, नगर बनारस जान ।
जन्म हुआ प्रभु आपका, उत्सव हुए महान ।।1837।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. विधिवत् विधि को जानकर, शिवपथ पकड़ो आप ।
चलो सिद्धनगरी सभी, जहाँ नहीं कोई पाप ।।1838।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. प्रथम प्रणाम जिनेश को, अरु जिनवाणी मात ।
साथ नमूँ गुरुदेव को, सदा रहो मम साथ ।।1839।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिनका-तिनका जोड़कर, परिग्रह रहे बढ़ाय ।
साथ में इक अणु जाये न, मूरख रुदन मचाय ।।1840।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. भक्त आपके बहुत हैं, भजन करें दिन रात ।
वक्त मेरा बहु अल्प है, बुला लो अपने पास ।।1841।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वंद्य हुए जग में प्रभु, जग बन्धन को तोड़ ।
नन्द हुए हर पल विभु, निज से नाता जोड़ ।।1842।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. भय भी हो भयभीत तब, जब निर्भय को ध्याय ।
सप्त भयों से मुक्त जो, समदृष्टि कहलाय ।।1843।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वर्णन वर्णों से करूँ, नंत गुणाकर खान ।
यही धृष्टता मम रही, मैं हूँ निपट अजान ।।1844।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दुःखदायी संसार में, सुख की नहीं लगार।
अनन्त सुखधारी प्रभु, त्याग हुये संसार ॥1845॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. खग मृग सब वन्दन करें, समवशरण में आय।
मन को सब नन्दन करें, जिनवाणी चित लाय ॥1846॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हे संकट मोचन प्रभु! लोचन से लख आज।
शोध करो मन बोध का, बन जाओ हमराज ॥1847॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. चतुः शरण मंगल यहाँ, उत्तम चार प्रकार।
निश दिन ध्याओ तुम इन्हें, हो जाओ भव पार ॥1848॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

नर कपाल माला, पिशाच काला, मुख से आग बहे भारी।
प्रभु रहे ध्यान में, निज स्थान में, अर्घ चढ़ाएँ नर नारी॥

ॐ ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रव जयनशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो असणिपातादि वारयाणं सव्वोसहि पत्ताणं।

भूत पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसंध्य-
माराधयन्ति विधिवद्-विधुतान्य कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक पक्ष्मल देह देशाः,
पादद्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः॥34॥

गीतिका-छन्द

हे प्रभु! जिनने अन्य काम तज, भक्ती की पुलकित मन होय,
तीनों काल स्तवन करके, भक्तिमयी गंगा तन धोय।
चरण कमल में आराधन कर, हर्षित हृदय बसाते हैं,
धन्य-धन्य वे भविजन भव में, स्वर्ण सम्पदा पाते हैं॥

विण्महर्द्धि विसंयोगात्, नरां रोग विनाशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विष्ठौषधर्द्धि प्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – सखी

1. धन्धन्य प्रभु का जीवन, पायी सुख की संजीवन ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1849।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. यावत् मेरा जीवन हो, तावत् प्रभु गुण कीर्तन हो ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1850।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. आश्वस्त करो प्रभु मुझको, विध्वस्त करो सब विधि को।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1851।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. एकत्व आप गुणधारी, एकत्व वितर्क अविचारी ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1852।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. वर्धन हो शाश्वत सुख का, अरु क्षरण हो जग के दुख का।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1853।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भुवि के निर्मल आभूषण, प्रभु दूर करो मम दूषण ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1854।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वधु वरण करन को बढ़ते, शिवपुर पैढ़ी पर चढ़ते ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1855।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नाना विधि किए उपाय, पितु अश्वसेन समझाय ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1856।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. धिक्कार है उन जीवन को, नहिं समय मिले पूजन को ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1857।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. पर परिणति को है त्यागा, निज आतम में चित पागा ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1858।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. ये नव विधि आपकी दासी, गणधर ने जगत्प्रकाशी ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1859।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. त्रिभुवन के लोक शिखर पर, प्रभु जाय बसे मुक्तिपुर ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1860।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. संसर्ग आपका पाया, संघर्ष से नहिं घबराया ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1861।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. मध्यलोक से चरण नमूँ मैं, मुक्ति पथ गमन करूँ मैं ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1862।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. माया का जाल हटाया, निष्कर्म सुपद को पाया ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1863।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. रात्रिदिव भेद नहीं है, प्रभु समवशरण की मही में ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1864।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. धर्मास्तिकाय का अभाव, वहाँ तक है प्रभु प्रभाव ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1865।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यन्मोहमल्ल को जीता, मुक्ति का काटा फीता ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1866।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिरने की कला बतायी, प्रभु स्वयं ही तिर के दिखायी ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1867।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विपदाएँ टलें स्वयं ही, जो ध्याये पार्श्व चरण ही ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1868।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. विधि मिलती विधि हनन से, सम्यक्प्रभु चरण नमन से ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1869।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. विधिवत् जो ध्यान करेगा, वो ही शिव सौख्य वरेगा ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1870।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विद्या अरु ज्ञान का फल दो, हे जिनवर ऐसा वर दो ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1871।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. साधु बनकर वन विचरूँ, प्रभु साम्य भाव में उतरूँ ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1872।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. ताकत है आज लगायी, गुणगान को वीणा उठायी ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1873।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मान्य हुए जग स्वामी, प्रभु आप भविक के नावी ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1874।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. कृतकृत्य हुए जग न्यारे, प्रभु के अनन्त उपकारे ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1875।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. अन्याः नहिं आप समां है, तब भी मन चरण झुका है ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1876।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "याः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. भक्ति में भक्त मगन है, निज को पाने की लगन है ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1877।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नित्योदय ज्ञान तिहारा, सब जग का जाननहारा ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1878।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. वल्लभ हो शिवललना के, माँ वामा के ललना थे ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1879।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सत्यं स्वरूप पाया है, शुद्धातम मन भाया है ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1880।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. पुनि-पुनि मैं करूँ प्रणाम, प्रभु अविनाशी अविराम ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1881।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लगी लगन आप चरणों से, थी प्यास ये कई भवों से ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1882।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. कलियाँ खिलीं आत्मचमन कीं, गलियाँ मिलीं मोक्ष गमन कीं ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1883।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पक्षमल यानि ज्ञान है व्याप्त, प्रभु आप हैं सच्चे आप्त ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1884।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पक्ष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. महिमा है ज्ञान समन्दर, प्रभु मग्न हैं इसके अन्दर ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1885।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लम्बी है डगर शिखर की, मेरी लगन है प्रभु दर्शन की ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1886।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. देवों के देव तुम्हीं हो, पारस परमेश तुम्हीं हो ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1887।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. हर कदम पे साथ तिहारा, देता मुझे बड़ा सहारा ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1888।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. देहालय आन विराजो, मम देह को आप सजा दो ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1889।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. धीशाः जिनेश कहलाते, धीजन तुम ध्यान लगाते ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1890।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पाना प्रभु आप कला को, जिससे आतम का भला हो ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1891।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. दश धर्म की रेल बनायी, जो शिवनगरी पहुँचायी ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1892।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. द्वय विधि संसार मिटाया, प्रभु अविचल थान है पाया ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1893।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. यन्मङ्गल हैं जो जग में, मंङ्गलकारी शिवमग में ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1894।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तत्त्व अरु हैं द्रव्य प्रकाशे, सब केवलज्ञान में भासे ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1895।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वर्तन निज वतन करूँ मैं, जिन कर्मन हनन करूँ मैं ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1896।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. विज्ञान भानु है चमका, वह तीन भुवन में दमका ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1897।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. भोगों को प्रभु ठुकराया, योगों को स्थिर पाया ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1898।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. भुवि के जन करें प्रतीक्षा, प्रभु आन बसो उर इच्छा ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1899।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विरले ही तत्त्व को जानें, विरले ही निज पहिचानें ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1900।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सोना

53. जन्मों–जन्मों प्रभु चाहूँ, तव चरणों में रम जाऊँ ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1901।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मद मर्दक वामा नन्दन, है कोटि चरण में वन्दन ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1902।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भावों में कर्म हैं बँधते, भावों से ही हैं कटते ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1903।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. मुरज: बिनापेक्ष बजत है, प्रभु वाणी यूँ ही खिरत है ।
हे पार्श्वनाथ! शिवधामी, प्रभु बनो नयन पथगामी ।।1904।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

वे धन्य धरा पर, पुलकित होकर, सन्ध्या त्रय वन्दन करते।
शुभ अर्घ बनाकर, शीश झुकाकर, प्रभु चरणों अर्पण करते।।

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो भूतवाहावहारयाणं विट्ठोसहि पत्ताणं।

श्लोक नं.35

मृगी उन्मादअपस्मार विनाशक

अस्मिन्–नपार भव वारिनिधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मन्त्रे,
किं वा विपद्–विषधरी सविधं समेति?।।35।।

गीतिका–छन्द

नाम तुम्हारा हे प्रभु! मेरे, कानों में नहिं पड़ा कभी,
पड़ता तो फिर मुझको होते, दुखभारी क्यों यहाँ अभी।
निश्चय से तव नाम मालिका, विषमय नागिन छाती है,
मैंने नाम नहीं सुन पाया, यह दुखधार बताती है।।

मनोबलर्द्धि संयुक्तान्, हृदि सर्वाङ्गचिन्तकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मनोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – नरेन्द्र

1. अस्त न होता तव प्रभाव कभी, नहिं राहु से ग्रसता है ।
सूर्य चन्द्र से अधिक तेज है, कभी न कम हो सकता है ।।1905।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मित्र महल मसान अरु कंचन, में नहिं राग द्वेष करते ।
वे ही तो इस मोह जगत में, मुनि बन कर विचरण करते ।।1906।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. अन्न कीट यह बना है प्राणी, कलयुग का है प्रभाव घना ।
धारण करता संयम को यदि, होता है आश्चर्य महां ।।1907।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. पार न पाया गुणसागर के, नंत गुणों का नहिं किसी ने ।
सार बताया प्रभु ने आकर, धार लिया भवि जीवों ने ।।1908।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रथ संयम पर चढ़ कर जिनवर, करी चढ़ाई कर्मों पर ।
हार गयी कर्मों की सेना, विजय प्राप्त की मुक्ति वर ।।1909।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भगवन् मेरे मीत आप हैं, प्रीति आपसे करता हूँ ।
हर इक गीत में समा गये हो, रीति प्रेम की वरता हूँ ।।1910।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वन्दन मेरा बार-बार है, बन्धन से छुड़वा देना ।
कर्मों ने डाले जो ताले, भक्ति से तुड़वा देना ।।1911।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वामा माता आप निराली, ज्यों प्राची की लाली है ।
आप समां सुत को जनकर के, खोली मुक्ति ताली है ।।1912।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. रिझा रही हैं सुर ललनाएँ, हाव भाव दिखला करके ।
प्रभु मेरु सम अडिग हैं मेरे, आत्मध्यान में रम करके ।।1913।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. नियम मेरा बस एक यही है, तव चरणों का दास बनूँ ।
अन्त समय में हृदय आप हों, चरणों के मैं पास रहूँ ।।1914।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. धौत कान्ति सम उज्ज्वल गुण हैं, तीन लोक को लाँघ रहे ।
परम शुक्ल लेश्या जिनवर जी, जिससे कर्म को काट रहे ।।1915।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मुक्ति अंगना आप सहेली, हृदयांगन में खेली है ।
नंत गुणों से हुई सुसज्जित, बन गई मेरी सहेली है ।।1916।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नीलम पन्ना माणिक मुक्ता, त्रय रत्नों से फीके हैं ।
ये भी चरणों में नत रहते, रत्नत्रय से जीते हैं ।।1917।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शब्द नहीं हैं मेरे भगवन्, मैं निश्शब्द अज्ञानी हूँ ।
गुरु ने जो भी पाठ पढ़ाया, उसका ही अनुगामी हूँ ।।1918।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मंत्र रूप स्तोत्र आपका, यंत्र रूप तव रूप अहा ।
जिसको लख पढ़कर के भविजन, बन जाते भव भूप यहाँ ।।1919।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ये आराधन का ही फल है, अर्हत् पद जो आप लहा ।
पुण्य फला अरिहन्ता ही तो, जिनमाता ने वाक्य कहा ।।1920।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. न मुझमें कुछ ज्ञान है जिनवर, ना ही गुण का धारी हूँ ।
चरणों में आ करूँ प्रार्थना, मैं तो भक्त पुजारी हूँ ।।1921।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मेरा यह उपयोग जिनेश्वर, तव गुण गान लगे हर पल ।
जब तक जीवन श्वास चले प्रभु, ध्यान करूँ तेरा प्रतिपल ।।1922।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. श्रद्धा और आस्था से ही तो, सिद्धालय मिल पाता है ।
श्रद्धालय निज हृदय बनाकर, भगवन् को फिर पाता है ।।1923।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. यमन करी हैं चार कषायें, दमन इन्द्रिय का कीना ।
नमन किया त्रययोग एक कर, पाया समकित का मीना ।।1924।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. णमोकार के प्रथम ही दो पद, जिनमें आप समाहित हैं ।
भविजन करते जाप इन्हीं का, पाते आतम का हित हैं ।।1925।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. गोधन गज धन और बाज धन, ये सब ही क्षणभंगुर हैं ।
प्रभु ज्ञान धन के आगे ये, होते सब नतमस्तक हैं ।।1926।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. चमक रही है बिजली देखो, कड़क रही है जोरों से ।
निज की नश्वरता नहिं जाने, टपक रही है औरों पे ।।1927।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रह नहिं पाते इक दूजे बिन, जैसे चाँद चकोरी हैं ।
वैसे ही मैं रह नहिं पाऊँ, पारस चाँद चकोरी मैं ।।1928।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वर्धताम् जिनशासन प्रभु का, रहे सदा जयवन्त यहाँ ।
धारे हृदय यहाँ जो भविजन, स्वयं बने अरहन्त यहाँ ।।1929।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. गरिमा जिनवर की गौरवमय, निज सौरभ दिलवाती है ।
गान करे जो भी भवि इसका, ज्ञानानन्द बनाती है ।।1930।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तोड़ चलूँ सब जग बन्धों को, निज को प्रभु से जोड़ चलूँ ।
मोड़ के मुख इस झूठे जग से, मुक्ति पथ की ओर चलूँ ।।1931।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि कह कर, लोरी मात सुनाती है ।
वे पा जाते निर अंजन पद, महिमा गौरी* गाती है ।।1932।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽसि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. आकर तेरे द्वार प्रभु अब, कहीं न मुझको जाना है ।
पाकर तेरे चरण कमल द्वय, कर समाधि तर जाना है ।।1933।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. कर्ण प्रिय है दिव्य ध्वनि तव, ऊँकारमय खिरती है ।
सात शतक अरु अठदश भाषा, में परिवर्तित होती है ।।1934।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कणिका आदिक रत्न चतुर्दश, चक्रवर्ती को प्राप्त हुये ।
वज्रनाभि के भव में तजकर, प्रभु तुमने व्रत धार लिये ।।1935।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेज आपका देख जिनेश्वर, सूर्य चाँद शरमा जायें ।
ऐसा लगता एक साथ ही, लाखों सूर्य दर्श पायें ।।1936।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. ऋतु बसन्त में कोमल कलिका, देख के कोयल गान करे ।
आप जहाँ पर पग धरते प्रभु, छहों ऋतु फल प्राप्त करें ।।1937।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तप की अग्नि जलायी प्रभु ने, देह बनायी कुण्ड समां ।
अष्ट कर्म का ईंधन उसमें, होम दिया प्रभु तुरत यहाँ ।।1938।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*जिनवाणी

35. वश में जो निज के हो जाता, वो जग को वश में करता।
वंश उसी का हो प्रसिद्ध तब, ध्वंस विधि का जो करता ।।1939।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. गोष्पद सम त्रय लोक झलकते, जिनके ज्ञान रूप दर्पण।
उन चरणों में नमन हमारा, श्रद्धा सुमन सदा अर्पण ।।1940।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यत्र तत्र सर्वत्र व्याप्त हैं, आप जिनेश्वर तीन भुवन।
करता हूँ स्तुति प्रभु तेरी, आप्त बनूँ मैं भी तुम सम ।।1941।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. पर परिणति में लिप्त हो प्राणी, निज परिणति को खो बैठा।
आप चरण में लिप्त हुआ जो, लोक शिखर पर जा बैठा ।।1942।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. विषयों की आशा नहिं जिनके, विरत कषायों से जो हैं।
सम्यक् श्रद्धानी ज्ञानी मुनि, ध्यान गुफा में शोभित हैं ।।1943।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. त्रय गुप्ति अरु पाँच समिति हैं, माता अष्ट कहाती है।
इनको जो भी धारे उर में, ज्ञानी उसे बनाती हैं ।।1944।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मन्द-मन्द मुस्कान प्रभु की, मन्द सुगन्धित जल बूँदें।
समवशरण में अति मनहारी, भवि आनन्दित हो गूँजें ।।1945।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रेधा योग से वन्दन करता, त्रय गुप्ति के धारी की।
अविनाशी अविकारी जिनवर, आतम बाग विहारी की ।।1946।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. किंकर्त्तव्य विमूढ़ हुआ तू, कर्त्तव्यों को भूला है।
इसीलिए तो लाख चुरासी, के चक्कर में झूला है ।।1947।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वातरसना* जब ध्यान में बैठें, रसना इन्द्रिय दमन करें।
रस ना आता उनको जग में, स्वातम रस का पान करें ।।1948।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विधि बतायी विधि नाशन की, विधिवत ध्यान मगन होके।
निधि प्राप्त की निज वैभव की, आत्म वतन में रह करके ।1949।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. पद्मासन से आप विराजे, पद्म के ही सिंहासन पर।
हृदय पद्म प्रभु आज खिलाया, आन बसो हृदयासन पर ।।1950।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. विरत कषायों से जो होकर, निरतिचार व्रत पाले हैं।
उनने ही तो राग द्वेष पर, शीघ्र लगाये ताले हैं ।।1951।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. षड्गुणी हानि वृद्धि सदा ही, होती है सब प्राणी में।
प्रभु आपकी परम शुद्धता, वर्णित है जिनवाणी में ।।1952।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धर्म देशना के अवसर पर, जिनवर का था जो ऐश्वर्य।
वैसा जग में नहीं दिखा है, कितना हो घर में ऐश्वर्य ।।1953।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. रीत आपने छोड़ी जग की, प्रीति करी हर प्राणी से।
दरश विशुद्धि भावना भायी, जो जग की कल्याणी है ।।1954।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सर्व सम्पदा प्राप्त करी जिन, और आप्त पदवी पायी।
हरी आपदा निज भक्तों की, गाथा जिनवाणी गायी ।।1955।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विरह सताता है भक्तों को, विरद् आप अपना देखो।
भक्त खड़ा है आश लगाये, अब तो प्रभु दर्शन दे दो ।।1956।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*मुनि

53. अधम् नीच अरु प्राणी हूँ मैं, जड़ बुद्धि मम रही सदा ।
अन्ध कूप से मुझे निकालो, मोह नहीं करूँ कभी कदा ।।1957।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. सहन शक्ति से भरदो भगवन्, भक्ति का भी वर दे दो ।
भक्ति करके मुक्ति पाऊँ, ऐसी प्रभु युक्ति दे दो ।।1958।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मेरा सुन लो एक निवेदन, हे करुणाधारी! भगवन् ।
मुक्तिपुर में करो बसेरा, हे उपकारी! नाथ जिनम् ।।1959।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिरस्कार नहिं होवे जग में, यह उपकार करो स्वामी ।
नमस्कार पद को पाऊँ मैं, यह उपहार वरो स्वामी ।।1960।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु वाणी मिली नहिं, नाम सुना नहिं, अत: विपद् नागिन घेरे।
हो प्रभु समीपता, नशे आपदा, अर्घ चढ़ा नशूँ भव फेरे।।

ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिगीरोअवारयाणं मणबलीणं।

सर्प वशीकरण

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव!
मन्ये मया महित–मीहित–दान–दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्।।36।।

गीतिका–छन्द

इच्छित फल के दाता पद द्वय, तेरे पूज न पाए हम,
हे प्रभु! ऐसा मान रहा हूँ, वरना क्यों रह जाते गम।
उर भेदी यह तिरस्कार इस, भव में क्यों हमको मिलता,
अगर पूजता चरण कमल को, तो इस अघ में क्यों जलता।।

वचोबलर्द्धि संप्राप्तान्, वाचा विश्वाङ्गपाठकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं वचोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – सृग्विणी

1. जन्म मरणादि रोग नशे आपने
और काषायिक भाव कसे आपने ।।
वीतरागी प्रभु नाथ पारस जिनम् ।
आपके द्वय चरण में विनम्र नमन् ।।1961।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. आप श्रीमान् थे मान सम्मान तज ।
आप धीमान् थे बोधि को प्राप्त कर ।। वीतरागी ...।।1962।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तप किया आपने न तपन भी हुई ।
ध्यान के योग से पायी मुक्ति मही ।। वीतरागी ...।।1963।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रेखा हाथों में ऐसी खिंची है मेरी ।
होगा तुमसे मिलन न रहेगी दूरी ।। वीतरागी ...।।1964।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. कोऽपि साथ मेरा नाथ देता नहीं ।
आपका साथ मिलता मुझे हर कहीं ।। वीतरागी ...।।1965।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तम हरा आपकी वाणी ने इस जगत ।
बन गई नाथ कल्याणी की बहु महर ।। वीतरागी ...।।1966।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वर्ण रागादि तन के हैं ये सर्व गुण ।
ज्ञान आदि कहे चेतना के सुगुण ।। वीतरागी ...।।1967।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. पाद पद्मों में मेरी यही प्रार्थना ।
दे दो संबल करूँ मुक्ति की साधना ।।
वीतरागी प्रभु नाथ पारस जिनम् ।
आपके द्वय चरण में विनम्र नमन् ।।1968।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. दर वदर न फिरूँ तेरे दर पर रहूँ ।
छोड़ संसार घर मुक्ति घर में रहूँ ।। वीतरागी ...।।1969।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. युद्ध करना यहाँ योद्धा का काम है ।
शुद्ध होना प्रभु पाना निज धाम है ।। वीतरागी ...।।1970।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. गंगा सिन्धु बही द्वय भरत क्षेत्र में ।
द्वय सखी सी चलीं दोनों निज क्षेत्र में ।। वीतरागी ...।।1971।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. नय तरंगों से युत भङ्ग सप्त कहे ।
सर्व द्रव्यों में जीव ही मुख्य रहे ।। वीतरागी ...।।1972।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. देव दानव सभी चरणों वन्दन करें ।
दिव्य ध्वनि पान कर आत्म रंजन करें ।। वीतरागी ...।।1973।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वन्दना वन्दना वन्दना जिनवरम् ।
तीन लोकों में जिनवर तुम्हीं हो परम् ।। वीतरागी ...।।1974।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मन्त्र का रूप है स्तोत्र यह आपका ।
पाठ से नाश होता है सब पाप का ।। वीतरागी ...।।1975।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ये नवों ही निधि आपने प्राप्त की ।
प्राप्त की आप संज्ञा प्रभु आप्त की ।। वीतरागी ...।।1976।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मम मति आपकी सङ्गति चाहती ।
आप दिखलाते हैं पाथ मुक्ति मही ।।
वीतरागी प्रभु नाथ पारस जिनम् ।
आपके द्वय चरण में विनम्र नमन् ।।1977।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यात्रा चलती मेरी नाथ संसार की ।
आप दिखलाते हैं राह परमार्थ की ।। वीतरागी ...।।1978।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. मन मयूरा नचे देखकर के प्रभो ।
मेघ बन कर बरसते हो भवि पर विभो ।। वीतरागी ...।।1979।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हित अहित का करे ज्ञान वो मन कहा ।
मन को पाकर बने ज्ञानी सुख है चखा ।। वीतरागी ...।।1980।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तप का मतलब नहीं देह दण्डन कहा ।
आत्म शोधन रहा लक्ष्य तप का महा ।। वीतरागी ...।।1981।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मीत बनना मेरे गीत गाऊँ तेरे ।
प्रीति की रीति जग को सुनाऊँ अरे ।। वीतरागी ...।।1982।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हित स्वयं का यहाँ चाहता जो भी है ।
राह चलता प्रभु की सदा वो ही है ।। वीतरागी ...।।1983।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तत्त्व और द्रव्य का मर्म जाना प्रभु ।
आपने सर्व जग को बताया विभु ।। वीतरागी ...।।1984।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. दाता हो मोक्ष के त्राता हो भक्त के ।
आपके अरु मेरे नाते हों रक्त के ।। वीतरागी ...।।1985।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. न मैं मानी बनूँ न ही दानी बनूँ ।
आप को जान लूँ इतना ज्ञानी बनूँ ।।
वीतरागी प्रभु नाथ पारस जिनम् ।
आपके द्वय चरण में विनम्र नमन् ।।1986।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दर्द गैरों का जाने स्वयं पीर हो ।
आके संसार में बस वही वीर हो ।। वीतरागी ...।।1987।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तत्त्व मोक्षं को ही आपने पा लिया ।
सिद्धपुर को स्वयं गृह बना ही लिया ।। वीतरागी ...।।1988।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तेरा-मेरा तजा आया हूँ द्वार पर ।
शीश हर क्षण झुकाऊँ प्रभु पाद पर ।। वीतरागी ...।।1989।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नेत्र से आप मुझको दिखे हो नहीं ।
जाके बैठे प्रभो आठवीं जो मही ।। वीतरागी ...।।1990।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हर कदम पर तेरा साथ है चाहिए ।
साथ देकर मेरा मोह नश जाइए ।। वीतरागी ...।।1991।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. जंग जीती प्रभु आपने अक्ष की ।
और पायी सफलता प्रभु मोक्ष की ।। वीतरागी ...।।1992।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मन्द मारुत चले गंध सुन्दर बहे ।
पाके सम्यक् भविक निज के अन्दर गये ।। वीतरागी ...।।1993।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. नित्य घटती है आयु सभी जीव की ।
फिर भी बढ़ती है इच्छा सदा जीव की ।। वीतरागी ...।।1994।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मुख कमल है खिला मुक्ति से जो मिला ।
टूटना ये नहीं चाहिए सिलसिला ।।
वीतरागी प्रभु नाथ पारस जिनम् ।
आपके द्वय चरण में विनम्र नमन् ।।1995।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नीर भरकर अमर क्षीर सागर का ले ।
आपका कर न्हवन हाथ गागर को ले ।। वीतरागी ...।।1996।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शक्ति मुझमें नहीं भक्ति कैसे करूँ ।
आप जैसी छवी नाथ कैसे वरूँ ।। वीतरागी ...।।1997।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. पद विहारी बनूँ बन के वन-वन फिरूँ ।
इस निजातम के बाग में नित संचरूँ ।। वीतरागी ...।।1998।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रात-दिन ध्यान करता प्रभु आपका ।
और परिणाम करता विभु आप सा ।। वीतरागी ...।।1999।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. भव्य जीवों के भगवन् तुम्हीं मीत हो ।
भक्त वो ही जिसे आप से प्रीति हो ।। वीतरागी ...।।2000।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वारिधि ज्ञान के ज्ञान वर दीजिए ।
आप ही नाथ उद्धार मम कीजिए ।। वीतरागी ...।।2001।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. भव्यानां प्रभू आप भगवन्त हो ।
मुक्ति पथ को दिखाते तुम्हीं सन्त हो ।। वीतरागी ...।।2002।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. जागो-जागो जगाते हैं सुरगण यहाँ ।
आये भगवन् बजाते हैं दुन्दुभि यहाँ ।। वीतरागी ...।।2003।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तोड़े कर्मों के बन्धन सभी आपने ।
नाथ करता हूँ अभिनन्दनं जाप से ।।
वीतरागी प्रभु नाथ पारस जिनम् ।
आपके द्वय चरण में विनम्र नमन् ।।2004।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नित्य गुणगान प्रभु जो करे आप का ।
कोश घट जाता उसका यहाँ पाप का ।। वीतरागी ...।।2005।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. केवलज्ञान है ज्योति प्रभु आप की ।
दूर तम को करे काटे जड़ पाप की ।। वीतरागी ...।।2006।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तज दिया है परिग्रह सभी आपने ।
शीघ्र पाया है जिनगृह विभो आपने ।। वीतरागी ...।।2007।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नम्र नयनों से कब मैं निहारूँ तुम्हें ।
हूँ विनम्र प्रभु अब दो दर्श हमें ।। वीतरागी ...।।2008।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मन्द मुस्कान प्रभु की मनोहर लगे ।
देख कर भव्य जन फूलों से खिल गये ।। वीतरागी ...।।2009।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. हंस सम ज्ञान हो सार को जो गहे ।
दूध का दूध पानी का पानी करे ।। वीतरागी ...।।2010।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. मम हरो सर्व संकट हे जिनवर! मेरे ।
दूर कर दो प्रभु सर्व भव के फेरे ।। वीतरागी ...।।2011।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. थिर हुए आप आतम में आतम को लख ।
अरु रहेंगे भी थिर नाथ सब काल तक ।। वीतरागी ...।।2012।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तारती नाथ की वाणी अमृत भरी ।
भारती श्रीमुखं से है जब भी खिरी ।।
वीतरागी प्रभु नाथ पारस जिनम् ।
आपके द्वय चरण में विनम्र नमन् ।।2013।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. शक्ति नंत प्रभु की जगत् सिद्ध है ।
परणी मुक्ति वधु जो स्वयं सिद्ध है ।। वीतरागी ...।।2014।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. याद में प्रभु की खोया तो रोया बहुत ।
स्वप्न में आपको पाके सोया बहुत ।। वीतरागी ...।।2015।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. जीवानाम् प्रतिपाल प्रभो आप हो ।
आप ही पाठ हो आप ही जाप हो ।। वीतरागी ...।।2016।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

नहिं पूज रचायी, पूरब भाई, इच्छित फल देने वाली।
अतएव दुखी हूँ, पार्श्व जजूँ हूँ, अर्घ चढ़ाऊँ भर थाली।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो बालवसीयरण कुसलाणं वचिबलीणं।

श्लोक नं.37

भूप मिलन तथा सम्मानदायक

नूनं न मोहतिमिरावृत लोचनेन,
पूर्वं विभो सकृदपि प्र–विलोकितोऽसि।
मर्मा विधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध गतयः कथ–मन्यथैते।।37।।

गीतिका–छन्द

गहन तिमिर मिथ्यात्व उदय से, अवलोकन नहिं तुम्हें किया,
निश्चिय से हे स्वामिन्! मेरा, मान रहा है स्वयं हिया।
दर्शन होते अगर तुम्हारे, कर्म बन्ध क्यों बढ़ जाता,
बहुत अनर्थों की जड़ दुख है, उर पर कैसे चढ़ पाता।।

कायबलर्द्धि संपन्नान्, वर्ष्यव्युत्सर्ग धारिण:।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – पद्धरि

1. नूतन जीवन मिलता सु आप, भव्यों का मिटता सभी पाप ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2017।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. नन्दन वन में करते विहार, निज निजानन्द रस की बहार ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2018।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. नयनाभिराम जिनवर महान, हैं आत्म गुणों की आप खान ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2019।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. मोही मदिरा को पीकर के, भूला निज मस्ती जीकर के ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2020।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. हरते भवि की भटकन जिनेश, करवा देते आनन्द भेंट ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2021।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तिल तुस के सम नहीं जगत चैन, नहिं सुने पार्श्व प्रभु के तू वैन ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2022।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. मिल गया मुझे ये प्रभु द्वार, अब निश्चित जाऊँ भव से पार ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2023।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. रागी विरागी में है अन्तर, जो होता है भू अरु अम्बर ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2024।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. वृष* को पाया तुमने जिनेश, नहिं कष्ट आपको होय लेश ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2025।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तरुवर अशोक तल शोभ रहे, भव्यों के मन को मोह रहे ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2026।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. लोकाग्र विराजे हो ऋषीश, तव चरणों में हम नमत शीश ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2027।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. चक्षु इन्द्रिय के वशीभूत, हो जाये पतंगा बलि पूत ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2028।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नेता हो प्रभु तुम तीन लोक, जेता हो इन्द्रिय आप एक ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2029।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नत मस्तक जो हो जाये चरण, वे करते हैं सिद्धि का वरण ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2030।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. है पूर्ण ज्ञानमय सूर्य उगा, शुद्धातम को लख बोध जगा ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2031।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वंद्य जनों से वंदनीय, हो पूज्य जनों से पूज्यनीय ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2032।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*धर्म

17. विचरण करते हो ज्ञान गगन, प्रभु महकाते हो शील सुमन ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2033।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. भोगी भोगों में सदा लीन, तत्त्वज्ञ योगी योगों प्रवीण ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2034।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. सम्पूर्ण लोक दिखें एक साथ, जैसे करतल पर रखी फाँक ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2035।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कृतकृत्य हो गये प्रभु आप, जप से कटते हैं सभी पाप ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2036।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दम खम तो मुझमें नहीं नाथ, मुक्तिपुर तक नहिं छूटे साथ ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2037।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पिछले भव का पुण्ययोग भला, प्रभु भक्ति का संयोग मिला ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2038।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रतिमा का योग प्रभु धार लिया, कर्मों का फिर संहार किया ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2039।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विनती करता हूँ एक नाथ, हर क्षण रहना प्रभु मेरे साथ ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2040।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लोहे को स्वर्ण बनाता जो, पारसमणि यहाँ कहलाता वो ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2041।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. किसको सुनाऊँ मैं आप व्यथा, नहिं कष्ट दूर करने की तथा* ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2042।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तोरण के द्वार बँधाये हैं, प्रभु पार्श्व आज घर आये हैं ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2043।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्रिनेत्रोऽसि पार्श्व जिनेश्वर हो, जग के पदार्थ प्रत्यक्ष अहो ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2044।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽसि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्रभु मर्त्य लोक से सिद्धालय, जाकर के बनाया निज आलय ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2045।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. माना प्रभु तुम हो निराकार, फिर भी छवि बनती बार-बार ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2046।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. विद्या और ज्ञान से पूर्ण भरो, मम विमल साधना पूर्ण करो ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2047।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. धोने आया प्रभु कर्म मैल, चलना चाहा प्रभु आप गैल ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2048।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विधि के विधाता हैं पार्श्व जिनम्, शिव पथ के दाता नाथ शुभम् ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2049।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. धुन लगी आज बस एक यही, पाऊँ शक्ति जो आप गही ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2050।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*ताकत

35. रथ धर्म का आप चलाया है, श्रावक साधु को बिठाया है ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2051।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. जनयन्ति धरा पर मात सुतं, पारस प्रभु सा बस एक सुतं ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2052।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तिहुँ लोक जीव वन्दन करते, प्रभु उनके भी बन्धन हरते ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2053।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. हित का उपदेश दिया महान, भवि तारण को तुम बने यान ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2054।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. माता वामा कहती हैं बात, बेटा वन जाना समय बाद ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2055।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मन मर्दन में प्रभु आप वीर, भक्तों को बँधाते आप धीर ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2056।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नर्तन चारों गति में कीना, चौरासी लख का दुःख बीना ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2057।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. निर्ग्रन्थाः ग्रन्थ से मुक्त हुए, निज आत्मानन्द से युक्त हुए ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2058।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्रोत्साहन पाकर गुरुवर का, भवि बाना पहने मुनिवर का ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2059।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. उद्यत् होता भवि भक्ति को, वह कदम बढ़ाता मुक्ति को ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2060।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. प्रतिमा तेरी इतनी सुन्दर, प्रभु तू होगा कितना सुन्दर ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2061।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. बंधु बांधव हो आप मेरे, विपरीत समय में साथ मेरे ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2062।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. धर लिया दिगम्बर वेष आप, नहिं रहा मोह का लेश नाम ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2063।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. गगनाङ्गन में करके विहार, भव्यों को दिया उपदेश हार ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2064।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तपती इस धूप में प्रभु छाया, चरणों में अर्पित सब माया ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2065।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. प्रायः प्रभु स्वप्न में दिखते हो, प्रत्यक्ष कभी नहिं होते हो ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2066।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. कर भेद ज्ञान को आत्मसात्, मम जीवन होवे नव प्रभात ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2067।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. थम जाये समय यह नाथ आज, तुम अरु हम होवें इक समाज ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2068।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सोना

53. मति सन्मति मेरी करो नाथ, मुक्ति पथ ले लो साथ–साथ।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2069।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. धन धन्य हो गये आज भाग्य, प्रभु पूजा से जागा है भाग्य।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2070।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. थैइ–थैइ नाचत आगे जु इन्द्र, अभिनन्दन करता जगत्वंद्य।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2071।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तेजोमय दिव्य वदन सु आप, लखते मिटते हैं सर्व पाप।
कर पार्श्व चरण में तू वन्दन, भव भव के मिट जायें क्रन्दन ।।2072।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

मोहान्ध में पड़कर, श्रद्धा भरकर, प्रभु दर्शन नहिं किया कभी।
नित कर्म सतायें, सुख हम चाहें, चरणों अर्घ चढ़ाएँ अभी।।

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वराज पयवसीयरण कुसलाणं कायबलीणं।

असह्य कष्ट निवारक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षतोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन बान्धव! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव शून्याः।।38।।

गीतिका–छन्द

दर्शन किया हमेशा पूजा, नाम सुना दिन में त्रय बार,
नहिं मालुम क्या बात रह गई, छूटा पिण्ड नहीं दुखधार।
मुझको लगता है यह भगवन्! आडम्बर मय करते काम,
भक्ति बिना अंधे होकर क्या, क्रिया दूर करती दुखधाम।।

क्षीर स्वादुमुनीन् वाचा, तर्पकान् क्षीरवन्नृणाम्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द–अडिल्ल

1. आगम वेत्ता भी प्रभुवर का अनुगमन करें।
आत्म सौख्य में रमण और चिन्तन करें।।
चिन्तामणि का चिंतन ही सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं ।।2073।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. कर्तव करना नित्य प्रभु बतलात हैं।
कर्तव ही तो हमें ऊर्ध्व ले जात हैं।। चिंतामणि ...।।2074।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. णिक्कम्मा कह करके तुम्हें बुलाते हैं।
णिक्कम्मा होने मुनि ध्यान लगाते हैं।। चिंतामणि ...।।2075।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तोड़ दिये हैं सब नाते रिश्ते यहाँ।
छोड़ दिये हैं पूर्व के सब किस्से यहाँ।। चिंतामणि ...।।2076।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. सर्वेऽपि प्रभु ज्ञान व्याप्त है आपका।
दर्शन अंध मिटाता है सब पाप का।। चिंतामणि ...।।2077।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. महातपस्वी तेजस्वी प्रभु पार्श्व हैं।
निशदिन निरखूँ तव मूरत को नाथ मैं।। चिंतामणि ...।।2078।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. हितकारी शुभ वचन सुनाये भव्य को।
संयम की चल राह पाये गन्तव्य को।। चिंतामणि ...।।2079।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तोड़ दिये हैं कर्म बन्ध जिनराज जी।
प्राप्त कर लिया मुक्ति का साम्राज्य भी।।
चिन्तामणि का चिंतन ही सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं ।।2080।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सिद्धोऽपि हो गये मोक्ष में नन्त जिन।
त्रय योगों से उनको वन्दें सन्त जन।। चिंतामणि ...।।2081।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. निजाधीन सुख पाने का ही लक्ष्य है।
रस्ता दिखलाने में प्रभुवर दक्ष हैं।। चिंतामणि ...।।2082।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. रीति भक्ति की जान गया हूँ आज मैं।
राह मुक्ति की चल कर आया नाथ मैं।। चिंतामणि ...।।2083।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. क्षित तल पर तुम सा नहिं दूजा है मिला।
नाथ आपने दिव्य वाणी का रस दिया।। चिंतामणि ...।।2084।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तोरण द्वार सजा कर बैठा आज हूँ।
आपने तोड़े कर्म बन्ध मैं साथ हूँ।। चिंतामणि ...।।2085।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. भवान्तरेऽपि नाथ आप का साथ हो।
आप की संगति में बीतें दिन रात हो।। चिंतामणि ...।।2086।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नूपुर की झनकार भी मनहारी लगे।
तव भक्ति में मग्न हो सुरललना नचें।। चिंतामणि ...।।2087।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ज्ञानं आप विभाति अन्य न देव में।
मणि में होती चमक न वैसी काँच में।। चिंतामणि ...।।2088।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नर भव अपना सफल आज कर लीजिए।
जिनवर ने बतलाया पथ चल लीजिए ।।
चिन्तामणि का चिंतन ही सुखकारी है ।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं ।।2089।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. चेतो चेतन प्रभुवर तुम्हें जगा रहे ।
कर लो निज से भेंट तुम्हें समझा रहे ।। चिंतामणि ...।।2090।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तन है धरोहर मानो यह श्मशान की ।
चेतन एक धरोहर आतम ज्ञान की ।। चिंतामणि ...।।2091।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सिद्ध शिला पर जाय विराजे आप हैं ।
अन्तर्मन से देख के करते जाप हैं ।। चिंतामणि ...।।2092।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मन आँगन में आन विराजो पार्श्व प्रभु ।
मम आतम हो जाये शुद्ध साजो विभु ।। चिंतामणि ...।।2093।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. याम आठों ही लूँ जिनवर का नाम मैं ।
लगा रहूँ हरपल बस इस ही काम में ।। चिंतामणि ...।।2094।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विमल विराग विनम्र मेरे परिणाम हों ।
हो विशुद्ध पाऊँ निज चेतन धाम को ।। चिंतामणि ...।।2095।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. धृति आदिक देवी आकर सेवा करें ।
वामा माँ से नई शंका मुख उच्चरें ।। चिंतामणि ...।।2096।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तोष बँधाया है तुमने भवि जीव को ।
होश में लाकर पथ की दी संजीव को ।। चिंतामणि ...।।2097।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. निरञ्जनोऽसि आप यहाँ जिनराज हैं ।
भक्तों के बन गये आप सरताज हैं ।।
चिन्तामणि का चिंतन ही सुखकारी है ।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं ।।2098।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽसि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भक्ति में जब भक्त यहाँ तल्लीन हो ।
उसके सारे पाप कर्म क्षण क्षीण हों ।। चिंतामणि ...।।2099।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्याग धर्म ही जिनवर की पहिचान है ।
जैन धर्म में त्याग ही सच्ची जान है ।। चिंतामणि ...।।2100।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जागो रे चेतन प्रभु तुमको जगा रहे ।
जो चरणों आया उसके दुःख भगा रहे ।। चिंतामणि ...।।2101।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तोषक-पोषक हैं जग में जिनराज ही ।
भव्यजनों के सन्तोषक प्रभु आप ही ।। चिंतामणि ...।।2102।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. विनतोऽस्मि द्वय हाथ जोड़ वन्दन करूँ ।
मोक्षपुरी में जाय नाथ नन्दन करूँ ।। चिंतामणि ...।।2103।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽस्मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरा-मेरा एक वतन यह जानियाँ ।
स्वातम रस है तुम जैसा पहिचानियाँ ।। चिंतामणि ...।।2104।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. नरकादिक पर्याय अनन्तों बार लही ।
एक बार बस प्रभु पाऊँ मुक्ति मही ।। चिंतामणि ...।।2105।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जग में जन्म जरा मृत्यु दुखकार है ।
प्रभु के चरणों जन्म मिला सुखकार ।। चिंतामणि ...।।2106।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नमो नमो कहकर के शब्द उच्चारिये ।
परमातम से होय मिलन ये विचारिये ।।
चिन्तामणि का चिंतन ही सुखकारी है ।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं ।।2107।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. बान्धव आदिक सुख में ही सब साथ हैं ।
दु:ख में वे सब अपनी जान बचात हैं ।। चिंतामणि ...।।2108।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. धर उर समता भाव सामायिक कीजिए ।
घड़ी दोय पिकनिक का आनन्द लीजिए ।। चिंतामणि ...।।2109।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. वसु विधि कर्म नशाने का प्रण कीजिए ।
वसु विधि द्रव्य का लेय थाल प्रभु पूजिए ।। चिंतामणि ...।।2110।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दु:खांकुर का दलन नाथ कर दीजिए ।
सुख का अंकुर फूटे बीज वह दीजिए ।। चिंतामणि ...।।2111।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. खरा उतरना नाथ धरा पर है मुझे ।
जरा जन्म अरु मरण को नशना है मुझे ।। चिंतामणि ...।।2112।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पान किया वचनामृत का जब भव्य ने ।
मान लिया आतम अमृत को सद्य में ।। चिंतामणि ...।।2113।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मंत्रं चौरासी लख का जो जनक है ।
णमोकार उस महामन्त्र को नमत हैं ।। चिंतामणि ...।।2114।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यस्य हृदय में बैठे जिनवर आप हैं ।।
तस्य पलायन करते क्षण में पाप हैं ।। चिंतामणि ...।।2115।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मात्सर्य का भाव बहुत दुखदायी है ।
प्रभु चरणों में आज ये सन्मति पायी है ।।
चिन्तामणि का चिंतन ही सुखकारी है ।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं ।।2116।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. क्रिया यदि हो भाव शून्यं नहिं फल मिले ।
भाव सहित हो क्रिया तो शिव मंजिल मिले ।। चिंतामणि ...।।2117।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. दया: क्षमा की मूरत जिनवर आप हो ।
यंत्र मंत्र अरु तंत्र तुम्हीं तो जाप हो ।। चिंतामणि ...।।2118।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. प्रण करता हूँ आज जिनेश्वर शरण में ।
मरण समय तक नहिं छोड़ूँ गुरु चरण मैं ।। चिंतामणि ...।।2119।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिरने का यदि भाव? परिग्रह छोड़िए ।
प्रभु चरणों से नेह हमेशा जोड़िए ।। चिंतामणि ...।।2120।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. फल की इच्छा मत करना इंसान रे ।
कर्म किये जा यह गीता का ज्ञान रे ।। चिंतामणि ...।।2121।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "फं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लम्बी आयु को पाना यदि चाहते ।
अपनी इच्छाओं को यहीं पै मार दे ।। चिंतामणि ...।।2122।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तिष्ठ-तिष्ठ प्रभु पार्श्व जिनेश्वर हूजिए ।
हृदयासन पर बिठा प्रभु को पूजिए ।। चिंतामणि ...।।2123।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नमन हजारों बार है पारस चरण में ।
जिनवर की जयकार भी गूँजे गगन में ।। चिंतामणि ...।।2124।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53.. भामण्डल की अतिशय महिमा जानिये।
अपने सप्त भवों को भी पहिचानिये ।।
चिन्तामणि का चिंतन ही सुखकारी है।
विघ्न और बाधाएँ मिटती सारी हैं ।।2125।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. वश में इन्द्रिय अरु मन को कर लीजिए।
सद्य चतुष्टय नंत आप वर लीजिए ।। चिंतामणि ...।।2126।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. शून्य रूप हैं आप जगत पहिचानता।
फिर भी नंत सुखों की खान ये जानता ।। चिंतामणि ...।।2127।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शून्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. धन्याः हैं वे जीव जो तप को धारते।
तप से तपा-तपाकर कर्म को जारते*।। चिंतामणि ...।।2128।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्याः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु नाम को गाया, पूज रचाया, किन्तु हृदय में न लाया।
यह भाव शून्य कृत, नहीं फले अब, भाव से अर्घ बना लाया।।

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनमाध्यस्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो दुस्सहकट्ठणिवारयाणं खीरसवीणं।

श्लोक नं.39

सर्व ज्वर शामक

त्वं नाथ! दुःखि जन वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य पुण्य वसते! वशिनां वरेण्य!
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय,
दुःखांकरोद्दलन तत्परतां विधेहि।।39।।

दीपिका-छन्द

हे प्रभु! प्रेमी दुखियों के तुम, शरणागत करुणामय आप,
इन्द्रिय विजयी श्रेष्ठ जिनेश्वर! तुम्हें कौन छू सकता पाप।
हुआ विनम्र तुम्हारी भक्ति, दया करो मेरे भगवान,
सभी दुखों को शीघ्र नाशकर, मुझको वर दो शिवमय थान।।

सर्पि: स्वादुयतीन् वाण्या, घृतवत् सौख्यदान् सताम्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्पि: स्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

छन्द – चाल शेर (हे दीन बन्धु...)

1. त्वं नाथ जन्म से ही दश अतिशय को हैं धरे।
निर्मल स्वरूप आपका सविनय नमन करें ।।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ ।
अक्षय अनंत सौख्य पाने नाम को जपूँ ।।2129।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. ना कोई आप जैसा वीतरागी है यहाँ ।
अतएव छोड़ आपको अब जाऊँ मैं कहाँ? तेईसवें ...।।2130।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. थम करके आत्म ध्यान में निज सार पाया है।
जो आपको ध्याता वही भव पार जाता है ।। तेईसवें ...।।2131।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. दु:ख नाशने के हेतु नाथ परम मन्त्र हैं ।
वचनावली है औषधि अरु देह यन्त्र है ।। तेईसवें ...।।2132।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. खिलती है हृदय की कली जो सुप्त सी यहाँ।
मिलती है आप सन्निधी भव्यों को जब यहाँ ।। तेईसवें ...।।2133।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. जलती है ज्ञान ज्योति भी खिलती है चेतना।
जब तत्त्वों का विवेचन होवे दिव्य देशना ।। तेईसवें ...।।2134।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नमने के योग्य आप ही प्रभु ध्यान योग्य हैं।
सौभाग्य से विधान का पाया सुयोग है ।। तेईसवें ...।।2135।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वत्सल्य भाव आपका जग में प्रसिद्ध है ।
जो धारता हृदय में वो ही बनता सिद्ध है ।।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ ।
अक्षय अनंत सौख्य पाने नाम को जपूँ ।।2136।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सत्पथ दिखाया आपने युगपत् जगत को देख।
श्रद्धा हृदय में धारता भवि आत्मा को लेख ।। तेईसवें ...।।2137।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. लघुता से प्राप्त होती है प्रभुता कहा जिनम् ।
तव सामने आकर के भक्त करता है नमन् ।। तेईसवें ...।।2138।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. हे पूज्य! भवि आपको करते प्रणाम हैं ।
ज्ञानी व ध्यानियों में आप ही प्रधान हैं ।। तेईसवें ...।।2139।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शरणागति में जो भी आये प्राप्त फल करे ।
वह राग रोग छोड़कर वैराग्य को वरे ।। तेईसवें ...।।2140।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रंग मंच है संसार जीव कलाकार है ।
पाया यहीं से भव्य ने मुक्ति का द्वार है ।। तेईसवें ...।।2141।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. यम भी यहाँ जिनराज से डर कर के भागता ।
मृत्युञ्जयी के सामने थर-थर है काँपता ।। तेईसवें ...।।2142।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कामाग्नि में यह जीव नंत काल बिताये ।
ध्याग्नि में जो बैठे सारे कर्म नशाये ।। तेईसवें ...।।2143।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. कारुण्य आदि गुण हैं नंत आप भण्डारी ।
मैंने अनादि काल से दु:ख भुगते हैं भारी ।। तेईसवें ...।।2144।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रुण्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. यम जीत आपने विजय का बिगुल बजाया ।
वसु कर्म सैन्य को प्रभु ने पल में हराया ।।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ ।
अक्षय अनंत सौख्य पाने नाम को जपूँ ।।2145।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पुण्य-पाप का ही खेल सर्व जगत में दिखे ।
इन दोनों को ही नाश प्रभु मोक्ष में टिके ।। तेईसवें ...।।2146।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. यम और नियम पाठ प्रभु आप पढ़ाया ।
श्रद्धा से किया पालना तो पुण्य कमाया ।। तेईसवें ...।।2147।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. है वर्द्धमान शासन जिनराज आपका ।
सुखकारी है हितकारी प्रभु ध्यान आपका ।। तेईसवें ...।।2148।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. सम्यक् के साथ ज्ञान चरित की कली खिली ।
भवि जीव को प्रभु आपसे मुक्ति गली मिली ।। तेईसवें ...।।2149।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेरह विधि चारित्र का बखान किया है ।
तेरा है जो भी पंथ वो ही मैंने जिया है ।। तेईसवें ...।।2150।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. वर्णाभरण को त्याग प्रभु तप को धर लिया ।
सोलह प्रकार भावना से तीर्थ पद लिया ।। तेईसवें ...।।2151।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शिवगामी हो पारस जिनम् शिवधाम जा बसे ।
त्रैलोक्य के प्राणी भी आप चरण को जजें ।। तेईसवें ...।।2152।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. ज्ञानाञ्जलि का पान करके शान्त हो रहे ।
भावाञ्जलि से शुद्ध आत्म तत्त्व पा रहे ।। तेईसवें ...।।2153।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वर दे दिया प्रभु आप अभिशाप नहिं दिया ।
हे वीतरागी! कमठ को भी माफ कर दिया ।।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ ।
अक्षय अनंत सौख्य पाने नाम को जपूँ ।।2154।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रे मन! तू आज अपना भी तो भला सोच ले ।
नरभव गँवाता क्यूँ है जरा ध्यान तो दे ले ।। तेईसवें ...।।2155।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. गण्य जन से वन्द्य आप दर्श है कठिन ।
मुझको बुला लो पास प्रभु बाल निवेदन ।। तेईसवें ...।।2156।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. भक्ति के पात्र में मेरी विरागता भरो ।
आया हूँ शरण में तेरी सब कर्म को हरो ।। तेईसवें ...।।2157।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. त्यागोत्सव में आपके सब देव आये थे ।
अनुमोदना के हेतु लौकान्तिक भी आये थे ।। तेईसवें ...।।2158।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नयनों से आप दिव्य छवि को निहारा है ।
श्रद्धा से आप आज्ञा को सिर पर ही धारा है ।। तेईसवें ...।।2159।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32.. तेरा ही नाम ले के जीवन सौंपा है तुझे ।
. अब मोक्ष भवन तक बढ़ाना नाथ तुम मुझे ।। तेईसवें ...।।2160।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मद मोह राग आग में तू मत झुलस यहाँ ।
आ जा प्रभु की शर्ण ज्ञान सिन्धु है यहाँ ।। तेईसवें ...।।2161।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. क्षायिक है ज्ञान आपका क्षायिक ही दर्श है ।
प्रभु आप शरण में ही होता क्षायिक दर्श है ।। तेईसवें ...।।2162।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मधुवन के उच्च शिखर से मुक्ति को पधारे।
आते हैं दर्श हेतु भक्त श्रद्धा को धारे ॥
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ ।
अक्षय अनंत सौख्य पाने नाम को जपूँ ॥2163॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हे नाथ! आप गुण की महिमा कैसे गाऊँ मैं।
हैं आप दूर सात राजू कैसे पाऊँ मैं ॥ तेईसवें ...॥2164॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शम दम नियम और यम से कर्म नष्ट कर दिये।
होकर विदेही भक्त हृदय वास कर लिये ॥ तेईसवें ...॥2165॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दल बल को लेक देव-देवी पूजते यहाँ ।
जिनमन्दिरों में मधुर स्वर हैं गूँजते यहाँ ॥ तेईसवें ...॥2166॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. त्रय्यां शुद्धि करके जो भी अर्चना करे ।
आतम विशुद्धि पाय के शिवललना को वरे ॥ तेईसवें ...॥2167॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विद्याधिपति भी आके अर्चा आपकी करें ।
हलधर अशनधर मिलके चर्चा आपकी करें ॥ तेईसवें ...॥2168॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. धाता विधाता आप हो शिव धाम पा लिया ।
मम पुण्य उदय आया जो गुणगान गा लिया ॥ तेईसवें ...॥2169॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यम जीतने को आपने था बिगुल बजाया ।
वसु कर्म सैन्य को प्रभु क्षण भर में मिटाया ॥ तेईसवें ...॥2170॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दुःखाङ्कुरों का दलन नाथ आज कीजिए ।
तीर्थंकरों से मिलन हो वो राज दीजिए ॥ तेईसवें ...॥2171॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. खाली थी झोली मेरी आज आपने भरी ।
दर्शन की महर करके पूर्ण साधना करी ॥
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ ।
अक्षय अनंत सौख्य पाने नाम को जपूँ ॥2172॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. शङ्कर हो आप सबको सौख्य बाँटते यहाँ ।
किङ्कर ही बनके चरण में बैठा रहूँ यहाँ ॥ तेईसवें ...॥2173॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ङ्क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रोमाञ्च खिलता देह में प्रभु दर्श जब मिले ।
सौख्यांश बढ़ता आत्मा का पर्श जब मिले ॥ तेईसवें ...॥2174॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सद्दर्शनं प्रभु का है सौभाग्य से मिला ।
निज दर्श कर के मुक्ति का हो शुरु सिलसिला ॥ तेईसवें ...॥2175॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. लवलीन हुए ध्यान में चउ कर्म नश दिए ।
सर्वज्ञ बोध वीतरागता को पा लिए ॥ तेईसवें ...॥2176॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नन्हा सा बाल आपसे अनुनय विनय करे ।
दो ऐसा बोध नाथ जो कर्मों का क्षय करे ॥ तेईसवें ...॥2177॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तत्त्वार्थ का उपदेश नाथ जगत को दिया ।
जिसने भी धारा हृदय बोध को है वर लिया ॥ तेईसवें ...॥2178॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. परम स्वभाव पाने को परमार्थ पर चले ।
पर भाव त्याग करके आत्मार्थी बन चले ॥ तेईसवें ...॥2179॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रहते हैं सिद्धधाम जहाँ नंत सिद्ध हैं ।
अविरुद्ध सिद्ध देह रहित सर्व शुद्ध हैं ॥ तेईसवें ...॥2180॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53.. जगतां नाथ आप सिद्धि पद को दिलाते ।
भवितां आप भक्त को शिव पद हो दिलाते ।।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ ।
अक्षय अनंत सौख्य पाने नाम को जपूँ ।।2181।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. विधिवद् विधान करने से विधि भी बदल डाली ।
प्रभु आपकी भक्ति से मुक्ति की मिली ताली ।। तेईसवें ...।।2182।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. धेनु औ कामधेनु में जितना दिखे अन्तर ।
उतना ही दिखता जैन औ जिनराज में अन्तर ।। तेईसवें ...।।2183।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. हितकारी होते जिन वचन तीर्थेश आपके ।
श्रोता भी होते हैं मगन सुनकर के भाव से ।। तेईसवें ...।।2184।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त"हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

हे दुख नाशक जिन! नम्र निवेदन, सुन मम कष्ट मिटा देना।
हे दयाशील जिन! अर्घ है अर्पन, अपना नाथ बना लेना।।

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वजर संतिकरणाणं सप्पिसवीणं।

श्लोक नं.40

विषम ज्वर विनाशक

नि:संख्य सार शरणं–शरणं शरण्य–
मासाद्य सादित रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद–पंकजमपि प्रणिधान वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।40।।

गीतिका–छन्द

पावन भुवन! सभी प्राणी के, त्राता! प्रतिपालक! हो आप,
कर्म शत्रु को नाशन हारे, महाशक्तिमय मेरी जाप।
चरण कमल तेरे द्वय पाकर, नहीं कर रहा हूँ मैं ध्यान,
निष्फल जन्म जा रहा मेरा, बहुत अभागा दुख बदनाम।।

मुनीन्द्रान् मधुरास्वादून्, खाण्डवत् तृप्तिदान् विदः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं मधुरस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द-चाल

1. निःशङ्कित अंग है गाया, जिनमाता ने बतलाया ।
इसको जो हृदय बसाये, समदृष्टि वो कहलाए ।।2185।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. सार पाना अति असंभव, पारस भक्ति से संभव ।
बिन माँगे सब मिल जाता, सुख संपत्ति भक्त है पाता ।।2186।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. सौख्य अतीन्द्रिय है पाया, निज आतम रस है भाया ।
इसलिए आपने जिनवर, वसु कर्मों को है नशाया ।।2187।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. सारे दर छोड़ के आया, जिनवर के दर को पाया ।
हे वेष दिगम्बर धारी, निर्दोष तुम्हें ही पाया ।।2188।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रसरज से रहित जिनेश्वर, गुण नंत सहित परमेश्वर ।
धन्य हो गये आप महेश्वर, हम पूजें पद प्राणेश्वर ।।2189।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. शत-शत चरणों में वन्दन, हे वामा माँ के नन्दन!
मैं आया शरण तुम्हारी, सब मैंटो भव के फन्दन ।।2190।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. रग रग में आप बसे हो, रंग रूप से रहित सजे हो ।
हे सिद्ध स्वरूपी भगवन्! भक्तों के हृदय बसे हो ।।2191।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. णाणं णाणी को नमन है, मम हृदय बसे दो चरण हैं ।
हे शाश्वत सुख के धारी! अविचल अभिनव अविकारी ।।2192।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. शम दम से नाथ सजे हो, शक्ति अनंत से भरे हो ।
है भक्त भावना इतनी, शक्ति वरो अपने जितनी ।।2193।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रटना दिन-रात लगायी, हे पार्श्व प्रभु जिनरायी!
मम उर में आन विराजो, मम मन समकित से साजो ।।2194।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. अरिहंताणं पद गाया, वन्दन जग के जिनराया ।
हैं नंत चतुष्टय धारी, तिन चरणों धोक हमारी ।।2195।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शरणा अरिहन्त गहे जो, शत्रु का हनन करे वो ।
हे निर्भय! निडर बने वो, तव चरणों पूज रचे जो ।।2196।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रमता जोगी निज आतम, बहता पानी मनभावन ।
दोनों ही शुद्ध कहे हैं, निज परिणति में ही रमे हैं ।।2197।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. कारुण्य भाव के धारी, मुनिवर समकित व्रतचारी ।
कलिकाल के हैं आश्चर्य, धन धन्य श्री मुनिवर्य ।।2198।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. माला फेरी जुग-जुग से, नहिं फेरा मन को मन से ।
काँचन से मन को हटाओ, पारस से मन को लगाओ ।।2199।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. साधन से साध्य मिले हैं, समता के सुमन खिले हैं।
मम साध्यभूत मुक्ति है, प्रभु ने दी यह युक्ति है ।।2200।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. गद्यं को पद्य बनाकर, गुणगान करूँ गुणसागर ।
भक्ति का फल यह चाहूँ, गुण से भर दो मम गागर ।।2201।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. संसार लखा जिनवर ने, उसमें से सार को वरने ।
संसार में सार निकाला, शिवललना डालती माला ।।2202।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दिन-रात सुबह अरु शाम, यह काम हो आठों याम ।
हो प्रभु नाम का सुमरन, चाहे जीवन की हो शाम ।।2203।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तप त्याग की तुम मूरत हो, तन्मयता की सूरत हो ।
जो करे प्रभु गुणगान, वो पाये लक्ष्य महान ।।2204।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रितु छहों के फल हैं पाये, जिनवर जी जहाँ पर आये ।
हो चारों ओर सुकाल, सब जग हो मालामाल ।।2205।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पुण्य योग उदय में आया, शुभयोग गुरु का पाया ।
हों विमल मेरे परिणाम, गुरु विनम्र के शुभ धाम ।।2206।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रकटी जब हैं नव निधियाँ, मुक्ति की दिख गईं गलियाँ ।
तुम्हें समवशरण में पाकर, हर्षी भक्तों की अँखियाँ ।।2207।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. थिरकन पैरों में आयी, छवि लखी पार्श्व जिनरायी ।
ताण्डव सौधर्म किया था, भक्ति से सजा जिया था ।।2208।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. ताज पहिना मोह का जिसने, मोहताज बनाया उसने ।
अब प्यारे मोह को त्याग, पहिनो सिर मोक्ष का ताज ।।2209।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वन में हो या हो भवन में, काँटों में या हो चमन में ।
समता को रखना साथ, बनना तुम जग सम्राट् ।।2210।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दाता तुम सा नहिं कोई, देते जो न कोई देई ।
याचक प्रभु आन खड़ा है, दाता का हृदय बड़ा है ।।2211।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नम्बर तेईस पै आते, ते आप ईश कहलाते ।
हे नम्य! पार्श्व जिनरायी, इन्द्राणी शीश नवायी ।।2212।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वत् पाद पदन की अर्चा, बन गई है धर्म की चर्चा ।
भवि की भटकन है मिटाती, शाश्वत सुख को दिलवाती ।।2213।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पावन मम हृदय हुआ है, सुमरन प्रभु नाम किया है ।
थे जन्म-जन्म के पाप, नस गये सब अपने आप ।।2214।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दश धर्म के धारी होते, जिन धर्म प्रचारी होते ।
हैं मुनिवर जग में निराले, खोलें मुक्ति के ताले ।।2215।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पङ्कज बनूँ पङ्क नहीं मैं, राजा बनूँ रङ्क नहीं मैं ।
प्रभु भक्ति करे निहाल, भवि को करे मालामाल ।।2216।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कब से मैं भटक रहा हूँ, विकलप में उलझ गया हूँ ।
बनूँ नन्त गुणों का धारी, मिले वीतराग सुखकारी ।।2217।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जड़ चेतन का जो नाता, देता है जग में असाता ।
जड़ स्वरूप जान के चेतन, पा जाती आतम का धन ।।2218।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मन प्रभु गुण में जब लगता, जिन सम निज आतम लखता।
प्रभु राग रहित मैं रागी, बनने आया वैरागी ।।2219।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पितु अश्वसेन के नन्दन, तुमको सर्वस्व समर्पण ।
मुझको शिवमहल बुला लो, है भक्त खरा अपना लो ।।2220।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रस्तोता हो शिवमग के, वैराग्य वदन से छलके ।
सिद्धालय राज करें हैं, सुख अव्याबाध लहे हैं ।।2221।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. णिम्मल गुण गण के धारी, चरणों में धोक हमारी ।
स्व पर स्वरूप को जाना, दोषों का नहीं ठिकाना ।।2222।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. धारा प्रवाह जो वाणी, होती है जग कल्याणी ।
ना श्रेष्ठ जगत में तुमसा, मैं नमूँ वचन तन मनसा ।।2223।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. नमो नमः पार्श्व जिन स्वामी, हो परम वन्द्य जगनामी ।
झुक जाऊँ आज चरण में, रख लो मुझे प्रभु शरण में ।।2224।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वन्दन करते जो शिखर का, ऊँचे सम्मेद गिरि का ।
नमूँ आय स्वर्णभद्र कूट, जाऊँ बन्धन से छूट ।।2225।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वन्ध्योऽस्मि* नाथ हुआ हूँ, जिनवर पद में नहीं नमा हूँ।
हे बड़भागी! भगवान, कर दो मेरा कल्याण।।2226।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. वन्दन तेरा सुखदायी, बन्ध काट दिये जिनरायी ।
है जो महात्मय प्रभु तेरा, वैसा ही होवे मेरा ।।2227।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*अभागा हूँ

44. वन्ध्यो* जो निज आनन्द, उसके भव दुःख हैं अनंत ।
छोड़ो जग के सब द्वन्द्व, बन जाओ तुम अरहन्त ।।2228।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विनतोऽस्मि प्रभु चरणों में, चलता हूँ शिव डगरों में ।
मुझे राह दिखाना स्वामी, शिव शौख्य वरो सुखधामी ।।2229।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽस्मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. चेतो चेतन अब सोचो, अपनी कषाय को मोचो ।
कहते हैं पार्श्व जिनेशम्, कर लो अपना भव उत्तम ।।2230।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. अद्भुत प्रभु की महिमा है, गुण गण की ही गरिमा है।
जो महिमा गान करेगा, वह शिवसुख धाम वरेगा ।।2231।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वसुधा छोड़े वसु कर्म, निज धर्म का पाया मर्म ।
श्रद्धा से प्रभु निहारो, तुम अपनो जन्म सुधारो ।।2232।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नभ में तारे हैं असंख, है चन्द्र बिम्ब इक अंक ।
हम सब प्रभु के हैं तारे, तुम चन्द्र बिम्ब हो हमारे ।।2233।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पाषाण को प्रतिमा करता, शिल्पी जिन मूरत गढ़ता ।
हे शिल्पराज! जगनामी, निज मूरत दो मुझे स्वामी ।।2234।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वर ली प्रभु ने शिवनारी, हुए नंत काल को सुखारी ।
पुलकित हुई सृष्टि सारी, जय हो जय हो त्रिपुरारी ।।2235।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नहिं कुछ भी मैं यहाँ जानूँ, प्रभु महिमा ना पहिचानूँ।
हूँ अल्पमति मैं स्वामी, वरो पूर्णज्ञान अभिरामी ।।2236।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*रहित

53. हारूँ या जीतूँ स्वामी, तव चरणों सब ही धरामि ।
गर हार गया तव हाँसी, अरु जीता तो पद वासी ।।2237।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. हरषे मम तन अरुमन है, खिल गया आज चेतन है ।
हो गये पार्श्व शिवधामी, वन्दन अगणित जगनामी ।।2238।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. तोड़ीं कितनी मालाएँ, फोड़ी कितनी मटिकाएँ ।
प्रभु तोड़ दिए जग बन्धन, फोड़े कर्मों के फन्दन ।।2239।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. विनतोऽस्मि चरण हुआ हूँ, त्रय योग से नमन किया हूँ।
मैं करूँ स्तवन जिनराया, सिद्धालय है मन भाया ।।2240।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽस्मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

पद पंकज पाये, गुण ना गाये, भाग्यहीन ही बना रहा।
कर्मों से हारा, प्रभु सहारा, चरणों अर्घ मैं चढ़ा रहा।।

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक पदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हसीय बाह विणासणाणं महुसवीणं।

श्लोक नं.41

अस्त्र शस्त्र विघातक

देवेन्द्र वन्द्य! विदिताखिल वस्तुसार!
संसार तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!
त्रायस्व देव! करुणा ह्रद! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद–व्यसनाम्बु राशेः।।41।।

गीतिका–छन्द

इन्द्रों से तुम वन्दनीय प्रभु! तत्त्व रहस्य सभी ज्ञाता,
हे प्रभु! भव में खेवटिया तुम, तीन लोक तुमको गाता।
दया सरोवर! भुवनेश्वर जिन! मेरी तड़पन दूर करो,
मुझे बचाओ दुख सागर से, पावनता को शीघ्र वरो।।

यतीन्द्रानमृत स्वादून्, सुधावत् स्वादुभोगिनः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमृत स्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द – रेखता

1. देवों के देव हो जिनवर, दिव्यता आप देते हो ।
करे चरणों की जो सेवा, मेवा उसको ही देते हो ।।2241।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. देवेन्द्र और मुनिगण भी, ध्यान हैं आपका ध्याते ।
करें अर्पण समर्पण भी, बाद में मुक्ति को पाते ।।2242।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वें" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. द्रव्य आठों को लेकर के, भाव भक्ति से भर कर के ।
पार्श्व चरणों में अर्पित कर, चलूँ मैं मुक्ति के पथ पे ।।2243।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. वंश इक्ष्वाकु जिनवर का, जगत में पूज्य कहलाया ।
जन्म लेकर प्रभुवर ने, मार्ग मुक्ति का अपनाया ।।2244।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. वन्द्यता आपने पायी, बन्ध को नाश करके जिन ।
दिव्यता आपने पायी, देवों से पूज्य होकर जिन ।।2245।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. विघ्न सब नाश होते हैं, जिनेश्वर ध्यान करने से ।
वो आतम शुद्ध भी होता, दिव्य धुनि पान करने से ।।2246।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. दिवाकर ने दिखाया है, देखने योग्य वस्तु को ।
नाथ तुमने बताया है, दृश्य अदृश्य वस्तु को ।।2247।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तास के पत्ते बावन हैं, उनमें है इक्का बलशाली ।
वैसे ही एक आतम है, सभी कर्मों पै जो भारी ।।2248।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. खिरती वचनावली प्रभु की, वाणी ऊँकारी कहलाती ।
सुनके कल्याण कर लेते, लाखों नर और संग नारी ।।2249।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. लक्ष्य अपना बनाया है, पार्श्व प्रभु को ही ध्याया है ।
निजातम एक अपना है, बाकी जग झूठी माया है ।।2250।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वस्त्र अम्बर बनाये हैं, शेष सब त्याग आये हैं ।
दिगम्बर वेष पाये हैं, तभी विधि को नशाये हैं ।।2251।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. तुम्हीं हर श्वास में मेरी, तुम्हीं धड़कन समाये हो ।
भँवर में जो पड़ी नैया, उसी के तुम किनारे हो ।।2252।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. साधना नित करूँ जिनवर, साध्य को ध्यान में रखकर ।
लक्ष्य मिल जाये न जब तक, चलूँ मैं आपके पथ पर ।।2253।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. रत्न को त्याग कर भगवन्, दिव्य रत्नों को पाया था ।
रत्नत्रय धारी होकर के, विधि को तुम नशाया था ।। 2254।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. सन्त जिस भू पै जाते हैं, वहीं बसन्त आता है ।
करके सेवा गुरुजन की, भक्तमन खिल भी जाता है ।।2255।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. साधना के लिए प्रभुवर, सभी साधन को छोड़ा है ।
करूँ मैं साधना तुम सी, मेरा जीवन तो थोड़ा है ।।2256।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. रमण करते निजातम में, क्षरण कर्मों का करने को ।
शरण निज की ही पायी है, वरण मुक्ति का करने को ।।2257।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तारते भक्त को जिन जी, महा भवसिन्धु से क्षण में ।
हारते हैं करम सब ही, ध्यान करने से ही मन में ।।2258।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. रम्य छवि है जिनेश्वर की, एकटक देख लूँ बस मैं ।
कि इस संसार माया से, नजर को फेर लूँ अब मैं ।।2259।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कलश अठ सहस लेकर के, क्षीर सिन्धु से भरवाये ।
भक्ति से भर के इन्द्रों ने, क्षमा सिन्धु पै ढुरवाये ।।2260।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. विभावों को तजा प्रभु ने, विरागी रूप पाया है ।
छवि लख कर लगा यूँ ही, मेरा भी रूप ऐसा है ।।2261।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. भोगों को भोगा इतना है, अनन्तों भव बढ़ाए हैं ।
योगों पर ध्यान न देकर, कष्ट अगणित उठाए हैं ।।2262।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. भुवन के निमर्ली भूषण, भूतों के नाथ हो स्वामी ।
आपकी छवि हृदय में रख, बनूँ मैं आप पथगामी ।।2263।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. वर्तमानी चौबीसी के, आप तेईसवें तीर्थेश ।
सहन उपसर्ग को करके, नाथ पाया है निज का देश ।।2264।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नाम पारस प्रभु तुमरा, काम पारसमणि सा है ।
चरण रज को जो छू लेता, बनाया अपने जैसा है ।।2265।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. धिनकधिन वाद्य बाजे हैं, इन्द्र भक्ति में साजे हैं ।
करें ताण्डव मगन होकर, देवियाँ साथ नाचे हैं ।।2266।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. नागों के इन्द्र आकर के, करें चरणों की अर्चा भी ।
परीकर के सहित आकर, करें चर्चा गुणों की भी ।।2267।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. थक गये चाँद सूरज भी, आपकी कान्ति को लखकर ।
करी पूजा चरण आकर, आपकी शान्ति को लखकर ।।2268।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्राता हो आप भव्यों के, सभी को साता देते हो ।
सच्चे पथ के प्रदर्शक हो, मुक्ति का पाथ देते हो ।।2269।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. यति मुनि भी यहाँ देखो, आपका ध्यान करते हैं ।
बसा कर आत्मकक्ष में, आत्मरस पान करते हैं ।।2270।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. स्वर्णभद्र कूट है प्यारा, भव्यों का इक सहारा है ।
मुक्ति इस कूट से पाकर, किया भवि को इशारा है ।।2271।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. देव इन्द्रों के भवनों में, प्रभु अरिहंत की प्रतिमा ।
बोध उनको दिलाती है, जगाओ स्वयं की प्रतिभा ।।2272।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. वर नहीं देते हो भवि को, किसी को शाप नहिं देते ।
स्वयं के भावों का फल ही, जीव निज हाथ हैं लेते ।।2273।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कनक कामिनी औ कंचन में, न इतराना कभी भव्यो ।
हमेशा ध्यान में रखना, स्वयं के षड् ही कर्तव्यों ।।2274।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुचि सम्यक्त्व पाकर के, आत्मरुचि को बढ़ाया है ।
बढ़ाकर ज्ञान चारित को, आत्म शुचि को भी पाया है ।।2275।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. णाणावरणादि कर्मों ने, नाना योनि घुमाया है ।
प्रभु पारस ने क्षय करके, आत्म बोधि को पाया है ।।2276।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. हृदयहारी महां गम्भीर, वाणी आप कल्याणी ।
जिसने उर धार ली अपने, उसी को मुक्ति की दानी ।।2277।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दर्प से अन्ध होकर के, प्रभु का दर्श नहिं कीना ।
दर पै इक बार आया जो, पाया समकित का नगीना ।।2278।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. माम् पाहि जिनेश्वर जी, शरण में आपकी आया ।
किया अर्पण समर्पण सब, आप की वर लूँ अब छाया ।।2279।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पुराण हो पुमान् हो, महा पुण्यवान भी तुम हो ।
प्रधान हो जगत में तुम, प्रभु श्रीमान् भी तुम हो ।।2280।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नीर में तैरती मछली, रही हरदम जो प्यासी सी ।
पार्श्व सिन्धु मिले हैं तो, छवि क्यों हो उदासी सी ।।2281।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हिमालय से भी ऊँचे हैं, हैं सागर से यहाँ गहरे ।
गुणों को कौन गा पाया, प्रभु पारस जी हैं हमरे ।।2282।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सीप में मोती के सम ही, देह में आत्मा मेरी ।
चढ़े जिनदेव के चरणों, हो पूरी साधना मेरी।।2283।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. दंसणं णाण क्षायिक जो, प्रकट युगपत् हुए स्वामी ।
जगत के सब पदारथ को, देखते आप अभिरामी ।।2284।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तपा कर देह को प्रभु ने, यहाँ कुन्दन बना डाला ।
सजा कर तीन रत्नों से, पहनायी मुक्ति की माला ।।2285।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मधुर बजते यहाँ बाजे, मुरलियाँ भी गगन में हैं ।
बुलाते भक्तों को सुरगण, बेला प्रभु से मिलन की है ।।2286।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सद्य पकवान बनवाये, सद्यपूरित हैं करवाये ।
भक्ति अरु शक्ति से भरकर, मुक्ति के हेतु चढ़वाये ।।2287।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भक्त भगवान में देखो, यहाँ बस इतना अन्तर है ।
भक्त कर्मों सहित बैठा, कर्म बन्धन न प्रभु में है ।।2288।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यत्न करता जिनेश्वर हूँ, रत्न पाने की आशा है ।
रत्नत्रय धारी जिनवर ने, मुझे दे दी दिलाशा है ।।2289।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दर्श करके जिनेश्वर के, नयन थकते न मेरे हैं ।
पर्श पाकर प्रभुवर जी, मेरे जीवन सवेरे हैं ।।2290।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. व्यथा किसको सुनाऊँ मैं, और किस ठौर जाऊँ मैं ।
मिले पारस प्रभु मुझको, उन्हीं के गीत गाऊँ मैं ।।2291।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. समता के सिन्धु हो जिनवर, ममता तुमसे लगाई है ।
आपके पास में रहकर, रमने की शक्ति पायी है ।।2292।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. गुणानाम् पूजते तुमको, गुणों की चाह है स्वामी ।
आप में जो नंत गुण हैं, मुझे भी प्राप्त हों स्वामी ।।2296।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. बुद्धि दाता हो जिनवर जी, बोध के तुम प्रदाता हो।
आप सम ज्ञान को पाने, चरण में मेरा माथा हो ।।2294।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रागी हूँ मैं अनादि से, राग तुम पर भी आया है ।
आपके त्याग ने भगवन्, मेरा अनुराग बढ़ाया है ।।2295।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणान्राशेः प्रभुवर जी, अनन्तों सौख्य पाये हैं ।
मेरे पारस जिनेश्वर जी, भक्त अन्तस् समाये हैं ।।2296।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शेः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

भव सागर तारक, भव उद्धारक, दुःख सिन्धु से पार करो।
यह अर्घ समर्पित, करो सुरक्षित, प्रभुवर मम उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पलाहकारयाणं अमिय सवीणं।

श्लोक नं.42

स्त्री संबंधी सर्वरोग नाशक

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत–सञ्चिताया:।
तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्य! भूया:,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

गीतिका–छन्द

हे प्रतिपालक! तीन लोक नृप! आप शरण! हे त्राता! एक,
थुति का फल बस इतना चाहूँ, मिले चरण द्वय हमें हमेश।
आप हमेशा मेरे हो हम, सेवक तुम पद रहे सदा,
मुक्ति न पा लूँ तब तक भूलो, आप न यह वरदान कदा।।

अक्षीणर्द्धि परिप्राप्तान्, दात्राहार प्रवर्धकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानसेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द – अर्द्ध ज्ञानोदय

1. यतिगण मुनिगण ऋषिगण करते, निशदिन जिनका ध्यान हैं।
ऐसे चिन्तामणि पारस प्रभु, चरणों नम्र प्रणाम है ।।2297।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. उद्यम करना शिव को वरना, जिनवर ने उपदेश दिया ।
भव्य जीव ने द्रव्य भाव से, सुनकर संयम वेश लिया ।।2298।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. अस्ति नास्ति संग स्यात् लगाकर, कथन पद्धति बतलाई ।
सप्त भंग का ज्ञान कराकर, स्याद्वाद विधि दर्शायी।।2299।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. नायक हो तुम जग के जिनवर, लायक मुझे बना देना ।
मालिक हो प्रभु इस जगती के, सेवक पास बिठा लेना ।।2300।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. थकी नाव है भव में मेरी, उसको नाथ तिरा देना ।
भक्त अकेला चल नहिं सकता, उंगली पकड़ चला देना।।2301।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. भगवन् की भक्ति भक्तों को, अनुपम शक्ति देती है ।
मुक्ति पथ के पथिकों को यह, अन्तस् युक्ति देती है ।।2302।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. वरी आपने मुक्ति रानी, ऊर्ध्वलोक राजे स्वामी ।
अनुपम है चारित्त आपका, नमन करूँ हे अभिरामी !।2303।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दर्शन पाकर हर्ष हुआ है, कर्म शृंखला टूट रही ।
अब तो ऐसा लगता भगवन्, भव की बाधा छूट रही ।।2304।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. अङ्घ्रि पद द्वय नमन करूँ मैं, वन्दन मेरा स्वीकारो ।
कर्मों के बन्धन को क्षय दूँ, इतनी नाथ दया धारो ।।2305।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ङ्घ्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. सकल जहाँ में नाथ आपसा, कोई ज्ञानी दिखा नहीं ।
नंत चतुष्टयधारी जिनवर, वीतराग छवि दिखी नहीं ।।2306।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. रोमांचित हो जाते ऋषिगण, देख सुमेरु पै न्हवन महा ।
अद्भुत शान्ति मिलती भवि को, जब तीर्थंकर दर्श मिला ।।2307।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. रुकता कोई न काम है उसका, नाम आपका जपता जो ।
पा जाता परमात्म दशा को, निज आतम को लखता वो ।।2308।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. हा–हा मैंने पाप किये हैं, जिनसे दुःख उपाये हैं ।
भक्तों ने चरणों में आकर, मनमाने सुख पाये हैं ।।2309।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. नृणां पूज्य हो जगतवन्द्य प्रभु, श्रेष्ठ नहीं तुम सा कोई ।
इसीलिये तव दर पर आया, नहिं तुम सा कोई ।।2310।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. भगवन् मेरे अब तो मुझको, शिव का मारग दिखला दो ।
मैं निज को भूला हूँ कब से, मिलन स्वयं से करवा दो ।।2311।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. मुक्तेः निधि पायी है जिनवर, शक्ति मुझे ऐसी वर दो ।
भक्त खड़ा झोली फैलाये, निज गुण से प्रभु जी भर दो ।।2312।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्तेः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. फण फैलाकर अहिपति आया, सिर पर मण्डप बना दिया ।
आत्मलीन प्रभु को लखकर के, समकित का शुभ सुधा पिया ।।2313।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "फ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. लम्बा है शिवपुर का रस्ता, प्रभुवर राह दिखा देना ।
भटक न जाऊँ मैं भव वन में, प्रभुवर हाथ पकड़ लेना ।।2314।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कितने भवि तारे हैं जिनवर, जो शिवपुर में पहुँच गये ।
अब मेरी बारी है प्रभुवर, कैसे तुम बिन भक्त रहे ।।2315।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. महामोह को क्षय कर प्रभु ने, मोक्ष महा पद पाया है ।
नंतवीर्य के धारी जिनवर, भक्त शरण में आया है ।।2316।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पिता-मात हो नाथ हमारे, हम बालक तुम पालक हो ।
परमवीर हो धरमवीर हो, सर्वलोक के ज्ञायक हो ।।2317।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. संशय विभ्रम मोह को तजकर, जो जिन वचन हृदय धारे ।
वो ही संयम के रथ चढ़कर, शिवललना को वर पाये ।।2318।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तद्भव शिवगामी अभिरामी, कभी न जग में आयेंगे ।
जब तक तन में साँस रहेगी, पारस प्रभु गुण गायेंगे ।।2319।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तत्त्व प्रकाशक वाणी जिनकी, जग कल्याणी कहलाती ।
स्व-पर का है बोध कराती, सुखदानी भवि ने मानी ।।2320।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. सञ्चय करना आत्मगुणों का, जड़ धन को अब तजना है ।
गुण ही भवि के साथ में जायें, साथ न कुछ भी चलना है ।।2321।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. चिराग जलाया ज्ञान का अपना, विरागता उर में धरकर ।
पूर्ण ज्ञान का सूर्य उगा है, प्रभु के शुद्धातम नभ पर ।।2321।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. ताप कर्म का सहा न जाता, अत: शरण में आया हूँ ।
भव सन्ताप मिटेगा निश्चित, भाव हृदय में लाया हूँ ।।2322।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. भव्या: जप करते हैं निशदिन, पार्श्व नाम की माला का ।
प्रभु का सुमरन उर में करते, तीर्थंकर जिनराया का ।।2323।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तन्त्र जो अपना स्थिर करके, निजानुभव को करते हैं ।
चिन्मय हो करके वे मुनिजन, शिवललना को वरते हैं ।।2324।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. मेरे प्रभु आओ मन मन्दिर, भक्त आपको बुला रहा ।
हे प्रभु! मेरा मोह मुझे ही, इस जग में है रुला रहा ।।2325।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तत्त्व प्रकाशी निजगुण भासी, शिव सुखकारक हो स्वामी।
पास बुला लो भक्त को अपने, पार्श्व प्रभु प्रिय जगनामी ।।2326।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. देखी मूरत जब से प्रभु की, और नहीं कुछ भी चाहूँ ।
तुम जैसा बनने का मन है, शाश्वत सुख में अवगाहूँ ।।2327।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कथनी करनी एक है करना, अन्तस् शुद्ध बनाना है
बाह्य दिखावा नहिं करना है, सिद्धि पद को पाना है ।।2328।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शत-शत वन्दन करता प्रभु का, पूजन का सौभाग्य मिला ।
कई जन्म के पुण्य उदय से, प्रभु मिले मुझे आज लगा ।।2329।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रहस्य कर्मों का बतलाकर, कर्म नाश की युक्ति दी ।
जिसने निश्छल भक्ति कीनी, उसने मुक्ति पायी भी ।।2330।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. णमोकार है मुक्ति प्रदाता, उसका सब वन्दन कर लो ।
पहले पद में पार्श्व विराजे, उनका अभिनन्दन कर लो ।।2331।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. रहस्य प्रभुवर की प्रकृति का, कोई जान नहीं पाया ।
हूँ अल्पज्ञ जिनेश्वर जी मैं, मात्र देखता ही आया ।।2332।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. शशि सम उज्ज्वल गुण हैं जिनके, निर्मलता जिनकी प्यारी ।
केवलज्ञान दीप हो जिनवर, हो इस जग के हितकारी ।।2333।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रंगना है प्रभुवर के रंग में, जिसमें राग रञ्च नहिं है ।
रहना है जिनवर के संग में, जहाँ निरन्तर सुख ही है ।।2335।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. यह तन है माटी का पुतला, माटी में मिलना इक दिन ।
जग की परिपाटी को तजकर, पद पाना है अब श्रीजिन ।।2336।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भूतल के भगवान तुम्हीं हो, भूतों के हो नाथ तुम्हीं ।
सविनय करते पार्श्व अर्चना, भक्त खड़े हम अभी यहीं ।।2337।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. भव्याः पूजें गुण को चिन्तें, फिर भी अँखियाँ प्यासी हैं ।
मेरे प्रभुवर देखो भविजन, हो गये शिवपुर वासी हैं ।।2338।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "याः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्वात्म गगन में चेतन पंछी, उड़ता चहके फिरे यहाँ ।
आत्म रमण कर ले रे चेतन! क्यों भटके तू यहाँ वहाँ ।।2339।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मीठे रस से भी यह मीठी, पारस प्रभु की वाणी है ।
सुन करके भविजन सुख पाते, जग को ये कल्याणी है ।।2340।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तत्त्व द्रव्य का राज बताते, जिनवर वचन सुनाते हैं ।
भव में भटके भक्त जनों को, शिव पथ वो दिखलाते हैं ।।2341।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मेरा प्रभु इक काम करोगे, बोलो अब तुम क्या लोगे ।
सिर पर मेरे हाथ रखोगे, बोलो प्रभु अब क्या लोगे ।।2342।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. वचनवली ऋद्धि यह देखो, द्वादशांग का पाठ करे ।
अन्तर्मुहूर्त लगा ऋषिवर को, सारे पद को साथ पढ़े ।।2343।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भुवनत्रयी हे पार्श्वनाथ जिन! मम अन्तर्मन में बसना ।
तेरा ही मैं ध्यान धरूँगा, मेरे हो मेरे रहना ।।2344।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. वन्दन करता मन वच तन से, अनुपम शान्ति मिलती है ।
तम सारा मन का मिट जाता, अन्तस् ज्योति जलती है ।।2345।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नेता हैं प्रभु तीन लोक के, शिव पथ का नेतृत्व करें ।
निज कल्याण अर्थी हैं भविजन, उनका ही अनुसरण करें ।।2346।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. कोऽत्र जगत में मीत हमारा, सब ही सुख के साथी हैं ।
प्रभु की दर्शन पूजन भवि को, अनुपम खुशी दिलाती है ।।2347।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽत्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. भव-भव में भटका हूँ भगवन्, भटकन आज मिटा देना ।
निज परिणति को प्राप्त करूँ मैं, निज से ही मिलवा देना ।।2348।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. ज्ञानवान् हैं भक्त तिहारे, ज्ञान पा गये भक्ति से ।
और न कुछ मैं चाहूँ भगवन्, जोड़ूँ नाता मुक्ति से ।।2349।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तन की भूख तनिक सी होती, मन की मेरु समां जानो ।
इच्छाओं पर करो नियन्त्रण, गुरु की बात यहाँ मानो ।।2350।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रे चेतन अब चेत जाओ तुम, प्रभुवर तुम्हें जगाते हैं ।
बात मानता जो जिनवर की, उसको पार लगाते हैं ।।2351।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. एकोऽपि समर्थ है भक्ति, मुक्ति पथ दिलवाने में ।
पुरुषारथ कर परमातम का, शुद्धातम को पाने में ।।2352।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

मुक्ती तक भगवन्, शरण मिले त्वम्, यही प्रार्थना करता हूँ।
हे पारस प्रभुवर! अष्ट द्रव्य भर, अर्घ समर्पित करता हूँ।।

ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थिरोअणासयाणं अक्खीणमहाणसाणं।

बंधन मोचक एवं वैभव वर्धक

इत्थं समाहित धियो विधिवज् जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत् पुलक कञ्चु कितांगभागाः।
त्वद्बिम्ब निर्मल मुखाम्बुज बद्ध लक्ष्याः,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः।।43।।

गीतिका–छन्द

हे जिन! जो भविजन तव भक्ती, शुद्ध चित्त हो करते हैं,
पुलकित मन कर ध्याकर उर से, चेतन में नित धरते हैं।
तेरा मुख नीरज अति सुंदर, देख स्वयं होता कल्याण,
भव्य पढ़े करि याद चित्त में, उनको मिले शुभम् स्थान।।

वर्धमान् महावीरान्, महतो बुद्धि सागरान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।

ॐ ह्रीं अर्हं भगवन्महावीर-वर्धमान बुद्धि ऋषिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द – दोहा

1. इत्यादिक कह कर प्रभु, ज्ञानी जन हुए मौन।
गुण अनन्त प्रभु आपके, गान कर सके कौन ।।2353।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. मान थंभ के दर्श से, मान गलित हो जाय।
भव्य जीव इसे देखकर, सम्यग्दर्श को पाय ।।2354।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. समकित ज्ञान चरण सहित, फूल अनेक प्रकार।
आत्मबाग में महकते, खुश्बू अपरम्पार ।।2355।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. माला मोती में सजे, ज्यों आतम में ज्ञान।
भव्य जीव पाये यहाँ, श्रद्धा से पहिचान ।।2356।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. हितकारी जिन वचन हैं, भव्यों के मन भायें।
हृदय धार लें जो इन्हें, चल कर शिवपुर जायें ।।2357।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. तत्त्व प्रकाशा आपने, तट भी दिया बताय।
वर लीनी शिव अङ्गना, वसु कर्मों को नशाय ।।2358।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. धिक्कारा उसको प्रभु, धर्म न जिसको भाय।
आतम हित वह नहिं करे, परमातम नहिं पाय ।।2359।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. योजन सवा कहा यहाँ, समवशरण जिनराय।
योगीजन भी आयकर, चरणन् शीश नवाय ।।2360।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. विधान करके आपका, मन पुलकित हो जाय।
विधि का भी बदलाव हो, प्रभु समीपता पाय ।।2361।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. अधिकारी मुक्ति प्रभु, गुणधारी कहलाय।
आप चरण अनुरक्त जो, सीधा शिवपुर जाय ।।2362।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. भगवज्जिनेन्द्र दर्श ही, हर्ष दिलाता मोय।
पूजन करता जो यहाँ, नहिं जग में वह रोय ।।2363।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. जिन प्रभु के ही दर्श से, निज का दर्शन होय।
निज दर्शन नहिं कर सके, तो मूरख बन सोय ।। 2364।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. नेत्र आज पुलकित हुए, नेह प्रभु का देख।
अब मेरे हाथों बनी, प्रभु मिलन की रेख ।।2365।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नै" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. इन्द्र और धरणेन्द्र भी, तव चरणों में आय।
शीश झुकाते मुकुट सह, कान्ति तव बढ़ जाय ।।2366।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. सांसारिक सुख त्याग कर, आतम सुख जो ध्याय।
उसे मिले परमात्म पद, पारस प्रभु बताय ।।2367।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सां" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. द्रोह न करना तुम कभी, वश में मोह के होय।
जो मोही बन कर जिये, सौख्य कभी नहिं होय ।।2368।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जल्ल–मल्ल से मलिन सा, मुनिवर का तन देख ।
ग्लानि नहिं करना कभी, जिनमाता की सीख ।।2369।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. सत् लक्षण है द्रव्य का, व्यय उत्पाद से युक्त ।
ध्रौव्य सहित गुण तीन हैं, जान के हो जा मुक्त ।।2370।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. पुरुषारथ करना सभी, कायर बनो न कोइ ।
बिन पुरुषारथ के यहाँ, मुक्ति कभी नहिं होइ ।। 2371।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. ललक जगी है आज उर, शिवपद मेरी ठौर ।
एक बार पा लूँ उसे, कुछ नहिं चाहूँ और ।। 2372।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. कठिन है तजना क्रोध को, सरल है कंचन त्याग ।
कठिन है मन मुण्डन कहा, सरल है केश का त्याग ।।2373।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. कञ्चन झारी में भरा, क्षीर सिन्धु का नीर ।
धारा प्रभु शिर पर करूँ, मिट जाये भव पीर ।।2374।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. चुम्बन करती गगन को, स्वर्ण भद्र की टोंक ।
आकर ध्यान लगाऊँ मैं, पापास्रव को रोक ।।2375।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. किए शुभाशुभ कर्म जो, उनका ही फल होत ।
व्यर्थ करें अपवाद यह, पर को देकर दोष ।।2376।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. ताप मिटा तन का यहाँ, चन्दन लेप लगा ।
आप मिटाता कर्म सब, वन्दन कर गुण गा ।।2377।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. अङ्ग अष्ट सम्यक् कहे, अष्ट ही सम्यग्ज्ञान ।
तेरह विध चारित कहा, भवि जीवों की शान ।।2378।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ङ्ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भामण्डल की कान्ति लख, कोटि सूर्य शरमायें।
भव्य करें प्रभु परिक्रमा, भव सातों दिख जायें ।।2379।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. खगाः सर्प सिंहादि भी, सुनते जिनवर वैन ।
सम्यग्दर्श को पाय कर, पाते जीवन चैन ।।2380।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वद् भक्ति से हे प्रभु! कटते भव के बंध ।
आप शरण में बैठकर, हो जाते निर्द्वन्द्व ।। 2381।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. बिम्ब आठ अरु एक सौ, अकृत्रिम जिनधाम ।
दर्शन करते ही यहाँ, हों निर्मल परिणाम ।।2382।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. बहती ज्ञान की धार है, जिनगुरु के दरबार ।
पान करे जो भी यहाँ, हो जाये भव पार ।।2383।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. निर्मल भाव है आपका, निर्मल धर्म स्वभाव ।
निर्मलता मैं भी गहूँ, तज के सर्व विभाव ।।2384।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मन मेरा होता मगन, कर जिनवर गुणगान ।
आप समां गुण दीजिए, प्रभुवर गुण की खान ।।2385।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लख चौरासी घूम कर, आया प्रभु के द्वार ।
कहीं न सुख पाया प्रभु, आज करो उद्धार ।।2386।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मुनि मन उज्ज्वल नीर सम, नहिं कषाय की कीट।
ध्यान मग्न होकर मुनि, देते कर्म को पीट ।।2387।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. खाली हाथ तू आया था, खाली ही जायेगा ।
खाली हो जा कर्म से, शिव सुख पायेगा ।।2388।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. भव्याम्बुज खिलते सदा, प्रभु मुखाब्ज को देख ।
दुःख होता उनसे विदा, प्रभु लख निज जो लेख ।।2389।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जग जल बिन्दू के समां, कब मिट जाये रे ऽ ।
चेतन अब तो चेत जा, गुरू बतायें रे ऽ ।।2390।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. बड़े पुण्य से है मिला, पारस प्रभु दरबार ।
इनके चरणों में मेरा, नमन है बारम्बार ।। 2391।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. शुद्ध बुद्ध हो आप शिव, परम विश्व के नाथ ।
चिदानन्द है रूप तुम, तव पद में मम माथ ।।2392।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लक्ष्य बनाया है यहाँ, पाना है ध्रुव धाम ।
न जाने कब हो यहाँ, इस जीवन की शाम ।।2393।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लक्ष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. भव्याः जिनगुरु की शरण, आये गृह को त्याग।
जिनपद की महिमा अगम, मन में हुआ विराग ।।2394।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्याः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. येन-केन विधि से प्रभु, आया तुमरे द्वार ।
यही प्रार्थना आप से, कर दो भवदधि पार ।।2395।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. सन्तानक आदि सुमन, बरसे प्रभु के द्वार ।
समवशरण शोभा लखी, अर्जित पुण्य अपार ।।2396।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. अस्त न होता तब मुखं, ग्रस पाता नहिं राहु ।
भक्ति सुमन अर्जित किए, जिनवर चरण चढ़ाउ ।।2397।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. शिवं सुन्दरं सत्य है, जिनवर का शुभ नाम ।
नाम जपो प्रभु ध्यान से, पाना यदि शिव धाम ।।2398।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तप से तपा-तपाय तन, कुन्दन बना लिया ।
गुण खुश्बू से पूर्ण कर, चन्दन बना दिया ।।2399।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वर्णन गुण कैसे करूँ, वर्ण रहित जिनदेव ।
वर ली है शिवनार तुम, हे पारस परमेश!।2400।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. विद्या ज्ञान का वर शुभम्, हे जिनवर! वर दो ।
आप गुणों से पूर्ण हो, मुझमें भी भर दो ।।2401।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. भोग विनाशी हैं सभी, बन्ध के हैं सब हेत ।
उपयोगी प्रभु को नमूँ , जो सन्मति हैं देत ।।2402।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. रज कर्मों की दूर कर, अरजः बने जिनेश ।
तव चरणों में शीश धर, नाशूँ रज प्राणेश ।।2403।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. चन्दन से भी शीत है, दिव्य वचन परमेश ।
शीतलता में भी लहूँ, वन्दन करूँ महेश ।।2404।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. जयन्तु जिनशासन जिनं, भविजन को हितकार ।
वीतराग शासन शुभं, जय जय जय जिनराज ।।2405।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तिर जाते हैं भव्य जन, जिनवर को उर धार ।
पा जाते हैं सिद्ध पद, शुद्ध हृदय चित धार ।।2406।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भव्य जीव ही आप सम, गुण को पाते हैं ।
गुणसागर अवगाहते, निज गुण पाते हैं ।।2407।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. धन्या: हैं वे जीव सब, नर भव सफल किया ।
नंत काल के भ्रमण को, क्षण में मिटा दिया ।।2408।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त"न्या:" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

जो भविजन ध्याते, भक्ति रचाते, रोम रोम पुलकित करते।
वे चन्द्रकांति सम, सुख जो अनुपम, अर्घ चढ़ा मुक्ति वरते।।

ॐ ह्रीं जन्म मृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खय सुहदायगस्स वड्ढमाणबुद्धिरिसिस्स।

भक्ति का फल स्वर्ग मोक्षसंपदा

जन नयन–'कुमुदचन्द्र प्रभास्वरा:
स्वर्ग संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित–मल निचया
अचिरान् मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

गीतिका–छन्द

सब प्राणी के नेत्र पुष्प के, कुमुद–कमल का करें विकास,
शोभा चन्द्र समां है जिनकी, स्वर्ग सम्पदा दे सम वास।
हर्षित मन से इस थुति को उर, धरते प्रतिदिन गाते हैं,
उत्तम भोग स्वर्ग में पाकर, मुक्ति महल को पाते हैं।।

ऋषिनः सर्व सिद्धायत–नान् सन्मोक्षगामिनः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायतनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द – सखी

1. जहाँ करते प्रभु विहार, होता आनन्द अपार ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2409।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. यतिपति भी ध्यान करत हैं, प्रभुवाणी हृदय धरत हैं ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2410।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. नव केवल लब्धि के स्वामी, अन्तस् बसो अन्तर्यामी ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2411।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. यह नर तन रतन अमोल, इसे पानी में मत घोल ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2412।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. नर तन हुआ सफल प्रभु का, हुए मुक्ति वधू के भूपा ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2413।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. कुज्ञान के प्रभु हैं नाशक, सुज्ञान के बने प्रकाशक ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2414।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. मुनियों के इन्द्र कहाते, गुणियों में श्रेष्ठ बताते ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2415।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दश धर्म की रेल चलाते, भवि को शिवपुर पहुँचाते ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2416।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. चन्दा की कान्ति फीकी, जग की सब उपमा जीतीं ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2417।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. द्रव्य दिव्य मैं लेकर आया, श्रद्धा से चरण चढ़ाया ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित्त लाऊँ ।।2418।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. प्रशमादिक गुण संयुक्त, भवि हो सम्यक्त्व से युक्त ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2419।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. भावों का खेल ये जग है, भावों से मुक्ति मग है ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2420।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. स्वर्गादिक सुख नहिं चाहूँ, भव भव में तुम पद पाऊँ ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2421।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. नराः इन्द्रिय के सुख तजकर, चलते हैं मुक्ति पथ पर ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2422।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "राः" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. स्वर्गादिक सुख बहुतेरे, जग में लगवाते फेरे ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2423।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. गति–अगति से आप रहित हो, प्रभु पंचम गति सहित हो ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2424।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. संशय भव में भटकाता, सम्यक् है मुक्ति प्रदाता ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2425।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पतवार तुम्हारे हाथ, प्रभु पार ले चलो साथ ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2426।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दो हाथ जोड़ सिर नाऊँ, प्रभु तुम जैसा बन जाऊँ ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2427।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भुक्ति मुक्ति दातार, प्रभु भक्ति है आधार ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2428।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भुक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. गत्वा क्षितेर्जिन नाथ, धनु पंच सहस नमूँ माथ ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2429।।
महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेरा-मेरा सब तज कर, आया प्रभु तेरे दर पर ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2430।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विज्ञान की कलियाँ खिलतीं, गुरु से विनम्र हो मिलतीं ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2431।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त"वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गगनाङ्गन आप सजे हो, भव्यों के हृदय बसे हो ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2432।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लिख लिख कर निज लखना है, जिनवर चरणों खिलना है।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2433।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तम मिट जाता जिन छवि से, तब काम मुझे क्या रवि से।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2434।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मनमानी कभी न करना, जिनवाणी को चित धरना ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2435।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. लहराया मन का उपवन, जब हृदय पधारे भगवन् ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2436।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. निज आत्म शक्ति ही बल है, उस भवि का मोक्ष सरल है।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2437।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. चलना चलते ही रहना, संयम का पहिन के गहना ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2438।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. यादों में प्रभु की सोया, प्रभु चरण पकड़ कर रोया ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2439।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. अनअन्त गुणाकर स्वामी, महिमा अपार ध्रुव धामी ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2440।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अ" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. चिरकाल के सुख भोगेंगे, जो चरण प्रभु सेवेंगे ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2441।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तिमिरान्तक नाम तिहारा, प्रभु भर दो ज्ञान उजारा ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2442।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मोर देखे जब विषधर को, वह डर कर भागे घर को ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2443।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. प्रत्यक्षं जिन गुण दर्श, होवे निजात्म का पर्शम् ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2444।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रण करता हूँ मैं भगवन्, प्राणों को कर दूँ अर्पण ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2445।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. परमातम पद को चाहूँ, निज आत्म बाग महकाऊँ ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2446।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वन्द्यं को वन्दन करता, यह अर्घ चरण में धरता ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2447।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. अन्तेवासिन् बन करके, लहूँ शिवसुख विधि क्षय करके ।
त्रय योग से शीश झुकाऊँ, प्रभु पार्श्व चरण चित लाऊँ ।।2448।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

जो कुमुद से विकसित, भवि आनन्दित, होकर तव गुणगान करें।
वे अर्घ चढ़ाकर, स्वर्ग को पाकर, क्षिप्रः शिवरमणी को वरें।।

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंधमोअगाणं सव्वसिद्धायदणाणं।

महार्घ्य

कल्याणों के धाम पार्श्व जिन, भविजन को सुखकारी जिन,
मृत्युजयी कहते हैं भविजन, संकट–कष्ट निवारी जिन।।
निज शुद्धातम प्रकटाने को, पार्श्व शरण में आया हूँ,
दिव्य अर्घ का थाल सजाकर, चरण चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं सर्वगुण सम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

चिदानन्द चैतन्य तुम, वीतराग जिननाथ ।
जयमाला वर्णन करूँ, होने नाथ सनाथ ।।

ज्ञानोदय छंद

हे प्रभु पार्श्वनाथ गुणगागर, सर्व जगत से वंद्य प्रभो ।
परम हितंकर हो तीर्थंकर, तेईसवें सर्वज्ञ विभो ।।1।।
नगर बनारस धन्य हुआ है, स्वर्णिम आभा है पायी ।
इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने, सारी नगरी सजवायी ।।2।।
मात–पिता के आँगन देखो, रत्नन वृष्टि हुई त्रय काल ।
प्राणत स्वर्ग त्याग कर आये, वामा के उर प्रभु विशाल ।।3।।
तब ही पितुश्री अश्वसेन जी, अति आनंदित होते हैं ।
मात कुक्षि में वे श्री जिन जी, पुष्प समां नित खिलते हैं ।।4।।
जन्मत ही सौधर्म इन्द्र ने, गिरि सुमेरु पर ले जाकर ।
सहस अष्ट घट क्षीरोदधि भर, न्हवन किया भक्ति भरकर ।।5।।

दूज चन्द्र सम प्रभु वृद्धिंगत, मात पितु हिय हर्ष अपार ।
अष्टम् वर्ष हुये जब जिनवर, धारे अणुव्रत जो सुखकार ।।6।।
चले सखा संग गज पर चढ़कर, देखा रंक करे तप घोर ।
बहु जीवों के घात सहित वह, अग्नि जलाता था चहुँ ओर ।।7।।
मना किया तब क्रोध में आया, बोला कहो कहाँ हैं जीव ।
प्रभु ने लकड़ी खोल दिखाया, नाग नागिनी रहे सजीव ।।8।।
दिया मंत्र नवकार संजीवन, सुनकर तज देह भये भवनेश ।
लख यह हृदय भावना भायी, है असार संसार हमेश ।।9।।
देव ऋषिगण आये तब ही, प्रभु के तप अनुमोदन को ।
तीस वर्ष में हुए दिगम्बर, पाया रत्नत्रय धन को ।।10।।
चार ज्ञान के धारी जिनवर, ध्यान लगाकर के बैठे ।
संवर ने आ पूर्व बैर वश, प्रभु पर पत्थर थे फेंके ।।11।।
मूसल वर्षा धार गिरायी, ओले शोले बरसे थे ।
दिव्य आत्मशक्ति के संग प्रभु, उस अजान पर तरसे थे ।।12।।
पद्मावती धरणेन्द्र ने आकर, प्रभु उपसर्ग निवारा था ।
आत्मशक्ति के बल से प्रभु ने, नंत चतुष्टय धारा था ।।13।।
द्वेष अग्नि में जला हमेशा, कमठ जीव पछताया था ।
प्रभु चरणों में पड़ करके वह, क्षमा भाव उर लाया था ।।14।।
भवि जीवों को बोध दान कर, स्वर्णिम भद्र कूट पहुँचे ।
चार अघाती कर्म नष्ट कर, लोक शिखर पर जा पहुँचे ।।15।।
भक्त आपका जो भी चरणों, में आकर के भक्ति करे ।
सम्यक् बोध ज्ञान पाकर के, अपने सारे कर्म हने ।।16।।
कुमुदचन्द्र यतिवर ने देखो, भक्ति का फल पाया था ।
प्रकटी प्रतिमा पार्श्व प्रभु की, जन-जन मन हर्षाया था ।।17।।

चमत्कार लख करके नृप ने, जैन धर्म स्वीकार किया ।
पार्श्व प्रभु का अतिशय ऐसा, सबने जय जयकार किया ।।18।।
शिलालेख में अंकित घटना, यह चित्तौड़ नगर की है ।
कल्याणी स्तोत्र की रचना, अर्चित भव्य जनों से है ।।19।।
इसे दिगम्बर श्वेताम्बर जन, श्रद्धा भक्ति से पढ़ते ।
पार्श्वप्रभु के गुण स्मरण से, अघ सारे पल में कटते ।।20।।
बीजाक्षर युत महा स्तोत्र का, विधान जो भी करता है ।
तन मन के सब रोग नाश कर, मृत्युञ्जयी वो बनता है ।।21।।
मैं भी तन मन और वचन से, प्रभु भक्ति को प्रकट करूँ ।
बनकर नर सुर और यतीवर, मुक्ति महल को वरण करूँ ।।22।।

दोहा

दिव्य शक्ति स्तोत्र की, धारे हृदय हमेश ।
सर्व भावना पूर्ण कर, पाता पद परमेश ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...

घत्ता छन्द

हे पार्श्व जिनंदा, वामा नंदा, सब जग का उद्धार करो ।
हो विनम्र ध्याऊँ पूज रचाऊँ, 'विमल' मेरे परिणाम करो ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

प्रशस्ति

अनंतनाथ जिनवर को नमकर, गुण अनंत की आशा ले।
गुरुवर स्वास्थ्य लाभ के हेतु, शुरू करूँ यह काज अरे ।।
गुरु आशीष की कलम उठायी, शीश झुकाया चरणों में।
संकट मोचन तारण हारे, पार्श्वनाथ गुण गाने में।।
सिद्ध क्षेत्र यह स्वर्णगिरि पर, इक अनुपम यह काज हुआ।
प्रतिदिन भक्ति करते-करते, आज पूर्ण ये विधान हुआ।।
पार्श्व प्रभु से यही प्रार्थना, निर्मल भाव रहें मेरे।
प्रभु चरण की भक्ति से ही, नाश हों भव भव के फेरे।।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या की, मंगल बेला आयी सुशाम।
पूर्ण विधान की शुभ बेला में, भावों से करूँ नम्र प्रणाम।।
अनन्त उपकारी गुरुवर की मुझ पर हुई अनन्य कृपा।
मुझ अबोध अज्ञानी ने गुरु, भक्ति में ये विधान रचा।।

दोहा

अति पावन ये विधान है, भक्ति से करे जोय।
सर्व मनोरथ पूर्ण हों, भवि के मन जो होय।।

ऋद्धिमंत्रों के अर्घ

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, जिन संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं, अवधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं, परमावधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं, सर्वावधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं, अनंतावधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं, कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं, बीज बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं, पदानुसारी बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोदाराणं, संभिन्नश्रोतृ बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजु मदीणं, ऋजुमति ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं, विपुलमतिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वियाणं, दश पूर्व ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वियाणं, चौदह पूर्व ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं, अष्टांग महानिमित्त ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण पत्ताणं, विक्रिया ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं, विद्या ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं, चारण ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं, प्रज्ञाश्रमण संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं, आकाशगामिनी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं, आशीर्विष ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं, दृष्टिविष ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं, उग्रतप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं, दीप्तितप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं, तप्ततप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं, महातप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं, घोरतप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं, घोर गुण ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर पक्कमाणं, घोर पराक्रम ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अर्हं अघोरगुण बंभयारीणं अघोरगुण ब्रह्मचारीत्वऋद्धि अर्घ्यं नि. स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं, आमर्ष औषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं, क्ष्वेल औषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं, जल्लौषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहि पत्ताणं, विष्ठौषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं, सर्वौषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण बलीणं, मनबल ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि बलीणं, वचनबल ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं, कायबल ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं, क्षीर स्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं, सर्पिस्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं, मधुस्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं, अमृतस्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं, अक्षीण महानस ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं, वर्द्धमान संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं, सिद्धायतन संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज की पूजन

रचियत्री–आर्यिका विमलश्री माताजी

पाद प्रक्षालन

चलो गुरु चरण चलें–2, पाद प्रक्षाल करें–2
क्षीरोदधि का जल लेकर के, गुरु चरणों में आये हैं–
चरणों की रज मस्तक धर के, अपने भाग्य सँवारे हैं–2
गुरु आशीष मिले, नई तकदीर बने, पाद प्रक्षाल करें–2

स्थापना

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप के गुरुवर अधिकारी हो।
जिनवाणी को हृदय बसाकर इस जग के उपकारी हो।।
आह्वानन् कर आज गुरु को अपने मन पधराऊँगा।
हृदय कमल पर तुम्हें बिठाकर नितप्रति पूजा रचाऊँगा।।
मन मंदिर में आ बसो, तारण तरण जिहाज।
गुरु भक्ति से ही मिटें, भव–भव के संताप।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विनम्रसागर यतिवर! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि के निर्मल जल सम, अपने मन को बना लिया।
तीर्थंकर का रूप धारकर, जीवों को सन्मार्ग दिया।।
स्वर्ण कलश से जल की धारा, गुरु चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ ह्रूं प.पू. भक्तामर वाले बाबा उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की खुशबू सम तुमने, रत्नत्रय को बिखराया।
तेरे चरणों की रज पाकर, भव आताप मिटा पाया।।
संसार ताप के नाश हेतु, गुरु चरणों चंदन अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्य: संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन रतन को धारण करके, तीन लोक में पूज्य हुए।
सम्यग्ज्ञान दरश चारित पा, तीन लोक के भूप हुए।।
हे गुरु अक्षय निधि को पाने, अक्षत तुम्हें समर्पित हैं।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. शिविर प्रणेता आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ध्यान के फूल खिलाकर, सब जग को महकाया है।
ऐसा धर्म हृदय में पाने, मेरा मन ललचाया है।।
पारिजात मंदार आदि के, कुसुम मनोहर अर्पित हैं।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. श्रमणरत्न आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन के विविध समूहों ने भी, तव मन को न डिगा पाया।
दृढ़ संकल्प के महामंत्र ने, जीवन पूज्य बना डाला।।
क्षुधा मिटाने गुरु चरणों में, लाडू बर्फी अर्पित हैं।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. वात्सल्यमूर्ति आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान का दीप जलाकर, निज स्वरूप का दर्श किया।
भव्य जीव को उसे बताकर, निज कर्त्तव्य को पूर्ण किया।।
रतन दीप की उज्ज्वल ज्योति, गुरु चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. काव्य सम्राट् आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को मूल नष्ट, करने का तुम संकल्प लिए।
आठ गुणों के पाने को तुम, शुक्लध्यान में लीन हुए।।
वसुकर्मों के नाश हेतु, चरणों में धूप समर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. भाषा विज्ञान पारगंत आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला सेव बादाम आम को, देख न मन ललचाया है।
अंतराय को दूर भगाने, तुमने कदम बढ़ाया है।।
उत्तम फल को पाने गुरुवर, फल चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्तज्ञ आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कर में ले, पुष्प चरु हैं मिलवाए।
ज्ञान दीप का थाल सजाकर, अष्ट द्रव्य फल सजवाए।।
अनर्घ पद के हेतु हे गुरुवर! मेरा अर्घ समर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. भक्तामर महोदधि आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आओ हम गायें गुणमाला, गुरुवर कृपा निधान की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

छत्तीस गुणों से मंडित होकर, शिष्यों के ये ईश्वर हैं।
यंत्र रूप हैं, मंत्र रूप है, तंत्र रूप भी परिणत हैं।।
ऐसे गुरु को वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

दश धर्मों के डिब्बे लेकर, मोक्ष की ट्रेन चलाते हैं।
भव्य जनों को बैठा करके, मोक्ष पुरी पहुँचाते हैं।।
गुरु के नाम मंत्र की माला, जपो सभी सद्ज्ञान की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

बारह तप को नितप्रति तपकर, जीवन को चमकाया है।
कुन्दन जैसी काया गुरु की, भव्यों का मन भाया है।।
रहें ध्यान में लीन सदा, और जाप जपें सिद्ध नाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

तीन गुप्ति और पाँच समिति को, चर्या में दर्शाया है।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र का, जिनने बिगुल बजाया है।।
स्वपर का उपकार करें जो, चलें राह शिवधाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

भक्तामर को शुद्ध पढ़ाकर, पूजन करना सिखलाते हैं।
जीवन के अनसुलझे प्रश्नों, को भी गुरुवर सुलझाते हैं।।
ऐसे गुरु के गुण गाएँ हम, जाप जपें गुरु नाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन है, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो जयमालाये अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणानुरागी बन गुरो, गाऊँ हर पल गान।
गुण को पाने के लिए, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

आरती

(मेरे सर पर रख दो...)

रत्नों के दीप सजाये–2 और कंचन के ले थाल।
भक्त उतारें आरती, गुरु–विनम्र के द्वार।।

मेरचंद के राजदुलारे, मात चमेली के प्यारे।
भिण्ड नगर में जन्म लिया है, गुरुवर जी जग से न्यारे।
चंबल के चंदन प्यारे–2, करुणा के तुम अवतार। भक्त उतारें...

रत्नों सी मुस्कान गुरु की, नाम रत्न को पाया है।
बाल ब्रह्मचारी गुरुवर जी, झूठा जग न भाया है।
किया गुरु विराग चरणों में–2, निज जीवन का उद्धार। भक्त उतारें...

शिष्य नम्रता देख गुरु ने, "विनम्र सागर" नाम दिया।
चरितार्थ कर गुरुवर ने, गुरुवर की बात को मान दिया।
हमको भी नम्र बनाओ–2, करो अहंकार का नाश। भक्त उतारें...

सूरज से बढ़कर तेज आपका, देख शशि भी शर्माये।
मुस्कायें जब गुरु हमारे, चाँद चाँदनी हर्षाये।
अब आओ गुरु बस जाओ–2, पापों का हो संहार। भक्त उतारें...

धन्य हुए हैं भाग्य हमारे, गुरुवर यहाँ पधारे हैं।
तीर्थंकर से गुरु के पीछे, शिष्य मण्डली साजें है।
आया चौथा काल यहाँ पर–2, सब पाओ पुण्य बहार। भक्त उतारें...

सुर ताल नहीं है फिर भी हम, गुरुवर के गुण को गाते हैं।
संबल दो सहने का गुरुवर, गम तो आते–जाते हैं।
बस इतनी सी इच्छा है–2, दे दो मुस्कान फुहार। भक्त उतारें...

महाअर्घ्य

अर्हत् देव सदा मैं पूजूँ, सिद्ध प्रभु उर लाऊँ मैं,
चरणाचार्य धरूँ उवझाया, साधु पंच गुरु ध्याऊँ मैं।
जिनवाणी जो द्वादशांगमय, अमृत जैसे हैं शुभ वैन,
पंचगुरु के दर्शन करके, होते तृप्त हमारे नैन।।

षोडश भावन दशविध धर्म, रत्नत्रय पूजूँ उर लाय,
अकृत्रिम–कृत्रिम चैत्यालय, चैत्य जजूँ नित मन हर्षाय।
पंचमेरु–नन्दीश्वर देवालय, में राजित जिन भगवान,
हृदय धरूँ नित भावन वन्दूँ, पाने अपना शिवपद धाम।।

सम्मेदाचल–अष्टापद, पावापुर–चम्पापुर–गिरनार,
बीस विदेह क्षेत्र प्रभु पूजूँ, चौबीसों जिन लूँ उरधार।
जिनवर के वसु सहसनाम शुभ, बहुविधि गाऊँ उनका सार,
सब मंगलदायी सुखकारी, नमहूँ उर से बारम्बार।।

दोहा

जल–गंधाक्षत–पुष्प–चरु–दीप–धूप–फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधुभ्यो, द्वादशांग जिनागमेभ्यो, दशलक्षण धर्मेभ्यो, षोडश कारणेभ्यो, सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्रेभ्यो, त्रिलोक स्थित कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वर द्वीप स्थित द्विपंचाशत् जिन चैत्यालयेभ्यो, पंचमेरु स्थित अशीति जिनचैत्यालयेभ्यो, श्री सम्मेद–अष्टापद–ऊर्जयन्तगिरि–चम्पापुर–पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो सातिशय क्षेत्रेभ्यो, विद्यमान विंशति तीर्थङ्करेभ्यो, अष्टाधिक जिन सहस्रनामेभ्यो, श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो जलादि महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

चौपाई

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील-गुणव्रत-संयमधारी।
लखन एक सो आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजे।।
पंचम चक्रवर्तीपद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्तिहित शान्ति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चामर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

बसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप।।

इन्द्रवज्रा

सम्पूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन! शान्ति को दे।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा,
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा।
होवे चोरी न जारी, सुसमय बरतैं हो न, दुष्काल मारी,
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृषको जो, सदा सौख्यकारी।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परं देवं आद्यानामाद्ये-मध्यलोके-जम्बूद्वीपे-भरत क्षेत्रे-आर्य खण्डे- भारतदेशे..... प्रदेशे..... जिले..... मासे..... पक्षे..... वासरे शुभदिन पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक-श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं चरणारविंदे शांतिधारा समर्पयामि (करोमि) (मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविका जो तीर्थंकर भगवान के सामने शांतिधारा देवें देखें ताके कर्मन की क्षय।)

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का,
सदवृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ,
तौलौं सेऊँ, चरण जिन के, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

आर्या

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहूँ प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा में दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि, पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

शान्तिभक्ति समाधिभक्ति पठित्वा कायोत्सर्गं करोम्यहम्
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

विसर्जन

बिन जाने व जानके रही, टूट जो कोय।
तुम प्रसादतैं परम गुरु, सो सब पूरन होय।।1।।

पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहुँ भगवान।।2।।

मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहुँ राखहुँ मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।

(यहाँ ठोने में पुष्प क्षेपण करके समापन करें)

आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति प्रमाण।
ते सब जावहुँ कृपाकर, अपने अपने थान।।

(निम्नांकित छन्द पढ़ते हुये गवासन मुद्रा से अर्हंत भगवान को नमोऽस्तु करके आशीर्वाद लेते हुए कायोत्सर्ग पूर्वक कार्य पूर्ण कर ठोने में चढ़े पुष्प की आशिका नहीं लेना चाहिये)

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव भव के पातक कटैं, दुःख दूर हो जाय।।

(बैठकर नमोऽस्तु करें)

॥ वीतराग शासन जयवंत हो ॥

ॐ ह्रीं क्लीं

ॐ ह्रीं क्लीं

ॐ ह्रीं क्लीं

ॐ ह्रीं क्लीं

श्री कल्याण मन्दिर महामण्डल विधान

स्वाध्याय से विचार व सोच से आचार बदल जाते हैं।

* उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

प्रकाशन

श्रमण श्रुत संवर्द्धन ट्रस्ट

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, किशनपोल, जयपुर मो. 8290526049, 8619727900